रोड ट्रिप

13000 फीट

देवेन्द्र पाण्डेय

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

रोड ट्रिप

13000 फीट

रोड ट्रिप

13000 फीट

देवेन्द्र पाण्डेय

BOOKEMIST

सामग्रियाँ

डेडिकेशन

कुछ लेखकीय जैसा..

प्रस्तावना

एक सप्ताह पहले, मुम्बई

रोड ट्रिप 13000 फ़ीट (उपन्यास)
© 2020 देवेन्द्र पाण्डेय

'सूरज पॉकेट बुक्स' पुस्तक संख्या- 76
प्रथम संस्करण: मार्च 2020

मुखपृष्ठ : निशांत मौर्य

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बगैर फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी अन्य मैकेनिकल या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के ज़रिये पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक:
बुकेमिस्ट (इम्प्रिन्ट-सूरज पॉकेट बुक्स)
ठाणे, महाराष्ट्र
www.soorajbooks.com
Email ID: soorajpocketbooks@gmail.com; publisher@soorajbooks.com

हमारी सभी पुस्तकें निम्न वेबसाइट्स व एप्स पर उपलब्ध हैं:
soorajbooks.com/shop, Amazon.in, Pustakmandi.com, Kindle, and other online stores

यह एक काल्पनिक किताब है। स्थानों और संस्थाओं के नामों का प्रयोग केवल कथ्य को प्रमाणिकता प्रदान करने के लिए किया गया है। कहानी में आये सभी चरित्र, नाम और घटनाएं लेखक की कल्पना पर आधारित हैं और किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध एक संयोग मात्र होगा।

धन्यवाद मेरे माता-पिता का, जिन्होंने कभी कोई बेवजह की रोक-टोक नहीं लगाई। सबसे पहला और सबसे बड़ा योगदान इन्हीं का है।

धन्यवाद मेरी पत्नी नीलम का, जिन्होंने मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया, धन्यवाद साधना का जिनके साथ अनेक यात्राएं की, विविध अनुभव प्राप्त हुए।

धन्यवाद मेरी बेटी दृषिका का, जिसने मुझे और बेहतर इन्सान बनने के लिए प्रेरित किया।

धन्यवाद ईश्वर का, जिसने मुझे नास्तिक से आस्तिक बनाया और मेरा मार्गदर्शन किया, जिस कारण मैं यह कहानी लिख सका।

मंजिलें उलझन पैदा करती है,

जिंदगी बिना मंजिलों के ज्यादा खूबसूरत है।

-इसी उपन्यास से

कुछ लेखकीय जैसा..

‘इश्क बकलोल’ से मैंने लेखन में अपनी पारी आरम्भ की थी जिसका परिवेश प्रांतवाद, बेरोजगारी एवं उसमें प्रस्फुटित होते प्रेम से सराबोर था । बकलोल को पाठकों एवं समीक्षकों का भरपूर प्यार मिला और काफी सराही भी गई। फिर डेढ़ साल के लम्बे अंतराल के पश्चात पौराणिक एवं आधुनिक समय को जोड़ता एक्शन थ्रिलर ‘बाली-युग युगांतर प्रतिशोध’ प्रकाशित हुआ, मेरे जानने वाले अचानक से इश्क बकलोल जैसी सामाजिक कहानी के पश्चात एक पौराणिक फंतासी थ्रिलर के लिखने से हैरान थे, यह उनके लिए अनपेक्षित सा था। कहीं ना कहीं मुझे भी यह प्रतीत हुआ कि इश्क बकलोल से जो छवि बनी है उस छवि का नकारात्मक प्रभाव कहीं बाली पर न पड़ जाए, किन्तु ऐसा हुआ नहीं और बाली ने अपना अलग ही मुकाम बना लिया।

बाली पाठकों एवं समीक्षकों के मध्य काफी सराही गई, अनेक पाठकों के मेल्स और मैसेजेस मिले जिनमें बाली की प्रशंसा की गई थी। बाली प्रकाशन की बेस्टसेलर बन गई जिसकी मुझे कतई उम्मीद नहीं थी, देखते ही देखते प्रीऑर्डर में ही प्रथम संस्करण समाप्त हो गया। बाली अब भी अपनी बढ़त बनाए हुए है और बेहतरीन प्रदर्शन कर रही है। बाली आ चुकी थी, बकलोल को दो साल होने को थे, दो साल में दो किताबों का आंकड़ा लेखन के हिसाब असन्तुष्टिजनक ही माना जाएगा, बाली पूर्ण होते ना होते मुझे रोड ट्रिप का कॉन्सेप्ट सुझा जिसके विषय में मैंने प्रकाशक शुभानन्द एवं मित्र मिथिलेश गुप्ता जी से चर्चा की, उन्हें कॉन्सेप्ट पसंद आया और फिर ड्राफ्ट बना और कथानक सम्पूर्ण हुआ। अब उपन्यास आपके हाथों में है तो इसकी असली परीक्षा अब आरम्भ हो रही है। किसी ने प्रश्न किया था इश्क बकलोल जैसे खांटी और सामाजिक उपन्यास के पश्चात बाली जैसे पौराणिक फंतासी एक्शन थ्रिलर का ख्याल कैसे आया? हर लेखक की किसी न किसी विषय में प्रवीणता होती है और वह उसी में लिखने में सहज महसूस करता है। उदा थ्रिलर लेखक क्राइम थ्रिलर, मर्डर मिस्ट्री लिखेगा, हॉरर लेखक डरावनी कहानिया, रोमांस लेखक रूमानी लिखेगा, तो आपकी कैटेगरी क्या है? आप किस विधा में खुद को सुविधाजनक पाते है, किस जोनर में लिखना आपको पसंद है, तो मैंने कहा मेरा कोई निश्चित जोनर नहीं है और ना ही मैं किसी जोनर विशेष तक सीमित रहना पसंद करूंगा, अब प्रस्तुत उपन्यास को ही लीजिये, मैं जानबूझकर विविधता पूर्ण विषयों का चुनाव नहीं कर रहा हूँ, जाने अनजाने मेरा हर कॉन्सेप्ट पिछले कॉन्सेप्ट से एकदम अलग हो जाता है और मैं इसे बनाये रखना चाहता हूँ । जिस समय यह उपन्यास आपके हाथों में है उसी समय मेरा चौथा उपन्यास भी प्रकाशन के हवाले हो चुका है और संयोग से चौथा उपन्यास भी मेरे पिछले तीनों उपन्यास के विषयों से सर्वथा भिन्न है, अब वह किस विषय पर है इस बारे में कुछ कहना जल्दबाजी होगी, आगे की भी कुछ योजनाएं हैं और वे सभी एक-दूसरे से भिन्न ही होने वाली है।

अब बात करते है प्रस्तुत कहानी की, रोड ट्रिप तेरह हजार फ़ीट की, रोड ट्रिप का कॉन्सेप्ट सभी जानते ही है। हर किसी का कभी न कभी किसी ऐसे अनजाने सफर पर जाने का सपना होता है जो उनके जीवन की दिशा बदल दे, जहाँ वे कुछ पल ही सही लेकिन अपने लिए जीने की इच्छा रखते है, जीवन की उलझनों से दूर और बेफिक्र होकर कुछ दिन रहने के तलबगार होते है। हम सभी का कोई ना कोई पसंदीदा स्थान होता है जहां हम जाना चाहते है, लेकिन जीवन की आपाधापी और परेशानियों के चलते हमारे सपने कहीं खो जाते है, हमारी बाकी परेशानियां इतनी बड़ी होती है कि हमें ऐसे छोटे सपनों का मर जाना भी याद नहीं रहता और ना ही कभी अफ़सोस होता है।

यह ऐसे ही तीन दोस्तों की कहानी है, तीनों पहली बार मिले है और निकल पड़े है अनजान यात्राओं पर, तीनों की जिंदगी उतार चढ़ाव से भरी हुई है और वे इन परेशानियों से कुछ पलों की राहत की इच्छा में कहीं दूर निकल लेते है। तीनों पात्र आपके हमारे बीच से ही है, फिल्मों की भांति रोड ट्रिप के नाम पर देश और दुनिया भर की यात्रा करना इनकी क्षमता के बाहर की बात है यात्रा के प्रत्येक पड़ाव में तीनों एक के बाद एक अपनी उलझनों और परेशानियों के मध्य खुद को तलाश कर रहे है, क्या वे अपनी इस यात्रा में सफल रहते है या फिर यह यात्रा महत्वहीन बन कर रह जाती है? यही है कहानी, यात्राओं के साथ भावनाओं का निरंतर तारतम्य बना रहता है। यात्राओं के विषय बताना चाहूँ तो स्वयं मैं भी एक घुमक्कड़ हूँ और हमेशा नई-नई यात्राओं के अवसर खोजते रहता हूँ, मेरी यात्राओं के कुछ अनुभव भी इस पुस्तक के लिखने में सहायक हुए है। जल्द ही यात्रा वृतांत पर आधारित ईबुक भी प्रकाशित हो रही है, या हो सकता है इस पुस्तक के आपके हाथ में आने तक प्रकाशित भी हो चुकी हो।

तब देर ना करते हुए आप भी इस यात्रा का हिस्सा बनिए। आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी, अपने विचार मेल अथवा मैसेज द्वारा अवश्य प्रेषित करें, आखिरकार पाठकों के शब्द ही लेखक को ऊर्जा प्रदान करते है।

धन्यवाद
देवेंद्र धर्मराज पाण्डेय
devenrrp@yahoo.com

प्रस्तावना

सर्द हवाओं के कारण सिहरन बढ़ती जा रही थी। अनिकेत, मानव और विनय ने अपने जीवन में कभी इतनी ठंड का सामना नहीं किया था, कल शाम जब वे यहाँ पहुंचे थे तभी तापमान माइनस पांच डिग्री था। अब तो रात के ग्यारह बज रहे थे, तापमान में भारी गिरावट निरंतर जारी थी, माइनस ठंड के विषय में वे अब तक केवल सुनते आये थे, आज उसे महसूस कर रहे थे, और ना केवल महसूस कर रहे थे बल्कि कई घंटों से वे उसी ठंड में भटक रहे थे। ऊपर से बर्फबारी भी शुरू हो चुकी थी जो उन्हें और जमा रही थी। थक हार कर आखिरकार उन्हें उम्मीद के तौर पर वह विशालकाय चट्टान दिख गई जिसकी ओट में वे बर्फ के थपेड़ों और बर्फीली हवाओं से थोड़ा बहुत ही सही किन्तु खुद को बचा सकते थे। वे जिस चट्टान की ओट में बैठे थे, वह चट्टान पूरी तरह से बर्फ में ढंक चुकी थी, वे एक दूसरे की हांफती सर्द साँसों की आवाज तक स्पष्ट सुन सकते थे। दांत बुरी तरह किटकिटा रहे थे, हर सांस के साथ मानो मिंट सी फेफड़ों में घुलती महसूस हो रही थी। शरीर बुरी तरह कांप रहा था और मस्तिष्क मानो शून्य हो रहा था। दस्तानों के बावजूद उंगलियां सुन्न सी होती जा रही थी, जिसे वे बार-बार रगड़ कर गर्म करने का असफल प्रयास कर रहे थे।

उनके कपड़े बर्फ में अनगिनत बार गिरने के कारण जगह-जगह से अस्त-व्यस्त और नम हो गए थे, जिस कारण ठंड का प्रभाव बढ़ते जा रहा था। रात के अँधेरे में कोई मार्ग सुझाई नहीं दे रहा था, जहाँ तक नजर दौड़ाओ वहां तक केवल बर्फ की सफ़ेद चादरों से ढंकी ऊँची-ऊँची चट्टानें और आसमान छूते पहाड़ ही नजर आ रहे थे। आधे चाँद की रोशनी उस सफ़ेद बर्फ पर देखने लायक पर्याप्त प्रकाश दे रही थी, ऊँची-ऊँची गगनचुम्बी पर्वत श्रृंखलाएं अब भी अँधेरे में भी मोतियों की भांति प्रकाशित थे। कोई और पल होता तो निःसंदेह वे उस खूबसूरती से मन्त्रमुग्ध हो जाते, यदि स्वर्ग का वर्णन किया जा सकता था तो वे निःसंदेह इन्हीं दृश्यों से उसकी कल्पना की जाती। लेकिन वे खुद स्वर्ग पहुँचने की तैयारी कर चुके थे।

“यार हमने गलती से कह दिया कि हम एकदम स्वर्ग जैसे वातावरण में जा रहे है, ऊपरवाले ने तो एकदम गंभीरता से ही ले लिया। हम पूरी तरह रास्ता भटक चुके है, और अब इस अंधेरे में बर्फ के दलदल में और चलने की हिम्मत ही नहीं बची है।” अनिकेत ठिठुर रहा था।

उस चट्टान के अलावा फिलहाल और कोई आशा भी दिखाई नहीं दे रही थी। बर्फबारी के साथ ही तापमान में और गिरावट होती जा रही थी। वह चट्टान भी अधिक देर तक उन्हें नहीं बचा सकती थी। कुछ ही देर में चट्टान भी बर्फ की मोटी चादर से ढंक जाती। लगातार कई घंटे घुटनों तक बर्फ में भटकने के कारण भीषण थकान हो चली थी, शरीर से मानो ऊर्जा का एक-एक कतरा तक निचुड़ चुका था। एक-एक सांस के लिए संघर्ष करना पड़ रहा था। ऑक्सीजन वैसे भी इतनी उंचाई पर सामान्य से कम थी, जिस कारण सांस अत्यधिक तेजी से फूलने लगी थी, और थकान सामान्य से अधिक होने लगी थी। मानव ने तो अब उम्मीद ही

छोड़ दी थी, उसे यकीन हो गया था कि वह अब फिर कभी घर नहीं पहुँच पायेगा। यही हाल विनय का भी था, वह भी निराश हो चुका था, घने अँधेरे में भी जहां तक नजर पड़ती बस बर्फ ही बर्फ दिखाई दे रही थी। अनिकेत अब अपने निर्णय पर पछता रहा था लेकिन उसे क्या पता था कि उनका सफर इस मोड़ पर आकर समाप्त होगा। लेकिन अनिकेत ने अब भी हिम्मत नहीं हारी थी, उसे पता था उसके हिम्मत हारते ही विनय और मानव की रही सही उम्मीद भी खत्म हो जाएगी, अनिकेत अकारण चिंतित हो रहा था, मानव और विनय की हिम्मत तो कब की समाप्त हो चुकी थी।

“अनिकेत भाई ! हम इस चट्टान के नीचे कब तक छिपे रहेंगे ? हमें कम से रास्ता तो खोजना ही होगा।” मानव ने कंपकंपाते हुए बड़ी मुश्किल से कहा।

“फिलहाल हमें बर्फबारी तक यहीं रुकना चाहिए, इस भीषण बर्फबारी में कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा है, हम पहले ही रास्ता भटकने के कारण कई किलोमीटर दूर तक आ चुके हैं, इस अँधेरे में कोई दर्रा या खाई भी दिखाई नहीं देगा, हो सकता है अगले कदम से हम हजारों फीट नीचे जा गिरे या किसी ऐसे संकरे दर्रे में फंस जाए जहाँ से निकलना ही संभव न हो।” अनिकेत ने कहा, उसके दांत किटकिटा रहे थे, ठंडी हवा का मानो अंधड़ सा चल रहा था, उनके कान सांय-सांय कर रहे थे।

“हमें रुकना ही होगा, वैसे भी हम इस हालत में है ही नहीं कि चार कदम भी चल पाए, मेरे घुटने घायल हो चुके है। अनिकेत भाई की दोनों कलाईयाँ और पीठ भी चोटिल है, और मानव तुम पर थकान हद से ज्यादा हावी हो गई है, हाथ पैर कांप रहे हैं, शरीर में खड़े होने तक की शक्ति शेष नहीं बची है। इस बर्फ में यदि हम निकले तो जल्द ही हमारी कुल्फी जम जायेगी।” विनय ने कहा, उसकी बात पर दोनों चुप हो गए, उनके मुंह से भाप निकल रही थी। अचानक मानव चिंहुक उठा।

“वह उस टीले पर कुछ चल रहा है।”

अनिकेत और विनय दोनों ने मानव द्वारा इंगित दिशा की ओर देखा, सफ़ेद पहाड़ी पर वह काली सी परछाई स्पष्ट दिखाई दे रही थी, बर्फ में पैर जमाते हुए वह परछाई उन्हीं की ओर बढ़ रही थी। उस आकृति को गौर से देखने के साथ ही अनिकेत के रोंगटे खड़े हो गए।

“य...ये बाघ है..” अनिकेत की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। अनिकेत के मुंह से निकला ‘बाघ’ शब्द सुनकर दोनों के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी। उनके मुंह से बोल न फूट रहा था, बाघ उनके समीप आ रहा था, उसकी हल्की सी गुर्राहट भी उन्हें स्पष्ट सुनाई दे रही थी। बाघ के रुप में उन्हें साक्षात यमराज दिखाई दे रहा था।

वह बाघ उन्हीं की ओर बढ़ रहा था। निःसंदेह यह उनकी आखिरी रात थी।

एक सप्ताह पहले, मुम्बई

विनय

विनय ने सरसरी निगाह टेबल पर रखे कागज पर डाली, कागज पर किसी प्रकार की सूचि लिखी हुई थी। जिसे वह अपने दो रुपल्ली वाली कलम से जाँच रहा था आवश्यकता की सारी वस्तुओं की सूची बन चुकी थी, वह थोड़ा निश्चिंत सा नजर आ रहा था, पुन: एक बार सूची जांचने के पश्चात ही वह पूर्णतया आश्वस्त हुआ।

उसने कलम का ढक्कन बिठाया और जेब की ओर बढ़ा दिया। फिर वह कुर्सी से उठा और अपने बैग को जांचने लगा। उस बड़े से बैग में आवश्यकता की सारी चीजें व्यवस्थित रूप से रखी हुई थी। टी शर्ट्स, जींस, तौलिया, ट्रैक सूट, दो जोड़ी बनियान, दो जोड़ी अंडर वेयर। बनियान और अंडरवेयर नये खरीदे हुये थे। विनय ने कुछ सोचकर बनियान और अंडरवेयर बैग से निकाल लिये, और उनकी पैकिंग हटा दी जो बेवजह बैग में जगह घेर रही थी, एक बार फिर से बैग की साइड पॉकेट की जांच करके टूथपेस्ट, ब्रश, फेसवाश, साबुन, रुमाल, इत्यादि की जांच कर ली। सूची में लिखी हुई सारी चीजें बैग में पाकर विनय संतुष्ट हुआ। लेकिन अभी भी उसे महसूस हो रहा था जैसे कोई वस्तु छूट गई है, लेकिन क्या ? उसे याद ही नहीं आ रहा था। उसने सूची की पुन: जांच की, सूची के अनुसार सारी चीजें उसने खुद जांचने के पश्चात ही बैग में भरी थी। फिर क्या रह गया था ?

“अरे हां ! टिकट तो लिया ही नहीं।” वह अपनी ही मूर्खता पर मुस्करा उठा। उसने फौरन दीवार पर खूंटी के सहारे टंगे हुए अपने ऑफिस बैग की सबसे बड़ी जेब से तह करके रखे हुए दो प्रिंट आउट निकाल लिये। हालाँकि उसके मोबाइल में ई टिकट और पी.एन.आर. नम्बर मौजूद था, किन्तु विनय को मोबाइल की बैटरी पर संदेह था, इसलिये वह सुरक्षा हेतु प्रिंट आउट रखने के पक्ष में था। उसने घड़ी में देखा, सुबह के आठ बज रहे थे, उसे बांद्रा टर्मिनल से ट्रेन पकड़नी थी। बांद्रा पहुँचने के लिए बोरीवली तक बस पकड़नी थी। और फिर वहां से लोकल के जरिये लगभग तीस से चालीस मिनट में वह बांद्रा टर्मिनल पहुँच जाता। कुल मिलाकर उसे स्टेशन पहुँचने में ही दो से ढाई घंटे हर हाल में लगने थे। वह बस निकलने की ही तैयारी में था। अचानक उसे अपने सीने पर कुछ लिजलिजा सा प्रतीत हुआ।

हाथ लगाया तो हाथ नीली स्याही से रंग गया था। उसकी कमीज की जेब नीली स्याही से रंगी हुई थी।

“अरे यार ! ये साला दो रुपये वाला पेन। धोखेबाज, कितनी बार समझाया था प्रीति ने, मत इस्तेमाल किया करो, साला कभी भी धोखा दे देगा, तीन रुपये बचाने के चक्कर में पांच सौ की शर्ट का सत्यानाश हो जायेगा। लो हो गया सत्यानाश, वो भी इसी समय।”“ विनय बुरी तरह खीज गया था, उसे अपने आप पर बेहद गुस्सा आ रहा था। कल ही तो यह शर्ट फैशन स्ट्रीट से ली थी। और आज ही इसका क्रिया कर्म भी हो गया। उसने गुस्से में शर्ट खींच खांच कर उतारी और फर्श पर फेंक मारी। खीज इतनी अधिक थी के उसने कमीज पर पैर रखकर उसे किसी पोंछे की तरह ही फर्श पर रगड़ दिया।

“अरे यार ! हद हो गई अब तो, फर्श पर भी दाग लग गया।” विनय सफ़ेद फर्श को नीले रंग से पुता हुआ देखकर बुरी तरह झल्लाया। वह फौरन बाथरूम की ओर गया और गीला कपड़ा लेकर लौटा, गुस्से और झुंझलाहट में वह फर्श को रगड़ने लगा। काफी मेहनत और जोर लगाने के पश्चात फर्श से दाग पूर्ण तया गायब तो नहीं हुआ, किन्तु हल्का जरूर पड़ गया। थोड़ा और प्रयास करता तो अवश्य फर्श दागरहित हो जाता, लेकिन वह फर्श के पीछे ही पड़ा रहता तो निःसंदेह उसकी ट्रेन छूट जानी थी। उसने जल्दी-जल्दी से पोंछा समेटा, हाथ मुंह धोये। जेल लगा कर बालों को सेट किया, और एक तीव्र अल्कोहोल युक्त डीयो का छिड़काव अपने बदन पर किया। यह बात और थी कि डीयो की इस गंध को वह खुद नापसंद करता था, लेकिन वह उस सम्पूर्ण बोतल को बिना प्रयोग किये फेंकने की हिम्मत भी नहीं जुटा सकता था, अभी पिछले सप्ताह ही तो खरीदा था। उसने पंखे, और बल्ब बंद किये और बैग को कंधे पर टांग लिया, वह बाहर निकलने के लिए बढ़ा ही था कि उसे अपने अब तक बनियान पर होने का अहसास हुआ।

“अरे हद है यार !!!” वह लगभग चीख पड़ा और बैग को फर्श पर रखकर कमरे की ओर बढ़ा, टेबल पर उसकी नीले रंग की पोलो नेक टी शर्ट पड़ी हुई थी, जो उसने शनिवार होने के कारण कल ही ऑफिस में पहनी थी। स्वाभाविक था टी शर्ट धुली हुई भी नहीं थी। लेकिन अब कोई और रास्ता भी नहीं था, बैग से कपड़े निकालने का मतलब था सारी पैकिंग को तहस-नहस कर देना। उसने बिना सोचे विचारे टी शर्ट उठा कर पहन लिया, टी शर्ट खींचने के कारण उसके बाल बिगड़ गये, बालों पर लगा जेल अभी ठीक से सूख भी नहीं पाया था। अब वह ना तो चिढ़ने की स्थिति में था और ना चीखने की। उसने आईने में खुद को खा जाने वाली नजरों से घूरा और टेबल से ताला चाबी उठा कर, बैग कंधे पर टाँगे पैर पटकते हुये कमरे के दरवाजे की ओर बढ़ गया। दरवाजा उसने पूर्ण शक्ति से बंद किया था। अड़ोसी पड़ोसियों तक को दरवाजा बंद होने की आवाज स्पष्ट सुनाई दी होगी।

अभी वह कुंडी लगा कर ताला अटका ही रहा था कि उसने अपनी पड़ोसन को उसके दरवाजे से अपनी ओर देखते पाया। विनय ने उसे देखकर जबरदस्ती की मुस्कान दी।

“भाभी नहीं है क्या ? आप कहीं जा रहे हो ? रुक जाओ मैं नाश्ता देती हूँ।” पड़ोसन ने मुसकुराते हुए कहा।

“मैंने खाना बना लिया था। मुझे देर हो रही है, धन्यवाद।” कहकर विनय ने हड़बड़ी में ताला बंद करके चाबी जेब के हवाले की। वह जानता था वहां एक भी मिनट रुकने का

मतलब था सवालों की बौछार का सामना करना। पड़ोसन और कुछ कहती उससे पहले ही उसने कंधे पर बैग टांगा और फुर्ती से गैलरी की ओर बढ़ गया।

“किधर जा रहे ? कब आयेंगे ? भाभी जी कब आयेंगी ? खाना तो खा लेते, चाय ही बना देती हूँ।” उसका बड़बड़ाना तब तक नहीं रुका जब तक विनय जीने की सीढ़ियों पर पहुँच कर उसकी नजरों से ओझल नहीं हो गया।

□□□

विनय बस अड्डे पर पहुंचा, वहां पहुँच कर पता चला कि बोरीवली की बस जा चुकी है और अगली बस अब आधे घंटे बाद ही आयेगी। वह कसमसाकर रह गया, खुद को ही कोसने लगा, काश! वह और जल्दी निकला होता, काश! अपना बैग कल ही पैक करके रखा होता। लेकिन बॉस ने कल छुट्टी भी तो नहीं दी थी । शाम को आते-आते ही छह बज गए थे, बाकी दिनों में तो वह चार बजे तक घर पहुँच जाता था, लेकिन उसी दिन काम भी ज्यादा आ पड़ा, और छुट्टियों पर जाने के कारण हैण्डओवर में भी समय लग गया।

“कल जिम जाना जरुरी था क्या ? एक दिन नहीं जाता तो क्या बिगड़ जाता ? कौन सा एक दिन में विश्व चैम्पियन बन जाता लोहा भांज कर।” अब खाली समय था तो विनय अपने आप को कोसने के अनेक बहाने खोज रहा था। उसे अपना हर काम ही गलत नजर आने लगा, जो कल से आज तक उसने किया था। लेकिन अब पछताने और छटपटाने का कोई फायदा नहीं था, बस की प्रतीक्षा करनी ही थी। समय काटने के लिए मोबाइल निकाला और इयरफोन कान में ठूंस लिया, एक तो उसे देर हो गई थी, दूसरे ट्रेन तक समय पर पहुँचने की बेचैनी, तीसरे उसका चिड़चिड़ापन, ऐसे में म्यूजिक ने बस उसकी हृदय गति और ब्लड प्रेशर बढ़ाने का ही कार्य किया। संगीत से भी जब उसकी बेचैनी शांत होने के बजाय बढ़ गई तो उसने इयरफोन खींच कर बैग की ऊपरी जेब में ठूंस दिया। बैग की साइड पॉकेट से पानी की बोतल निकाल कर कुछ घूंट मारे। बेचैनी भरे यह क्षण उसे एक साल के समान प्रतीत हो रहे थे जो कट ही नहीं रहे थे।

उसकी बेचैनी तभी शांत हुई जब उसने बोरीवली की बस को आते देखा, बस अभी स्टैंड पर ठीक से लगी भी नहीं थी, की अपना बैग खींचते खांचते विनय बस में जा घुसा, वह पहला ही यात्री था जिसने बस में प्रवेश किया था, उसने अपनी नजरें बस के भीतर दौड़ाई एक विंडो सीट देखकर अपना बैग लादे वहां जाकर धंस गया। इस भागमभाग और गर्म मौसम के कारण उसका शरीर पसीने से भीगा हुआ था। बस एक जगह रुकी होने के कारण उसके माथे से पसीने की धार सी बह रही थी। देखते ही देखते बस यात्रियों से खचाखच भर गई। तरह-तरह के लोग उसमें सवार हो गए, उनकी चख चख से विनय को और कुढ़न हो रही थी, लेकिन बस उसकी पिताजी की तो थी नहीं, इसलिए वह बस घृणा से उन्हें देखकर रह गया। यदि ऐसी दृष्टि से किसी की मृत्यु हो जाती होती तो अब तक बस में कोई भी यात्री जीवित नहीं होता। उसकी बेचैनी और झल्लाहट तब शांत हुई जब उसने बस के इंजिन के शुरू होने की घरघराहट सुनी।

बस अपने स्थान से हिली और धीरे-धीरे बस स्टैंड से निकल कर मुख्य सड़क पर रेंगने लगी। रेंगने इसलिए क्योंकि बस अड्डा शहर के व्यस्त परिसर में स्थित था। जहां संकरा मार्ग होने के कारण सदैव ट्रैफिक रहता था। गनीमत यह थी कि छुट्टी का दिन होने के कारण स्कूल और ऑफिस बसेज़ सड़कों पर नहीं थी। लेकिन ऑटो वालों ने हैरान कर रखा था, विनय जानता

था ट्रैफिक नियम इस प्रजाति के लिए बने ही नहीं है। इनके लिए ही क्यों ? बल्कि वह जिस उपनगर में रहता था वहां नियम जैसी किसी भी चीज से किसी को कोई सरोकार नहीं था। विनय का इस अव्यवस्था और उजड्ड समाज से मन उकता सा गया था। वह किसी भी तरह से इस घुटन भरे माहौल से छुटकारा पाना चाहता था। ना यहाँ सड़कें सही थी और ना ही कोई सुविधा थी, ऐसे में वह तो परेशान था ही, साथ ही शादी करके प्रीति को भी उसने इस घुटन भरे शहर का हिस्सा बना लिया था। बस अब संकरे मार्ग से निकल कर हाइवे पर आ चुकी थी। हाइवे पर आते ही बस ने गति पकड़ ली। ठंडी हवा के झोंको ने विनय का बेचैन मन थोड़ा शांत किया।

“तुम दुनिया की मत सोचा करो, तुम किसी को नहीं बदल सकते। खुद को परिस्थिति के हिसाब से ढालना सीखो, हर कोई तुम्हारे जैसा नहीं है, जो चीजें तुम्हारे हाथ में नहीं है उसके लिए बेचैन होना, परेशान होना और खुद का खून जलाना बंद करो। तुम सही हो, तुम अपने स्तर पर सब सही करते हो। लेकिन यदि दूसरे गलत है तो उसका दोष खुद को नहीं दे सकते। शांत रहा करो विनय, खुद को परेशान करना बंद करो, तुम्हारे चाहने ना चाहने से किसी का कुछ नहीं बिगड़ता, किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता, सिवाय मेरे और तुम्हारे। तुम्हारी यह बेचैनियाँ मुझे तकलीफ देती है।” प्रीति के कहे शब्द ठंडी हवा के साथ उसके कानों में प्रवेश कर रहे थे। रास्ता लगभग डेढ़ घंटे का था, उसने अपनी आँखें बंद कर ली। एक वही तो थी जो उसके जीवन का सबसे सुंदर और सबसे प्यारा हिस्सा थी।

□□□

वह बोरीवली पहुँच चुका था। बस से उतरते ही टिकट लेने के लिए टिकट खिड़की की ओर देखा तो एकदम निराश हो गया। टिकट खिड़की पर लम्बी कतार लगी हुई थी। यदि वह कतार में प्रतीक्षा करता तो उसका समय से बांद्रा पहुंचना मुश्किल था, बोरीवली से बांद्रा लोकल से लगभग पौने घंटे का रास्ता था और अभी ग्यारह बज रहे थे, सवा बारह बजे की विवेक एक्सप्रेस पकड़नी मुश्किल थी। उसने मोबाइल में एक बार फिर से ट्रेन का हाल्ट चेक किया, विवेक एक्सप्रेस बोरीवली में दो मिनट के लिए रुकती थी। उसने यहीं पर ट्रेन की प्रतीक्षा करना उचित समझा।

“कोई बात नहीं, यहीं प्रतीक्षा करता हूँ, ट्रेन यहाँ रुकेगी।” उसने अपने माथे से पसीना पोंछा और राहत की सांस ली।

“लेकिन प्रीति ने कहा था कि अगर स्टॉप पर नहीं बैठा और टीसी ने उस दौरान टिकट चेक कर लिया और यात्री को अपने स्थान पर नहीं पाया तो आधे घंटे पश्चात वह सीट किसी अन्य वेटिंग यात्री को जारी कर दी जायेगी।” विनय ने मन ही मन प्रीति की कही बातों को याद किया, पता नहीं उसकी बातें कितनी सच थी कितनी झूठ, उसे सही जानकारी थी भी या अंदाजे से बोली यह भी निश्चित नहीं था। प्रीति भले विनय से अधिक पढ़ी लिखी और इंग्लिश मीडियम लड़की थी, लेकिन उसका दुनियादारी का ज्ञान केवल ऊपरी था। धरातल पर वह कई जगह विनय से कमतर ही होती थी। भले विनय को इस जानकारी पर थोड़ा शक था लेकिन अब उसके मन में शंका घर कर चुकी थी।

“मुझे बांद्रा पहुंचना ही होगा। टिकट लेना ही होगा, लेकिन उसके चक्कर में रहूँगा तो पक्का लेट हो जाऊंगा। हे भगवान क्या करूँ ?” विनय खुद से बड़बड़ाया। अचानक कुछ सोचकर उसकी आँखें चमक उठी।

"मैं भी कितना बुद्धू हूँ, बांद्रा वाली किसी भी लोकल में चढ़ जाता हूँ, मेरे पास विवेक एक्सप्रेस का टिकट तो है ही। और उसका तो हाल्ट है बोरीवली। इस हिसाब से मेरे पास टिकट है ही, अब लोकल के भीतर तो चेक होने से रहा, बांद्रा उतरने के बाद यदि टीसी ने धर भी लिया तो भाई अपना तो बांद्रा से टिकट है ही। वाह भाई विनय बढ़िया दिमाग लगाया तूने तो।" विनय खुद की प्रशंसा कर उठा। और बैग को कंधे पर टांगे प्लेटफॉर्म नम्बर तीन पर जा पहुंचा। बांद्रा के लिए जाती अगली लोकल के प्लेटफ़ॉर्म पर आते ही, धक्का मुक्की करते हुए भीड़ के मध्य रास्ता बनाते हुए किसी प्रकार वह आखिरकार बोगी में जा पहुंचा। सीट मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता था, लेकिन उसे फिर भी सुकून था कि वह समय रहते बांद्रा पहुँच जायेगा। लोकल चल पड़ी और बोरीवली पीछे छूट गया, अब जाकर विनय के चेहरे पर सुकून दिखाई दे रहा था।

□□□

लोकल ठीक बारह बजे बांद्रा पहुंची। अपना बैग लटकाए वह प्लेटफ़ॉर्म पर उतरा, उसे एक्सप्रेस गाड़ियों के प्लेटफ़ॉर्म के विषय में जानना था, इससे पहले वह कभी बांद्रा नहीं आया था, इस कारण स्टेशन उसके लिए पूर्णतया अपरिचित था। उसने एक कैंटीन वाले से पूछा।

"भैया! ये एक्सप्रेस गाड़ियां किस प्लेटफ़ॉर्म पर आती हैं ?"

"एक्सप्रेस इधर नहीं आती। ये बांद्रा स्टेशन है, आपको बांद्रा टर्मिनल जाना पड़ेगा।" कैंटीन वाले के स्वर ने विनय के होश फाख्ता कर दिए।

"बांद्रा टर्मिनल कितनी दूर है ?" उसने घबराए स्वर में पूछा।

"आप ब्रिज से चढ़कर लेफ्ट में उतर जाओ, वहां से बीस मिनट का पैदल रास्ता है, और भी लोग जाते है, रास्ता पता चल जायेगा।" कैंटीन वाले ने इतना कहा और ग्राहकों में व्यस्त हो गया। विनय ने बदहवास सा ब्रिज की ओर देखा जो प्रवासियों से भरा पड़ा था। पन्द्रह मिनट में उसकी ट्रेन थी, और बीस मिनट का रास्ता बता रहा है। वह बिना कुछ सोचे समझे दौड़ पड़ा। किसी तरह से आठ नौ मिनट में वह बांद्रा स्टेशन से बाहर निकला। उसने बाहर आते-आते भी दो तीन लोगों से टर्मिनल के विषय में पूछा और उनके बताये दिशा निर्देशों पर चल पड़ा। अब वह मुख्य सड़क पर था, एक लोकल दुकानदार को उसने टर्मिनल के विषय में पूछा।

"अरे दस मिनट में नहीं पहुँच पाओगे, ऑटो कर लो, पांच मिनट में पहुँच जाओगे। लंबा है इधर से। उधर ऑटो मिलेगा, दस रुपये में छोड़ देगा।" दुकानदार ने मार्केट में खड़ी ऑटो की ओर संकेत करते हुए कहा। विनय गिरता पड़ता धन्यवाद करते हुए ऑटो की ओर भागा।

"भाई टर्मिनल चलो जल्दी।" वह ऑटो वाले से बोला।

"और 'पेसिंजर' आने दो।" ऑटो वाले ने बेरुखी से कहा।

"भाई मुझसे ले ले दो सीट के एक्स्ट्रा पैसे। अब चल, मेरी ट्रेन नहीं छूटनी चाहिए।" कहते हुए विनय ने अपना बैग ऑटो में ठुंसा और बैठ गया। ऑटो वाले ने फौरन ऑटो स्टार्ट किया और रास्ते पर चल पड़ा। कुछ ही देर में वे मुख्य सड़क पर थे, अचानक कुछ सोचकर विनय ने ऑटोवाले से प्रश्न किया।

"भैय्या ! ये जम्मू जाने वाली ट्रेन किस प्लेटफ़ॉर्म पर मिलेगी ?"

"वो दो नम्बर से निकलेगी। आपको जल्दी निकलने का था।" ऑटो वाले ने ज्ञान झाड़ा जो पहले से ही हैरान परेशान विनय को इस समय कतई पसंद नहीं आया, लेकिन वह मन मसोस

कर रह गया। कुछ ही देर में वह टर्मिनल पर था। लेकिन उसे प्लेटफ़ॉर्म पर जाने के लिए कोई मार्ग या ब्रिज नहीं दिखा।

“भैय्या ! प्लेटफ़ॉर्म पर जाने के लिए स्टेशन पर तो कुछ नहीं दिख रहा।” वह बेचैन हो चुका था।

“अंडर ग्राउंड है साब ! नीचे से रास्ता है प्लेटफ़ॉर्म पर जाने का। पहले बोलते तो ब्रिज के ऊपर से ऑटो लेता मैं, वहां से सीधा रास्ता था।” ऑटो वाले ने पैसे अपनी जेब में रखते हुए कहा। विनय ने उसे खा जाने वाली नजरों से देखा और बैग उठाये स्टेशन परिसर में चल पड़ा। विवेक एक्सप्रेस का समय हो चुका था, वह तीन मिनट देर से पहुंचा था। उसे भूमिगत मार्ग खोजने में ज्यादा परेशानी नहीं हुई। वह पूरी शक्ति से सीढ़ियां उतरकर उस सुरंग में जा पहुंचा और सीधे दो नम्बर प्लेटफ़ॉर्म की ओर इंगित किये गए दिशा निर्देशों का पालन करते हुए दौड़ा। ट्रेन की व्हिसल बजी, इस व्हिसल के साथ ही विनय की धड़कने और तेज हो गई।

“हे भगवान ट्रेन निकलने वाली है।” वह दौड़ा और सीढ़ियों से चढ़ते हुए प्लेटफ़ॉर्म पर आ पहुंचा। विवेक एक्सप्रेस उसके सामने ही खड़ी थी। संयोग से उसकी बोगी जहां वह खड़ा था वहां से तीसरी ही थी। वैसे भी ट्रेन खड़ी थी, यही बहुत था उसके लिए, वह किसी भी बोगी में प्रवेश करने की तैयारी में ही आया था। लेकिन ट्रेन को अभी खड़ी देखकर उसका हौसला बढ़ा और अपनी बोगी की ओर दौड़ा। कुछ ही क्षणों में आखिरकार वह अपनी बोगी में जा पहुंचा। उसकी सीट दरवाजे के समीप ही लोवर बर्थ पर थी। अपना बैग सीट के नीचे खिसका कर वह निढाल सा बर्थ पर जा बैठा। वह पूर्णतया पसीने से तर हो चुका था। उसने खिड़की के समीप ही बटनों को दबा कर पंखा चालू कर दिया, पंखा चलते ही उसे थोड़ी सी राहत मिली। अब ट्रेन किसी भी समय प्लेटफ़ॉर्म छोड़ने वाली थी हालांकि वह आठ मिनट लेट हो चुका था, उसने भगवान का धन्यवाद किया जो ट्रेन थोड़ी लेट हुई। कुछ समय तक वह खिड़की से बाहर देखता रहा, लेकिन ट्रेन बस व्हिसल बजा कर रह जा रही थी। वह आगे बढ़ने का नाम ही नहीं ले रही थी।

लगभग आधे घंटे बाद ट्रेन अपने स्थान से हिली। विनय अब त्रस्त हो चुका था।

“चालीस मिनट लेट है ट्रेन।” वह गुस्से में भुनभुनाया। इतनी भागदौड़, इतनी हड़बड़ी, इतनी परेशानी, और गर्मी के बाद ट्रेन दौड़ते भागते पकड़कर भी कोई लाभ नहीं हुआ। विनय को समझ नहीं आ रहा था कि वह आखिर क्या प्रतिक्रिया दे।

जैसा कि अक्सर होता था, विनय का दिमाग सकारात्मक बातों की अपेक्षा नकारात्मक चीजों को जल्दी आकर्षित करता था। देर होने के बावजूद ट्रेन मिलने की ख़ुशी के बजाय, ट्रेन के चालीस मिनट लेट होने की खीज अब उसपर हावी हो गई थी। लेकिन ट्रेन के चलते ही वह खीज भी टर्मिनल पर ही छूट गई। उसने अपना सामान समेटा, बैग की जेब से पुन: पानी की बोतल निकाली और कुछ घूंट पीने के पश्चात राहत की सांस ली। जेब से मोबाइल निकाला और कोई नम्बर डायल किया।

“हेल्लो ! हां प्रीति, ट्रेन में हूँ। हां बिलकुल समय से पहुंचा था। कोई हड़बड़ी नहीं, एकदम आधे घंटे पहले ही आ गया था। देखा आज तुम्हें गलत साबित कर दिया ना कि मैं हमेशा लास्ट मोमेंट पर ही दौड़ता हूँ। देखो आज टाइम से पहले पहुंचा। क्या कहा? गुस्सा ? अरे नहीं तो कोई गुस्सा नहीं है, अरे नहीं यार झल्ला भी नहीं रहा हूँ। अरे मैं ठीक हूँ, नहीं लेट हुआ यार। तुम्हारा फोन आने के पहले ही मैं जाग गया था। अच्छा अब शुरु मत हो जाओ, एक

तो पहले ही इतना परेशान था, कैसे बैसे ट्रेन पकड़ी ...” कहते कहते उसने अपनी जुबान काट ली, विनय के मुंह से गलती से वह निकल ही गया जो वह छुपा रहा था।

“अरे नहीं...सुन...झूठ नहीं। अरे यार वो टर्मिनल और स्टेशन अलग अलग था। पता नहीं चला, आधा घंटा वहां वेस्ट हो गया मेरा। अच्छा मत मानो यार। रखो फोन, दिमाग मत खराब करो मेरा, एक तो पहले ही हैरान-परेशान हूँ सुबह से।” कहकर गुस्से से तमतमाते हुए विनय ने फोन काट दिया। कुछ देर तक उसके चेहरे पर भाव बनते बिगड़ते रहे फिर कुछ सोचकर उसने पुन: नम्बर मिलाया।

“हेल्लो ! अच्छा सॉरी ! मुझे ऐसा नहीं बोलना चाहिए था। हाँ लेट हो गया था। तुम साथ नहीं थी ना मेरे, इसलिए सब हड़बड़ी हो गई। तुम होती तो सब ठीक रहता। अच्छा गुस्सा मत करो यार। सुनो, जा रहा हूँ, गुड लक तो दो, ऐसे गुस्से में विदा करोगी मुझे ? आई लव यू यार।” कहकर विनय ने फोन पर एक आभासी चुम्मी दी। प्रत्युत्तर में लव यू टू और चुम्मी का स्वर सुनकर उसके चेहरा खिल उठा। विनय ने फोन जेब में रखने से पहले एक बार प्रीति की तस्वीर निहारी और मुस्करा दिया। अब वह एक अनजाने सफर पर निकल चुका था। उसने कुछ पलों के लिए अपनी आँखें बंद की। उसे जम्मू पहुँचने में लगभग सैंतीस घंटे लगने थे।

□□□

पटना से जम्मू

मानव

ट्रेन आने में अभी आधे घंटे का समय शेष था। मानव सदैव पूर्व तैयारी के साथ ही कोई भी काम करता था, उसने दो दिन पहले ही सारी पैकिंग कर रखी थी। आज भी वह ट्रेन के समय से डेढ़ घंटे पहले ही स्टेशन पहुँच चुका था, वैसे भी घर पर उसे कोई ख़ास काम भी नहीं था। छठ पूजा में वह घर आया था, छठ के तुरंत बाद ही उसे जम्मू के लिए रवाना होना था। उसका घर पटना में अवश्य था लेकिन मूल रूप से वह बैंगलोर में एक मल्टीनैशनल आउट सोर्सिंग कम्पनी में कार्यरत था। सैलरी अच्छी थी लेकिन इतनी भी नहीं जितने में वह संतुष्ट हो सके।

ट्रेन का टिकट निकालते समय भी उसने एसी के बजाय स्लीपर कोच को प्राथमिकता दी थी, इससे उसके हजार पन्द्रह सौ बच जाते थे जो आगे यात्रा में काम आते या जिससे कुछ और काम हो सकता था। वैसे भी अकेले व्यक्ति के लिए क्या एसी, क्या जनरल, क्या स्लीपर। वह तो किसी कोने में भी खुद को एडजस्ट कर सकता है, यही सोचकर उसने अपने हिसाब से समझदारी दिखाते हुए स्लीपर टिकट ली थी, साइड लोअर उसकी पसंदीदा सीट थी, वह सदैव चुनाव के समय साइड लोअर सीट को ही प्राथमिकता देता था, मानव खुद में खोये रहने वाला व्यक्ति नहीं था, वह अपना सफ़र हेडफोन ठूंसे, गाना सुनते, अथवा मोबाइल में घुसे रहने में व्यर्थ करने वालों में से नहीं था। उसे खिड़की से देखना पसंद था, स्टेशन, सड़कें, पेड़, पौधे, मैदान, पहाड़, मकान, झोपड़ियां इत्यादि देखना अत्यधिक पसंद था।

और सर्दियां उसका सर्वाधिक पसंदीदा मौसम था, इस मौसम में ट्रेन की खिड़की से दिखाई देते हरे, पीले लहलहाते खेतों की आभा एक अलग ही सुकून देती थी। मानव को इनसे ऊर्जा मिलती थी, वह एक नवलेखक भी तो था, स्वाभाविक था यह उसकी कल्पनाओं की उड़ान और कहानियों के ताने-बाने बुनने में उसकी सहायता करते थे। अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकाल कर वह कुछ न कुछ लिखता रहता था। हाल ही में उसका पहला उपन्यास प्रकाशित हुआ था। प्रतिसाद मिला जुला था, किन्तु पुस्तक का प्रकाशित होना ही उसके लिए अलग तरह का उत्साहवर्धन था। वह सदैव कल्पनाओं में खोया रहता, उसे रिश्तों की जटिलताओं पर लिखना भाता था, हालांकि रिश्ते निभाने के मामले में वह खुद हद दर्जे का लापरवाह था। उसे आज भी याद था उसकी पहली पुस्तक हाथ में आते ही पिता जी ने प्रशंसा करने के बजाय उसे कड़वे वचन सुनाये थे।

“बस यही लिखने के लिए बैंगलोर गए थे ? इतनी बड़ी बड़ी डिग्रियां ली थी, इसीलिए बाप की गाढ़ी कमाई तुम्हारी पढ़ाई में निवेश की थी। कितनी बार कहा है यह सब बेफिजूल के शौक छोड़ कर काम में मन लगाओ, कुछ बनकर दिखाओ। चार पैसे रहेंगे तो सब पूछेंगे, लेखकों को कौन पूछता है ? शादी की उम्र हो रही है, रिश्ते आते है तो क्या बताऊँ लड़का लेखक है ? अरे लड़की वाले लड़की को आग में ना झोंक दे एक लेखक से ब्याहने के बजाय ? वह भी हिंदी का लेखक। हद है, व्यर्थ है तुम्हारी अंग्रेजी पढ़ाई भी। रिश्तों की उलझन पर लिख रहे है नवाब साहब, एक बात गाँठ बाँध लो बेटा ‘जो खुद रिश्ते नहीं निभा सकते ना, वही अक्सर रिश्तों पर ज्ञान पेलते नजर आते है। ‘पिता जी ने गुस्से से तमतमाते हुए कहा। जब पिताजी बोलते थे तब उन्हें कोई टोक नहीं सकता था। माँ पक्ष लेती किन्तु वह जानती थी ऐसा करने से पिता जी का गुस्सा और बढ़ जायेगा, कुछ देर बड़बड़ाने के बाद खुद ही शांत हो जायेंगे।

“अब इतना भी बुरा नहीं होता लेखक। पापा, आप कुछ ज्यादा ही गणित लगा लेते है। और मैं लेखन पर ही निर्भर थोड़े ही हूँ, यह तो पैशन है मेरा, शौक है। आजीविका के लिए नौकरी तो कर ही रहा हूँ ना ? लड़की वालों को नौकरीशुदा बताइये ना, लेखक क्यों बताना है आपको ?”

“देखा ? खुद को ही बुरा लगा ना लेखक कह दिया तो ?” पिताजी ने उसे और चिढ़ाया।

“अभी इतनी जल्दी क्यों है आपको मेरी शादी की ? अभी मुझे सैटल तो होने दो ?” मानव उनकी बात को नजरंदाज करके झुंझलाते हुए बोला, कहाँ वह प्रशंसा सुनने के लिए आया था और कहाँ उसे झिड़कियां मिल रही थी।

“तीस साल का होने वाला है, दो बड़े भाइयों के बच्चे भी दस-पन्द्रह साल के हो गए है, अब क्या बुढ़ापे में शादी करेगा ? दाढ़ी बढ़ा रखी है, दाढ़ी के बाल तक पकने लगे है अब तो तेरे। सैटल होने की बात ही मत करो साहब जी, एक साल में चार-चार नौकरियां बदल रहे हो , एक जगह टिको तो ना सैटल होगे ? लेखन पैसन है इनका, बेटा जब भूख लगेगी ना तब पैसन से पेट नहीं भरेगा, तब खाना ही भूख मिटाएगा। और उसके लिए जेब भरी होनी चाहिए। जो की तुम्हारी होती नहीं। कहने को बैंगलोर में काम कर रहे हो लेकिन गनीमत जो एक पैसा भी बच जाता होगा तुम्हारा। उलटे घर पर चार पैसे देने की उम्र में घर से ही पैसे भेजने पड़ते है तुम्हारे खर्चे के लिए। कभी भविष्य के विषय में भी सोच लिया करो बेटा। समय रहते चेत जाओ। और एक अहसान करना बेटा, ये किताबें विताबें मुझे ना दिया करो, मेरी छाती पर सांप लोट जाता है।” भुनभुनाते हुए पिताजी अपने कमरे में चले गए। ट्रेन आने की उद्घोषणा से मानव की तन्द्रा भंग हुई, उसने अपनी आँखों के कोनों में गीलापन महसूस किया, उंगलियों से उसने गालों पर बहने से पहले ही आंसुओं उत्पन्न हुई बूंदों का निशान मिटा दिया। ट्रेन प्लेटफॉर्म पर लग चुकी थी, मानव ने अपना बैग सहेजा और कंधे पर टांग कर बोगी में प्रवेश कर गया। अपनी सीट पर पहुँचते ही उसने बैग को ध्यान से सीट के नीचे खिसका दिया और बैठ कर ट्रेन के चलने की प्रतीक्षा करने लगा।

□□□

यात्रा आरंभ

विनय रेलवे का सुप्रसिद्ध खाना खाने के बजाय फल फ्रूट्स खाकर गुजारा करना ही बेहतर समझता था। रेलवे के खाने का उसका पिछला अनुभव बेहद खराब रहा था। पिछली यात्रा में उसने वेज बिरयानी ऑर्डर दी थी किन्तु उसे जो बिरयानी मिली थी उसमें हड्डियां थी। उसे इस बात का सख्त अफ़सोस हुआ कि उसने बिरयानी का पार्सल आधे घंटे बाद क्यों खोला था, तब तक ऑर्डर लेने वाला भी गुम हो चुका था और लापरवाही की वजह से उसने खाने का बिल तक ना लिया था। यह उसे जब पता चला जब शिकायत करने के लिए टिकट पर दर्ज नम्बर पर फोन किया। कस्टमर केयर में खाने की लापरवाही की शिकायत दर्ज कराई लेकिन उसके पास बिल ना होने के कारण कैटरिंग वाले पर कम्प्लेंट दर्ज नहीं हो पाई। कस्टमर केयर ने बस माफ़ी मांगकर सहायता करने में असमर्थता जता दी।

“भाई मैंने फलाने स्टेशन पर ऑर्डर किया था और मुझे फलाने स्टेशन पर खाना मिला था, आपके पास तो रिकॉर्ड होगा ही कि इन स्टेशन के मध्य कौन सी कैटरिंग खाना सप्लाई करती है। या आप ही करते है, और अब ठीकरा कैटरिंग वाले पर फोड़ कर अपनी जिम्मेदारी से बचना चाहते है ?” विनय ने अपना आपा खोते हुए कहा। सहयात्री चिंहुक उठे और विनय उनके आकर्षण का केंद्र बन गया, मुफ्त के मनोरंजन की आस लिए अनेक नजरें और कान विनय की ओर लगे हुए थे। विनय इन सबसे अनजान होकर बस चीखे जा रहा था।

“क्षमा कीजियेगा सर, लेकिन इस ट्रेन में पैंट्री कार नहीं है, यहाँ खाना अलग अलग स्टेशन पर अलग-अलग वेंडर्स सप्लाई करते है, इसलिए बिना बिल के हम आपकी शिकायत दर्ज करने के लिए असमर्थ है, आपकी यात्रा मंगलमय हो, धन्यवाद।” कहकर कस्टमर सर्विस ने फोन काट दिया। यह विनय के लिए पहला ही मौका था जब किसी कस्टमर सर्विस ने सामने से फोन काटा था। उसके कहे अंतिम वाक्य ने विनय का खून ही सूखा कर रख दिया।

“नॉनसेन्स ! @तिया समझ रखा है क्या यात्रियों को ? मजाक उड़ा रहे हो यात्रा मंगलमय कहकर ? @#$।@## “ विनय ने गालियों की झड़ी सी लगा दी। कुछ ही क्षणों में उसे अपनी गलती का अहसास हुआ कि वहां उसके अलावा भी अन्य यात्री उपस्थित है और फोन भी कट चुका है। लेकिन अपने स्वभावानुसार उसका गुस्सा काबू के बाहर था। किसी तरह से उसने स्वयं पर नियंत्रण पाया। ऊपरी सीट पर बैठा एक अधेड़ व्यक्ति बड़ी अजीब नजरों से विनय को देख रहा था। विनय उसे इस प्रकार अपनी ओर देखता पाकर झल्ला उठा।

“तमाशा लगा रखा है क्या ? मजा आ रहा है आप लोगों को ?” वह तीव्र स्वर में बोला तो वह व्यक्ति गड़बड़ा गया, बाकियों ने भी फौरन अपनी नजरें फेर ली और फिर से अपने फ़ालतू क्रिया कलापों में व्यस्त हो गए।

“जी ! आपको नॉन वेज बिरयानी मिली ना ?” ऊपरी सीट के व्यक्ति ने सकुचाते हुए प्रश्न किया।

“जी !” विनय ने भरसक शांत रहने का प्रयास किया, जबकि वह जानता था कि उस व्यक्ति को तो क्या अब तक सम्पूर्ण बोगी को यह बात पता चल चुकी थी।

“जी मैंने नॉनवेज बिरयानी ऑर्डर किया था, लेकिन मुझको वेज आ गई और आपको वेज के बजाय नॉन वेज, तो क्यों ना हम बिरयानी बदल लें ?” उस व्यक्ति ने कहा। उसकी बात सुनते ही विनय का सारा गुस्सा शांत हो गया, उससे कुछ कहते ना बना। वह अपने व्यवहार

के लिए लज्जित था लेकिन क्षमा मांगने में उसका घमंड दीवार बन कर सदैव खड़ा रहता था। उसने बिन कुछ कहे ही अपना पार्सल ऊपर की ओर बढ़ा दिया। बदले में उस व्यक्ति ने अपना पैकेट विनय को सौंप दिया। विनय ने बिरयानी खोली लेकिन अब उसका मन खराब हो चुका था, उसे बिरयानी में अब भी हड्डी ही नजर आ रही थी। किसी प्रकार भूख शांत करने की गरज से उसने कांपते हाथों से एक निवाला उठाया और मुंह में डाला। निवाला मुंह में जाते ही उसका मुंह कसैला हो गया।

“न नमक का स्वाद, न मसालों का अहसास, केवल सूखा-सूखा कुछ अजीब से रंग का मिश्रण है ये तो ! ऐसा खाना खाने से बेहतर तो मैं भूखा ही रह लूँ।” उसने पैकेट दोबारा पैक कर दिया। मन तो किया के पैकेट खिड़की से बाहर उछाल दे, लेकिन वह अन्न की बरबादी के सख्त खिलाफ था। इसलिए मन मार कर बैठा रहा, अगले स्टेशन पर एक भिखारी को उसने वह पैकेट थमा दिया, और कुछ केले ले लिए, हालांकि ६५ रुपये के दर्जन केले सुनकर उसका रहा सहा खून भी जल गया।

“लूट मचा रखी है यार।” झल्लाते हुए उसने पैसे दे कर केले ले लिए। हालांकि केले भी स्वाद रहित ही निकले। मिठास का नामोनिशान तक नहीं था।

“अरे कोई चीज बची है जिसमें मिलावट ना हो ? ये भी जबरदस्ती का पकाया हुआ केला है।” वह बड़बड़ा उठा, लेकिन फिर भी उसे अब उससे ही काम चलाना था।

विनय ने सिर झटकते हुए अपने आपको पुरानी यादों से बाहर निकाला, इस बार उसने घर के सामने वाले मंडी से ही सेब, संतरे और केले लेकर रात में ही बैग में भर लिए थे। इन फलों में स्वाद था, उसकी भूख शांत हुई तो उसे कुछ ख्याल आया।

“अरे यार छह घंटे हो चुके है और मैंने अब तक सूचित ही नहीं किया किसी को। हद हो गई यार।” कहते हुए उसने अपना मोबाइल निकाला और कोई नम्बर डायल किया।

“हेल्लो मानव भाई ! मैं बोल रहा हूँ विनय।” विनय के चेहरे के भाव एकदम से बदल गए। उसके चेहरे पर एक मुस्कान थी।

“हां विनय भाई, मैं भी बस अभी ट्रेन में ही हूं। तो आप कब तक जम्मू पहुँच जाओगे ?” मानव ने प्रश्न किया।

“रात के डेढ़ बजे का समय है, आप मुझ से पहले ही पहुँच जायेंगे फिर तो ? अनिकेत को लाइन पर लो भाई, आप और हम तो बैठ चुके उनका कोई पता नहीं है अब तक।” विनय ने कहा तो मानव ने अनिकेत का नम्बर मिलान किया।

“हां मानव भाई, कैसे हैं ?” अनिकेत लाइन पर था। अनिकेत का स्वर भारी और गंभीर सा प्रतीत होता था विनय और मानव के मुकाबले।

“बस ठीक हूँ, लाइन पर विनय भाई है, हम दोनों ट्रेन में ही हैं। हमें तो समय लगेगा आप तो दिल्ली वाले ही हो। आप तो कल ही निकलोगे ?” मानव ने कहा तो अनिकेत ने विनय का अभिवादन किया।

“हाँ थोड़ा काम पड़ गया था। आप लोग बेफिक्र रहो मैं समय से पहुँच जाऊँगा।” अनिकेत का गम्भीर स्वर उभरा।

“यार ये इस तरह से मैं पहली बार किसी सफर पर निकला हूँ, हम भी इतने सालों की पहचान के बाद आखिरकार वाकई में पहली बार एक दूसरे से मिलने वाले हैं। मैं तो काफी

उत्साहित हूँ आप दोनों से मिलने के लिए, लगता ही नहीं कि हम अब तक एक-दूसरे को केवल सोशल मीडिया से ही जानते हैं।” विनय के स्वर में उसका उत्साह स्पष्ट झलक रहा था।

“हम भी उत्साहित हैं विनय भाई।” दोनों ने लगभग एक साथ ही कहा।

“ठीक है मैं थोड़ा व्यस्त हूँ, मार्किट में हूँ। आप लोग अपडेट देते रहिये समय-समय पर। बाकी योजना हम मिलकर बनाते हैं।” अनिकेत ने इतना कहकर विदा मांगी। अनिकेत अब लाइन से डिस्कनेक्ट था।

“मानव भाई ! अनिकेत जी कुछ ज्यादा ही गंभीर नहीं लगते आपको ?” विनय ने मानव से प्रश्न किया।

“यही वो आपके लिए कहते हैं।” कहकर मानव हंस पड़ा, विनय भी मुस्करा दिया।

“ठीक है! फिर हम सीधे जम्मू में मिलते हैं कल।” कहकर विनय ने भी विदा ली। और फोन जेब के हवाले कर दिया। उसने बैग की जेब से एक पुस्तक निकाल ली, पुस्तक के आवरण पर लेखक के नाम के स्थान अपना नाम देखकर उसकी आँखों में एक सुखद चमक सी उभरी, उसने अपने नाम पर हौले से हाथ फेरा और आवरण पलट कर प्रथम पृष्ठ देखा।

“पुस्तक समर्पित है मेरी पत्नी प्रीति को, जो सदैव मेरी प्रेरणा बनी है और हर कठिन समय में मेरे साथ है और रहेंगी।”

पहले पृष्ठ पर मात्र यही पंक्तियाँ थी, उसने उस पंक्ति को कई कई बार पढ़ा, छू कर महसूस किया। तब तक पढ़ता रहा जब तक कि उसकी आँख से बहता आंसू उस पृष्ठ पर न आ गिरा। उसने आंसू पोंछे और पृष्ठ पलट दिया।

□□□

“धन्यवाद मेरे माता पिता का जिन्होंने मुझे इस योग्य बनाया। वे ना होते तो मैं ना होता, मैं ना होता तो यह रचना ना होती। इस रचना के सृजन में उनका प्रेम ही है जो मुझे सदैव असीम ऊर्जा प्रदान करता है। धन्यवाद जो उन्होंने सदैव मेरा साथ दिया।”

मानव ने पुस्तक के पहले पृष्ठ पर अंकित इन शब्दों को नम आँखों से निहारा।

“काश ! मैं आपकी उम्मीदों पर खरा उतर पाता पापा।” वह अपने आप से बड़बड़ाया और पन्ना पलट दिया।

□□□

अनिकेत

दिल्ली, एक महीना पहले।

अनिकेत सुबह से ही शुरू हो गया था। उसकी बेचैनी, उसकी तड़प कोई नई नहीं थी, आज ही के दिन सात साल पहले मीरा और अनिकेत प्रणय सूत्र में बंधे थे। मीरा के जाने के बाद से ही खुशनुमा अनिकेत पुन: उसी एकांत प्रिय अनिकेत में बदल गया था, जो वह मीरा से मिलने के पूर्व हुआ करता था।

एक मीरा ही तो थी जो उसके जीवन का सबसे खुशनुमा और खूबसूरत हिस्सा थी। मीरा को गए तीन वर्ष हो चुके थे। अनिकेत बुरी तरह बिखर चुका था। उसकी दिनचर्या से ख़ुशी नाम की चीज पूर्णतया गायब हो चुकी थी। सुबह ऑफिस जाता, दिन भर अपनी क्षमता से अधिक कार्य करते हुए स्वयं को व्यस्त रखने का प्रयास करता, फिर शाम को मेट्रो में धक्के खाते हुए घर पहुँच जाता, और थक कर सो जाता, अब यही उसकी दिनचर्या थी, आस-पड़ोस वालों को उसका चेहरा देखे हुए ही अरसा हो गया था। अनिकेत कभी ऑफिस का सबसे खुशनुमा व्यक्ति हुआ करता था, किन्तु अकेला होने के पश्चात वह सबसे कटा-कटा रहने लगा, सब की नजरों में स्थित सहानुभूति उसे मीरा के ना होने का अहसास और उसकी बेचारगी दिखाती। मित्रों और सहकर्मियों ने काफी समझाया, लेकिन अनिकेत का मन हर समझ से परे था, उसका मन समझना ही नहीं चाहता था। इन बेचारगी भरी नजरों से बचने के लिए उसने अपनी मनपसन्द नौकरी तक बदल ली, नई जगह उसे दो साल से अधिक हो चुका था, लेकिन यहाँ उसने अब तक किसी से कोई मेलजोल नहीं बढ़ाया, और ना ही कभी किसी को खुद से घुलने मिलने दिया।

ऑफिस में उसकी छवि एक अक्खड़ और खडूस व्यक्ति की बन चुकी थी, जिससे कोई भी बात करना पसंद नहीं करता था, सिवाय बॉस के। वह भी इसलिए क्योंकि अनिकेत दिन भर बस काम में डूबा रहता था, बजाय बेफिजूल का समय गंवाये। वह लंच भी दस मिनट में निपटा कर पुन: काम पर लग जाता। उसने स्वयं को पूर्णतया हर प्रकार की खुशियों से दूर कर लिया था।

आज शादी की सालगिरह थी, और संयोग से आज रविवार होने के कारण ऑफिस भी बंद था, वह कल रात से ही बेचैन था, नींद नहीं आई, सारी रात बेचैनी और करवटों में ही कट गई। सुबह उठते ही उसने बालकनी में पहुँच कर सिगरेट सुलगा ली, लेकिन सिगरेट उसकी बेचैनी को कम करने के बजाय और बढ़ा चुकी थी। आखिरकार उसने व्हिस्की निकाल ली और शुरू हो गया। उसकी आँखें शून्य में ताक रही थी। हर दीवार हर कोना उसे उसके अकेलेपन का अहसास दिला रहा था। तीन वर्षों से वह नितांत अकेला था, उसे किसी से घुलना मिलना पसंद ही नहीं था, वह हर संभव अपने आप को व्यस्त रखने का प्रयास करता, लेकिन उसका हर प्रयास विफल हो जाता था। बीते कल की स्मृतियाँ व्यस्तता की हर दीवार को पार करके आखिरकार उसे घेर लेती। बरबस ही उसकी आँखें भीग उठी, आंसुओं का यदि कोई स्रोत था तो वह कब का सूख चुका था, लेकिन आज न जाने कहा से उन आँखों में पुन: झरना सा फूट निकला था।

दरवाजे की बेल ने उसे चौंकाया, उसने अपनी आँखों से बहते आंसुओं को हथेली से पोंछा। उसे किसी से मिले और किसी को उससे मिले अरसा हो गया था। उसे याद ही नहीं था कि

दरवाजे की बेल आखिरी बार कब बजी थी। वह अनमने ढंग से उठा, और दरवाजा खोल दिया। दरवाजा खोलते ही वह स्तब्ध रह गया।

कोमल ! वह कोमल थी।

“अंदर आने के लिए नहीं कहेंगे ?” कोमल ने चहकते हुए कहा। अनिकेत ने हड़बड़ाते हुये अंदर आने के लिए स्थान छोड़ा।

कोमल कुछ नहीं बोली, वह दनदनाते हुए कमरे में प्रवेश कर गई। कमरे में आते ही उसे शराब की गंध मिल गई, उसने अनिकेत की ओर देखा, अनिकेत ने शर्मिंदगी से सिर झुका लिया।

“सिगरेट भी शुरु कर दी ?” कोमल की नजरें डायनिंग टेबल पर एश ट्रे में रखी हुई बुझी सिगरेट पर पड़ी।

“वो बस कभी कभार ..” कहते कहते अनिकेत अटक गया। कोमल के अचानक आने से अनिकेत के मन में बीती बातों और उनसे जुड़ी भावनाओं का एक भंवर सा उत्पन्न हो गया था। इतने वर्षों से उसने उस तूफ़ान को अपने अंदर ही अंदर दबाये रखा था, कोमल की यादें उसके मन में कहीं भीतर तक दफन हो चुकी थी। जीवन के इस मोड़ पर आकर आज उसे अचानक कोमल से मिलने की उम्मीद बिलकुल भी नहीं थी। पहले से परेशान उसका मन इस नये मोड़ पर आकर किंकर्तव्यविमूढ़ सा हो गया था। वह जिन यादों से अब तक भागता आया था, आज कोमल उन्हीं यादों के तूफ़ान के साथ उसके सामने आ खड़ी हुई थी।

कोमल ने कमरे का हाल देखा, चद्दरें बिस्तर पर बिखरी हुई थी। अनिकेत के कपड़े अस्त व्यस्त से यहाँ-वहां टेबलों और कुर्सियों पर पड़े हुए थे। सारे कमरे में धूल सी बिखरी पड़ी थी। दीवारों के कोनों पर मकड़ियों के जाले तक पड़ चुके थे। बाथरूम से सीलन और काई की बदबू सी आ रही थी। कोमल ने एक ही नजर में कमरे की हर चीज का मुआयना कर लिया। कोमल की दृष्टि दीवार पर टंगी मीरा की तस्वीर पर आकर ठहर गई, वह एक पल को शांत हो गई, कोमल की आँखें लरज गई लेकिन उसने अपने आंसू पलकों से बाहर नहीं आने दिए। कमरे के कोने में स्थित एक छोटी सी लाइब्रेरी की ओर वह बढ़ी, लाइब्रेरी की पुस्तकें धूल खा रही थी, पुस्तकों की अलमारी से सीलन की गंध सी आ रही थी और किताबों के पन्ने पीले पड़ चुके थे।

“आपने इन्हें छुआ तक नहीं ?” अपने स्वर में आती भर्राहट को छिपाने का भरपूर प्रयत्न किया था कोमल ने। अनिकेत खामोश रहा, उसकी खामोशी ही उसका जवाब था। इस अलमारी की अधिकतर किताबें कोमल के द्वारा उपहार दी हुई थी। अनिकेत को जवाब ना देता देख कोमल ने उसे घूरा, अनिकेत किसी अपराधी की ही भांति सिर झुकाये अपने स्थान पर खड़ा रहा।

“उस सोफे पर बैठो।” कोमल ने अधिकार पूर्ण स्वर में आदेश दिया। अनिकेत यंत्रचलित सा उसके आदेश पर फौरन सोफे पर जाकर बैठ गया।” कोमल भी वहां आकर बैठ गई।

“कितने दिन हो गए नहा कर ? बदबू आ रही है आपसे।” कोमल ने नाक सिकोड़ते हुये कहा किन्तु फिर भी अनिकेत के साथ ही बैठी रही।

“द..दो दिन।” अनिकेत धीमे से बोला।

“और यह व्हिस्की कब से चल रही है ? दो बोतल चढ़ा चुके हो आप।” कोमल की नजरें टेबल पर पड़ी बोतल और गिलास पर स्थित थी।

"सुबह से।" अनिकेत किसी अपराधी के समान ही बोला। कोमल ने अनिकेत की ठोड़ी पकड़कर उसका चेहरा ऊपर किया।

"और यह अभी कब तक चलेगा ?" कोमल ने सम्पूर्ण अधिकार से कहा।

अनिकेत सिर झुकाए खामोश बैठा रहा।

"यहाँ, मेरी ओर देखकर बातें कीजिये। मेरी आँखों में आँखें डालकर, पहले की तरह।" कोमल ने गंभीर स्वर में कहा। कोमल का यह अधिकार पूर्ण स्पर्श पाकर अनिकेत के मन के कोने में दफ़न और मानो सदियों से सूखी भावनाओं की धरती पर वर्षा की बूंदों सी कुछ फुहारें पड़ी। उसने कोमल से आँखें मिलाने का प्रयत्न किया किन्तु विफल रहा। कोमल ने दोबारा जबरदस्ती नहीं की।

"आपकी आँखें बताती है आप ने नींद से अपना रिश्ता तोड़ लिया है।" कोमल ने मुसकुराते हुए कहा। यह बात और थी कि इस मुस्कुराहट में दर्द की एक लकीर स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

"मेरी आँखों को देखकर नींद से मेरा रिश्ता बता दिया। लेकिन अपनी आँखों का क्या करोगी जो पूरी कहानी बयान कर रही है ?" अनिकेत इस समय उसकी आँखों में ही देखकर बोला, कोमल की आँखों में लाली स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

"मेरे आँखों की लाली में मेरी तकलीफ देख लेती हो, लेकिन अपनी आँखों के काले घेरो में अपने रतजगे भला कैसे छुपा लेती हो ?" अनिकेत ने उसकी ओर देखते हुए कहा, अब तक सहज नजर आती कोमल अनिकेत को इस प्रकार देखता पाकर थोड़ा असहज हुई। वह जानती थी अनिकेत उसकी खोखली मुस्कान को पढ़ सकता है।

"ठीक है, अब बातें बाद में, मैं पहले भूत बंगला बन चुके इस घर की सफाई वगैरह कर के इसे इंसानों के रहने लायक बना देती हूँ।" कहकर कोमल सोफे से उठी और अस्त व्यस्त पड़ी खाली बोतलों को समेटने लगी। कमरे के कोने में मौजूद झाड़ू को उठाया और सफाई में लग गई, अनिकेत उसे रोकता लेकिन कोमल का अधिकार पूर्ण आग्रह देखकर वह सकुचाया हुआ अपने स्थान पर बैठकर उसे देखता रहा। कोमल ने मेजों एवं अलमारियों पर पड़ी वर्षों की धूल को साफ़ किया। झाड़ू से घर के हर कोने से धूल और कचरे का ढेर सा निकाल कर बीन बैग में समेट लिया। झाड़ू होने के बाद अब बारी थी पोंछा लगाने की, कोमल ने बाथरूम से एक कपड़ा पुराना कपड़ा भिगोया और फर्श को पोंछना आरम्भ कर दिया।

अनिकेत उसे एकटक देखता रह गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह उसी कोमल को देख रहा था जिसे वह जानता था, कोमल ऐसी तो नहीं थी कभी। मीरा हमेशा शिकायत करती थी कि कोमल कामचोर है, घर के कामों में कभी हाथ नहीं बटाती। मीरा की माँ हमेशा अपनी छोटी बेटी कोमल के विषय में चिंतित रहती थी कि उसे घर के काम नहीं आते और ना ही उसे सीखने में कोई दिलचस्पी थी। मीरा और कोमल कहने को सगी बहने थी किन्तु कोमल अपनी बड़ी बहन से स्वभाव में एकदम विपरीत थी। मीरा जहाँ गंभीर और जीवन के प्रति सजग थी वही कोमल एकदम अल्हड़ और बिंदास थी।

उसका खुलापन उसकी पहचान थी, अनिकेत शादी के दो वर्षों पश्चात भी कोमल से अपने शर्मीले स्वभाव के कारण कभी घुल मिल नहीं पाया और कोमल भी अनिकेत के स्वभाव को देखते हुए उसे कभी छेड़ती नहीं थी। पता नहीं क्यों लेकिन उसके मन में अनिकेत के लिए बेहद सम्मान था।

अक्सर उनकी माँ अनिकेत से कोमल के लिए कोई उसी की तरह लड़का देखने की सिफारिश करती रहती जिसे सुनकर अनिकेत झेंप जाता। सच तो यह था कि कोमल एकदम बेपरवाह थी, उसे आने वाले कल की बिलकुल भी चिंता नहीं थी। ग्रैजुएशन के बाद प्लेसमेंट द्वारा अच्छे खासे पैकेज की नौकरी मिलने के पश्चात जैसे उसके उमंगों को पर लग गए थे। अब वह आत्मनिर्भर भी थी और चार पैसे भी कमाती थी, जिससे उसका आत्मविश्वास बढ़ता ही गया। वह मॉडर्न नहीं बल्कि अल्ट्रा मॉडर्न बन चुकी थी। वह हर क्षेत्र में किसी से कमतर नहीं रहना चाहती थी, जीवन में बस आगे बढ़ना ही उसका एकमात्र उद्देश्य था। कोमल अपने जीवन के प्रति एकदम प्रैक्टिकल थी, वह भावनाओं में बहने वाली लड़की हरगिज नहीं थी।

वह दिल के बजाय दिमाग से काम लेने वाली लड़की थी। उसकी छवि एक पत्थरदिल और स्वार्थी लड़की की बन चुकी थी। लेकिन उसके अंदर भावनाओं के कितने तूफ़ान पल रहे हैं यह वही जानती थी। अनिकेत लेखक हृदय व्यक्ति था, भावनात्मक रूप से वह थोड़ा कमजोर अवश्य था किन्तु किसी को पहचानने में वह कभी भूल नहीं कर सकता था। वह जब भी कोमल से मिलता उसे ना जाने क्यों उसकी हंसी खोखली लगती, वह जरूरत से ज्यादा हंसती थी और वह उसमें छिपे किसी अनजाने से दर्द को पढ़ सकता था। इस बाबत उसने एक बार मीरा से भी उल्लेख किया था कि कोमल को कोई तकलीफ अवश्य है और वह उसे छुपा रही है, लेकिन मीरा ने इसे अनिकेत की जरूरत से ज्यादा चिंता कह कर ख़ारिज कर दिया। उसने साफ़ कह दिया कि वह मीरा को बचपन से जानती है, वह केवल दूसरों को तकलीफ दे सकती है लेकिन उसे कोई तकलीफ नहीं दे सकता।

आज उसी लड़की को देखकर अनिकेत विश्वास नहीं कर पा रहा था कि वह कोमल ही है। सही है! वक्त सब सीखा देता है। अनिकेत कोमल को अपनी ओर बढ़ता देख विचारों के भंवर से बाहर आया।

“अपनी शर्ट निकालो।” कोमल ने कहा तो अनिकेत अचकचा गया।

“क...क्या ?” वह हड़बड़ाया।

“शर्ट निकालो, बदबू आ रही है। बाकी कपड़ों के साथ उन्हें भी धो देती हूँ।” कोमल ने कहा। अनिकेत लजा रहा था।

“अरे ऐसे क्या शर्मा रहे है मुझसे ? जिम से आने के बाद हमेशा हमें ही तो अपनी बॉडी दिखाते थे आप, खैर अब आपके सिक्स पैक एब्स तो रहे नहीं तो थोड़ी बहुत शर्म को मैं समझ ही सकती हूँ। उतारिये वरना उतारने के और तरीके मुझे आते है।” कोमल ने अपना स्वर कड़ा किया जो निःसंदेह हंसी ठिठोली का ही एक भाग था। अनिकेत ने संकोच से एक-एक बटन खोला और शर्ट निकाल कर कोमल के हाथों में थमा दी।

कोमल ने ना चाहते हुए भी एक नजर अनिकेत के उघड़े शरीर को देखा। कभी यह शरीर मांसल और सुगठित हुआ करता था, अनिकेत जिम एडिक्ट हुआ करता था, लेकिन आज उसी शरीर पर कटाव के बजाय उतार चढ़ाव नजर आ रहे थे। जहाँ पहले सपाट और कसा हुआ मांसपेशियों से युक्त पेट हुआ करता था आज उसकी जगह बेढब होती तोंद ने ले ली थी। कोमल इस परिवर्तन को समझ रही थी।

“आप बहुत बदल गए हो। आप ऐसे तो नहीं थे।” आहिस्ता से कहते हुए कोमल शर्ट कंधे पर रखा।

“तुम भी तो ऐसी नहीं थी कोमल। शादी ने तुम्हें भी बदल कर रख दिया है।” अनिकेत ने कहा, साथ ही उसे अहसास हुआ कि उसने कोमल की दुखती रग को छू दिया है।

“इंसान हूँ आखिरकार ! बदल देता है वक्त हर चीज को। मुझे शादी ने नहीं बदला, मुझे बदला है वरुण ने।” कोमल की आँखों में नमी सी छलक आई। लेकिन उसने आंसुओं को बाहर आने का रास्ता ही नहीं दिया और कपड़ों का ढेर लिए बाथरूम की ओर बढ़ गई।

वह यही तो करती थी, कभी रोती नहीं थी, अपनी खोखली हंसी के पीछे ना जाने दर्द के कितने सैलाब उसने छिपा रखे थे। वह कभी किसी के सामने कमजोर नहीं दिखना चाहती थी, भले वह अंदर से घुटती रहे, टूटती रहे, बिखरती रहे। अनिकेत ही एक मात्र व्यक्ति था जो कोमल की मनोदशा बहुत पहले समझ चुका था।

अनिकेत शर्मिंदा था, जाने अनजाने उसने कोमल का दिल दुखा दिया था। हंसती खेलती और चुलबुली सी थी कोमल उसके सामने। अपनी शादी में वह किसी परी सी कमतर नहीं लग रही थी, खुद अनिकेत ने मीरा की आँख का काजल निकाल कर कोमल के गाल पर टीका करके उसकी नजर उतारी थी। उसे आज भी याद था कोमल सबसे अधिक उसी के सीने से लगकर रोई थी, वह कोमल जो कभी किसी के लिए आंसू नहीं बहाती थी। उसने सबसे ज्यादा आंसू अनिकेत के सीने से लगकर बहाए थे। ऐसा होता भी क्यों ना? आखिरकार अनिकेत के रूप में उसे एक अच्छा दोस्त मिला था, अनिकेत से उसका रिश्ता जीजा साली के बजाय एक मित्र का था, एक ऐसे दोस्त का जिससे वह अपनी हर ख़ुशी बाँट सकती थी, लेकिन तकलीफों की भनक तक न लगने देती। उसे बेचारगी में जीना पसंद नहीं था और वह नहीं चाहती थी अनिकेत उसे कभी सहानुभूति की नजरों से देखे।

शादी उसकी पसंद से ही हो रही थी, वरुण से उसकी डेढ़ साल पहले एक बिजनेस मीटिंग में मुलाकात हुई थी, चंद मुलाकातों के बाद ही दोनों अच्छे दोस्त बन गए और दोस्त से कब इतने करीब आ गए उन्हें पता ही नहीं चला। कोमल ने यह बात सबसे पहले केवल अनिकेत को बताई थी और उसे ही घर वालों को मनाने का जिम्मा दिया था। वह अनिकेत पर भरोसा करती थी, और उसकी वजहें भी थी। मीरा को भी कोमल और वरुण के रिश्ते के संबंध में अनिकेत से ही पता चला।

वरुण से कोमल ने बहुत सी उम्मीदें बाँध रखी थी, और किसी से आवश्यकता से अधिक उम्मीदें बाँधना भी दुःख ही देता है। वरुण कोमल की उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा और ना ही उसकी उम्मीदों पर कोमल। दो साल तक बोझिल से रिश्ते को ढोने के बाद आखिरकार सात जन्मों का वह रिश्ता मात्र तीन शब्दों में समाप्त हो गया। कोमल और वरुण का ‘तलाक’ हो गया।

अनिकेत ने कोमल को आखिरी बार शादी में ही देखा था उसके बाद से कोमल बस उसकी प्यारी यादों में उसके साथ थी। शादी और तलाक होने के इन सालों में कभी उसने कोमल से सम्पर्क करने का प्रयास नहीं किया और ना ही कभी कोमल ने उससे सम्पर्क किया। किन्तु आज अचानक से कोमल ने आकर उसके सामने भावनाओं का एक बवंडर सा उत्पन्न कर दिया।

“उफ्फ कोमल बड़ी मुश्किल से भूला था तुम्हें। तुम आज फिर क्यों आ गई ?” अनिकेत मन ही मन कह उठा।

"आपने भुला दिया लेकिन मैं आपको कभी भूल ही नहीं पाई।" कोमल के मन में अलग द्वंद चल रहा था। दोनों सम्पूर्णता के पश्चात भी अधूरे थे।

□□□

जम्मू आगमन

विनय लगभग पौने दो बजे रात जम्मू स्टेशन पर पहुँच चुका था। जम्मू आने के कुछ स्टेशन पहले ही उसे किसी सहयात्री द्वारा पता चल गया था कि वहां प्रीपेड नम्बर काम नहीं करते। विनय यह सुनकर एकदम से घबरा गया था, उसने फौरन अनिकेत और मानव को फोन करके इस विषय में बता दिया था, संयोग से तीनों के पास दूसरे नम्बर थे और संयोग से वे पोस्टपेड ही थे। उन्होंने एक दूसरे के पोस्टपैड नम्बर भी नोट कर लिए। मानव थोड़ा जल्दी पहुँच गया था। विनय ने बोगी से उतरने के पहले ही बैग से जैकेट निकाल कर पहन लिया था, हालांकि अभी इतनी ठंड भी नहीं थी लेकिन हवा में हल्की सी सिहरन अवश्य थी। विनय को जम्मू उम्मीद के मुताबिक़ ठंडा नहीं लगा, उसे थोड़ी निराशा सी हुई। उसने मोबाइल निकाला और मानव का नम्बर डायल किया।

"मानव भाई ! हां मैं स्टेशन पर पहुँच गया हूँ। क्या कहा ? बाहर आना है ? ठीक है आ रहा हूँ।" अपना बैग कंधे पर लादे बाकी यात्रियों के साथ विनय स्टेशन के बाहर आ पहुंचा, उसे इस समय तीव्र लघुशंका की इच्छा हो रही थी, लाख खोजने के बावजूद उसे स्टेशन परिसर में कोई मूत्रालय नहीं मिला था। अब उसकी चिर परिचित झुंझलाहट उस पर पुन: अपना असर दिखाने लगी थी।

"इतना बड़ा स्टेशन है, इतने टूरिस्ट आते है। लेकिन परिसर में एक ढंग का टॉयलेट तक नहीं है।" वह झुंझलाता रहा और मानव को पुन: फोन लगाया।

"भाई कहां हो ?"

"यहाँ आओ जहां स्टेशन पर जम्मू तावी नाम लिखा है, सबसे ऊपर बाहर आते ही। वहीं खड़ा हूँ।" मानव ने कहा।

किसी तरह से पूछते-पाछते विनय आखिरकार उस जगह पहुँच ही गया। वहां मानव कंधे से बैग लटकाए खड़ा था। दोनों ने एक-दूसरे को पहचान लिया। दोनों कभी प्रत्यक्ष मिले नहीं थे, बस सोशल मीडिया के कुछ ग्रुप्स और साहित्य से जुड़ाव के कारण ही एक-दूसरे से परिचित थे, अनिकेत भी इन्हीं की तरह एक समूह का हिस्सा था। एक ही विचारधारा, शौक, पसंद, नापसंद के कारण तीनों की आपस में खूब पटती थी। फेसबुक से नम्बर शेयर करके तीनों अब एक दूसरे से सीधे फोन से भी सम्पर्क करने लगे थे। यह आज प्रथम अवसर ही था, चार साल की जान पहचान के पश्चात आज प्रथम बार दोनों एक दूसरे के सामने थे। विनय ने पूरी गर्मजोशी के साथ मानव को गले लगाया। मानव भी उसी गर्मजोशी के साथ मिला। विनय लगभग छह फीट लम्बा और कसरती शरीर का मालिक था उसके मुकाबले मानव अभी बच्चा ही लगता था। मानव कद में विनय के लगभग कंधे तक ही था, विनय जहाँ क्लीन शेव्ड और छोटे बाल रखना पसंद करता था वही मानव हल्की बिखरी दाढ़ी और घुंघराले बाल में ज्यादा फबता था। व्यक्तित्व के मामले दोनों एक दूसरे के एकदम विपरीत ही लग रहे थे।

"भाई आप तो एकदम लम्बे और हट्टे-कट्टे हो, मिलिट्री कट बालो में एकदम कोई फौजी प्रतीत होते हो आप तो।" मानव ने विनय को पहली बार सामने देखा था,

"सोशल मीडिया पर हालाँकि तस्वीरों में आपको अनेक बार देख चुका हूँ, लेकिन प्रत्यक्ष में आप तस्वीर से कही ज्यादा चौड़े और प्रभावशाली लगते हो। सोशल मीडिया पर जहाँ जहाँ आप काफी सौम्य व्यक्तित्व के स्वामी लगते हैं, वहीं प्रत्यक्ष में काफी सख्त और गंभीर प्रतीत हो रहे है।" मानव थोड़ा सकुचाते हुए बोला और हंस दिया।

“यही बात मैं भी कहना चाहता था। तस्वीर में तो यार आप भी कोई दढ़ियल और गंभीर बुद्धिजीवी टाइप प्रतीत होते है, किन्तु असल में आप बड़े मस्तमौला हो भाई।” विनय मुस्करा दिया, हालांकि उसे इस समय टॉयलेट की सख्त आवश्यकता थी।

“अनिकेत सुबह छह बजे पहुंचेंगे। अभी पौने दो बज रहे है, कोई होटल वगैरह कर लेते हैं। फ्रेश हो जायेंगे, एक तो कब से सुसु लगी हुई है और साला यहाँ एक शौचालय तक नहीं मिल रहा है।” विनय थोड़ा सा झल्लाया।

“मैंने स्टेशन परिसर में पता किया था। यहाँ होटल्स महंगे है, बाहर निकलते हैं। हमें कौन सा चौबीस घंटे के लिए बुक करना है। सुबह तक ही चाहिए तो कोई भी सस्ता सा कमरा कर लेते है।” कहते हुए मानव स्टेशन के बाहर की ओर यूँ चल पड़ा मानो वह वहां का परिचित हो।

“आप यहाँ पहले भी आये हुए जान पड़ते हैं।” विनय ने प्रश्न किया और मानव के साथ चलने लगा।

“मैं पिछले दो-तीन घंटे से यहीं हूँ, इसलिए खाली बैठने के बजाय स्टेशन परिसर ही घूम रहा था। होटल्स के रेट पता कर रहा था। सामने एक होटल है उससे बात कर रखी है। बारह सौ बोल रहा है, क्या कहते हैं ?” मानव ने विनय की राय जाननी चाही।

विनय इस समय और भाव ताव वाले होटलों के चक्कर में नहीं पड़ना चाहता था, एक तो रात के सवा दो बज रहे थे, दूसरा अब उसे ठंड महसूस होने लगी थी और तीसरा सबसे बड़ा कारण उसका बाँध कभी भी टूटने को था। उसे मूत्रालय की सख्त आवश्यकता थी। कोई और समय या हालात होते तो वह और होटल्स में रेट जरूर पता करता। लेकिन दोनों की पार्टनरशिप में बारह सौ रुपये भी कुछ इतना महंगा सौदा नहीं था। उसने सिर हिला कर हामी भर दी और मानव के पीछे हो लिया।

“मानव भाई मैं पहली बार किसी होटल में रुक रहा हूँ।” विनय ने कहा।

“नहीं यह कोई ऐसा अपराध नहीं है जिसे माफ़ न किया जा सके।” मानव ने कहा और मुस्करा दिया।

“वैसे मैं भी पहली बार ही रुक रहा हूँ, तो मुझे भी कुछ ख़ास जानकारी नहीं है।” मानव ने कहा, वे अब होटल के काउन्टर पर थे। कुछ खानापूर्ति करने के पश्चात उन्हें अपने कमरे की चाभी मिल गई। एक कर्मचारी उन्हें कमरे तक पहुंचा गया।

कमरा दो या तीन लोगों के हिसाब से शानदार ही कहा जाएगा, एक डबल और एक सिंगल बेड, एक सोफा, कोने में एसी लगा हुआ था जिसका इस मौसम में कोई ख़ास उपयोग नहीं था। दीवार पर बत्तीस इंची टीवी लगी हुई थी जिससे अमूमन किसी यात्री या ठहरने वालों को कोई मतलब नहीं होता।

विनय ने अपना बैग पटका और फौरन बाथरूम की ओर दौड़ पड़ा। थोड़ी देर बाद वह बाहर आया। अब उसके चेहरे पर सुकून था। दोनों ने अपने कपड़े बदले और अब बेड पर बैठे थे।

“तो योजना क्या है ?” विनय ने मानव की ओर देखा।

“जैसा हम तीनों का तय हुआ था, हर किसी की एक अलग योजना होगी, मेरी योजना वैष्णो देवी जाने की थी, इसलिए हम सबसे पहले यहीं मिल रहे हैं। चूंकि हमें सुबह अनिकेत के आने के बाद ही निकलना है, और अनिकेत नौ बजे के पहले नहीं आएंगे तो हम तब तक सो लेते है, मेरे हिसाब से फ़िलहाल इससे बेहतर योजना और कोई हो ही नहीं सकती।” मानव हंस दिया।

“अबे यार ! मैं गंभीर हूँ, सीधे सीधे बताओ।” विनय ने कहा।

“अनिकेत के आने के बाद हम यहाँ से कटरा के लिए बस करेंगे। वहां भी हमें किसी होटल में रुकना पड़ेगा, अपने बैग्स वगैरह रखकर नहा धो कर, कुछ खा पीकर हम वैष्णो देवी की यात्रा आरंभ कर देंगे और रात तक वापस होटल में आ जायेंगे और दोपहर में निकल लेंगे दिल्ली के लिए। दिल्ली पहुँचने के पश्चात मेरी योजना समाप्त और तुम्हारी योजना आरंभ होगी।” मानव ने कहा और रजाई ओढ़ ली।

“ठीक है, अभी पौने तीन बज रहे है, हम सो जाते हैं। सुबह का अलार्म लगा दो, हम यहीं से तैयार होकर अनिकेत के साथ निकल लेंगे, वैसे भी हमें कल पूरा दिन आराम नहीं मिलने वाला है। सुना है कुछ पन्द्रह सोलह किलोमीटर की पैदल चढ़ाई है वैष्णो देवी की ?” विनय भी अब लेट चुका था। वह पहली बार किसी होटल के बिस्तर पर था, स्प्रिंग और फोम वाले मोटे गद्दे पर लेटने का यह उसका पहला ही अनुभव था। वह एकदम से मानो धंस सा गया, लेकिन उसके थके शरीर को आराम मिला।

मानव तकिये पर बेचैनी से मचल रहा था, कभी इस करवट तो कभी उस करवट हो रहा था।

“क्या हुआ मानव भाई? बोले नहीं कुछ।” विनय ने उसकी ओर देखते हुए कहा। मानव ने वहां रखे एक्स्ट्रा तकिये को अपने तकिये पर रख लिया।

“अबे यार, ये क्या भर रखे है तकिये में ? साला दिखने में इतने मोटे-मोटे है लेकिन सर रखते ही चपाती की भांति पतले हो जा रहे है, सर जहां घुमाओ वहीं धंस जाता है, एक जगह स्थिर हो ही नहीं पा रहा।” मानव को तकिये और गद्दे दोनों बेचैन कर रहे थे।

“वैसे मुझे पक्का पता नहीं है, मैं भी पहली बार ही आया हूँ।” मानव ने विनय के प्रश्न का उत्तर दिया।

“कोई बात नहीं, हम तीनों बातों बातों में यूँ ही पार कर लेंगे। और तकिये से खेलना बंद करो यार, एक काम करो उस तकिये को मोड़ लो, डबल होकर सख्त हो जायेगा और सर भी स्थिर रहेगा। अनिकेत ने कहा और सिरहाने लगे हुए बटन से बल्ब ऑफ़ कर दिया। केवल कोने में एक धीमा नाइट बल्ब जल रहा था अब, मानव ने तकिये को फोल्ड किया और वाकई यह तरीका काम आया। तकिया अब कुछ हद तक सख्त हो चुका था।

“अरे वाह यह आयडिया काम कर गया, नर्म तो अब भी है लेकिन अब पहले से बेहतर है, चलिए फिर अब सोते हैं, गुड नाइट विनय भाई।” मानव ने विनय से कहा, जिसके प्रत्युत्तर में विनय ने ‘हम्म्म’ कहा, जो के उसके उनींदे होने की चुगली कर रही थी। मानव ने भी आँखें मुंद ली, थके होने के कारण कुछ ही मिनटों में वह नींद की आगोश में समा चुका था।

□□□

अनिकेत सुबह साढ़े छह बजे जम्मू तावी स्टेशन पहुँच गया था। उसने उतरने के पश्चात थोड़ा सा चाय नाश्ता किया और फिर सात बजे के आसपास मानव को फोन लगाया। मानव ने अपने होटल की जानकारी अनिकेत को पहले ही दे दी थी। अनिकेत स्टेशन से बाहर के परिसर की ओर बढ़ गया, लोगों से पूछते-पाछते वह अब उसी होटल के समक्ष खड़ा था। उसने दुबारा फोन किया जिसे विनय ने रिसीव किया।

“आ रहे है अनिकेत भाई ! बस चेक आउट ही कर रहे हैं हम, आप अभी कहाँ हैं ?।” विनय ने कहा

“होटल के सामने ही खड़ा हूँ।” अनिकेत ने जितना पूछा था उतना ही बताया। विनय ने फोन रख दिया और कुछ ही देर में अनिकेत ने दोनों को गेट से बाहर निकलते हुए देखा। अनिकेत ने उन्हें देखकर पूरी गर्मजोशी से हाथ हिला कर अभिवादन किया, मानव और विनय तेज क़दमों से चलते हुए अब अनिकेत के सामने पहुँच गए थे।

“आखिरकार, हम मिल ही गए।” मानव चहका। अनिकेत उन दोनों को पहली बार ही देख रहा था और यही बात उन दोनों पर भी समान रूप से लागू हो रही थी। अनिकेत ने अभिवादन हेतु हाथ आगे बढ़ाया जिसे विनय ने परे हटा दिया और अनिकेत के गले लग गया।

“भाई हम तो दोस्तों से ऐसे मिलते है, हाथ वगैरह मिलाने की औपचारिकता हमसे ना हो पाती।” विनय ने कहा तो अनिकेत भी मुस्करा दिया, उसे विनय का यह अपनापन पसंद आया।

“अरे भाई खड़े खड़े यही शाम कर दोगे क्या ? चलो अभी हमें कटरा भी पहुंचना है, यहाँ से लगभग चालीस या पैंतालीस किलोमीटर है।” मानव ने कहा।

“अरे तो यहाँ से ट्रेन होगी ना कटरा तक ? वही से चलते है।” अनिकेत ने सुझाव दिया।

“अरे मालिक! आप तो दिल्ली से आ रहे हैं, हम और विनय भाई मुंबई और पटना से आ रहे हैं, ट्रेन में बैठे बैठे गद्दियाँ छिल गई हमारी भी और सीट की भी। अब थोड़ा रास्तों से भी बढ़ लिया जाए, रिफ्रेशमेंट हो जायेगा और वादियाँ भी देख लेंगे इसी बहाने।” मानव ने अपना बैग कंधे पर टांगते हुए कहा, तीनों में एक ही बात समान थी, वो थी उनके बैग्स। तीनों के पास रकसैक ही थे, जो यात्रा और भाग दौड़ के लिए सूटकेस या एयरबैग से कहीं ज्यादा सुविधाजनक थे।

“ठीक है, जम्मू और माता वैष्णो देवी की यात्रा मानव के जिम्मे है, वही यहाँ के कर्ता धर्ता है। तो भाई हम आपके ही अनुसार चलने वाले हैं। लो किया मैंने खुद को, हो!! किया मैंने खुद को मानव के हवाले !!” अंतिम पंक्तियों में अनिकेत ने आश्चर्यजनक रूप से गाने का मुखड़ा ही गा दिया। मानव और विनय दोनों अनिकेत की इस हरकत पर चौंक गए, उनके लिए अनिकेत अभी तक टीम का सबसे गंभीर सदस्य था, लेकिन अनिकेत ने आते ही उनकी गलतफहमी दूर कर दी।

“अरे भाई क्या हुआ ? माना के बेसुरा हूँ, लेकिन इतना बुरा भी नहीं गाता।” कहकर अनिकेत ने ठहाका लगाया। मानव ने दोनों को अपने पीछे आने का संकेत किया और स्टेशन परिसर के बाहर खड़ी बसों के झुण्ड की ओर बढ़ा।

एक भी बस वहां से हिल नहीं रही थी। तीनों को थोड़ी हैरानी हुई, मानव माजरा जानने के लिए एक कोने में खैनी रगड़ते ड्राइवर्स की टोली की ओर बढ़ा और कुछ ही देर में वापस भी आ गया। उसका मुंह लटका हुआ था जिसे देखकर विनय और अनिकेत दोनों के माथे पर चिंता की रेखाएं स्पष्ट दिखाई देने लगी। उन्होंने मानव की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

“भाई मुख्य मार्ग पर कहीं किसी बात पर विरोध प्रदर्शन हो रहा था, टायर वगैरह जलाये गए है। इसलिए एक भी बस नहीं जा रही, मार्ग बंद है।” मानव के स्वर में उसकी हताशा स्पष्ट झलक रही थी।

“अरे यार ! हमारी ट्रिप का पहला पड़ाव है यह, और शुरुआत में ही यह परेशानी ? हद है, अच्छी बोहनी हुई। अब देखना पूरी यात्रा में मुश्किलें आती रहेंगी। यार लोगों को आखिर क्या परेशानी है ? बीच सड़क पर टायर जलाने से क्या मिल जाएगा ? सैकड़ों लोगों को परेशानी

में डालकर भला इनका साध्य हो जायेगा ? बेवकूफ लोग हैं, गैर जिम्मेदाराना हरकतें, कैसे नागरिक हैं ये ? कॉमन सिविक सेन्स नहीं है लोगों में, सबको सुविधा चाहिए लेकिन जब कुछ बनेगा तब भी तोड़ फोड़ में यही आगे रहेंगे। हर चीज मुफ्त में चाहिए सबको, कहाँ से आते हैं ये लोग।" विनय अपने चिर परिचित झुंझलाते अंदाज में बोला, वह और बोलता किन्तु मानव और अनिकेत को खुद की ओर किसी अजूबे की तरह देखते हुए वह अचकचा कर शांत हो गया।

"भाई ! कहाँ से शुरु हो कर कहाँ पहुँच रहे हो आप ?" अनिकेत हंस पड़ा। खुद विनय को भी अपनी बेसिर पैर की बातों पर हंसी आ गई, मानव भी बेमन से हंसा, कोई और क्षण होता तो वह भी खुलकर हंसता लेकिन इस समय उसे किसी भी हाल में कटरा पहुंचने की व्यवस्था करनी थी। वह उन्हें हंसता छोड़ बैग सम्भाले पुन: ड्राइवर्स के झुण्ड की ओर बढ़ गया। कुछ ही देर में वह वापस आया, उसके चेहरे पर इस समय प्रसन्नता के भाव थे, जिसे देख कर विनय और अनिकेत को सकारात्मक भाव उभरे।

"एक चाचा जी है, उनकी कैब है, वे कटरा ही जा रहे हैं, वो हमें पहुंचा देंगे।" मानव ने कहा।

"कितना ?" अनिकेत ने किराया पूछा।

"छह सौ में बात तय हुई है। और चालीस से पैंतालीस किलोमीटर देखते हुए ठीक ही है, दो सौ के आसपास रुपये पर हेड पड़ेगा। बोलो क्या कहते हो ?"

"कम नहीं हो सकता क्या ?" विनय बोला।

"आठ सौ से नीचे ना आ रहे थे चाचा जी। किसी तरह मनाया हूँ भाई, दो ही ऑप्शन है, या तो ट्रेन से चलते हैं या फिर बैठे रहते हैं रास्ता खुलने तक। लेकिन उसमें भी दोपहर हो जाएगी, और दोपहर में जायेंगे तो यात्रा शाम को आरंभ करेंगे। लगभग पन्द्रह किलोमीटर जाना और आना है। आकर थोड़ा आराम भी तो करना है। और कल शाम की ही वापसी टिकट है हमारी दिल्ली की, तो मेरे ख्याल से हम समय खराब नहीं कर सकते।" मानव एक ही सांस में सब बोल गया, उसकी बात उचित थी, वैसे भी दो सौ रुपये कुछ ज्यादा नहीं थे। अनिकेत और विनय दोनों ने हामी भर दी, उनके हां भरते ही मानव ने ड्राइवर की टोली में खड़े व्यक्ति को संकेत किया। वो पचास या पैंतालीस के आसपास का अधेड़ था, काले सफ़ेद मटमैले बालों की खिचड़ी सी बनी हुई थी, चेहरा क्लीन शेव्ड कर रखा था लेकिन सफ़ेद दाढ़ी के छोटे छोटे बालो से पूरा चेहरा खुरदुरा सा दिखाई दे रहा था।

अपने मफलर को कान के चारों ओर लपेटते हुए एक कोने में पार्क अपनी गाड़ी की ओर बढ़ा और कुछ ही देर में गाड़ी उनके सामने आकर खड़ी थी। तीनों ने अपने अपने रकसैक डिक्की में रखे। मानव लपककर ड्राइविंग सीट की बगल वाली सीट पर जा बैठा, अनिकेत और विनय उसका यह बचपना देख कर मुस्करा दिए। गाड़ी में आगे वाली सीट और ट्रेन में विंडो वाली सीट का मोह आदमी का मरते समय तक पीछा नहीं छोड़ता, मानव भी उसमें अपवाद नहीं था। दोनों अब गाड़ी में बैठ चुके थे।

"बोल सांचे दरबार की ...." मानव ने उद्घोष किया।

"जय !!!" अनिकेत और विनय के साथ ड्राइवर चाचा का भी सम्मिलित जयकारा गूंज उठा।

"बोलो अम्बे माता की ..." अनिकेत की बारी।

"जय !!!" तीनों का सम्मिलित स्वर।

"जयकारा शेरावाली का!!!" विनय लगभग गला फाड़कर चीखा, उसकी चीख इतनी तेज थी कि वहां तैनात सेना के जवान तक उनकी ओर देखने लगे। विनय को कोई फर्क न पड़ा और वे तीनों गाड़ी में बैठ गए।

चाचा ने गाड़ी में बने हुए मंदिर में पूर्ण श्रद्धा से हाथ जोड़े। वहां वैष्णो देवी की एक तस्वीर लगी हुई थी, जिसपर ताजे फूल अर्पण किये हुए थे। ड्राइवर ने गाड़ी स्टार्ट की और इसी के साथ गाड़ी स्टेशन परिसर से बाहर निकल पड़ी। तीनों उत्सुकता से सड़कों को देख रहे थे, उन्हें घाटियों, पहाड़ियों एवं ऊँचे पर्वतों की उम्मीद थी लेकिन वो तुरंत दिखाई नहीं देने से वे थोड़े निराश हो गए। लेकिन थोड़ी ही देर में उनकी गाड़ी घाटियों में बने टेढ़े मेढ़े रास्तों पर दौड़ने लगी, ठंडी हवा के झोंको से तीनों सिहर उठे लेकिन ड्राइवर को मानो कोई फर्क ही नहीं पड़ रहा था।

अब विशालकाय पर्वत एवं घाटियों की श्रृंखलाएं आरम्भ हो चुकी थी। तीनों मंत्रमुग्ध से देखते रहे।

"अच्छा चाचा जी एक बात बताओ ! वैष्णो देवी में बर्फ गिरती है क्या ?" मानव ने कौतुहलता से पूछा।

"हाँ ! लेकिन जनवरी या फरवरी में ज्यादा ठंड हो तो गिरती है। लेकिन अब पहले से बहुत कम हो गई है।" ड्राइवर ने अपनी नजर मार्ग से हटाए बगैर कहा।

"और इन घाटियों में कब गिरती है ?" अनिकेत ने पर्वतों को निहारते हुए पूछा।

"अगर बारिश हो गई तो कभी कभार गिरती है, लेकिन यहाँ इतनी बर्फ वगैरह नहीं गिरती जितना आप सोच रहे हैं।" ड्राइवर ने उनकी उत्सुकता भांपते हुए कहा, वह अनुभवी था इसलिए समझ गया था कि उन्हें यहाँ के वातावरण के विषय में अधिक जानकारी नहीं है और केवल जम्मू का नाम होने के कारण ये बर्फबारी की उम्मीद कर रहे हैं।

"गाना लगा दूं साहब ?" ड्राइवर ने पूछा।

"फ़िल्मी मत लगाइयेगा, माहौल जैसा है वैसा ही लगाइए।" विनय ने कहा।

"भक्ति गीत है मेरे पास, नरेंद्र चंचल और सोनू निगम के।" ड्राइवर ने कहा।

"सोनू निगम का लगा दीजिये फिर तो।" अनिकेत ने बिना समय गंवाए कहा।

"हो आये तेरे भवन, ले ले अपनी शरण !" सोनू और अनुराधा पौडवाल के भक्तिमय स्वर में वह गाना बजा, शानदार भक्ति गीत, ऊँचे पर्वत, ठंडा मौसम, उगते सूर्य की शीतल किरणें, और यह सुंदर चढ़ाई और ढलान वाला अनिश्चित रास्ता, सम्पूर्ण वातावरण ही दिव्य और भक्तिमय सा प्रतीत हो रहा था। सोनू निगम के बाद नरेंद्र चंचल के गीत भी बजे, इसी प्रकार लगभग पौना घंटा बीत गया और अचानक गाड़ी एक सीधी चढ़ाई पर जा कर रुक गई। ड्राइवर ने दो तीन बार स्टार्ट करने का प्रयास किया लेकिन विफल रहा। गाड़ी आवाज करती और बंद हो जाती, भक्ति गीत अपने आप बंद हो चुके थे।

"गाड़ी खराब हो गई साहब ! मुझे चेक करना पड़ेगा।" कहते हुए ड्राइवर ने बिना प्रतीक्षा किये दरवाजा खोल दिया और बोनट की ओर बढ़ गया।

"देखा ! वही हुआ जो कहा था।" विनय ने कहा, उसकी झल्लाहट पुन: उभरने लगी थी।

"शांत रहो भाई। यह समय झल्लाने का नहीं है, झल्लाकर कोई मतलब ही नहीं है। चलो बाहर अच्छा दृश्य है, पहाड़ और खाई दिखाई दे रही है, अवसर का लाभ उठाते है और कुछ

तस्वीरें भी खिंचवा लेते है यादगार के लिए।" मानव ने दोनों का ध्यान भटकाने के लिए कहा, वैसे भी गाड़ी ठीक होने तक दूसरा कोई रास्ता भी नहीं था। वे बीच रास्ते पर थे, जो एकदम सुनसान था, गाड़ियां पूरी तीव्रता से वहां से मानो उन्हें मुंह चिढ़ाते गुजर रही थी।

तीनों खाई के किनारे जाकर खड़े हो गए और बारी बारी से अलग मुद्राओं में तस्वीर खिंचवाते रहे। आखिरकार तस्वीरें खिंचवा कर भी वे उकता गए।

"चाचा! अरे ओ चाचा, गाड़ी बनी की नाही !" मानव देहाती टोन में बोला। ड्राइवर ने अपना मुंह बोनट से बाहर निकाला।

"साहब गाड़ी नहीं बन रही ! मैकेनिक को बुलाता हूँ।"

"मैकेनिक कब आयेगा ? कब बनाएगा ? हम कब निकलेंगे, कब पहुंचेंगे ? कब यात्रा आरंभ करेंगे ?" विनय ने स्वयं को बड़ी मुश्किल से चीखने से रोकते हुए कहा, इस प्रयास में उसके माथे की नस तक बाहर स्पष्ट दिखाई देने लगी थी।

इसी बीच ड्राइवर की जान पहचान की कुछ गाड़ियां वहां रुकती और ड्राइवर का हालचाल और गाड़ी की समस्या पूछ कर चली जाती। दो एक ड्राइवर ने उतर कर बनाने का प्रयास भी किया लेकिन वे सफल नहीं हुए। आखिरकार ड्राइवर उनकी ओर आया।

"साहब मैकेनिक आधे घंटे में पहुंचेगा! आप ऐसा करो उसकी गाड़ी में चले जाओ, अपना ही बंदा है। पैसे उसी को दे दीजिएगा, हम बाद में आपस में अपना हिसाब कर लेंगे।" ड्राइवर ने बीच का रास्ता सुझाया। गनीमत थी कि दूसरी गाड़ी का बंदोबस्त हो गया था, वरना मैकेनिक के आने की बात सुनकर विनय किसी भी क्षण फटने वाला था, उसने अपने आप को शांत करने के लिए गिनती गिनना आरंभ कर दिया। गिनती में वह ऐसा उलझा कि उसे गुस्से का ख्याल तक न आया। उन्होंने अपने बैग्स दूसरी गाड़ी की डिक्की में जमा दिए, दूसरी गाड़ी में ड्राइवर की बगल में पहले ही एक व्यक्ति बैठा हुआ था। यह देख मानव का चेहरा लटक गया, अब तीनों एक साथ पिछली सीट पर बैठे थे, गाड़ी पुन: चल पड़ी।

इस गाड़ी में नरेंद्र चंचल के भक्ति गीत बज रहे थे। कुछ ही देर में उन्हें ऊँची-ऊँची पहाडियाँ दिखाई देने लगी, वे अब कटरा पहुँच चुके थे। विनय और अनिकेत वहां से दिखाई पड़ती एक विशालकाय पर्वत श्रृंखला को मुंह बाए देख रहे थे और मना रहे थे कि मंदिर वहां न हो।

"ड्राइवर जी ! माता का मंदिर किस पर्वत पर है ?" मानव ने पूछा। और ड्राइवर ने मुसकुराते हुए उसी पर्वत की ओर इशारा किया जिस पर मंदिर ना होने के लिए अनिकेत और विनय मना रहे थे। उनके छक्के छूट गए।

गाड़ी अब चौराहे पर रुक गई थी। यह उसका अंतिम गंतव्य था, तीनों ने पैसे चुकता किये और अपने-अपने बैग्स कंधे पर टांग कर ड्राइवर को धन्यवाद किया और 'जय माता दी' का जयकारा लगाया। चौराहे के आगे छोटी बड़ी इमारतों का झुण्ड बना हुआ था, नि:संदेह उसमें से अधिकतर होटल थे।

वे मंदिर की तरफ जाने वाली सड़क पर बढ़े, जो ड्राइवर ने पहले ही बता दिया था। वहां सड़क के दोनों ओर होटल वालों के आदमी किसी खुफिया जासूस की तरह चारों ओर फैले हुए थे जो किसी भी बैग धारी को पकड़ कर अपने होटल में ठहरने का आग्रह करते। कोई दो हजार बोल रहा था कोई पन्द्रह सौ।

“आगे बढ़ते हैं ! मंदिर के जितना नजदीक होटल रहेगा उतना ही आराम रहेगा।” मानव ने ऐसे कहा जैसे वह इस सम्पूर्ण इलाके की जानकारी रखता हो। काफी दूर तक रकसैक कंधे से टाँगे चलने के कारण उन्हें इस ठंड में भी पसीने का अहसास हुआ। अनिकेत ने एक व्यक्ति को रोककर मंदिर की दूरी के विषय में पूछा। मंदिर अभी भी काफी दूर था।

“अरे यार होटल यही कर लेते है, वरना इतना चलते चलते ही थक जायेंगे और अभी तो पूरा पहाड़ चढ़ना बाकी है हमारा। होटल से ही कोई गाड़ी कर लेंगे मंदिर के गेट तक।” विनय ने सुझाव दिया, मानव ने अनिकेत की ओर देखा।

“मैं सहमत हूँ विनय भाई से। होटल कर लो यहीं पर।” अनिकेत ने समर्थन किया।

“चलिए सर, बढ़िया होटल है हमारा। सस्ते में हो जाएगा सर।” अचानक ही राह चलते एक व्यक्ति ने उनके सामने उछाल भरी, उसकी उछाल देखकर तीनों हैरान रह गए।

“यह तो एकदम जैसे किसी अंग्रेजी जासूसी मूवी का दृश्य है, जहाँ भीड़ में सीक्रेट एजेंट्स इतनी सफाई से घुल मिल जाते हैं कि पता ही नहीं चलता। अचानक से वे अपना काम करके निकल जाते हैं। ये होटल वालों के आदमी तो उन सीक्रेट एजेंट्स तक को मात दे रहे हैं।” अनिकेत ने गम्भीरता से व्यंग्य किया जिसपर दोनों के चेहरों पर हंसी आ गई।

सीक्रेट एजेंट उर्फ़ होटल वाला उसके व्यंग्य को समझ ना सका, वह बस मुस्करा दिया।

“कितना ?” मानव ने पूछा।

“चौदह सौ रुपये।” उसने कहा, तो उसने दोनों की ओर देखा।

“चौदह सौ रुपये तो बहुत ज्यादा है भाई, रहने दो हम ऊपर ही किसी डोरमेट्री में रह लेंगे, अकेले है कोई महिला अथवा परिवार तो है नहीं साथ जो होटल में रुकने की मजबूरी हो।” मानव ने भाव ताव करने के इरादे से कहा।

“भाई साहब, होटल्स में कमरे प्रति व्यक्ति के हिसाब से चार्ज किये जाते हैं, आप तीन हैं फिर भी चौदह सौ में कर रहे हैं।” होटल वाले ने उन्हें हिसाब किताब समझाया।

“अब भाई क्या फायदा चौदह सौ रुपये कर के ? हमें रुकना तो है नहीं उसमें, बस फ्रेश होकर चढ़ाई आरंभ करेंगे और सुबह ही पहुंचेंगे, तो क्या केवल चार पांच घंटे के लिए रुकने और सामान की रखवाली के चौदह सौ दे? ऊपर लॉकर की फैसिलिटी भी तो है, वही करके सामान रख लेंगे, और नहाने एवं फ्रेश होने की भी व्यवस्था है तो भाई आप रहने दीजिये, चौदह सौ रुपये हमारे लिए बहुत है।” मानव भी अब अड़ गया था, उसे उम्मीद नजर आ रही थी।

“सर जी, इतना बोझ लेकर आप वहां तक जाओगे तो पहले ही थक जाओगे, अच्छा मैं इतना कर सकता हूँ आप चार सौ रुपये कम दे दीजिये, हजार से नीचे न हो पायेगा, और अब आप भाव ताव मत कीजिए, होटल देख लीजिये बस।” होटल वाले ने हथियार डाल दिए। मानव ने बाकी दोनों की ओर देखा उन्होंने मूक सहमति दे दी, उनकी सहमति मिलते ही एजेंट दाई ओर एक गली में मुड़ गया, तीनों उसके पीछे हो लिए। वह गली उनके अंदाजे से ज्यादा लम्बी निकली, लगभग आधा किलोमीटर चलने के पश्चात वे एक कोने में पहुंचे जहां होटल एवं रेस्टोरेंट के झुण्ड के मध्य एक संकरी गली में उस होटल का प्रवेशद्वार था। कुछ ही देर में वे उस होटल में थे, उनका कमरा ग्राउंड फ्लोर पर ही था, जिसमें दो डबल बेड थे, उनके लिहाज से कमरे में काफी जगह थी, वैसे भी उन्हें बस एक ही दिन रहना था, काउन्टर पर चेक इन करके उन्हें चाभी मिल गई।

“भाई, हम यहाँ बैग वगैरह रख कर और फ्रेश होकर सीधे यात्रा आरंभ कर देंगे, आप यह बताओ यहाँ से वैष्णो देवी का प्रवेश द्वार कितनी दूर है ?” मानव ने काउन्टर पर बैठे व्यक्ति से पूछा, निःसंदेह वही मैनेजर भी था और वही रिसेप्शनिष्ट भी। उसके चेहरे की मुस्कान साफ़ तौर पर नकली प्रतीत हो रही थी।

“3 किलोमीटर है यहाँ से।” उसने मुसकुराते हुए कहा।

“हमें वहां तक पहुंचा दीजियेगा, गाड़ी आप ही करवा देना।” मानव भी मुस्कराया।

“उसके अलग से पैसे लग जायेंगे।” मैनेजर ने पूर्ववत मुसकुराते हुए कहा।

“भाई दो किलोमीटर जाने के कितने लग जायेंगे ? आप बस करवा दो बंदोबस्त, और वापसी का क्या ?” मानव ने प्रश्न किया।

“आप मेरा नम्बर ले लीजिये, फोन कर दीजियेगा गाड़ी आपको लेने पहुँच जायेगी यात्रा समाप्त करते ही, वैसे भी आपको वापसी के लिए गाड़ी की आवश्यकता सुबह ही पड़ेगी।” मैनेजर ने कहा।

“सुबह ?” अनिकेत और विनय दोनों चौंक पड़े।

“भाई अभी तो ग्यारह बज रहे हैं, हम नहा-वहा कर नाश्ता वगैरह करके बारह या एक बजे चढ़ाई आरंभ कर देंगे, कुछ ही घंटों में पहुँच जायेंगे, तो हो सकता है कि हम रात बारह बजे तक वापस आ जायेंगे।” विनय ने गणित लगाया।

“पहली बार आये हो साहब आप तो।” कहकर मैनेजर ने खींसे निपोर दिए।

“लिख के ले लो, आप सुबह से पहले वापस नहीं आ पाओगे।” मैनेजर ने इतनी दृढ़ता और विश्वास के साथ कहा कि तीनों के चेहरे का रंग फीका हो गया।

“अरे तो कोई बात नहीं, फ़िकर क्या है ? वैसे भी कल रात दस बजे की ट्रेन है वापसी की, आ जायेंगे सुबह सुबह, आराम तो फिर भी कर ही लेंगे और रास्ता तो यूँ ही कट जायेगा बातें करते करते।” मानव ने दोनों की चिंता कम करने का प्रयास किया।

“आप पहले बता दो नाश्ते में क्या है ?” मानव ने पूछा तो मैनेजर ने मेनू उठा कर सामने रख दिया।

“साहब नाश्ता नहीं, आप खाना खाकर ही जाओ, पता ही नहीं चलेगा कब पच जाएगा।” मैनेजर फिर से अपनी चिर परिचित शैली में मुस्कराया, अनिकेत उसकी अजीब सी मुस्कुराहट को बस घूरते रह गया। पता नहीं किस होटल मैनेजमेंट से उसने यह एटिकेट सिखा था।

मानव ने जल्दी जल्दी तगड़े खाने का ऑर्डर दे दिया। और कमरे की ओर बढ़ा , अचानक ही उसे कोई ख्याल आया और फिर मुड़ा।

“भाई एक काम और कर दो, हम तीनों की यात्रा पर्ची कटवा दो ऑनलाइन, उसके बगैर तो यात्रा होगी नहीं और प्रवेश द्वार पर क्या पता कितनी भीड़ हो, कर पाओगे ना ? अरे मैं भी क्या पूछ रहा हूँ। कर दो कहना चाहिए तो कर पाओगे पूछ रहा हूँ।” इस बार मानव ने खीसे निपोर दी, मैनेजर ने सिर हिला दिया, यह कोई बहुत मुश्किल काम तो था नहीं, और ना ही इसमें कोई पैसे खर्च होने वाले थे।

वहां से निपट कर तीनों कमरे में पहुंचे और अपने अपने बैग एक कोने में पटक दिए। मानव फौरन अपने नए कपड़े निकाल कर फ्रेश होने के लिए वाशरुम में चला गया। विनय और अनिकेत होटल के नर्म नर्म बिस्तर एकदम से मानो कूद कर जा चढ़े।

यहाँ ठंड महसूस होने लगी थी। अब बस उन्हें नहाने के पश्चात कपड़े बदल कर खाना निपटा कर माता के दरबार की ओर निकलना था। मानव कुछ ही मिनटों में पूरी तरह तैयार होकर बाहर आया। बाल बिखरे हुए थे।

“अरे भाई कोई तेल वगैरह लाया है क्या ? इतनी जल्दबाजी में तेल लेना भूल गया मैं।” वह हंसते हुए बोला। तो अनिकेत में अपने बैग की साइड जिप खोलकर नारियल तेल की एक छोटी बोतल निकाल कर उसकी ओर बढ़ा दी।

“तेल तो मिल गया, कोई वैसलीन वगैरह रखे हो क्या मालिक ? हमारी नाजुक त्वचा कही शुष्क न हो जाए।” मानव ने एक और फरमाइश कर दी, अनिकेत ने सिर हिला कर ना कह दिया लेकिन विनय ने अपने बैग से वैसलीन की छोटी डिबिया निकाल कर मानव की ओर बढ़ा दी।

“तुम्ही असली यार हो हमारे।” कहकर उसने नारियल तेल बालो और हाथ पैरों में चपोड़ना शुरु कर दिया।

“देखो, लगभग तेरह चौदह किलोमीटर चलना है, और उतना ही उतरना भी है। इसलिए कोई बेफिजूल सामान लेने की जरूरत नहीं है जो बोझ बढ़ाये। ठंड है लेकिन इतनी भी नहीं, एक टी शर्ट डाल लो, ऊपर जैकेट पहन लिया जायेगा, मफलर या कनटोप वगैरह है तो जेब में लिए चलो, उतरते समय रात हो जायेगी और ठंड बढ़ जाएगी तब जरूरत पड़ेगी। और यदि जूतों के बजाय कोई सैंडल या फ्लोटर पहने तो बढ़िया रहेगा और पैरों को आराम भी मिलेगा, जूते अवॉयड करो, यदि ऑप्शन है तो, वैसे भी तीस किलोमीटर चढ़ने उतरने में जूतों के कारण छाले पड़ गए तो बहुत तकलीफ होगी। मार्ग में खाने पीने के सामान की दुकानें है, तो हमें यहाँ से बेफालतू चीजें नहीं ले जानी, वही से पानी की बोतलें वगैरह ले लेंगे, खाना यहीं खा लेंगे। बाकी माता रानी के दर्शन करने के पश्चात रात का भोजन ऊपर ही निपटा लिया जाएगा, वहां काफी रेस्टोरेंट और होटल्स है। कोई शक ?” अंतिम शब्द मानव ने फौजी अंदाज में कहे।

“नो सर!” दोनों ने उसी जोशीले अंदाज में एक स्वर में कहा, उन्हें मानव की रिसर्च पर कोई शक नहीं था, जो व्यक्ति त्वचा शुष्क होने तक की बात सोच सकता था उसकी तैयारी पर अविश्वास करना मूर्खता ही थी, यह बात और थी कि वैसलीन और तेल तक का अकाल खुद उसके पास पड़ा हुआ था।

□□□

होटल वाले ड्राइवर ने अपनी कैब से उन्हें मुख्य द्वार तक छोड़ दिया और सुबह आने का वादा करके चला गया।

“यार मानव! यह ड्राइवर भी सुबह की बात इतने विश्वास के साथ कह रहा है कि हमारा तुम पर से ही विश्वास उठने लगा है, तुम बोल रहे हो आधी रात से पहले आ जायेंगे, होटल वाला बोल रहा सुबह हो जाएगी, ड्राइवर भी बोला सुबह हो जायेगी... एक मिनट।” अनिकेत ने मानव से बात करते करते ही एक घोड़े वाले भाई साहब को धर लिया।

“भाई जी अभी दर्शन करने निकले है, कब तक वापसी हो जायेगी ?” अनिकेत ने उससे प्रश्न किया।

“सुबह तो हो ही जायेगी साहब, घोड़ा कर लो सस्ते में पहुंचा देंगे।” घोड़े वाले ने लगे हाथों ग्राहक पकड़ने का प्रयास किया।

“अरे नहीं भैय्या आप जाने दो। हम पहली बार आये है तो चल कर ही जायेंगे, जय माता दी।” अनिकेत ने उससे कहा, घोड़े वाले ने प्रत्युत्तर में जयकारा नहीं लगाया और चला गया।

“अबे कम से कम जयकारे का जवाब तो दे दिया करो भाई।” यह तो अब वहां का अघोषित रिवाज सा हो गया था, आते जाते लोग जय माता दी के नारे से ही बात किया करते थे, घोड़े वाले का उत्तर न देना उसे थोड़ा आश्चर्यजनक लगा।

“भाई वो दूसरी ‘कम्युनिटी’ के है, नहीं बोलेंगे।” मानव ने अनिकेत को समझाया।

“दूसरी कम्युनिटी का क्या मतलब भाई ? रोजी रोटी तो माता रानी के कारण ही है ना ? एक जयकारे से भला क्या फर्क पड़ जाएगा ? यह तो एकदम नमकह...” मानव ने अनिकेत की बात पूरी होने के पहले ही उसका मुंह पकड़ लिया।

“भाई रहने दो, यात्रा करने आये है, वही करते है।”

“चलो अब मन बना लो, निश्चय दृढ़ कर लो कि हम सुबह से पहले नहीं आने वाले।” विनय का इतना कहना था कि एक व्यक्ति केसरिया रिबन लेकर उसके सामने आ गया, विनय और मानव ने रिबन देखने चाहे उससे पहले ही उसने तीनों के माथे पर जय माता दी के जयघोष वाले रिबन बाँध दिए।

“कितना हुआ ?” मानव ने प्रश्न किया।

“माता के दरबार में आये हो, जो समझे वह दे दो साहब।” उसने मुस्करा कर कहा।

“अरे बता दो यार, हम बहुत उच्च कोटि के काइयां है, अभी तीस रुपये धर देंगे हाथ में।” मानव ने कहा।

“दो सौ एक्कावन रुपये दे दीजिये।” वह व्यक्ति मुस्कराया।

“भाई रिबन रख लो अपनी, दस रुपल्ली की रिबन के लिए दो सौ एक्कावन रुपये।” विनय झुंझलाया।

“भाई ऐसा ना बोलो माता का प्रसाद है, ना नहीं बोलते।” उसने कहा।

“भाई ये रिबन वाला रिवाज तो माता जी ने ना आरंभ किया ? एक्कावन रुपये रखो और चलते बनो, नहीं तो उतार दो।” विनय ने कहा, उसके कहते ही मानव ने बिना उसकी मर्जी जाने एक्कावन रुपये उसके हाथ में धर दिए। वह चुप हो गया, तीनों आगे बढ़े।

“यही है, हर धार्मिक स्थल पर दस रुपये की चीज के पचास रुपये ले लेते हैं भक्ति के नाम पर। चलो कोई बात नहीं, गेट पर जांच करवा ली जाए और यात्रा आरंभ करते हैं, एक बार

फिर से यात्रा पर्ची देख लो और सुरक्षित रख लो, ऊपर जांच होगी, उसके बगैर आधे रस्ते में ही रोक देंगे।” मानव ने निर्देश दिए और मुख्य द्वार पर बने गेट की ओर बढ़ा, जांच पड़ताल के पश्चात उन्होंने गेट में प्रवेश किया। प्रवेश करते ही मानव गला फाड़ कर चीखा।

“जय माता दी।” उसके साथ अनिकेत और मानव सहित अन्य श्रद्धालुओं ने भी जय माता दी का उद्घोष किया और उनका जत्था चल पड़ा त्रिकुटा पर्वत पर।

□□□

वे सर्वप्रथम बाणगंगा पहुंचे, वह प्रवेशद्वार से कुछ ही अंतर पर स्थित था, थोड़ा चलते ही बाणगंगा का मद्धिम प्रवाह दिखा। यात्रा पथ के दोनों छोर से पहाड़ से होता हुआ एक मद्धिम झरना बह रहा था, जहां पानी का आवेग कम था, अनेक श्रद्धालु वहां स्नान कर रहे थे। यह यात्रा चूंकि मानव की जिम्मेदारी थी इसलिये उसने बाकायदा सम्पूर्ण रिसर्च कर रखी थी, मार्ग में पड़ने वाले हर पड़ाव पर वह उसे ज्ञात जानकारी प्रदान कर रहा था, सिक्योरिटी चेक से प्रवेश करते ही उसने बता दिया कि आगे सबसे पहला पड़ाव बाणगंगा ही है।

“बाणगंगा ? इसे बाणगंगा क्यों कहते है मानव भाई ?” विनय ने प्रश्न किया, उसका लगभग सम्पूर्ण जीवन ही मुंबई में बीता था, असल में वह उत्तर प्रदेश के जौनपुर से था, किन्तु सम्पूर्ण शिक्षा, दीक्षा, नौकरी सब मुम्बई में ही होने के कारण उसकी उत्तर भारत की जानकारी अपेक्षाकृत कम ही थी और यदि सही से कहा जाए तो यह उसकी पहली ट्रिप थी जहां वह किसी अनजान के साथ निकला था।

“चलो हम पहले बाणगंगा में स्नान कर लें।” मानव ने अनिकेत और विनय से बाणगंगा धारा की ओर संकेत करते हुए कहा।

“नहा कर ही तो निकले हैं होटल से ? फिर स्नान जरूरी क्यों है ?” विनय दरअसल ठंड के कारण पानी का स्पर्श करने के विचार से ही घबरा रहा था और मानव यहाँ पूर्णतया स्नान की बात कर रहा था।

“अरे भाई यहाँ की मान्यता है, जब कन्या रूपी माता, राक्षस तांत्रिक भैरव से भाग रही थी तब हनुमान जी उनकी रक्षा के लिए आये, माता ने ऊपर जिस स्थान पर भवन है वहां रुक कर तपस्या की और इस बीच हनुमान जी ने भैरव को व्यस्त रखा, जब माता की तपस्या समाप्त हुई माता ने भैरव का मस्तक ही उड़ा दिया जो भवन से तीन किलोमीटर दूर जा गिरा, मरते-मरते भी भैरव ने माता से याचना की, जिस कारण माता ने उसे वरदान दिया कि जो भी भक्त मेरे मंदिर के दर्शन करेगा उसका दर्शन तब तक अपूर्ण समझा जायेगा जब तक वह तुम्हारे मंदिर के दर्शन न कर ले। तब से जो भी भक्त वैष्णो देवी के मन्दिर जाता है, वह भैरव के दर्शन भी अवश्य करता है, भवन से भैरव मंदिर तीन किलोमीटर की सीधी चढ़ाई पर है।” मानव ने जितना पता था उतना बता दिया।

“वह सब तो ठीक है, लेकिन इसमें न तो किसी बाण का उल्लेख हुआ और ना गंगा का।” अनिकेत ने प्रश्न किया।

“वही बता रहा हूँ, भैरव से इतने दिन युद्ध में रहने के पश्चात हनुमान जी को प्यास लगी थी, उन्होंने माता को इस विषय में बताया तब माता ने बाण मार कर एक झरना निर्मित किया जहाँ हनुमान जी ने अपनी प्यास मिटाई, और माता ने वहां अपने केश भी धोये, इसलिए मान्यता है कि इस पवित्र जल में स्नान करने के पश्चात थकान नहीं होती और मंदिर जाने तक ऊर्जा और उत्साह बना रहता है।” मानव ने बात सम्पूर्ण की।

“चलो फिर, यह भी कर लेते हैं, एडवेंचर ही समझ कर।” विनय ने कहा और जल के बहाव की ओर बढ़ा, वहां इतनी ठंड के पश्चात भी अन्य भक्त स्नान कर रहे थे, जिसमें महिलाओं से लेकर बूढ़े और बच्चे तक शामिल थे।

अनिकेत ने पानी का स्पर्श किया, पानी उसकी उम्मीद से कही अधिक ठंडा था, किन्तु उसने अपने आसपास लोगों को निश्चिंत होकर स्नान करते देख कर हिम्मत करते हुए पानी के छींटे अपने मुख और हाथ पर उड़ाये।

“अनिकेत भाई तो कौव्वा स्नान करने लगे।” मानव हंसा, किन्तु उसे भी यही उचित लगा, दोनों ने अनिकेत का अनुसरण किया। अब वे अपना आंशिक स्नान निपटा चुके थे और एक बार फिर से कंठ फाड़ कर माता का जयकारा लगाया। तीनों कुछ ही देर में मंदिर की ओर जाने वाले मार्ग पर थे, मार्ग के आरंभ में काफी भीड़ थी, जिसमें घोड़े और पालकी वालों की दौड़भाग से तंगी अधिक हो रही थी। वृद्ध और कुछ महिलायें पालकियों में बैठे हुए जा रहे थे, तो कुछ घोड़ों पर बैठे बैठे ही यात्रा पूर्ण करने चल पड़े थे। मार्ग के दोनों ओर बहुतेरी दुकानें थी, जहां प्रसाद, चुनरी,पूजा साहित्य के साथ साथ फुट मसाज की मशीनें भी पचास रुपये प्रति सीजन के हिसाब से लगाई हुई थी।

“भाई मुझे तो लगा मार्ग चढ़ाई वाला है, तो यहाँ केवल श्रद्धालुओं की चहल पहल होगी, किन्तु यहाँ तो पूरा बाजार सजा हुआ है।” विनय मार्ग के दोनों ओर देखते हुए बोला, इसी बीच एक घोड़े की हिनहिनाहट उसके पीछे सुनाई दी और वह घबरा कर पीछे हट गया, घोड़ा सनसनाते हुए आगे बढ़ गया।

तीनों एक दुकान पर रुके और पानी की बोतलें खरीदी, अभी वे मुश्किल से डेढ़ ही किलोमीटर चले थे लेकिन अभी से पसीना महसूस होने लगा था, उन्होंने अपने पहने हुए जैकेट्स उतार कर कमर में लपेट लिए। मार्ग के चारों ओर स्थित विशालकाय पहाड़ों को देखकर तीनों विस्मित से थे, वे पहाड़ों के इतने समीप कभी नहीं आये थे, आज अपने सामने ऊँचे-ऊँचे गगन चूमते पहाड़ों को देखकर वे हतप्रभ से थे। दोपहर का डेढ़ बज रहा था, वातावरण धूप के बावजूद ठंडा था, किन्तु वे निरंतर चढ़ाई कर रहे थे इस कारण उन्हें ठंड महसूस नहीं हो रही थी।

“भाई यह बताओ। माता ने कन्या रुप क्यों धरा था और ये भैरव का क्या झगड़ा था उनसे ?” विनय ने समय काटने के लिए प्रश्न किया, उसी समय सामने से आते एक जत्थे ने “बोल शेरावाली मैय्या की...” जयघोष किया, जिसके प्रत्युत्तर में तीनों के मुख से अपने आप जोर से “जय!” निकल गया। हर आने जाने वाले श्रद्धालु के मुख से जयकारे गूंज रहे थे, जो थक जाते उनके जयकारे सबसे अधिक तीव्र होते जाते, इन जयकारों से उन्हें मानो कोई ऊर्जा सी प्राप्त हो रही थी, जिस कारण वे अपनी सम्पूर्ण थकान भूलकर आगे बढ़ते जा रहे थे, थकान और पसीने के पश्चात भी उनके चेहरे पर उत्साह और प्रसन्नता स्पष्ट दिखाई दे रही थी। तीनों ऐसे अनेक चेहरों को हैरानी से देख रहे थे। उन्होंने लगभग दो ढाई घंटे में तीन किलोमीटर की ही चढ़ाई पूर्ण की थी, जैसे ही वे थकते और बैठने का विचार करते वैसे कोई उनके सामने अथवा पीछे से माता के जयकारे लगा देता, और उनके पैर मानो अपने आप आगे बढ़ जाते।

“माता के बारे में अनेक मान्यतायें है, जिसमें से एक के अनुसार पंडित श्रीधर नाम के एक बड़े भक्त हुए थे, उनकी कहानी बताता हूँ।” मानव ने एक बार दोनों को देखा, उनके चेहरे के भाव बता रहे थे कि वे कथा जानने के लिए उत्सुक थे, यह उनका अब तक का निजी अनुभव

भी था कि जब भी वे उस मंदिर के विषय में कुछ जानने का प्रयास करते उनकी थकान मानो गायब सी हो जाती थी, इसलिए वे मंदिर के विषय में हर बात जानने को उत्सुक थे।

“पंडित श्रीधर माता के अनन्य भक्त थे, किन्तु वे सदैव से दरिद्र और निर्धन थे, साथ ही साथ निःसंतान भी थे, उन्हें संतान प्राप्ति की इच्छा थी। नवरात्रि पूजन के लिए उन्होंने नौ कुँवारी कन्याओं को निमंत्रण दिया, माँ वैष्णवी एक कन्या के रूप में आकर उन्हीं कन्याओं के मध्य बैठ गई। सभी कन्याये भोजन के पश्चात चली गई किन्तु वैष्णवी वहीं बैठी रही, और उन्होंने पण्डित श्रीधर को सम्पूर्ण गाँव को भंडारे हेतु निमंत्रण देने के लिए कहा। पंडित श्रीधर को इस कन्या के दिव्य होने का आभास हो गया था और उन्होंने उसकी बात मानते हुए सम्पूर्ण गाँव को निमंत्रण दे दिया। सहसा किसी को विश्वास ही नहीं हुआ कि निर्धन पण्डित भंडारे का आयोजन कर रहा है। लौटते समय गुरु गोरखनाथ और उनके शिष्य भैरव को भी आमंत्रित कर दिया। निर्धन श्रीधर गाँव में भिक्षा मांग कर किसी प्रकार से भंडारे का प्रबंध कर पाए, अनेक लोगों ने उनका मजाक भी बनाया कि निर्धन होकर भंडारे का विचार करना मूर्खता ही है, लेकिन श्रीधर को माता पर सम्पूर्ण विश्वास था।

किसी प्रकार भोजन इत्यादि की व्यवस्था होने पर उन्होंने भिक्षुओं एवं ब्राम्हणों को भोजन के लिए आमंत्रित किया, उन्हें फिर भी मन में आशंका थी कि शायद प्रबंध अधूरा रहेगा और अतिथियों को भूखा ही रहना पड़ जायेगा। गांव वासी एवं भैरव जब वहां आये तो कन्या रूपी वैष्णवी ने उन्हें भोजन परोसना आरम्भ किया, सारे गाँव वासियों को पर्याप्त भोजन मिल गया जिससे वे सभी चकित थे।

जब कन्या रूपी वैष्णवी भोजन परोसते हुए भैरव के पास पहुंची, तब भैरव ने शाकाहारी भोजन के बजाय मांस एवं मदिरा की मांग कर दी। तब कन्या ने उन्हें समझाया कि यह ब्राह्मण के घर का भंडारा है, यहाँ मांस मंदिरा का चलन नहीं है। किन्तु भैरव अपनी जिद पर अड़ा रहा, वह वैष्णवी को पहचान चुका था, और उसने उन्हें पकड़ने की चेष्टा भी की, तब भैरव को भ्रमित करके वैष्णवी वहां से त्रिकुटा पर्वत चली गई, भैरव भी उनके पीछे भागा। माता त्रिकुटा पर्वत पर एक गुफा में तपस्या में लीन हो गई, हनुमान जी उस समय भैरव नाथ के साथ युद्ध करते हुए समय बिताते रहे, तपस्या समाप्त करके वैष्णवी गुफा से बाहर निकली, तब भैरव पुन: उनकी ओर दौड़ पड़ा, माता ने उसे चेताया किन्तु वह नहीं माना तब माता ने उसका शीश काट दिया, वह शीश जहां जाकर गिरा वहीं भैरव नाथ का मंदिर है। और माता ने जिस गुफा में नौ माह तक तपस्या की उसे अर्धकुमारी या गर्भजून कहते हैं, जिस जगह भैरव का वध किया वह स्थान भवन कहलाता है।

अंतिम क्षणों में भैरव के पश्चाताप से माता पिघल गई और उन्होंने उसे वरदान दिया कि जो भी भक्त मेरे दर्शन करने आयेगा उसके लिए भैरव के दर्शन करना अनिवार्य होगा, यदि भैरव के दर्शन नहीं किये तो मेरा दर्शन विफल हो जायेगा। और माता वहां पिंडियो के रूप में ध्यान मग्न हो गई। प्रमुख गुफा में माता तीन पिंडियो के रूप में विराजमान है जिसमें दाए में माँ महाकाली, मध्य में माँ सरस्वती और बाए में माँ महालक्ष्मी विराजमान है।” इतना कहकर मानव ने एक दीर्घ श्वास ली।

“क्या यही कहानी है ?” अनिकेत ने प्रश्न किया, एक श्रद्धालु ने जयजयकार की और अनिकेत के साथ दोनों ने उसके प्रत्युत्तर में जयकारा लगाया।

“अनेक कथायें प्रचलित है, निश्चित तौर पर नहीं कह सकता, किन्तु श्रीधर और भैरव वाली कथा सर्वमान्य है। वैष्णवी जी की उत्पत्ति कथा भी अलग है जिसका उल्लेख बाद में करूंगा।” मानव ने कहा। उसे अब थोड़ी थकान सी होने लगी थी, वे लगातार कई घंटों से चलते आ रहे थे।

“वो देखो ! अभी हमने नीचे से जिन पहाड़ों को देखा था, अब हम उन पहाड़ों से भी अधिक उंचाई तक पहुँच चुके है।” विनय ने मार्ग के किनारे लगी जालियों से सामने वाली पर्वत श्रृंखलाओं को देखते हुए कहा। दोनों अचंभित से देखने लगे, उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वे इतनी उंचाई पर आ चुके हैं।

“थोड़ा सुस्ता लेते है भाई! चार बज रहे हैं अब।” अनिकेत ने मार्ग के किनारे बनी कुर्सियों की ओर संकेत किया और एक कुर्सी पर जाकर बैठ भी गया, उसकी देखा देखी दोनों भी अगल बगल में आकर बैठ गए। मार्ग में थोड़े थोड़े अंतर पर विश्राम करने के लिए कुर्सियां एवं चबूतरे बने हुए थे। और वहां अनेक श्रद्धालु विश्राम भी कर रहे थे जिनमें वृद्ध से लेकर बच्चे तक शामिल थे। तीनों अपनी हांफती साँसों से उन श्रद्धालुओं को देख रहे थे। उनमें से अधिकतर दर्शन करके लौट ही रहे थे।

“अभी और कितना ऊपर है भाई ? चार तो यहीं बज गए, कमर सीधी हो गई, जयकारे लगा कर गला फटने को हो गया।” विनय ने कहा, इस प्रश्न का सटीक उत्तर मानव के पास भी नहीं था।

“बस बेटा हिम्मत मत हारो, माता का नाम लेकर चलते रहो, पहुँच जाओगे।” एक महिला के स्वर ने उनका ध्यान खींचा, उनकी बगल वाली कुर्सी पर एक वृद्धा बैठी हुई थी। उस वृद्धा की आयु देखकर तीनों चौंक पड़े, किसी भी हाल में वो अस्सी से पिच्यासी से कमतर नहीं थी। अपनी ऐनक आँखों से हटा कर अपने मटमैले पल्लू से पोंछती उस वृद्धा ने उनकी ओर मुसकुराते हुए देखा।

“अम्मा ! आप दर्शन करके आई हैं? “ विनय ने प्रश्न किया।

“हाँ !” उसने कहाँ और मुस्करा दिया, उनकी मुस्कान किसी नन्ही बच्ची की भांति बेहद प्यारी थी। तीनों हैरान थे कि जहां उनके पैर जवाब दे चुके थे वही अस्सी साल से ऊपर की वृद्धा न केवल दर्शन करके आ चुकी थी अपितु वापसी का आधा रास्ता भी पार कर चुकी हैं, इसके पश्चात भी उनके मुख पर थकान का रत्ती भर भी भाव नहीं था।

“अम्मा ! अभी और कितनी दूर है ?” मानव ने प्रश्न किया।

“बस दो मोड़ और पार कर लो, पहुँच ही गए हो। और बेटा दर्शन करने आये हो, माता तो पहाड़ों की रानी है, थोड़ी बहुत परीक्षा तो लेंगी ही। अभी से हार मत मानो। श्रद्धा रखो, श्रद्धा में बड़ी शक्ति होती है बेटा, मुझ जैसी बुढ़िया भी इसी श्रद्धा के कारण सम्पूर्ण पहाड़ चढ़ कर वापस आ गई है, जहां बिस्तर से उठने में भी कमर दु:ख जाती थी, वही आज बिना रुके इतनी चढ़ाई करके आ रही हूँ। तुम तो अभी जवान हो, अरे एक दौड़ लगा कर पहुँच जाओगे। प्रयास तो करो। अच्छा चलो, अब मैं चलती हूँ, पहुंचना है कहीं।” कहकर अम्मा उठ खड़ी हुई और अपनी लाठी टेकते हुए आगे बढ़ गई।

“चलो भाई, अम्मां ने तो खुला चैलेन्ज ही कर दिया है हमें।” कहते हुए मानव फौरन उठ खड़ा हुआ। तीनों ने एक बार फिर से गला फाड़ कर माता का जयकारा किया और आगे बढ़ गए। कुछ दूर चलने पर ढोल की आवाजें सुनाई देने लगी।

वे उसी ओर बढ़ रहे थे, मार्ग में दो तीन लोग ढोल बजा रहे थे, उनकी धुनों पर कुछ श्रद्धालु थिरक रहे थे, सभी एक अनजानी सी मस्ती में मग्न थे। अपनी थकान को भुला कर वे थिरक रहे थे। ढोल वाले जबरदस्त थाप दे रहे थे, उनके थाप का प्रभाव ऐसा था कि मानव अनिकेत और विनय का हाथ पकड़ कर लगभग भंगड़ा करते हुए उनकी ओर बढ़ा, भांगड़ा बिट्स बज रही थी, मानव को नाचता देख अनिकेत और विनय ने भी अपने आप को ढीला छोड़ दिया और थापों के साथ मदमस्त होते चले गए, बीच में अन्य श्रद्धालुओं के जयकारों के स्वर गूंजते और प्रत्युत्तर में तीनों भी जयकारा लगा देते। तीनों इस समय अलग ही दुनिया में थे, वे अपनी सम्पूर्ण थकान मानो एकदम से भूल चुके थे, कुछ देर में आखिरकार ढोल वाले ही रुक गए। उनके रुकते ही तीनों के क़दमों को ब्रेक लग गया। वे उनकी ओर देखने लगे।

“भैय्या ! बजाया है, नाचे हो। अच्छा लगा तो पैसे दे दियो जो मन करें।” ढोल प्रमुख ने कहा। तो तीनों चौंक पड़े।

“पैसे ? इसके पैसे लगने थे क्या ? अरे हमको क्या पता था भाई, आप तो मार्ग में बजाते जा रहे हो, कोई सुन रहा तो पैसे लोगे ? कमाल है भाई।” विनय अपने अंदाज में चिढ़ते हुए बोला, उसे पैसा कमाने का यह जुगाड़ देख कुढ़न हो गई।

“शांत विनय भाई, मैं देता हूँ पैसे। “ कहकर मानव ने एक सौ एक्कावन रुपये उन्हें थमा दिए, ढोल वाले ने पैसों को विचित्र नजरों से देखा, मानव उसका आशय समझ गया।

“भाई जो दे रहे ले लो ख़ुशी से, नहीं तो हम जा रहे हैं।” कहकर मानव ने पैसे उसके हाथ में रख दिए और दोनों को साथ लेकर आगे बढ़ गया। उसके आगे बढ़ते ही ढोल वाला फिर आरंभ हो गया।

“कुछ भी बोलो यार ! बहुत शानदार बजाया था, मैं तो खुद को नाचने से रोक ही नहीं पाया।” अनिकेत ने कहा तो मुस्करा दिए, कुछ देर पहले वे थक कर चूर थे लेकिन अब मानो उनके पैरों में पंख से लग गए थे।

□□□

कुछ घंटे और बीत चुके थे, अब हवा में ठंडक और बढ़ती जा रही थी, किन्तु उन्हें जैकेट पहनने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। मार्ग में अनेक जगहों पर बंदरों के झुण्ड के झुण्ड देख कर मानव की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। बंदर भी एक से बढ़कर एक मोटे और हट्टे कट्टे। यात्रियों के पास यदि कोई खाने पीने की चीज हो तो उनका छिनना तय था। तीनों में से केवल मानव के कंधे पर ही उसका ऑफिस में प्रयोग होने वाला १५ लिटर का बैग पैक था, जिसमें उन्होंने पानी की बोतलें वगैरह रखी हुई थी।

“भाई ! वो अम्मा बोली थी दो मोड़ और पार करने है, बीस से पच्चीस मिनट में पहुँच जायेंगे, लेकिन हम तब से चले ही जा रहे हैं, दो घंटे के ऊपर बीत चुके हैं, अम्मा के बताये मोड़ अभी तक समाप्त नहीं हो रहे यार।” मानव के स्वर में रोने का पुट स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

“अभी भी नहीं समझे तुम ? भाई वह तो उन्होंने केवल हिम्मत बढ़ाने के लिए कह दिया था।” कहकर अनिकेत मानव की हालत पर मुस्कराया।

“चलो कॉफ़ी पीते है, इसी बहाने थोड़ा सुस्ता लेंगे, शाम हो रही है सूरज भी ढल रहा है अब तो।” विनय ने मार्ग के कोने में बने हुए कैफेटेरिया की ओर देखते हुए कहा, तीनों सहमत होकर वहां कुर्सियों पर बैठ गए, मानव ने काउन्टर से तीन कॉफ़ी ले ली। और तीनों आराम से बैठ कर कॉफ़ी की चुस्कियों का मजा लेने लगे। कॉफ़ी हालांकि बेस्वाद थी, लेकिन जो सुकून

उन्हें बैठने से प्राप्त हो रहा था उसके सामने कॉफ़ी का स्वाद फीका था। बंदरों का एक झुण्ड मानव की ओर ही देख रहा था, एक मोटा बंदर तो मानो मानव को कच्चा ही खा जाने वाली नजरों से घूर रहा था।

"मानव ! बंदर की ओर घूरना बंद करो, उन्हें अपनी ओर घूरना बिलकुल पसंद नहीं। ऐसा करके तुम उसे उकसा रहे हो।" अनिकेत ने समझदारी दिखाई असल में वह स्वयं घबरा रहा था कि कहीं मानव के चक्कर बंदर उनपर ही ना धावा बोल दे। वे आराम के मूड में थे लेकिन बंदर अब मार्ग में बने शेड के खम्बो से उतर कर कैंटीन और मार्ग परिसर में फ़ैल रहे थे। तीनों ने अपने आसपास होती इस घेराबंदी को देखा, और नजरें मिली। किसी तरह कॉफ़ी समाप्त करके तीनों एक साथ उठ खड़े हुए और नाक की सीध में बिना दांये-बायें देखे आगे बढ़ गए। अचानक से बंदरों के एक दल को दूसरे दल का अपने इलाके में आना शायद नागवार गुजरा, दोनों गुटों ने भयंकर रूप से एक दूसरे को धमकाया और दो मोटे बंदर दौड़ कर आपस में गुत्थम गुत्था हो गए। खी खी की इतनी आवाजें आने लगी कि मानव, अनिकेत और विनय ने पीछे देखने की हिम्मत तक नहीं की और सीधे सौ की गति में भागे, बंदरों के युद्ध की आवाजें अब तक आ रही थी। मानव तो बाकायदा मम्मी मम्मी चिल्लाने लगा, अनिकेत हिम्मत दिखा रहा था किन्तु अंदर से उसकी भी हालत खराब थी। विनय तो मन ही मन हनुमान चालीसा ही दुहराने लगा था।

वे काफी देर तक भागते रहे, लगभग आधा किलोमीटर बिना रुके दौड़ लगाते रहे, आते जाते श्रद्धालु उन्हें इस कदर बदहवास भागता देखकर आश्चर्य से देखते रहे, जब उन्हें इस बात का अहसास हुआ वे तब रुके। वे बंदरों को काफी पीछे छोड़ चुके थे।

"मानव भाई ! सब रट कर आये थे, लेकिन ससुर ये बंदरों के बारे में नहीं पढ़े थे क्या कहीं ?" विनय ने अपनी साँसों को नियंत्रित करते हुए कहा।

"नहीं भाई ! इनके विषय में बिलकुल नहीं पता था। चलो कोई नहीं अब हम अर्धकुँवारी वाले रास्ते पहुँच गए है, यहाँ से दो रास्ते हैं, एक है हिमकोटी वाला जो साढ़े पांच किलोमीटर का है और दूसरा वह रहा जो अर्धकुँवारी से होकर जाता है, यहां वही गुफा है जहां माता ने नौ महीने तपस्या की थी, यहाँ एक संकरी गुफा से होकर भीतर जाना पड़ता है, पर्ची कटानी होगी, लेकिन पर्ची का नम्बर आते आते छह से सात घंटे भी लग सकते है। तो क्या कहते हो ? सीधे हिमकोटी से भवन चला जाए या अर्धकुँवारी से होकर चले ?" मानव उनका मन टटोलते हुए बोला।

"भाई, अगर छह सात घंटे में नम्बर आना है, तो हम सीधे भवन के दर्शन करते है, उसके पश्चात भैरो मंदिर के भी दर्शन करने है, जो तुम्हारे हिसाब से ३ किलोमीटर की सीधी चढ़ाई है।" अनिकेत ने कहा, उसे पता था यदि अर्धकुँवारी के दर्शन करने गए तो उन्हें हद से अधिक समय लग जायेगा।

दोनों उसकी बात से सहमत हो गए और अर्धकुँवारी के बजाय सीधे हिमकोटी मार्ग से आगे बढ़ गए, तीनों ने आगे बढ़ने से पूर्व पूर्ण शक्ति से जयकारा लगाया। अब अंधेरा हो चुका था, मार्ग में रोशनी की जा चुकी थी। पहाड़ अँधेरों में खो चुके थे और ठंडी हवाएं अब कानों को सिहरा रही थी, कुछ ही देर चलने के पश्चात सफ़ेद रोशनियों से जगमगाता भवन अब दिखाई देने लगा था।

"वह रहा भवन। बोल सांचे दरबार की.." मानव हर्षातिरेक से चीख पड़ा।

"जय !" दोनों ने प्रत्युत्तर में जयकारा लगाया, उनके साथ आते जाते श्रद्धालुओं ने भी जयकारा लगाकर अपना सहयोग दिया।

"यहाँ से लॉकर रूम और रुकने के लिए डोरमेट्री वगैरह मिल जाएंगी, मंदिर प्रांगण में मोबाइल, चमड़े की वस्तुए आदि प्रतिबंधित है, तो हमें अपनी मोबाइल्स, पर्स, बेल्ट्स और जूते उतारने होंगे।" मानव ने आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

"कहाँ उतारे ?" विनय ने पूछा।

"आगे चलो, जहां से माता के दर्शन के लिए कतार लगती है, वहां काफी दुकानें हैं जहाँ से प्रसाद और चढ़ावे का सामान मिलता है, वे अपने यहाँ रखवा लेते हैं।" कहकर मानव यूँ आगे बढ़ा मानो वह उस रास्ते को पहले से जानता हो। आगे एक सिक्योरिटी पॉइंट था जहां जांच के पश्चात वे तीनों अब मंदिर प्रांगण के सामने थे, उनके सामने भवन अपनी पूर्ण समृद्धि के साथ जगमगा रहा था। तीनों को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वे मंदिर तक पहुँच चुके हैं। किन्तु आगे बढ़ते ही जब उनकी नजरें वहां स्थित दुकानों के सामने खड़ी कतार पर पड़ी तो चेहरे मानो बुझ से गए, वह श्रद्धालुओं की कतार थी जो दर्शन की प्रतीक्षा कर रही थी।

"भाई अब इस कतार में पक्का दो तीन घंटे लग जाने है।" विनय झल्लाया।

"शांत रहो, अब पहुँच चुके हैं तो प्रतीक्षा करो।" मानव ने उसे समझाया और मार्ग के दोनों ओर स्थित दुकानों की ओर नजरें दौड़ाई, और एक दुकान की ओर बढ़ गया। उसकी देखा देखी दोनों आ गए। उन्होंने वहां से प्रसाद खरीदा और अपने सामान को उनके यहाँ एक लिफ़ाफे में बंद करवाकर टोकन ले लिया। अब वे दर्शन की पंक्ति में खड़े थे। उन्होंने आसपास पूछा कितना समय लगेगा, तब उन्हें पता चला आरती हो रही है जिस कारण समय लग रहा है, आरती समाप्त होते ही आधे या पौने घंटे के भीतर मुख्य गुफा तक पहुँच जायेंगे। उनके चेहरे पर ख़ुशी के भाव उभर आये। वे पंक्तियों में हर उम्र के श्रद्धालुओं को देख रहे थे, उनके चेहरे पर उत्साह और शांति का भाव था, उनमें से कोई त्रस्त, परेशान या थका हुआ नजर नहीं आ रहा था, रह रह कर कोई ना कोई माता का जयकारा लगा उठता जिसके प्रत्युत्तर में पंक्ति में दूर दूर तक जयकारों के स्वर गूंज उठते। वहां लगी एलईडी स्क्रीन्स पर माता की आरती का प्रसारण हो रहा था, माता के पिंड रूपी प्रतीक के दर्शन हो रहे थे। कुछ देर में आरती समाप्त हुई और कतार आगे बढ़ने लगी। वे मुख्य भवन पहुँचने वाले थे।

माता के जय जयकारों के साथ ही साथ अब वे प्रमुख भवन में प्रवेश कर चुके थे। तीनों के दिल पता नहीं क्यों बेचैन से हो रहे थे। उनकी इतने घंटों की थकान भरी यात्रा अब अपनी समाप्ति की ओर थी। वे यह भी भूल गए कि अभी तो आधा ही पड़ाव पार हुआ है। और वापसी में भी इतना ही समय लगना है, श्रद्धालु भक्ति विभोर थे, उनके मुख पर परम संतुष्टि के से भाव थे, कइयों की आँखों में नमी तक स्पष्ट देखी जा सकती थी। पता नहीं यह क्या भाव है जो आँखों को नम कर देता है किन्तु ह्रदय को संतुष्टि से भर देता है।

अनिकेत इस समय एकदम शांत था, उसका मन अत्यधिक शांति का अनुभव कर रहा था, मीरा के जाने के पश्चात उसका मन कभी इतना स्थिर नहीं रहा। वही हाल विनय का भी था, विनय यूँ तो कभी पूजा पाठ या भाव भक्ति से कोई वास्ता नहीं रखता था, इसके बावजूद उसका अस्थिर मस्तिष्क आज मानो शून्य में विचरण कर रहा था, उसका गुस्सा, झुंझलाहट,बेचैनी, झल्लाहट सब मानो एकदम से समाप्त हो गई थी। मानव जो उनमें सर्वाधिक चंचल प्रवृत्ति का था, वह भी इस समय आश्चर्यजनक रूप से शांत था। वह नहीं

जानता था ऐसा क्यों था किन्तु इस परिसर में आते ही वह अपनी सारी उलझनों को मानो भूल सा गया था। पंक्ति आगे बढ़ती रही, वे मुख्य गुफा के सामने थे, वह गुफा इस समय बंद थी किन्तु श्रद्धालु बाहर से ही उसके दर्शन कर कृतार्थ हो रहे थे, अनेक भक्त जन तो भाव विभोर होकर नतमस्तक हो रहे थे।

कोई अपनी बीमार माँ को साथ लाया था, तो कोई निःसंतान दम्पति सन्तान की कामना लिए आया था, कोई मनोकामना पूर्ति होने के पश्चात मांगी हुई मन्नत पूरी करने व आने का वचन निभाने आया था तो कोई संतान प्राप्ति की कामना पूर्ण होने के पश्चात संतान सहित आया था, कोई द्वारों पर मन्नत पूर्ति की घंटिया बाँध रहा था तो कोई किसी कामना के वशीभूत चुनरी अर्पण कर रहा था। तीनों आश्चर्य से यह सब देख रहे थे, तरह तरह के लोग, प्रकार प्रकार की भावनाएं, अनेक राज्यों अनेक प्रदेशों एवं अनेक भाषाओं के लोग यहाँ केवल एक भाव से सम्मिलित हुए थे। लगने वाले जयकारों में सभी के सम्मिलित स्वर होते। आखिर क्या है इस स्थान में जो लोग अपना सब छोड़ कर इतनी कठिनाइयों के बावजूद यहाँ आते हैं ? बूढ़े, बच्चे, महिलाएं, बीमार सब के सब इतनी कठिनाइयों के पश्चात यहाँ पहुंचकर केवल कुछ क्षण दर्शन प्राप्त कर के आखिर क्या साध्य कर लेते हैं ? उस गुफा के समक्ष आते ही तीनों स्वयमेव श्रद्धा से नतमस्तक हो गए, हाथ कब जुड़ गए स्वयं उन्हें भी नहीं पता चला। पंक्ति उम्मीद से अधिक जल्दी आगे खिसक रही थी। वे जल्द ही दूसरी गुफा की ओर पहुँच चुके थे, जहां अत्यधिक सुरक्षा व्यवस्था थी।

“उस संकरी गुफा में दर्शन सम्भव न होने के कारण मुख्य गर्भ गृह तक जाने के लिए यह कृत्रिम गुफा बनाई गई है।” मानव ने धीमे से कहा। अब उनका जत्था गुफा में प्रवेश कर चुका था, गुफा में सफ़ेद रोशनी थी और बैरिकेड लगा हुआ था। वे पंक्तियों से खिसकते हुए आखिरकार मुख्य गर्भ गृह में पहुँच ही गए, जहाँ माँ वैष्णो देवी की मूर्ति पिंडी रुप में स्थित थी। उनके पास कुछ ही क्षण शेष थे। उन्होंने सम्पूर्ण श्रद्धा से हाथ जोड़े और माता की चौखट पर अपना माथा टेका। कहने को वे कुछ ही क्षण वहां रुकने वाले थे, किन्तु उन कुछ क्षणों में ही माता की सम्पूर्ण छवि उस पिंडी रूप उनके मन मस्तिष्क में छप गई। वे अपलक उन दिव्य पिंडो को देख रहे थे। सुरक्षा प्रहरी ने उन्हें आगे बढ़ने के लिए कहा और वे आगे बढ़ गए। विवशता थी, उनके पीछे अभी सैकड़ों भक्त अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। अनिकेत ने अपनी आँखों के कोनों में नमी सी महसूस की, यही अवस्था विनय की भी थी। मानव उन्हें देखता रह गया, इस समय वह भी भावुक था किन्तु उसने स्वयं को नियंत्रित किया और आगे बढ़ गया। वे कुछ ही देर में गुफा से निकल कर दूसरे मार्ग से होते हुए मंदिर से निकल चुके थे।

वे वहां से सीधे उस दुकान पर पहुंचे जहाँ उन्होंने अपना सामान रखवाया था, टोकन दिखा कर अपना लिफाफा प्राप्त किया, अपने मोबाइल और वालेट जेब के हवाले करके बेल्ट वगैरह पुन: पहन लिया। सब सामान मिलने के पश्चात वे आश्वस्त हुए और प्रसाद की थैलियाँ मानव के बैग पैक में रख दिए गए। वे उस दुकान की सीढ़ियों पर ही बैठ गए। मानव ने अपना मोबाइल ऑन किया। अनिकेत और विनय पानी पी रहे थे। मानव ने एक बार दुकान वाले से भैरो घाटी का मार्ग पूछा, वे जिस दुकान पर बैठे थे उसी की विपरीत दिशा में जाता मार्ग भैरव मन्दिर की ओर जाता था। थोड़ा सुस्ताने के पश्चात वे फिर उठ खड़े हुए। रात के दस बज रहे थे।

“चलो फिर! भैरो बाबा के दर्शन भी निपटा लेते हैं, या फिर कुछ खा लेते हैं पहले ?” मानव ने उनकी ओर देखते हुए प्रश्न किया। उन्हें कुछ भी खाने की इच्छा नहीं हो रही थी लेकिन वे सुबह से निकले थे और खाने के नाम पर केवल पानी,जूस और कॉफ़ी ही पीते आ रहे थे, भैरो की कठिन चढ़ाई के लिए ऊर्जा की सख्त आवश्यकता थी, वे भूखे नहीं जा सकते थे। उन्होंने हाँ में सिर हिला दिया।

“चलो फिर, समय व्यर्थ नहीं करेंगे।” कहकर वह सामने दिखाई देते एक रेस्टोरेंट की ओर बढ़ गया, दोनों ने मानव का अनुसरण किया, रेस्टोरेंट में उन्होंने भरपेट खाना खाया और पानी की कुछ अतिरिक्त बोतलें भी खरीद ली जो उनके पास समाप्त हो चुकी थी। खाना होने के बाद बिना समय गंवाए उन्हें भैरो घाटी की ओर बढ़ना था, मानव ने उन्हें अपने पीछे आने को कहा और भैरो घाटी की ओर जाते मार्ग पर बढ़ गया, दोनों उसके पीछे हो लिए। अभी वे कुछ ही दूर चले थे कि थकान उनपर हावी होने लगी, भैरो घाटी की चढ़ाई सीधी थी, उनपर विपरीत बल पड़ रहा था जिस कारण उन्हें जल्दी थकान हो रही थी, अभी उन्होंने चलना शुरु ही किया था। इसी बीच मानव अपने फोन में मिस कॉल अलर्ट के मैसेज देख कर चौंक पड़ा। कृति के चार कॉल्स थे। उसने फौरन कॉल किया, वह विनय और अनिकेत से पर्याप्त दूरी बनाये चलता रहा, कुछ देर बात करने के पश्चात उसने फोन रख दिया। उसके चेहरे के भाव अब एकदम बदल चुके थे। अनिकेत और मानव से उसका बदला हुआ चेहरा छिप नहीं पाया।

“क्या हुआ मानव भाई ? कोई परेशानी ?” विनय ने हांफते हुए ही प्रश्न किया।

“नहीं भाई सब ठीक है।” कहकर मानव मुस्करा दिया, उसकी जबरदस्ती की मुस्कुराहट अनिकेत पहचान गया था।

“मानव, हम अब कुछ दिनों के लिए एक दूसरे के साथ है, इसलिए नहीं चाहते कि कोई भी परेशान रहे। एक व्यक्ति परेशान रहेगा तो दूसरे भला कैसे इस ट्रिप का मजा ले पायेंगे ? अगर बताने योग्य समझते हो तो बता सकते हो, बताने से शायद कुछ हल निकल आये।” अनिकेत ने कहा तो मानव ने बस सिर हिला दिया।

“ऐसी कोई बात नहीं है अनिकेत भाई, कोई परेशानी नहीं है।” मानव ने आँखें चुराई और आगे बढ़ गया, अनिकेत कुछ और प्रश्न करता इससे पहले ही विनय ने उसके कंधों पर हाथ रखकर उसे कुछ भी पूछने से रोक दिया।

“जाने दीजिये अनिकेत भाई, मानव नहीं बताना चाहता तो रहने दीजिये, उसकी निजी जिन्दगी है। वह अपने सीक्रेट्स नहीं बांटना चाहता तो उसपर जोर देना सही नहीं।” विनय की बात अनिकेत को सही लगी। वे चुपचाप भैरो नाथ मंदिर की ओर बढ़ते रहे, इसी बीच मानव अपने फोन पर बीच में मैसेज चेक करते रहा। किसी प्रकार से हाँफते थकते, बैठते, हुए वे कुछ घंटों के थकान भरे सफर के बाद अब भैरो मंदिर पहुँच चुके थे।

उन्होंने अपने जूते मंदिर के बाहर उतार कर भैरो के प्रतीक त्रिशूल और वस्त्र के दर्शन किये और वहां बने व्यू पॉइंट पर जाकर खड़े हो गए। यहाँ से वैष्णो देवी भवन का अप्रतिम दृश्य दिखाई दे रहा था, भवन सफ़ेद रोशनी से जगमगा रहा था, ठंड और बढ़ चुकी थी। उन्होंने वहां कुछ तस्वीरें खिंचवाई, और वहां स्थित बेंच पर जाकर बैठ गए। तीनों इस समय एकदम निःशब्द से थे, उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या कहे।

“मेरी दोस्त कृति ने फोन किया था।” मानव ने उनकी ओर बिना देखे कहा।

अनिकेत और मानव उसकी ओर देखने लगे, उन्हें उम्मीद नहीं थी मानव इस तरह बिना किसी दबाव के स्वयं ही अपनी परेशानी बताना शुरु कर देगा।

“कृति? वही ना जिसका तुम अक्सर जिक्र करते रहते हो ? राइट।” अनिकेत को नाम सुना सा लगा।

“हाँ! वही कृति।” कहते हुए मानव ने एक गहरी सांस भरी।

“कोई उलझन है उससे संबंधित ? या कोई परेशानी ?” विनय ने थोड़ा और कुरेदने का प्रयास किया।

“परेशानियां तो और भी है यार लाइफ में, लेकिन इस रिश्ते में मैं एकदम उलझ सा गया हूँ। मैं सब बताता हूँ।” कहकर मानव शून्य में ताकने लगा।

□□□

मानव और कृति

"व्हाट? तुमने ड्रिंक भी की है ?" मानव कृति के खुलासे पर एकदम से चौंक पड़ा, कॉफ़ी उसके मुंह से छलकते छलकते रह गई, वैसे वह जानता था कृति मॉडर्न खयालात की लड़की थी, फिर भी शराब पीने वाली बात मानव के लिए हैरानी की थी।

"हां ! इसमें इतना चौंकने की क्या बात है ? यार मैं कोई गाँव खेड़े की लड़की तो हूँ नहीं, पढ़ी लिखी और इंडिपेंडेंट हूँ, लड़के भी तो पीते हैं, तो हमारे पीने पर इतनी हैरानी क्यों ?" कृति मुसकुराते हुए बोली, उसे मानव के भाव देख कर हंसी आ गई। कृति ने अभी अपनी कॉफ़ी का सिप भी नहीं लिया था। मानव से कुछ कहते न बना, उसके मन में अनेकों विचार आ रहे थे और जा रहे थे।

"यार बात मॉडर्न होने की नहीं है, मैं भी तो हूँ ना ? दरअसल शराब बैड हैबिट में ही गिनी जाती है, चाहे लड़का पिए या लड़की, वो ऐब में ही गिना जाएगा, अगर मैं शराब पियूंगा तो यार मुझको भी लोग बेवडा ही कहेंगे मॉडर्न नहीं। उसमें जबरदस्ती मॉडर्न होना और जेंडर इक्विलिटी जैसी बातें न घुसाओ।" मानव ने अपना पक्ष रखा।

"ओ हेल्लो मिस्टर मानव! आई एम नॉट फेमिनिस्ट ओके ? लेकिन यार कभी कभार टेस्ट करने में हर्ज ही क्या है ? मैं कोई हर बार तो पी नहीं रही हूँ, बस टेस्ट किया था।" कृति ने कहा।

"ऐसी क्या जरूरत आन पड़ी थी तुम्हें ?" मानव के मन में खलबली मची हुई थी।

"कुछ नहीं, बस थोड़ा सा टेन्स थी यार।"

"क्या टेंशन थी ?"

"जाने दो ! मैं वह बात याद नहीं करना चाहती।"

"फिर भी, बताओ तो। यार! दोस्त हूँ तेरा, लेकिन मुझे पता भी नहीं इस बारे में।"

"ब्रेक अप हुआ था यार! इसलिए टेन्स हो गई थी।" कृति का चेहरा उतर गया लेकिन उसने फौरन खुद को संभाल लिया।

मानव ने पुन: कुछ नहीं पूछा, वह उसके रिलेशन के विषय में पहले से जानता था। वह दो साल से रिलेशन में थी, मानव को पता नहीं क्यों उसके ब्रेकअप के बारे में जानकर ख़ुशी हुई। उसने कुछ भी पूछना उचित नहीं समझा, फिलहाल उसके लिए यही पर्याप्त था कि कृति अब उस वाहियात रिश्ते में नहीं थी। मानव शुरु से ही उस अजीब से लड़के से नफरत करता था, पता नहीं कृति जैसी खूबसूरत लड़की को उस अजीब सी शक्ल वाले बेगैरत और वाहियात लड़के में क्या दिख गया था। मानव उस लड़के के जिक्र से ही सुलग उठता था, लेकिन उसे कोई हक नहीं था कृति से इस विषय में विरोध दर्ज करने का। वह उसका एक अच्छा दोस्त भर था।

एक लड़की के लिए किसी लड़के का एक सबसे अच्छा दोस्त होना उस लड़के के लिए किसी त्रासदी से कम नहीं होता। वह न घर का होता है और न घाट का, बस बेफिजूल की उम्मीद में बंधा रहता है और खुद का खून पानी करता रहता है, वह बस एक कंधा बन कर रह जाता है, जिसपर सर रख कर केवल सुख दु:ख का रोना रोया जा सकता है, वह भी केवल अंतिम पर्याय होने के पश्चात।

दुर्भाग्य से मानव भी अब 'सबसे अच्छा दोस्त' नाम की गाली से नवाज दिया गया था। सबसे अच्छा दोस्त को यदि मानव के हिसाब से एक शब्द में वर्णित किया जाये तो वह

है 'ऑप्शन' अर्थात पर्याय। जब सारे रास्ते, सारे दरवाजे बंद हो जाये तो जो ऑप्शन एक बैकअप प्लान के रुप में काम लिया जाता है उसी को 'सबसे अच्छा दोस्त' कहते हैं।

मानव समझता था यह बेवकूफी है, कृति को उसकी याद केवल तब आती है जब उसके पास सारे रास्ते बंद हो जाते है, किन्तु मानव भी इस उम्र के बाकी युवकों की भांति इस झूठे भ्रमजाल में फंसा हुआ था। वह भी फिल्मों और रोमांटिक उपन्यासों के चक्कर में आकर सच्चे प्यार, प्यार की जीत, गलती का अहसास, अंत में जा सिमरन जी ले अपनी जिन्दगी, दोस्ती का प्यार में बदलना जैसी बिना सिर पैर की बातों को देख सुनकर ही बड़ा हुआ युवक था, तो जाहिर सी बात थी इन सारी बेफिजूल और बिना सिर पैर की भावनाओं का अतिरेक उसके मस्तिष्क में भरे बेवकूफी रुपी कचरे के रुप में सामने आ रही थी।

"अच्छा ठीक है अब मैं चलती हूँ, देर हो रही है मम्मा का फोन आ जायेगा।" कृति ने अपने मोबाइल में समय देखते हुए कहा।

"अरे यार अभी तो आई हो, मुश्किल से आधा घंटा भी नहीं हुआ है, मैं पैंतीस किलोमीटर से आया हूँ और तुम्हारे पास पैंतीस मिनट भी नहीं है।" मानव थोड़ी सी नाराजगी में बोला, उसे उम्मीद थी कृति उसे मनाएगी, लेकिन कृति को उससे मानो कोई फर्क ही न पड़ता था।

"अरे तो काफी हो गया ना यार, है ना हम पिछले आधे घंटे से साथ ?" कृति ने अपनी कॉफ़ी खत्म की।

"आधे घंटे में पन्द्रह मिनट तो तुम्हारे फोन ही आते रहते हैं।" मानव झुंझलाया, हालांकि वह अपनी झुंझलाहट का प्रदर्शन नहीं करना चाहता था।

"इट्स ओके यार ! इतना डेस्परेट होने की जरूरत नहीं है, तुम तो एकदम बच्चों जैसा बर्ताव कर रहे हो। तुम्हें नहीं लगता कुछ ज्यादा ही ओवर रिएक्ट कर रहे हो तुम ?" कृति मानव के बेसब्र व्यवहार पर हैरान थी। अभी वह कुछ और कहती लेकिन उसका फोन फिर वाइब्रेट हुआ, कृति ने फोन उठाया और शुरू हो गई, इशारे से मानव को चुप रहने को कहा, मानव कुढ़ कर रह गया। इसी बीच कृति फोन पर लगी रही और उठ खड़ी हो गई, वह बात करते हुए कैफे की गैलरी में चली गई। मानव अब खुद को कंट्रोल नहीं कर पाया और उठ खड़ा हो गया, काउन्टर पर बिल भर कर वह तेज क़दमों से कैफे से बाहर निकल गया, कृति उसे हैरानी से जाते हुए देखती रही।

"जब फुर्सत मिल जाए तब बता देना, मैं आ जाऊँगा।" मानव ने गुस्से में इतना कहा और फौरन निकल गया, कृति ने उसे रोकने का उपक्रम तक नहीं किया। वह बस उसे जाते हुए देखती रही।

□□□

आज एक हफ्ता बीत चुका था, कृति से कोई सम्पर्क नहीं हुआ था और ना ही कृति ने कोई सम्पर्क किया था, मानव को उसके बर्ताव में आये इस बदलाव का कारण समझ नहीं आ रहा था। वह एकदम से मानो उसे नजरंदाज करने लगी थी। मानव रह रह कर बेचैन हो जाता, कहने को वह ऑफिस में जाता,लेकिन उसका किसी भी काम में मन नहीं लग रहा था, मोबाइल की हल्की भी हरकत से उसे वहम होता मानो कृति ने मैसेज किया हो, वह बेसब्री से हर मैसेज देखता लेकिन कृति का मैसेज न देख कर वह हताश हो जाता। कृति को ऑनलाइन देख कर वह चैट विंडो को तब तक खोले रखता जब तक कृति ऑफ़ लाइन नहीं हो जाती थी। कई बार उसे इच्छा हुई कि सामने से मैसेज कर दे, लेकिन हर बार मानव ही पहल करता

आया था, इस बार उसने कृति की ओर से पहल का इंतज़ार करना सही समझा। लेकिन कृति को न मैसेज करना था और न उसने किया। मानव परेशान सा हो गया। आखिरकार उस रात कृति को डेढ़ बजे ऑनलाइन देखकर वह अपनी भावनाओं को नहीं संभाल पाया, उसने कृति को हेल्लो का मैसेज किया। कुछ देर तक मैसेज सीन होने के बाद कृति कुछ टाइप करते हुए दिखी। उसने भी प्रत्युत्तर में हेल्लो लिखा।

“आज इतनी रात ? क्या बात है ?” मानव ने मैसेज किया।

“बस कुछ कॉलेज फ्रेंड्स है, इसलिए।” वहां से जवाब आया।

“सॉरी यार! उस दिन के बर्ताव के लिए, मुझे ऐसा बर्ताव नहीं करना चाहिए था तुम्हारे साथ।” मानव ने अपनी गलती ना होते हुए भी मान ली।

“मुझे उस बारे में बात नहीं करनी।” कृति ने दो टूक शब्दों में जवाब दे दिया। मानव किंकर्तव्यविमूढ़ सा रह गया, उसे समझ ही नहीं आ रहा था वह आगे क्या कहे।

“अच्छा सुन !” मानव ने बात पुन: शुरु करने की गरज से मैसेज किया।

“हां !” संक्षिप्त उत्तर प्राप्त हुआ।

“एक बात बताना, प्लीज़ बुरा मत मानना यार।” मानव पता नहीं क्यों गिड़गिड़ा सा रहा था।

“अब बोलो भी।” फिर वही दो टूक उत्तर।

“बस यूँ ही जानने का मन हो रहा था, तुझे शराब की टेस्ट कैसी लगी ? और घर में किसी को पता नहीं चला कभी, जब पीकर घर गई ?” मानव ने पूछा।

“नहीं ! उन्हें नहीं पता चला, मैं वोडका पीती हूँ, उसमें स्मेल नहीं आती, और घर जाकर थकी होने और बाहर ही खाना खा चुके होने का बहाना बना कर सीधे सो जाती हूँ।” कृति ने उत्तर दिया।

“वैसे कहाँ से मिल गई तुझे ? मेरा मतलब तू खुद शॉप में जाकर खरीदी या रेस्टोरेंट वगैरह में गई ? बस इसलिए पूछ रहा हूँ कि मेरी तो कभी हिम्मत नहीं होती यह सब करने की, तुममें तो बहुत डेरिंग है यार।” मानव ने मैसेज किया।

“एक्चुअली मैं नहीं गई कही लेने, मेरा एक फ्रेंड है कॉलेज टाइम का, उसने लाकर दी थी।” कृति ने कहा। मानव उस सन्देश को पढ़कर बेचैन सा हो गया।

“मुझे लगा कोई सहेली होगी। गुड यार, हमको तो ऐसी फ्रेंड्स आज तक नहीं मिली जो हमारे साथ ड्रिंक करें।” मानव के सन्देश में व्यंग्य था।

“तू यार लड़के के साथ ड्रिंक करती है ? कभी सोचा नहीं इसका क्या परिणाम हो सकता है ? कभी कुछ गलत सलत हो गया तो ?” मानव के सन्देश में चिंता और जलन दोनों थी।

“नहीं वो ऐसा लड़का नहीं है, मैं बचपन से जानती हूँ उसे। मेरा अच्छा दोस्त है वो।” कृति का मैसेज आया।

“और मैं ?” मानव ने बस इतना ही लिखा।

“तुम खुद को उससे कम्पेयर कर रहे हो ? सुनो मानव, तुम खुद को किसी से कम्पेयर क्यों करना चाहते हो ?” कृति का जवाब आया।

“मैं नहीं कर रहा कृति। बस थोड़ा सा खराब लगता है यार, कि तुम्हारे पास सब के लिए समय है सिवाय मेरे। ऐसा क्यों ?” मानव की उंगलियाँ कांप रही थी। वह समझता था इतनी रात को यदि बात हो रही है तो मानव भावनाओं में जरूर बह जायेगा और आवेश में आकर

कुछ ना कुछ गलत हो जायेगा। इसके बावजूद वह लगा हुआ था। कुछ देर तक वह रुका रहा कृति ने मैसेज देखा लेकिन कोई उत्तर नहीं आया।

“गुड नाइट।” कृति का मैसेज दिखा, मानव झुंझला कर रह गया, वह बिस्तर पर करवटें बदलता रह गया, अनजानी भावना के वशीभूत होकर उसकी पलकें गीली हो गई। उसे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था कि वह क्यों कृति से इतना लगाव महसूस करता है, क्यों वह इतने करीब आ गया है कि उसका नजरंदाज करना उसे छलनी कर देता है। इसी उलझन में बीस मिनट गुजर गये, रहा नहीं गया तब उसने फिर मोबाइल उठाया, कृति अब तक ऑनलाइन थी।

“मुझे गुड नाइट बोलकर पीछा छुड़ा लिया, सीधे सीधे बोल देती मुझे परेशान मत करो।” मानव ने गुस्से में सन्देश भेजा।

“अरे यार समझते क्यों नहीं, ऐसा कुछ नहीं, बस सोने ही जा रही थी लेकिन जरूरी बात थी कॉलेज की, इसलिए जाग रही हूँ।” कृति का रिप्लाई आया।

“कृति कॉलेज छोड़े ज़माना हो गया है, उसी लड़के से बात हो रही है ना ? जिसके साथ ड्रिंक करती है, कम ऑन यार इतनी पढ़ी लिखी और समझदार होकर भी क्यों नहीं समझ में आता तुझे ?” मानव ने कहा।

“तुम अब ओवर रिएक्ट कर रहे हो मानव, अब सो जाओ मैं किसी मैसेज का जवाब नहीं देने वाली।” कृति ने कहा।

“सुनो! आखिरी बात,अगर मैं कहूँ कि तुम्हें मुझ में से और उस लड़के से किसी एक को चुनना पड़े तो किसे चुनोगी ? आई मीन एज़ अ फ्रेंड।” मानव ने मैसेज किया।

“यार ये क्या बकवास है अब ?”

“नहीं, प्लीज़ बस हां या ना जवाब दो, तुम मुझे चुनोगी ?” मानव ने मैसेज किया।

“प्लीज़ !” कृति ने हाथ जोड़ने वाला इमोजी भेजा।

“ये इतना मुश्किल थोड़े ही है यार। मानव अब बेसब्र हो रहा था, वह भूल रहा था कि वह कृति से इस प्रकार बात नहीं कर सकता, उसे यह अधिकार ही नहीं था।

“उसने मेरा हर अच्छे बुरे समय में साथ दिया है। वह तब मेरे साथ था जब मैं स्ट्रेस में थी, परेशान थी।” कृति ने जवाब दिया।

“दुःख में साथ देने का मतलब साथ में बैठ कर शराब पीना नहीं होता, इसे साथ देना नहीं कहते कृति।” मानव को अब गुस्सा आने लगा था।

“चलो तुम्हारी मुश्किल मैं हल किये देता हूँ, मैं मैसेज नहीं करता, तुम भी अब तभी मैसेज करना जब तुम हम दोनों में से किसी एक को चुन लोगी। बात महत्व की है, और मैं तुम्हारा अच्छा दोस्त हूँ, लेकिन तुम कभी मुझे समय नहीं देती। अब जब तुम्हें लगे कि मैं भी जरुरी हूँ तभी मुझे मैसेज करना, अब मैं और परेशान नहीं करूंगा, अच्छा बुरा जो भी कहा उसके लिए मुझे माफ़ कर देना, ये मेरा आखिरी मैसेज है, गुड नाइट।” मानव ने मन की भड़ास निकाल दी।

“जो तुम्हें अच्छा लगे।” कृति ने बस इतना ही कहा और ऑफ लाइन हो गई। यह जवाब मानव के उम्मीद के विपरीत था, उसे लगा कृति शायद उसे समझाएगी लेकिन उसे जैसे यही चाहिए था, बस वो खुद से पहल करके बुरा नहीं बनना चाहती थी। अब उसे मौका मिल गया है। मानव की आँखों से आंसू बहने लगे, वह बेवकूफों की तरह रोने लगा। उसने कृति का नम्बर ब्लॉक कर दिया और डिलीट करने के लिए जैसे ही बढ़ा वैसे ही रुक गया, वह उसे खोना

नहीं चाहता था। उसने फिर से उसे अनब्लॉक कर दिया। वह अब उसकी पहल का इंतज़ार करेगा, उसने स्वयं से निश्चय किया, जबकि उसे पता था वह पहल करने वालों में से नहीं थी।

□□□

एक महीना बीत चुका था, लेकिन कृति का कोई जवाब नहीं आया, वह दीवाली का अवसर था और मानव आस लगाये बैठा था कि कम से कम दीवाली पर शुभकामनाओं वाला मैसेज तो जरूर करेगी, लेकिन कृति ने शाम तक कोई मैसेज नहीं किया, मानव दिन भर रुंवासा रहा, आखिरकार उसी ने हताश होकर मैसेज कर दिया।

“कभी कभार मैसेज कर दिया करो, इससे भ्रम बना रहेगा की अभी भी रिश्ता बना हुआ है। कम से कम सब खत्म हो जाने की सच्चाई से यह भ्रम ही बेहतर है। हैप्पी दीवाली।” मैसेज सीन हुआ किन्तु कोई रिप्लाई नहीं आया। मानव जानता था ऐसा ही होगा किन्तु उसका मन नहीं मान रहा था, वह खुद को दिलासा दे रहा था कि कृति का मैसेज जरूर आयेगा। वह झुंझलाता रह गया लेकिन उसका कोई भी असर कृति पर नहीं पड़ने वाला था। कृति ने प्रत्युत्तर में एक शब्द तक नहीं लिखा। आखिरकार मानव को अहसास हो गया कि उसने कृति से इस तरह बात करके हमेशा के लिए उसे खो दिया है, यह कल्पना भी उससे सहन नहीं हो रही थी। वह उसे खोना नहीं चाहता था। अपने लेखन के पैशन और घर की परेशानियों के बीच एक कृति ही तो थी जिसके साथ वह चंद खुशियों के लम्हे जीता था।

उसकी आँखों से आंसू बहने लगे, उसने लाख कोशिश कि वह उसके लिए ना रोये लेकिन हृदय में उठते भावनाओं के तूफ़ान को वह संभाल पाने में अक्षम था। उसने अपने आंसू पोंछे, बाहर माता-पिता और बाकी परिवार दीपावली मना रहे थे, बाहर रोशनी का त्यौहार मनाया जा रहा था, सम्पूर्ण वातावरण खुशियों के प्रकाश से जगमगा रहा था। मानव को यह सब फीका लग रहा था, उसे यह सब बिलकुल भी नहीं अच्छा लग रहा था, कोई मित्र अथवा रिश्तेदार आता तो भी वह बनावटी मुस्कान के साथ मिलता और दीपावली की शुभकामनायें देता। उसे यह बहुत मुश्किल लग रहा था, वह अपनी भावनाओं को नकली मुस्कान तले दबाने की पुरजोर कोशिश कर रहा था, रह रह कर उसकी आँखों में नमी सी आ जाती जिसे वह पुनः अपने भीतर जज्ब कर लेता।

“क्या कृति को फर्क पड़ता होगा ? जिस तरह मैं उसके बारे में सोचकर बेचैन हूँ, क्या उसे थोड़ा भी फर्क पड़ता होगा ?” अपने आप से बड़बड़ाते हुए उसने फिर से फोन चेक किया, कृति के स्टेट्स में नयी तस्वीरें देख कर वह चौंक पड़ा। कृति पीले रंग की ड्रेस पहन कर अनार छुड़ा रही थी, अनार की झिलमिल रोशनी के मध्य उसका चेहरा किसी दिये की भांति जगमगा रहा था, उसकी चिर परिचित हंसी से चेहरा दमक रहा था। इसी तरह की दो तीन तस्वीरें और थी। मानव उन्हें काफी देर तक देखते रहा।

“उसे कोई फर्क नहीं पड़ता, वह खुश है।” वह बड़बड़ाया और अपने कमरे में चला गया, कमरे का दरवाजा उसने भीतर से बंद कर लिया। पिताजी ने उसे कमरे में जाते देख लिया और माँ की ओर प्रश्नवाचक निगाहों से देखा।

“बेटा ! दीपावली है, ऐसे कमरे में बंद नहीं रहते, आओ बाहर आकर दीपावली मनाओ बेटा।” माँ ने बंद दरवाजे के सामने कहा। पिता जी भी माँ के साथ आकर खड़े हो गए।

“मैं लिख रहा हूँ माँ, मैंने मना लिया दीवाली। दिये जला लिए बस हो गया, बाकी पटाखों वगैरह से प्रदूषण होता है, मैं अब से पटाखे नहीं जलाऊंगा।” उसने भीतर से ही कहा।

“आज अचानक पर्यावरण की बड़ी चिंता सताने लगी लेखक महोदय को ? पिछले दस सालो में बेटा एक ट्रक भर कर पटाखे छुड़ा दिए होंगे और आज अचानक ब्रह्म ज्ञान प्राप्त हो गया महाशय को।” पिता जी ने तीव्र स्वर में लगभग चीखते हुए कहा। उन्हें त्यौहार के इस मौके पर किसी का इस प्रकार मुंह बना कर कमरे में छुप जाना कतई पसंद नहीं था।

“आप अपने आप को सम्भालिए, तीज त्यौहार पर ऐसे बिगड़ा नहीं करते। होता है, कुछ चीजें आदमी समय के साथ सीख जाता है, हट गया होगा उसका मोह पटाखों से, अब अपने आस पड़ोस में ही देखो, कितने ही बच्चे हैं जो अब पटाखों से दूर रहने लगे है, तो इसमें गुस्सा होने की क्या बात है।” माँ ने पिता को समझाया।

“तुम तो रहने ही दो, उसका पक्ष लेना बंद कर दो। इनके लक्षण शुरू से ही खराब थे, मैं पहले ही घर में बढ़ते उपन्यासों और कॉमिक्स के ढेर को देखकर बोल रहा था कि इसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जायेगी एक दिन, लेकिन मेरी सुनता ही कौन है, अपने दुलार के चलते सारे घर को पुस्तकालय बना कर रख दिया तुमने। अब देखो, इंजीनियरिंग करके महाशय लेखक बन रहे है, इसी लिये इतनी पढ़ाई और इतना पैसा बहाया था ? इसी दिन के लिए।” भुनभुनाते हुए पिता जी पैर पटक कर बाहर निकल गए। माँ उन्हें जाते हुए देखती रही।

“बेटा! जब ठीक लगे तब खाना खाने आ जाना, मैं इंतज़ार करूंगी।” कहकर माँ भी चली गई।

मानव बेड से पीठ टिका कर फर्श पर बैठा हुआ था, उसका सम्पूर्ण चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ था।

□□□

कृति की बहन की शादी का अवसर था। मानव से अच्छी जान पहचान होने के कारण उसे भी आमंत्रित किया गया था। मानव को शादी में कोई रुचि नहीं थी, वह केवल कृति के लिए वहां आया था। उसने महरून रंग का ब्लेजर पहन रखा था, जिसमें वह जंच रहा था। मेहमानों की इस भीड़ में भी वह कृति के घरवालो के बीच प्रमुख स्थान रखता था। वह सुबह से शादी की तैय्यारियो में इस तरह व्यस्त था मानो उसके घर की ही शादी हो। इस बीच कृति से उसका कई बार आमना सामना हुआ लेकिन वह उसे देख कर भी अनदेखा कर देती। मानव ने कई बार उससे बात करने का प्रयास किया लेकिन वह व्यस्तता का दिखावा करके निकल जाती या अपनी सहेलियों की बीच व्यस्त हो जाती।

मानव बेवकूफ नहीं था, वह अपने आप को नजरंदाज किया जाना साफ समझता था। उसे समझ में नहीं आ रहा था आखिर कौन सी इतनी बड़ी गलती हो गई जो कृति उससे इस कदर बेरुखी दिखा रही है। एकदम अजनबियों की तरह व्यवहार कर रही है। उसे अपने सामने कृति को देखकर भी अनजान बना रहना बेहद खल रहा था, उसका वहां खड़े रहना तक दूभर सा होने लगा था। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि यह वही कृति है जो उसे कभी अपना बेस्ट मानती थी, उससे अपनी हर चीज शेयर किया करती थी, देर रात तक मैसेज करती थी। उसे अब भी याद था जब वह कृति के बीमार होने पर उससे मिलने पहली बार अस्पताल गया था। कृति उसे देख कितना खुश हुई थी, वह कृति के बेड के सिरहाने बैठ कर घंटों उससे बात कर रहा था, जाते समय कृति ने उसका हाथ पकड़ कर फिर आने के लिए कहा था। वह उसका पहला स्पर्श था जिसमें उसका अपनापन था, जिसे मानव ने स्पष्ट महसूस किया था। धीरे धीरे दोनों की दोस्ती और गहरी होती चली गई, साथ फिल्में देखना, घूमने जाना, पार्टियां करना अब

आम बात हो गई थी उनके बीच। सब कुछ कितना सही था, केवल तब तक, जब तक मानव ने उसे ड्रिंक के लिए टोका नहीं था। मानव का वहां खड़े रहना खुद को यातना देने के समान था, कृति उसके सामने ही थी लेकिन वह उससे चाहकर भी बात नहीं कर सकता था।

आखिरकार जब वह सुलगन बर्दाश्त के बाहर हो गई तो वह फौरन वहां से निकल गया, कृति ने उसे जाते हुए देखा। मानव सड़क पर चलते रहा, उसे घुटन सी महसूस हुई तो उसने अपना ब्लेजर उतार दिया, शर्ट के ऊपरी बटन खोल दिए और गहरी गहरी साँसे लेने लगा। रात काफी हो चुकी थी, उसका मन कर रहा था वह चीखें और फफक कर रो पड़े। लेकिन इस तरह वह सड़क पर रो नहीं सकता था। उसने बेचैनी में यहाँ वहां नजरें दौड़ाई। सड़क के कोने में एक अँधेरी गली दिखी, वह बेचैनी से वहां गया, खुद को अकेला पाकर उसने अपनी भावनाओं पर से अपना नियंत्रण हटा लिया। वह फफक पड़ा, दिन भर की बेचैनी और जलन उसके आंसुओं के द्वारा बाहर आ रही थी। उसका तन बदन मानो सुलग रहा था, वह कृति से बुरी तरह जुड़ चुका था, उसे नहीं पता था उसका उससे क्या रिश्ता है, लेकिन वह बस तड़प रहा था। उसने न जाने कब से बंधे आंसुओं के बाँध को फूटने दिया, उसके भीतर की आग और बेचैनी आंसुओं के रास्ते गालों पर बह रही थी। वह बेसाख्ता चीखना चाहता था और चीख भी पड़ता लेकिन उसने अपना मुंह ब्लेजर से दबा लिया। मुंह दबाए वह पूरी ताकत से बेआवाज चीखता रहा। उसमें गुस्सा नहीं था, उसमें निराशा थी, हताशा थी। उसकी विवशता पर उसे रोना आ रहा था। आखिरकार वह घुटनों पर बैठ गया। काफी देर रोने के पश्चात उसने कोई निर्णय लिया।

“मैं कृति को नहीं खो सकता। उसका साथ मुझे अच्छा लगता है, भले वह किसी भी रूप में मेरे साथ रहे, लेकिन मैं उसका साथ चाहता हूँ। मैं पहल करूँगा, क्योंकि मुझे उसकी जरूरत है। अगर मैंने पहल नहीं की तो मैं उसे हमेशा के लिए खो दूंगा।” वह निरन्तर बहते आंसू पोंछते हुए स्वयं से बड़बड़ाता रहा।

उसके भीतर कृति को फोन करने की हिम्मत नहीं थी, उसने उसे मैसेज कर दिया।

“कृति! हो गई मुझ से गलती, लेकिन यह इतनी बड़ी गलती भी तो नहीं जिसके लिए माफ़ न किया जा सके। सॉरी यार, मैं अपनी गलती मानता हूँ। मैं तुझे नहीं खोना चाहता, बस तेरी फिक्र होती है इसलिए अनजाने में यह सब हो जाता है। मुझे पता है तू समझदार है। अपना अच्छा भला जानती है समझती है, लेकिन मैं क्या करूँ ? मेरा दिल नहीं मानता, तुझे लेकर एक अनजाना सा डर बना रहता है, इसी फिक्र में मुझसे ओवर रिएक्ट हो जाता है। लेकिन वह मेरी फिक्र है, तेरी परवाह है उसमें। लेकिन इसके लिए तुम मुझे इस कदर नजरंदाज नहीं कर सकती। तुम भी यह सब जानती हो फिर भी अनजान बनती हो। हद से ज्यादा जलन और सुलगन होती है, जब तुम सामने रह कर भी इस तरह अजनबियों सा व्यवहार करती हो। कुछ ही दिनों पहले की तो बात थी, जब तुम मेरे साथ थी। जब हम दोस्त से बढ़ कर हुआ करते थे। मुझे हर चीज बांटा करती थी, ख़ुशी, गम, तकलीफ, जीवन के हर हिस्से का हिस्सेदार होते थे हम। लेकिन आज एकदम अजनबी हो गई हो। मुझे हर उस चीज का आज दिल से पछतावा हो रहा जो मुझसे हुआ, जिस कारण आज तुम मुझसे दूर हो गई, मुझे अपने हर किये का अफ़सोस है, अगर तुमने मुझे कभी माफ़ नहीं किया तो मेरी बेवकूफियों के लिए मैं भी खुद को कभी माफ़ नहीं कर पाऊँगा।

सब ठीक कर दो ना कृति! यह इतना मुश्किल भी तो नहीं है, भुला दो मेरी बेवकूफियों को, क्या यह इतना मुश्किल है ? क्यों सब पहले जैसा नहीं हो सकता ? देखो ना बात अब भी ज्यादा नहीं बिगड़ी है, सब हमारे हाथ में ही है। मैं पहल कर रहा हूँ, अपनी गलतियां मान रहा हूँ, क्योंकि मैं इस समय की कीमत जानता हूँ, जो समय साथ रहने का है, उसे हम इस तरह कड़वाहटों में क्यों गंवा रहे है ? यह बात मैंने आज जानी है कृति, समय बीतने के साथ हमें अफ़सोस होता है, जो समय साथ रहने का था, वह हमने फिजूल की नाराजगी में गंवा दिया। जिन्दगी छोटी है नाराजगी और नफरत के लिए, यह जब तक हम और आप समझते है तब तक जिन्दगी का वह हिस्सा गंवा चुके होते है, जिसे खोने के बाद केवल अफ़सोस और पछतावा शेष रह जाता है।’

गलतियों को भुलाया जाता है, गलतियों के कारण रिश्तों को नहीं। मैं हमेशा तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा करूंगा कृति। बस मुझे एक बार, बस एक बार हो सके तो अपने दिल से माफ़ कर दो।

मानव की आँखों से आंसुओं का झरना सा बह रहा था, उसे यह सन्देश धुंधला सा दिखाई पड़ रहा था, ना जाने कितनी ही गलतियां थी इस टाइपिंग में, लेकिन गलतियां कोई मायने नहीं रखती थी, उसे केवल भावनाओं से मतलब था।

□□□

मानव उलझन में था, उसकी दूसरी किताब प्रकाशित हो चुकी थी, और आज ही उसकी लेखकीय प्रतियाँ कुरियर से प्राप्त हुई थी। उसने अपनी साकार रचना को कई कई बार निहारा, कवर पर हाथ लगा कर उसे महसूस करते रहा।

यह हालांकि उसकी दूसरी किताब थी, इसके बावजूद वह अहसास पहली किताब प्रकाशित होने जैसा ही था, पहले पन्ने पर उसने हमेशा की तरह अपने माता पिता और परिवार का धन्यवाद किया था।

किताबें मिलने के बाद से उसके भीतर हलचल हो रही थी, कृति को आखिरी मैसेज किये एक महीना बीत चुका था लेकिन उसकी ओर से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ था। उसका दिल बार-बार कृति के इस रूखेपन से टूटता रहा लेकिन हर बार वह उन टूटे टुकड़ों को जोड़कर फिर उम्मीद लिए आ जाता।

आज उसने आखिरकार हिम्मत करके कृति का नम्बर डायल किया।

काफी समय तक रिंग बजती रही।

“उठा लो कृति। बस एक बार बात कर लो।” मानव बड़बड़ाया। उसकी धड़कने एकदम से तेज हो गई थी। वह बेचैन हो गया।

“हेल्लो!” कृति के धीमे स्वर ने उसकी तन्द्रा भंग की।

“ह..है..हेल्लो! कृति प्लीज़ प्लीज़ प्लीज़ फोन मत काटना, प्लीज़।” मानव हड़बड़ाया, उसे डर था कहीं कृति फोन न काट दे।

“बोलो!” कृति का भावविहीन स्वर उभरा। मानव उसके भावविहीन स्वर को सुनकर उसका उत्साह ठंडा पड़ गया,लेकिन फिर भी हिम्मत न हारते हुए एक झूठी और खोखली उम्मीद में वह डटा रहा।

“मुझे आज मिलना है, प्लीज़, मना मत करना ज्यादा समय नहीं लूँगा। बस पांच मिनट दे देना, उसके बाद चले जाना, बस पांच मिनट कृति बस पांच मिनट।” मानव मानो गिड़गिड़ा

सा रहा था, उसे डर था कृति कही इंकार ही न कर दे, यदि कृति मना कर देती तो निश्चित ही मानव रो पड़ता। सामने से कोई उत्तर आते न देख मानव व्यग्र सा हो गया।

“कृति ! मैं तेरा इंतज़ार करूंगा, फाइवस्टार मॉल के गेट पर ! तुम्हारे ऑफिस के रास्ते में ही पड़ता है ना? मैं भी क्या बोल रहा हूँ यार, हम तो हमेशा वहीं मिला करते थे। प्लीज़ आ जाना, मैं वहां इंतज़ार करूंगा।” कहकर मानव ने बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये फोन ही काट दिया। उसे डर था यदि वह अधिक देर तक फोन पर रहा तो शायद कृति का मना कर देगी, वह झूठा इंतज़ार कर लेगा लेकिन उसकी ना नहीं सुन पाता। काफी देर तक उधेड़ बुन में रहने के पश्चात वह निकलने के लिए तैयार हो गया। उसे मॉल पहुँचने में लगभग डेढ़ से दो घंटे लग जाने थे, अभी दोपहर के बारह ही बज रहे थे, और कृति छह बजे ऑफिस से निकलती, ऑफिस से मॉल पहुँचने में उसे मुश्किल से बीस मिनट भी नहीं लगने थे। मानव उससे पहले पहुंचना चाहता था, वह पांच मिनट का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने दे सकता था। उसने अपने कपड़े बदले और अपने बैग में अपनी नई किताब की एक कॉपी रख ली। वह इसे कृति के साथ बांटना चाहता था, इसी बहाने वह कृति से मिल भी लेता।

“मैं मना लूँगा उसे। पहले भी मनाया है, फिर मान जायेगी, वह मुझसे नफरत थोड़े ही करती है, बस थोड़ी जिद्दी है इसलिए पहल का इंतज़ार हमेशा मेरी ओर से ही करती है। और मैं जरूर करूँगा।” मानव खुद को बहलाता रहा।

□□□

मानव मॉल में गुमसुम सा खड़ा था। वह चार बजे ही आ चुका था, एक-एक पल उसके लिए काटना भारी पड़ रहा था। वह बार-बार अपने फोन में मैसेज देखता, इस झूठी उम्मीद में की कही कृति ने कोई मैसेज न किया हो, यह जानने के बावजूद कि कृति ऐसा कुछ नहीं करने वाली। लेकिन उसका मन ही नहीं मान रहा था, वह बार-बार घड़ी में समय देखता। उसने तय कर लिया था वह उसके आते ही माफ़ी मांग लेगा। उसे थोड़ा गुस्सा जरूर है लेकिन कृति कुछ नहीं बोलेगी, उसके मन में मेरे लिए लगाव है, इसलिए वह मुझे हर बार मिलने पर गले लगाती है, देखना वह आते ही जरूर गले लगेगी। यह उसका तरीका है, वह कभी बोल कर नहीं जताएगी और ना मनाएगी, बस गले लग जायेगी, इसी में उसका प्यार है, यही तो समझना है।

मानव काफी देर तक खुद को समझता रहा, बातें बनाता रहा। घड़ी में साढ़े छह बज चुके थे, कृति अब तक नहीं पहुंची थी। शायद ट्रैफिक लगी होगी, शाम का समय है, पीक आवर्स में ट्रैफिक सामान्य बात है, वह खुद को समझाता रहा जबकि वह कोई पहली बार इस मॉल उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा था, उसे अच्छे से पता था इस मार्ग पर ट्रैफिक नहीं होता।

“ज्यादा काम होगा आज, आखिरकार जिम्मेदार पोस्ट पर है, बस खत्म करके आती ही होगी।” मानव अनजानी आशंका से घबरा रहा था लेकिन खुद से ही लड़ रहा था।

“फोन करके पूछ लेता हूँ, शायद भूल गई होगी ! हो सकता है दिमाग से निकल गया होगा, आखिर इतने महीनों बाद मिल रहे है तो यह सामान्य बात है, हो जाता है कभी-कभी। लेकिन क्या पता फोन करने से गुस्सा हो जाए ? उसे पसंद नहीं कोई उसे काम के बीच टोके या बार-बार एक ही चीज के लिए बोले। कही वह घर तो नहीं चली गई ? एक बार फोन कर ने में हर्ज ही क्या है ? झेल लूंगा उसका गुस्सा।” मानव की आँखें डबडबाने लगी थी। आखिरकार उसने कांपते हाथों से हिम्मत करके नम्बर डायल कर ही दिया।

“हेल्लो !” कृति का धीमा स्वर उभरा।

“म...मैं हूँ मानव! मैं मॉल में खड़ा हूँ, मुझे लगा कही भूल तो नहीं गई, इसलिए याद दिलाने के लिए फोन किया, प्लीज़ गुस्सा मत करना।” वह घबराते हुए बोला।

“वर्कलोड ज्यादा था, बस दस मिनट में निकल रही हूँ।” कृति ने इतना कहकर फोन काट दिया। मानव को समझ में ही नहीं आया कि वह क्या कहे, क्या करें, इंतज़ार करने के अलावा और कोई चारा भी नहीं था। वह बार-बार मुख्य सड़क की ओर देखता, हर ऑटो, हर कैब को रुकते देख कर उम्मीद से देखता लेकिन कृति को न देख हर बार निराशा ही हाथ लगती। आखिरकार पौने आठ बजे कृति एक ऑटो से बाहर निकलते दिखाई दी। मानव के मन में बहुत कुछ था। वह उससे शिकायत करना चाहता था लेकिन उसे पता था इससे बनी बात भी बिगड़ सकती थी।

कृति ने उसे देखा, वह उसे देख मुसकुराई और आगे बढ़ी, मानव उसके गले लगने की उम्मीद करता ही रह गया और वह उसके सामने आकर खड़ी हो गई। मानव कुछ क्षण तक निःशब्द रहा, कृति की ओर से कोई पहल नहीं हुई, तो वह जबरदस्ती मुस्कराया।

“आज काम बहुत ज्यादा रहा होगा न ?” मानव ने अपनी बेचैनी छिपाते हुए कहा।

“हां ! चलो अंदर चलते है, कुछ खाते है, मुझे बेहद भूख लगी है।” कृति ने कहा तो मानव उसके साथ चल दिया। मॉल में स्थित एक कैफे में जाकर मानव ने स्नैक्स और कॉफ़ी ऑर्डर कर दी। अब वह उसके सामने बैठा था, बहुत सी शिकायतें थी उसके मन में, लेकिन वह इस कीमती समय को शिकायतों में नहीं गंवाना चाहता था। कृति बिखरे बालों और पीले ड्रेस में बेहद खूबसूरत लग रही थी, उसने यह बात नोट की थी कि कृति पर पीला रंग काफी खिलता था।

“बोलो क्या कहना चाहते थे ? क्या काम था ?” प्रीति ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा, प्रीति की यही आदत मानव को बेचैन कर देती थी, वह बिना लाग लपेट के सीधे मुद्दे पर आ जाती थी, यह नहीं कि इतने महीनों बाद मिले थे तो हाल चाल पूछती, इसके बजाय सीधे काम की बात।

“क्या हमें मिलने के लिए कोई काम होना जरूरी है कृति ? हम पहली बार तो नहीं मिल रहे न ?” मानव बुझे स्वर में बोला।

“मैंने ऐसा नहीं कहा ! लेकिन इतने दिन तो मिलने की बात नहीं की और आज अचानक से फोन किया तो हैरान होना स्वाभाविक है।” कृति ने कहा, कॉफ़ी और स्नैक्स आ चुके थे। उसने मानव की ओर देखा।

“कितने दिनों से शेव नहीं की तुमने ? और ये आँखें इतनी लाल क्यों है ? नशा करने लगे हो क्या ?” कृति ने इतनी देर में पहली बार मानव के हुलिये पर ध्यान दिया। वह काफी बदला और बुझा हुआ सा नजर आ रहा था।

“अरे कुछ नहीं, बस कुछ दिनों से बीमार था। अब ठीक हूँ।” उसने बात छिपा ली, कृति ने बिना समय गंवाए स्नैक्स पर ताव मारना शुरू कर दिया। मानव ने अपना बैग टटोला और किताब निकाल कर उसके सामने रख दी।

“तुम्हें रुठने का हक है।” कृति ने किताब का नाम पढ़ा।

“वाह! बधाई मानव, दूसरी किताब पब्लिश हो गई, अब तो तुम बड़े राइटर बन गए हो। ऑटोग्राफ तो कर दो अपने हाथों से।” कृति ने चहकते हुए किताब उसके आगे बढ़ाई, मानव

ने बैग की जेब से पेन निकाल कर उस पर फौरन दस्तखत कर दिए। कृति किताब को जस का तस बैग में रखने लगी।

“कृति ! रुको, उसका आखिरी पन्ना पढ़ो।” मानव ने आग्रह किया।

कृति ने किताब निकाली और बेसब्री से उसका आखिरी पन्ना खोला।

“धन्यवाद मेरी बेस्ट फ्रेंड का, जिसकी वजह से मैं लिखने को प्रेरित हुआ, जो हमेशा मुझे सेलिब्रिटी ट्रीट देती है, जिसकी अहमियत मैं चंद शब्दों में बयान नहीं कर सकता। तुम न होती तो यह माहौल नहीं होता और ना ही कहानियाँ होती। तुम मेरी जिन्दगी का एक ऐसा हिस्सा हो जिसके बगैर मैं हमेशा अधूरा रहूँगा, तुम्हारे रुठने को समर्पित।”

“यह किसके लिए है ?” कृति ने शरारत पूर्ण भाव से कहा।

“तुम्हारे लिए।” मानव ने नजरें झुका ली, वह उसकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा कर रहा था। बेचैनी अब उसके चरम पर थी। कृति कुछ कहती इसके पहले उसका फोन वाइब्रेट हुआ।

“एक मिनट !” उसने मानव को इशारा किया और फोन पर बात करते हुए गैलरी में चली गई, मानव उसे जाते देखता रहा। उसे कॉफ़ी की कतई इच्छा नहीं थी लेकिन समय काटने के लिए कोई और उपाय न होने के कारण न केवल उसने कॉफ़ी समाप्त की बल्कि स्नैक्स भी खत्म कर लिए। उसने उम्मीद से कृति की ओर देखा, कृति गलियारे में ही फोन पर लगी हुई थी, वह हंस रही थी, मुस्करा रही थी। बीच-बीच में शर्मा भी रही थी। मानव बस उसे देखता रहा। कृति को होश भी नहीं था कि वह पिछले पच्चीस मिनट से फोन पर लगी हुई है, और मानव अकेला बैठा है।

मानव बेवकूफों की तरह अकेला बैठा रहा, उसका चेहरा बन बिगड़ रहा था। भावनाओं का एक सैलाब सा उसके भीतर फूटने को तत्पर था। वह उठा और उसने अपनी किताब उठा कर बैग में रख ली। उसने कृति को दो तीन बार इशारे से बुलाया भी लेकिन वह थोड़ी देर और कहकर रुकी रही। लगभग पैंतीस मिनट बाद आखिरकार वह लौटी।

“चलो ! अब चलती हूँ, मुझे देर हो रही है।” कृति ने मानव से कहा, मानव कुछ नहीं बोला, वह बस बनावटी मुस्कुराहट दिखा कर रह गया, उसने अपने आंसुओं को जबरदस्ती आँखों के भीतर ही रोक रखा था। वह चुपचाप उठा और कृति के साथ चल दिया।

वह कुछ बोलता इससे पहले कृति अपने फोन में मैसेज में व्यस्त हो गई, उसे व्यस्त देखकर मानव की हिम्मत नहीं हुई कि उससे कोई प्रश्न करें, दोनों मॉल के गेट पर पहुँच चुके थे। कृति ने मोबाइल जेब में रखा।

“मेरी बुक कहाँ रखी ?” उसने पूछा। मानव बस मुस्करा कर रह गया।

“थोड़ी देर रुक जाओ कृति! मैं कब से इंतज़ार कर रहा हूँ, मैं चार बजे से यहाँ खड़ा हूँ यार।” मानव ने शिकायत की, उसने सम्पूर्ण शक्ति लगा दी थी अपने गुस्से और बेचैनी को काबू में करने के लिये।

“मैं काम खत्म करके ही आ सकती थी मानव।” कृति ने सफाई दी।

“पौने आठ बजे ?” मानव ने उसकी ओर कातर भाव से देखा, उसकी आँखों में गीलापन साफ़ दिखाई देने लगा था।

“मेरे लिए थोड़ा भी समय नहीं है कृति?” मानव बस रो ही पड़ता लेकिन उसने स्वयं को संभाल लिया।

“तुम हमेशा ऐसी नकारात्मक बातें क्यों करते हो यार? दूसरों को थोड़ा समझा करो।” कृति थोड़ी झल्लाई।

“कृति ! थोड़ा सा ही समय माँगा था, कम से कम फोन पर जो भी था उससे बहाना बना देती कि कोई जरूरी काम है, बाद में बात कर लूंगी।” मानव बोला, उसके मन के भीतर का क्रोध धीरे धीरे बाहर फट पड़ने को आतुर था, लेकिन वह दबाए रहा, जिस वजह से उसका चेहरा बुरी तरह बन बिगड़ रहा था।

“मैं सफाई नहीं दूंगी ! तुम थोड़ा स्पेस देना सीखो, एक बात जान लो मानव किसी को जितना अधिक बाँधोगे वो तुमसे उतना ही दूर जाएगा।” कृति बोली।

“मैंने तो कभी कोई बंदिश नहीं लगाई, मैं तो बस..” मानव का गला रुंध गया।

कृति ने एक ऑटो रुकवाई और ऑटो की ओर बढ़ गई।

“मानव! तुमसे मिलकर अच्छा लगा।” कृति मानव के समीप आकर बोली। मानव इस आशा में खड़ा रहा, हर बार की भांति उसे उम्मीद थी कि शायद जाते समय कृति उसे गले जरूर लगाएगी, लेकिन उसने बस हाथ हिला कर बाय कहा।

“अपना ख्याल रखना।” कहकर वह ऑटो में बैठ गई।

“तुम भी कृति।” मानव ने कहा।

“मेरी किताब ?” कृति को अचानक याद आया, उसने मानव की ओर देखा।

मानव बस मुस्करा कर रह गया और वह चला गया। कृति उसे देखती रह गई। मानव पलट नहीं सकता था, अगर वह पलट जाता तो कृति उसके आंसू देख लेती। मानव का बाँध टूट चुका था, उसका गुस्सा उसकी विवशता और बेबसी बन कर आँखों के रास्ते बह रहा था। वह फफक पड़ा। उसे इसकी कतई परवाह नहीं थी कि वह इस समय एक व्यस्त और भीड़ भरी सड़क पर खड़ा था। बस उसका कोई हिस्सा उससे अलग हो चुका था, मानव इस हकीकत को स्वीकार नहीं करना चाहता था।

□□□

वैष्णो देवी से वापसी

मानव अब शांत था, भीतर उमड़ती भावनाओं को छिपाने के प्रयास में उसके चेहरे की मांस पेशियाँ फूल पिचक रही थी। मानव के स्वर में हल्की भर्राहट स्पष्ट महसूस की जा सकती थी। कुछ पलों तक अनिकेत और विनय को समझ ही न आया कि वे क्या प्रतिक्रिया दें। वे भैरो घाटी से उतर चुके थे और थके होने के कारण एक बेंच पर बैठे हुए थे। ठंड अत्यधिक बढ़ चुकी थी, वापसी में श्रद्धालु काफी कम थे, रात के डेढ़ बजने को थे और अब भी उन्हें दस किलोमीटर का फासला तय करना था। मानव की कहानी सुनकर तीनों एकदम शांत थे, मानव को इस कारण थोड़ा अजीब सा लग रहा था, एक अपराधबोध सा उसे महसूस होने लगा।

"अरे यार ! एकदम से चुप हो गए आप लोग भी। ऐसे रिएक्ट मत करो भाई, मुझे शर्मिंदगी सी हो रही है।" मानव जबरदस्ती की मुस्कान चेहरे पर लाते हुए बोला, जबकि बीती बातों को पुन: याद करके वह सबसे ज्यादा व्यथित था।

"चलो, अभी दस किलोमीटर का फासला तय करना है, कुछ घंटों में हम नीचे पहुँच जायेंगे। देखो यहाँ से कटरा की सड़कें और इमारतें कितनी सुंदर दिखाई दे रही है, हम जैसे-जैसे आगे बढ़ेंगे ये दृश्य और समीप आता जायेगा, तो माता का जयकारा लगाओ और निकल पड़ो, वैसे भी हम हर एक-डेढ़ किलोमीटर पर विश्राम करते हुए चल रहे है तो थकान भी उतनी नहीं होगी।" मानव बड़बड़ाता रहा।

"भाई ठंड बढ़ गई है, कान सांय सांय कर रहे है, ठंडी हवाओं के बीच ही हमें अभी पूरी रात चलना है, चलते रहेंगे तो गर्मी बनी रहेगी, मार्ग भी लगभग सुनसान ही है अब, श्रद्धालु या तो भवन के पास या फिर कहीं विश्रामालय में विश्राम कर रहे हैं, सारे रास्ते केवल कुछ ही गिने चुने लोग दिखाई दे रहे हैं। आराम करने के लिए बनी कुर्सियों और चबूतरों पर थके हारे श्रद्धालु चादर, कम्बल ओढ़े सो रहे है। हम भी कही आराम करते लेकिन दर्शन के पश्चात रास्ता लम्बा लग रहा है और हमें आज शाम की दिल्ली ट्रेन भी तो पकड़नी है। इसलिए कोई मार्ग नहीं है, माता का नाम लो और बढ़े चलो।" विनय ने कहा। अनिकेत सिर हिलाते हुए बेंच से उठ खड़ा हुआ, उसने अपनी गर्दन को ठंडी हवा से बचाने के लिए जैकेट की कॉलर खड़ी कर ली, और दोनों हाथ जैकेट की जेब में डाल लिए। मानव ने जैकेट के नाम पर एक ब्लेजर पहन रखा था, और उसे यह अहसास भी हो रहा था कि इस ठंड में यह ब्लेजर बेकार है। बस वह किसी तरह से सम्पूर्ण शरीर को ठंडा होने से बचाए रख रही थी। उन्हें अब कंपकंपी सी छूट रही थी, और इस समय आते हुए जो कैफेटेरिया और कैंटीन खुली हुई थी वे सभी बंद दिखाई दे रही थी।

मानव चलते चलते अचानक रुक गया, उसकी नजरें मार्ग में बने शेड के ऊपरी हिस्से की ओर गई, वहां पचासों बंदर एक दूसरे से लिपटे हुए सो रहे थे। बंदरों के हमले से मानव पहले ही आतंकित था और मना रहा था कि दोबारा बंदरों से उसका सामना ना हो, लेकिन अपने सिर के ऊपर सैकड़ों बंदरों को मधुमक्खी के छत्तों की भांति सोता देखकर उसकी हालत खराब हो गई, एक्का दुक्का बेचैन बंदर जिन्हें नींद नहीं आ रही थी वे मार्ग में यहाँ वहां बैठे हुये थे। अनिकेत और विनय ने मानव की घबराहट देखी और उसकी नजरों का पीछा किया, उन लटके चिपके बंदरों को देखकर एक बारगी वे भी सिहर गए।

"मानव ! बिना कोई आवाज किये आगे बढ़ो।" अनिकेत उसके कान के पास फुसफुसाया। मानव बिना कुछ कहे, बिना दायें बाए देखे जितनी तेजी से हो सकता था उतनी

तेजी चल पड़ा, इस समय वह भगवान से मना रहा था बंदरों की नींद ना खुले। उसके पीछे अनिकेत और विनय भी तेज कदमों से चलते रहे, बंदरों का भय उनके मन में भी था। कुछ दूर चलने के पश्चात वे उस शेड वाले भाग से आगे आ चुके थे जहाँ बंदरों की टोली सो रही थी। निरंतर और तेज चलने से मानव को प्यास लगी, वह रुका। अनिकेत और विनय उसके आगे चल रहे थे। वे रुक गए। मानव ने बैग खोल कर पानी की बोतल निकालने का प्रयास किया, बैग में तीनों द्वारा लिया गया प्रसाद तीन पैकेटों में रखा हुआ था, मानव ने पैकेट हटाया और बोतल निकाली।

“विनय भाई सामने देखो।” अनिकेत आतंकित स्वर में बोला। विनय ने सामने देखा, एक हट्टा-कट्टा बंदर उन्हीं की ओर बढ़ते चला आ रहा था, विनय के होश ही उड़ गए।

“ये...हमारी ओर क्यों आ रहा है ? अरे यार कितना बड़ा है ये।” विनय के छक्के छूट गए थे। तब तक मानव की नजर भी उस बंदर पर पड़ चुकी थी जो उन दोनों की ओर निर्भीकता से बढ़ रहा था। वह खी-खी करते हुए लगभग गुस्से में उनकी ओर बढ़ रहा था।

“अरे हमने तो इसे छेड़ा भी नहीं, फिर क्यों ये गुस्से में आगे आ रहा है ?” विनय बोला।

“चुप रहो ! कुछ मत बोलो और उसकी आँखों में मत झांको।” अनिकेत फुसफुसाया। तब तक बंदर उन दोनों के सामने आकर न केवल ठहर गया बल्कि दो पैरो पर खड़ा हो गया, उसकी लम्बाई लगभग उनकी कमर से थोड़ा नीचे ही थी। बंदर को इस तरह खड़े देख कर दोनों की साँसे ही रुक गई। बंदर ने एक नजर दोनों को देखा और उनके पैरों पर एक-एक हाथ रखकर उन्हें अपने मध्य से परे धकेल दिया, वैसे उसमें उतनी शक्ति नहीं थी जिसमें किसी इंसान को धकेल सके, लेकिन उसका आतंक ही पर्याप्त था, हाथ लगते ही खुद ब खुद रास्ता बनाने के लिए। बंदर उनके बीच से शान से निकल गया और मानव की ओर बढ़ा। वे हैरत से उसे देखते रहे, अब आतंकित होने की बारी मानव की थी।

“इसका मतलब ये बंदर अनिकेत और विनय भाई को रास्ते से हटा कर मेरी ओर आना चाहता था, लेकिन क्यों ?” मानव भय की अधिकता से अपने स्थान पर जड़ हो गया।

“जय हनुमान ज्ञान गुण सागर...” जब कुछ भी समझ में न आया तब मानव हड़बड़ी में हनुमान चालीसा पढ़ने लगा। बंदर अपने पैरों पर पुन: खड़ा हुआ और मानव के हाथ में लटक रही प्रसाद की थैली पर लपका, मानव के हाथों में प्रतिकार करने की शक्ति ही शेष नहीं थी, बंदर आराम से उसकी प्रसाद की थैली लेकर चलता बना। मानव हक्का बक्का उसे जाता देखता रहा।

“अनिकेत भाई! उसे रोको, मेरी प्रसाद की थैली लिए जा रहा है।” मानव प्रसाद को बंदर के साथ जाता देखकर विचलित हो गया।

“पागल है क्या भाई ? मैं नहीं जाने वाला उससे छिनने। तुम हमारे प्रसाद से अपना हिस्सा ले लेना।” अनिकेत ने कहा। अनिकेत और विनय भले हट्टे-कट्टे और पहलवान जैसे शरीर के स्वामी थे, किन्तु बंदर से लड़ने का साहस उनमें नहीं था। बंदर किसी राजा की भांति शान से कुछ दूर तक थैला लटकाये चलता रहा और एक स्थान देखकर बैठ गया। उसने थैले को टटोला और चुनरी, नारियल को छोड़ कर मिष्टान्न और सूखे फलों को बीनने लगा। अपने मन की वस्तुओं का चुनाव करके, आधा मुंह में भरे और आधा हाथ में लिए थैला वहीं रख कर वह इस प्रकार आगे बढ़ गया मानो उसने कोई किला फ़तेह कर लिया हो। बंदर काफी दूर चला

गया तब मानव हिम्मत करके उस थैले की ओर बढ़ा जिसमें नारियल चुनरी और माता की तस्वीरें जस की तस रखी हुई थी।

“भाई साहब प्रसाद में से अपना हिस्सा ले गए।” मानव बोला, उसके बोलते ही ना चाहते हुए भी तीनों की हंसी छूट गई।

“भाई उठा लो, और बैग में डाल लो। अब आगे मार्ग में भूल से भी बैग मत खोलना।” विनय ने कहा, बंदर के जाने के बाद उसकी जान में जान आई थी। तीनों बैग टाँगे अपने मार्ग पर बढ़ गए, बीच-बीच में उस बंदर को याद करके हँसते भी रहे।

“भाई दो घंटे हो गए चलते चलते, अब भी सात किलोमीटर बाकी का बोर्ड दिखाई दे रहा है। हे भगवान यह कैसी परीक्षा ले रहा है हमारी।” मानव बीच मार्ग में अलथी पलथी मार कर बैठ गया। मील के पत्थर को देख कर विनय और अनिकेत भी मानो चिढ़ से गए, उन्हें लगा अब केवल चार किलोमीटर बचे होंगे लेकिन अब भी सात किलोमीटर बाकी था। मार्ग के किनारों से अँधेरे में चमकता कटरा शहर अब उतने ही अंतर पर दिखाई दे रहा था जितनी दूरी पर उन्होंने तीन घंटे पहले देखा था।

“भाई हम पक्का सही मार्ग पर है ना ? उतर रहे है या और ऊपर जा रहे है ?” विनय ने मार्ग के किनारे से कई सौ फीट नीचे अँधेरी खाई की ओर देखते हुए कहा।

“क्यों विनय ?” अनिकेत ने प्रश्न किया।

“भाई, ऊपर से दिखाई देता कटरा शहर अब भी उतना ही दूर दिखाई दे रहा है, या मुझे तो लग रहा है और दूर हो गया है।” वह थक कर चूर हो गया था।

“हम सही जा रहे हैं भाई, कोई भटकने वाला दूसरा मार्ग यहाँ है ही नहीं, मील का पत्थर भी तो है, पढ़ लो उसे। बस काफी देर से चलने और थकान की वजह से दूरी में अंतर नहीं कर पा रहे है हम। बस चलते रहो, जितना आराम करेंगे सफ़र उतना ही लम्बा प्रतीत होगा, अब कम से कम आधा घंटा आराम नहीं करना है । चलो मानव अब उठो भी यार।” अनिकेत ने मानव का हाथ पकड़ कर खींचा।

“थोड़ी देर रुक जाओ, पहले मैं थोड़ा जी भर के रो लूं, उसके बाद चलते है।” मानव पंचर हुए टायर की भांति ही लुंज पुंज हुआ जा रहा था, उसके चेहरे से लग रहा था वह किसी भी क्षण दहाड़ें मार कर रो पड़ेगा। अनिकेत ने उसकी एक ना सुनी और हाथ पकड़ कर उसे खड़ा कर दिया। मानव लगभग अनिकेत के कंधों पर झूलते हुए चले जा रहा था, आखिरकार कुछ देर और चलने के पश्चात भी जब अंतर में कुछ ख़ास फर्क न पड़ा तो अनिकेत ने घुमावदार मार्ग के बजाय सीढ़ियों के द्वारा नीचे उतरने की योजना बना ली।

“सीढ़ियाँ हजारों की संख्या में है भाई, उतरते उतरते पिंडलिया अकड़ जायेंगी हमारी और कल सुबह हालत खराब हो जाएगी। पिंडलियों में अकड़न हुई तो दो दिन चलने के मोहताज हो जायेंगे।” विनय ने किनारों पर बनी सीढ़ियों की ओर देखते हुए कहा।

“भाई ! सपाट वाला रास्ता जब तक दो मोड़ पार करेंगे तब तक हम सीढ़ियों से उससे दुगुना रास्ता पार कर लेंगे, वह भी जल्दी। और वैसे भी कल कोई घूमना फिरना तो है नहीं, सीधे होटल में आराम करना है और शाम को ट्रेन पकड़नी है, परसों सुबह तक हम दिल्ली पहुँच जायेंगे। ट्रेन में भी सोना ही है तो आराम मिल जाएगा, लेकिन इसी हिसाब से चलते रहे तो सुबह आठ बजे तक भी नीचे नहीं पहुँच पायेंगे।” अनिकेत ने कहा। मानव और विनय को

उसकी बात जंच रही थी, लेकिन वे यह भी जानते थे कि सीढ़ियाँ भले जल्दी पहुंचा दे लेकिन बाद में पैरों का दुखना निश्चित था। किन्तु फिलहाल कोई अन्य मार्ग भी नहीं था।

दोनों ने सहमति दे दी, सहमति मिलते ही अनिकेत सीढ़ियों की ओर बढ़ा, उसके पीछे पीछे दोनों चलने लगे। कुछ देर तक तो सब सही लग रहा था और अच्छा खासा अंतर भी पार कर लिया, किन्तु अब पैर कांपने लगे थे, हर सीढ़ी पर पैर मानो लड़खड़ा रहे थे। आखिरकार सवा घंटे लगातार चलने के बाद तीनों सीढ़ियों पर ही बैठ गए।

“भाई, बैठ जाओ थोड़ी देर, बल्कि मैं तो कहता हूँ इन्हीं सीढ़ियों पर थोड़ी देर सो ही जाओ।” मानव हाँफते हुए बोला। मानव दिखने में जितना फुर्तीला था असल में वह उतनी ही जल्दी पस्त हो गया था। विनय भी बुरी तरह थका हुआ था, अनिकेत भी उनके साथ वहीं बैठ गया।

“बेटा ! ज्यादा आराम मत करो, वरना फिर चल नहीं पाओगे, अभी हाथ पैरों में गर्मी है तो चलते रहो, एक बार आराम मिलने पर दर्द शुरु हो जायेगा तब बहुत दिक्कत होगी। अब ज्यादा सीढ़ियाँ नहीं बची है, चलते रहो।” उनके पीछे आती एक वृद्धा ने उन्हें कहा। तीनों ने उस वृद्धा की ओर देखा, उन्हें आश्चर्य था कि इस उम्र की बुढ़िया उन्हीं सीढ़ियों से बिना थके, बिना हांफे उतर रही थी, उसके मुख पर किंचित भी थकान दिखाई नहीं दे रही थी।

तीनों उसे एक टक देखते रहे, वे उस पर हैरान हो रहे थे। जहाँ वे नौजवान होकर पस्त हो चुके थे वही यह बुढ़िया हंसते मुसकुराते सीढ़ियाँ उतर रही थी। वह उन्हें देखते हुए आगे बढ़ गई।

“मेरे पीछे आओ, बस ज्यादा दूर नहीं है। जब मुझ जैसी बुढ़िया जा सकती है तो तुम तो अभी नौजवान हो बच्चों। माता का नाम लो और चल पड़ो।” कहते हुए बुढ़िया लाठी टेकते हुए सीढ़ियां उतरती चली गई।

“चल भाई ! अब तो बात इज्जत पर आ गई, देखो अम्मा जी लाठी टिकाते टिकाते भी चली जा रही है, और हम यहाँ लेटे है।” कहकर अनिकेत उठ खड़ा हुआ, उसकी देखा देखी मानव और विनय भी उठ खड़े हो गए। वे सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे, मानव की नजरें उस वृद्धा को खोज रही थी जो अगले मोड़ पर ही दृष्टि से ओझल हो गई। काफी आगे चलने पर भी वह कहीं दिखाई नहीं दी।

“अनिकेत भाई! अम्मा जी कहां चली गई ? दूर दूर तक दिखाई नहीं दे रही।” मानव ने हैरान होते हुए प्रश्न किया।

“पता नहीं ! शायद वह आगे पहुँच गयी हो। हमें क्या करना है, चलते रहो, जय माता दी।” अनिकेत ने जयकारा लगाया, दोनों ने भी जोर की आवाज के साथ जयकारा लगाया। सीढ़ियों से उतरते हुए भी समतल वाले मार्गों पर भक्तों की कुछ टोलियाँ उतरते और जाते हुए दिखाई देने लगी थी। काफी देर चलने के पश्चात सीढ़ियाँ अब इमारतों की गलियों में से गुजरने लगी। चारों ओर मंजिला दो मंजिला इमारतें, दुकानें, मकान इत्यादि दिखाई दे रहे थे, और उन गलियों के मध्य वे सीढ़ियाँ मानो किसी अंतहीन रास्ते सी बढ़ी चली जा रही थी। हर गली के मोड़ पर उतरते समय लग रहा था मानो यह आखिरी गली हो, लेकिन ऐसा करते-करते वे न जाने कितने ही मोड़ पार करते रहे। अब पैर जवाब देने लगे थे, लेकिन फिर भी वे चले जा रहे थे। आखिरकार आखिरी गली के साथ ही पहाड़ समाप्त हुआ। पहाड़ समाप्त होते ही तीनों ने एक साथ सम्पूर्ण जोश के साथ माता की जय जय कार की। पहाड़ समाप्त होने का

आभास होते ही उनकी सम्पूर्ण थकान और तकलीफ मानो गायब सी हो गई। अब उन्हें कुछ दूरी पर बाणगंगा चेक पोस्ट दिख रहा था, वे सम्पूर्ण उत्साह के साथ आगे बढ़ रहे थे। मानव ने इसी बीच होटल वाले को फोन करके गाड़ी भेजने के लिए कह दिया।

वे लगभग बीस मिनट में आखिरकार चेक पोस्ट से बाहर पहुंचे। दिन का उजाला हो चुका था, घोड़े खच्चरों की आवाजाही पुन: बढ़ गई थी, दर्शनार्थियों की भीड़ गेट से प्रवेश कर रही थी। चारों ओर बस जय माता दी के नारे गूंज रहे थे, आस पास की बस्तियों एवं दुकानों से माता के भक्तिमय गीत गूंज रहे थे। वे गेट से बाहर आकर पलटे और जी भर कर एक नजर त्रिकुटा पर्वत को देखते रहे। सुबह के पौने छह बज रहे थे। उनकी आँखों में अजीब सी ख़ुशी और चेहरे पर संतुष्टि थी। तीनों अपनी सारी थकान एकदम भूल चुके थे, उनके हाथ अपने आप पर्वत की ओर श्रद्धा से जुड़ गए। मानव का फोन बजा, ड्राइवर पहुँच गया था।

गेट के बाहर ही उनकी वैन खड़ी थी। वे सीट पर बैठे, वैन होटल की ओर चल पड़ी। वे पर्वत को पीछे छूटता देखते रहे, तीनों इस समय नि:शब्द थे। तीनों की आँखों में नमी सी थी, जो क्यों थी यह उन्हें खुद को नहीं पता था।

"भाई मैं एक बात कहूँ ?" मानव जो काफी देर से किसी विचार में डूबा हुआ था, सकुचाते हुए दोनों की ओर देखकर बोला, दोनों ने बस सर हिला कर हां कहा।

"भाई मुझे ऐसा क्यों लगता है कि हमें सीढ़ियों पर जो अम्मा मिली थी, ये वही थी जो हमें जाते समय मिली थी, जिन्होंने बस कुछ मोड़ और बाकी है कह के हमें शाम तक पहाड़ पर चलाया था।" मानव ने कहा, उसे वह वृद्धा शुरू से ही जानी पहचानी सी लग रही थी। किन्तु थकान के कारण वह ध्यान नहीं दे पाया था।

उसकी इस बात पर विनय और अनिकेत भी चौंक पड़े, अब तक उनके दिमाग में यह बात आई ही नहीं थी। उन्हें भी उसकी आवाज और चेहरा हल्का सा जाना पहचाना प्रतीत हुआ था, किन्तु थकान और पहुँचने की जल्दी में उन्होंने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया था।

"और भाई, उनके चेहरे पर न जाते समय थकान थी और न आते समय, मुझे ऐसा क्यों लग रहा है की वे कोई साधारण महिला नहीं थी।" मानव धीरे से बोला।

"तुम बहुत ज्यादा थक गए हो, भाई इस अँधेरे में कैसे पता चलेगा कि ये वाली अम्मा वही थी ? अत्यधिक थकान के कारण अक्सर वहम हो जाता है, उसमें कोई नई बात नहीं है। यह सब ज्यादा ना सोचो।" विनय ने उसे समझाया।

"तो यह बताओ, अम्मा हमसे आगे चल रही थी लेकिन कुछ ही मिनटों में उन सीढ़ियों से कहाँ गायब हो गई ? और जहाँ हम लुढ़के पड़े थे, वहां सत्तर पिचहत्तर साल की बुढ़िया बिना थके, बिना रुके कैसे सीढ़ियों पर चल रही थी ?" मानव का मन मानने को तैयार नहीं था।

"अरे भाई, हो सकता है वो ऊपर ही किसी दुकान में रहती हो, और नीचे किसी गली में चली गई हो। और हम उन्हें यात्री समझ बैठे हो। ज्यादा उलटा सीधा दिमाग न दौड़ाओ, होटल चल कर पहले एक अच्छी नींद लो फिर बात करते हैं।" अनिकेत ने मानव की बात काटते हुए कहा। तीनों अब खामोशी से रास्तों को देख रहे थे। मानव का मुंह भले बंद हो गया था किन्तु विनय और अनिकेत भी उस बुढ़िया के विषय में सोच रहे थे। अनिकेत जानता था कि उनके आगे दूर दूर तक कोई गली नहीं थी और न ही पीछे कोई दुकान और विनय उस आवाज को और चेहरे को पहचान चुका था। यह सच था या थकान के कारण उपजा उनका वहम, यह वे स्वयं निश्चित नहीं कर पा रहे थे, लेकिन यह सच था कि जब वे हिम्मत हार चुके थे और चलने

की अवस्था में नहीं थे तभी अम्मा के कारण उनमें हिम्मत बढ़ी और वे विवश होकर आगे बढ़े थे। यह वहम ही था या वाकई दोनों समय मिली अम्मा एक ही महिला थी ? दोनों इसी उधेड़ बुन में लगे रहे, मानव के मन में कोई उलझन नहीं थी। वह स्पष्ट रूप से मान चुका था कि अम्मा कोई साधारण महिला नहीं थी।

□□□

वे होटल के कमरे में पहुँच चुके थे। पहुँचते ही तीनों के तीनों बिस्तर पर जा पड़े।

“भाई मानव! तुम्हारे सिरहाने बटन है, बत्ती बंद कर दो यार। बारह बजे तक सोते है, फिर चेक आउट करते हैं।” विनय ने लेटे लेटे ही कहा, शरीर शिथिल पड़ते ही ठंड भी ज्यादा लगने लगी थी, तीनों ने रजाइयां ओढ़ रखी थी। मैनेजर ने नाश्ते के लिए पूछा था किन्तु थकान इस कदर हावी थी कि नाश्ते से ज्यादा नींद महत्वपूर्ण लग रही थी। मानव ने उनींदे ही बटन दबाया, उस बटन के दबते ही कमरे की सफ़ेद लाइटें बंद होकर मद्धिम सी लाल रोशनी हो गई।

“भाई यह तो किसी बार या परमिट रूम जैसी लाइट जल रही है।” विनय ने मद्धिम लाल रोशनी में नहाये हुए कमरे को देखा।

“मानव ! एकदम से बंद कर दो सब के सब बटन, ऐसी लाइट कौन लगाता है यार ?” अनिकेत बोला, लेकिन मानव इस दुनिया से कही और चला गया था, वह मुंह खोले सो रहा था।

“अरे ये तो अभी पांच मिनट भी नहीं हुआ लेटे हुए और साहब गहरी नींद में चले भी गए , कोई बात नहीं मैं ही बंद कर देता हूँ।” बड़बड़ाते हुए अनिकेत ने ही बटन दबा कर बत्तियां बंद कर दी। विनय की ओर से भी अब कोई आवाज नहीं आ रही थी, वह भी थकान के कारण सो चुका था। अनिकेत अकेला था जो जाग रहा था, उसने तकिये पर अपना सिर रखा और उस अँधेरे शून्य में ताकता रहा। उसकी पलकें भी अब भारी हो रही थी, कुछ ही देर में पलकें नींद का बोझ सम्भालने में असमर्थ होकर मूंद गई। तीनों थके हारे दोस्त गहरी नींद में जा चुके थे। इतने दिनों में यह पहली बार था जब तीनों इतनी गहरी और सुकून की नींद सोये थे।

□□□

साढ़े ग्यारह बजे का अलार्म बजा, अनिकेत की नींद खुली। उसने फौरन बाकियों को जगाया, होटल से चेक आउट का समय हो रहा था, उन्हें अब तैयार होना था। तीनों आँखें मलते हुए आधी नींद से जागे, बारी-बारी नहा धो कर कपड़े वगैरह बदल कर उन्होंने अपना सामान पैक किया और कुछ छूट तो नहीं गया इसकी जांच की। सब सही सलामत था, वैसे भी उन्होंने अपना बैग ठीक से खोला तक नहीं था इसलिए समेटने में ज्यादा समय भी नहीं लगा। तीनों अपने बैग कंधे से टाँगे काउन्टर पर पहुंचे और चाभी मैनेजर को थमा दी। पेमेंट वगैरह निपट चुका था।

“सर अब आप कहाँ जायेंगे ?” मैनेजर ने प्रश्न किया।

“जम्मू से हमारी ट्रेन है दिल्ली के लिये, वहीं पहुंचना है।” मानव ने बताया।

“कैसे जायेंगे ?” मैनेजर ने प्रश्न किया।

“आते हुए गाड़ी की थी, जाते हुए भी देखते है।” विनय ने कहा।

“मेरे पहचान वाले की गाड़ी है, आप सात सौ दे दीजियेगा, पहुंचा देगा।” मैनेजर ने दांत निपोरते हुए कहा।

“पांच सौ रुपये में हम आये थे।” मानव सफ़ेद झूठ बोला।

‘साढ़े छह सौ दे दीजियेगा, चालीस पैंतालीस किलोमीटर है साब।” मैनेजर ने तोल मोल किया।

“हम कटरा से ट्रेन कर लेंगे जम्मू के लिए, वह ज्यादा सस्ता पड़ जायेगा।” मानव ने मुंह बनाते हुए कहा।

“छह सौ दे दीजिये फिर, इतने से कम नहीं हो पायेगा।” मैनेजर ने निराश ना होते हुए फिर प्रयास किया।

“आप परेशान मत होइए, हम बस या ट्रेन से चले जायेंगे, आधे पैसे में काम हो जाएगा।” इस बार विनय बोला, जबकि वह ट्रेन और बस की यात्रा करने के मूड में बिलकुल भी नहीं था, यही हाल अनिकेत का भी था, वे कल से चल रहे थे, पैर भी दर्द कर रहे थे और थकान भी थी, इसलिए वे बस और ट्रेन का सफर तो हरगिज नहीं चाहते थे।

“छह सौ में हां बोल दीजिये फिर बस, मैं ड्राइवर को फोन करता हूँ।” आत्मविश्वास से भरे मैनेजर ने उनकी हामी जानने का प्रयास किये बगैर अपने लैंडलाइन पर नम्बर डायल करते हुए कहा।

“मैं साढ़े पांच सौ से एक रुपया न दूंगा, बाकी आप मानो तो ठीक नहीं तो जय माता दी।” मानव ने हाथ जोड़ लिए।

“ठीक है, आपके लिए इतना कर देते है, लेकिन वो केवल इसलिए क्योंकि आप हमारे होटल में रुके थे, कोई और होता तो इतने में कोई गाड़ी ना ले जाती, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप यहाँ जब भी वापस आये आपके मन में ठहरने के लिए सबसे पहला ख्याल इसी होटल का आये, इसलिए इतना तो कर ही सकता हूं।” मैनेजर ने हथियार डालते हुए कहा और ड्राइवर को फोन किया।

“आधे घंटे में आ जायेगा, तब तक आप कुछ खा पी लीजिये।” मैनेजर ने उन्हें वहां बने कैंटीन की ओर इशारा करते हुए कहा। तीनों ने रात में खाना खाया था और आते ही सो गए थे, तो भूख तगड़ी लगी थी, तीनों एकमत से कैंटीन की ओर बढ़ गए।

“मेनू के पहले आप तीन चाय भिजवा दीजिये तो मेहरबानी हो जाएगी।” मानव को इस समय चाय की सख्त तलब लगी थी। उसका सम्पूर्ण शरीर टूटा जा रहा था, कमोबेश यही हाल बाकियों का भी था, चाय इस समय उनकी स्फूर्ति के लिए अत्यावश्यक सी थी।

“तो भाई अब जम्मू स्टेशन से ट्रेन पकड़ने के बाद हम सुबह तक दिल्ली पहुँच जायेंगे, मेरा रोल दिल्ली से खत्म हो जायेगा। अब अगली ट्रिप विनय भाई की है, वो ही बताएँगे।” मानव ने चाय पीते हुए कहा।

“वैसे तो मेरी योजना के अनुसार हमें हरिद्वार और ऋषिकेश जाना है, लेकिन सबसे पहले नई दिल्ली पहुँचने के बाद हम एक दिन के लिए रुकेंगे, थोड़ा आराम करेंगे, निरंतर सफर हमें थका देगा। हम अगले दिन सुबह-सुबह ही कश्मीरी गेट चलेंगे, और वहां से सीधे हरिद्वार की बस कर लेंगे, सुबह दस बजे तक भी निकलेंगे तो भी शाम तक हरिद्वार पहुँच जायेंगे और हर की पौड़ी पर गंगा आरती का लुत्फ उठाएंगे।” विनय ने कहा।

“तो हम करोल बाग़ में रुकते हैं।” अनिकेत ने कहा।

"करोल बाग़ में ही क्यों रुकना है? स्टेशन के आसपास ही क्यों नहीं ?" मानव ने प्रश्न किया।

"स्टेशन से करोल बाग़ दस मिनट का ही अंतर है मानव भाई, और वहां मेरे पहचान का एक होटल है जहाँ मेरे दोस्त के अच्छे ताल्लुकात है, तो सस्ते में रह लेंगे, दूसरे वहां मार्केट है, वहां से हम अपनी आवश्यकता की चीजें सस्ते में खरीद लेंगे, दो सौ से पांच सौ के बीच बढ़िया क्वालिटी के गर्म जैकेट्स वहाँ मिल जायेंगे, हम वह सब खरीदेंगे।" अनिकेत ने कहा।

"है तो हमारे पास गर्म कपड़े।" मानव अपनी पहनी ब्लेजर को उठाते हुए बोला।

"भाई, हम हरिद्वार और ऋषिकेश से निपट कर जहां जाने वाले है, वहां ये फैशनेबल कपड़े काम नहीं आने वाले।" अनिकेत मुस्कराया। मानव और विनय दोनों उसकी ओर देखते रहे।

तब तक उन्होंने जो ऑर्डर किया था वह खाना लग चुका था। रात के भूखे और थके वे खाना देखते ही बेसब्री से उस पर टूट से पड़े।

"अनिकेत भाई ! जैसा तय हुआ था हम तीनों अलग अलग ट्रिप प्लान किये थे, मैंने वैष्णो देवी, विनय भाई ऋषिकेश और हरिद्वार की योजना बनाए थे। लेकिन आपकी योजना अब तक पता नहीं चली और ना आपने अब तक बताई और अब अतिरिक्त गर्म कपड़ों की चर्चा हो रही है, तो सवाल मन में उठ रहा है कि भाई हम आखिर जा कहाँ रहे है ?" मानव पराठे मुंह में ठूंसते हुए बोला।

"बताऊंगा, बेसब्र न बनो आप लोग, ऋषिकेश और हरिद्वार होने दो, खुद पता चल जायेगा। अब खाने पर ध्यान दो, निकलना भी है हमें।" अनिकेत बात टाल गया, दोनों ने अनिकेत की इच्छा का सम्मान किया और खाने पर ध्यान केन्द्रित किया, जो इस समय फिलहाल सबसे जरुरी काम था। पेट भर खाने के बाद बिल भर कर वे खिली हुई धूप में बैग टाँगे जा कर खड़े हो गए, उस समय तक ड्राइवर भी गाड़ी के साथ पहुँच चुका था, उसने उनका अभिवादन किया और उनके बैग्स डिक्की में डलवा दिए। तीनों गाड़ी में बैठ गए, अब दोपहर के दो बज रहे थे, वे कुछ ही घंटों में स्टेशन पहुँचने वाले थे, हालांकि ट्रेन शाम को आनी थी लेकिन यहाँ वहां भटकने के बजाय उन्हें स्टेशन पर इंतज़ार करना उचित लगा। गाड़ी अब कटरा से निकल कर मुख्य रास्ते की ओर बढ़ चली।

"भाई! पैसो का हिसाब किताब कर लें ?" मानव ने दोनों की ओर देखा।

"ट्रेन में कर लेंगे, फिक्र न करो बजट नहीं बिगड़ेगा अपना, हमारे पास बहुत समय है अभी, फिलहाल मुझे इन रास्तों को जी भर कर देखने दो, अच्छा लग रहा है।" विनय ने विंड स्क्रीन नीचे करते हुए कहा, वे ऊँचे नीचे घुमावदार रास्तों पर बढ़ रहे थे। विंड स्क्रीन हटते ही ठंडी हवा के झोंके कार के भीतर आने लगे।

"देखो ! ये वही जगह है जहां हमारी गाड़ी खराब हुई थी।" मानव एक स्थान को पहचानते हुए चहका।

"इस समय ऐसी बात न करो, हमें पहुँचने दो स्टेशन पर।" विनय गाड़ी खराब होने की बात याद आते ही झल्ला गया। अनिकेत मुस्कराया और अपनी नजरें बाहर की ओर घुमा ली।

☐☐☐

दिल्ली की ओर

वे लगभग पौने चार बजे स्टेशन पहुंचे, ट्रेन रात में नौ बजे की थी। उन्होंने किसी तरह स्टेशन पर ही प्रतीक्षा करते हुए बेचैनी में नौ बजा दिए और नौ बजे पता चला कोहरे के कारण सभी ट्रेनें देर से चल रही है, उनकी नौ बजे की ट्रेन भी साढ़े दस बजे आई। ट्रेन के प्लेटफॉर्म पर रुकते ही तीनों इस प्रकार भागे मानो ट्रेन एक सेकंड में ही चल पड़ेगी, वे यह भी भूल गए कि उन्होंने जनरल का नहीं बल्कि स्लीपर की टिकट ली है, उन्हें जल्दबाजी दिखाने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। वे अपनी टिकट के अनुसार सीट को खोजकर जा बैठे। तीनों को एक ही जगह अपर, मिडल और लोवर बर्थ पर सीट मिली थी। अनिकेत ने अपना रकसैक सीट के नीचे सरका दिया, दोनों ने उसका अनुसरण किया, पानी की बोतलें बैग की जेब से निकाल कर खिड़की की ओर बनी जालियों में लटका दी गई, अब तीनों सीट पर एकदम से पसर गए।

“बस अब कोई परेशानी नहीं, बैठे रहो, हम सुबह आठ बजे तक दिल्ली पहुँच जायेंगे, बाकी बातें दिल्ली पहुँच कर करते है, फिलहाल सो लो सब, सुबह तरोताजा रहेंगे।” अनिकेत ने ऊंघते हुए कहा, उसकी आँखें लाल हो चुकी थी। दोनों ने हामी भर दी और फौरन बर्थ को हुक्स में लटका कर बिस्तर सजा दिया गया, सब ने अपने पास शॉल, चद्दर और कम्बल रखे हुए थे, उन्होंने बैग से फटाफट निकाल कर ओढ़ लिया। मानव सबसे ऊपरी बर्थ पर जा लेटा।

“चलो भाई लोग, मैं सो रहा हूँ अब, गुड नाइट।” अनिकेत ने कहा तो दोनों ने प्रत्युत्तर में गुड नाइट कहकर चादर सिर तक खींच ली। मानव ने अपना मोबाइल चेक किया, कृति का मैसेज था।

“यह ज्यादा महंगा तो नहीं ना हो रहा मानव ?” कृति का मैसेज था।

“अरे नहीं, वैसे भी ईएमआई का ऑप्शन है, तो महंगा नहीं पड़ेगा, और यार तुम महंगा सस्ता मत सोचा करो, इतना तो चलता ही है हमारे बीच ।” मानव ने रिप्लाई दिया।

“मैं पैसे दे दूंगी, मेरे पास क्रेडिट कार्ड नहीं है ना इसलिए इकट्ठे अमाउंट पर लैपटॉप लेना मुश्किल था, थैंक्स यार तुम हमेशा मेरी हेल्प करते हो, ठीक है अब थक गए होगे, सो जाओ, मुझे भी तेज नींद आई है, गुड नाइट।” कृति ने एक स्माइली के साथ मैसेज किया। मानव ने भी गुड नाइट और एक स्माइली भेज दी, कृति के ऑफलाइन होते ही उसने अपना नेट बंद कर दिया और पलकें मूंद ली। थोड़ी ही देर में वह गहरी नींद में जा चुका था। चलती ट्रेन में ठंडी हवा के झोंको के बीच वे किसी कपड़े के गट्ठर की भांति सिकुड़े हुए से सो रहे थे।

□□□

साढ़े छह बजे के आसपास विनय की आंख खुली, अपनी कलाई घड़ी में उसने समय देखा, अभी भी सम्पूर्ण बोगी सो रही थी। वह आँखें मलते हुए उठा, आठ साढ़े आठ बजे वे दिल्ली पहुँचने वाले थे, ट्रेन धीमी गति से चल रही थी, उसने मोबाइल निकालकर एप के जरिये अपनी ट्रेन की रियल टाइम लोकेशन चेक की।

“अबे !! ट्रेन चार घंटे लेट ?” वह बड़बड़ा उठा, जो स्टेशन दो बजे रात आने वाला था, वह स्टेशन अब आ रहा था।

“इसका मतलब अब हम बारह बजे दिल्ली पहुंचेंगे? अरे यार हद हो रखी यह तो, पूरा टाइम टेबल ही गड़बड़ हो रखा है।” वह भुनभुनाया।

“क्या हुआ विनय भाई? काहे खून जला रहे हो सुबह सुबह?” निचली बर्थ से अनिकेत ने आवाज दी, अनिकेत काफी पहले ही उठ कर टॉयलेट ब्रश वगैरह निपटा कर पुन: लेटा हुआ था, उसे दुबारा नींद ही नहीं आई थी, पैरों में अकड़न अब बढ़ने लगी थी।

“रियल टाइम लोकेशन से पता चल रहा है ट्रेन चार घंटा लेट है, अब हम आठ बजे के बजाय बारह बजे पहुंचेंगे।” विनय ने अपने बर्थ के नीचे सर झुकाते हुए अनिकेत को देखकर कहा।

“हां, मुझे पता है। उठते ही सबसे पहले मैंने यही चेक किया था, मैंने जब चेक किया था तब केवल ढाई घंटे लेट थी, आपके चेक करने तक चार घंटे हो चुकी है, आप परेशान न होइए आराम से सोइए, चार घंटे जल्द ही छह घंटे में बदल जाये तो भी हैरत नहीं होनी चाहिए।” अनिकेत ने इतनी आसानी से कह दिया मानो उसे कोई फर्क ही नहीं पड़ता हो, विनय का मुंह यह सुनकर खुला का खुला रह गया।

“अरे ये आप क्या कह रहे हो अनिकेत भाई ?” विनय के स्वर में बेचैनी सी थी।

“भाई दिल्ली में इस मौसम में ट्रेनों का लेट होना आम बात है, कोहरा और घने स्मोग अर्थात प्रदूषण के कारण वातावरण धुंधला हो जाता है, जिस कारण ट्रेन अनुमानित समय से अधिक लेट हो जाती है, आप दोनों दिल्ली से नहीं ना है, इसलिए आपको शायद अनुभव नहीं है, मुझे यह पता है। इसलिये आप आराम कीजिये अब, भुनभुनाने या खुद का खून जलाने से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला।” अनिकेत ने इत्मीनान से कहा।

“अब नींद नहीं आ रही, यह सुनकर ही नींद उड़ गई। मैं नीचे आता हूँ, बर्थ गिरा लेते है अगर आपको सोना नहीं हो तो ?” विनय ने कहा। अनिकेत ने सिर हिला दिया, विनय फौरन झुकते झुकाते चैन पकड़कर लड़खड़ाते हुए नीचे उतरा, नीचे उतरते ही उसकी पिंडलियों में दर्द हुआ, घुटने के नीचे वाला पूरा हिस्सा मानो अकड़ सा गया था। विनय के चेहरे पर दर्द की रेखाएं स्पष्ट देखी जा सकती थी।

“थोड़ा टहल लो विनय भाई, पिंडलियां अकड़ गई है इतनी चढ़ाई और दौड़ धूप के बाद, टहलोगे तो खुल जायेंगी थोड़ा बहुत। या एक काम करो अपने टखने को बर्थ के कोने पर टिका कर पैर को सीधा करके विपरीत बल पैर की ओर डालो, ध्यान रहे पैर से पकड़ बनाये रखिये, इससे पैरों के मसल स्ट्रेच हो जायेंगे और राहत मिलेगी।” अनिकेत ने बताया, तो विनय ने उसके निर्देशानुसार पैर बर्थ के कोने में टिका कर वही क्रिया दोहराई, एक पैर का होने के बाद दूसरे पैर से भी यही प्रक्रिया दोहराई। और आश्चर्यजनक रूप से उसके पैर मानो खुल से गए, दर्द एकदम कम हो गया। वह पैर झटकते हुए अनिकेत को आश्चर्य से देखता रह गया।

“खुश मत होइए, यह बस टेम्परेरी उपाय है, अभी थोड़ी देर में फिर जकड़ लेगा पैर, जाइए टहलिये, वाशरूम ब्रश वगैरह भी लगे हाथों निपटा लीजिये नहीं तो अब भीड़ लगनी शुरू हो जाएगी।” अनिकेत ने कहा तो विनय ने रकसैक की साइड पॉकेट से ब्रश, पेस्ट, तौलिया और फेश वाश निकाल कर टॉयलेट की ओर बढ़ गया। ऊपर मानव अब भी मुंह खोले सो रहा था।

मानव नौ बजे के आसपास हड़बड़ाते हुए जागा। उसने फौरन मोबाइल में समय देखा, नौ बज रहे थे और वह अब भी ट्रेन में था, उसने नीचे झाँका विनय और अनिकेत अपनी बातों में मशगूल थे।

“भाई नौ बज गए और हम अभी तक ट्रेन में है ?” मानव ने उत्सुकता से पूछा।

“सोना हो तो और सो लो मानव भाई, हम दो बजे से पहले नहीं पहुँचने वाले, कोहरे और स्मोग ने सारा टाइमटेबल ही बिगाड़ कर रख दिया है।” विनय ने ऊपर बिना देखे ही कहा। मानव कसमसाया, वह काफी देर तक सोया हुआ था जिस कारण उसका बदन आराम महसूस करने के बजाय अलसाया हुआ सा था, पड़े-पड़े उसकी पीठ भी दुखने सी लगी थी, हल्की सी ठंड अब भी थी, लेकिन इतनी नहीं कि कम्बल चद्दर ओढ़नी पड़े, उसने फौरन चद्दर हटाया और नीचे उतर आया, उतरने के पश्चात अपना चद्दर वगैरह सब तह करके बैग में रख दिए।

“भाई भूख लग रही है, अगले किसी स्टेशन पर चाय वगैरह पीते हैं, या कोई आये तो लेके रखो, मैं ब्रश करके आता हूँ, कहकर मानव जरुरी सामान लेकर टॉयलेट की ओर बढ़ गया। मानव के वापस आने तक खाने के लिए स्नैक्स वगैरह खरीद कर रखे हुए थे, बाकी जम्मू से साथ लिए हुए केक के पैकेट्स भी खोले गए, रेलवे में बना खाना तीनों में से किसी को हजम होने वाला हरगिज नहीं था, विनय ने अपने पिछले अनुभव देखते हुए पहले ही ट्रेन अथवा प्लेटफॉर्म पर बने हुए खाद्य पदार्थ खाने से मना कर दिया था। नाश्ता वगैरह निपटाने के पश्चात बदन में थोड़ी फुर्ती सी आ गई, मानव अपने पैरो में अकड़न महसूस कर रहा था तो विनय ने उसे भी अनिकेत का बताया हुआ फार्मूला बता कर क्रेडिट ले लिया, अनिकेत बस मुसकुराता हुआ विनय को वाहवाही लूटता देखता रहा। मार्ग में खिंची गई तस्वीरें काफी देर देखी और एक दूसरे से ली गई, तीनों ने अब तक के खर्चे का हिसाब किताब किया, और यह जानकर निश्चिन्त हुए कि उम्मीद से और बजट से कम ही खर्चा हुआ है। वैसे यह जरुरी भी था, उन्हें आगे के सफर के लिए पैसों की अतिरिक्त आवश्यकता भी पड़ सकती थी। किसी प्रकार बातें करते करते सवा एक बजे ट्रेन दिल्ली पहुंची, वहां से ऑनलाइन कैब बुक करके वे करोल बाग़ पहुंचे, अनिकेत चूंकि दिल्ली से ही था इसलिए अब वह यहाँ मार्गदर्शक और लीडर की भूमिका में था, उसने कैब सीधे करोल बाग़ मुख्य मार्केट से ले जाकर एक गली में स्थित तीन मंजिला होटल के सामने रोकी।

“यह है अपना होटल ‘ग्रैंड पैराडाईज’।” अनिकेत ने कैब का किराया चुकाते हुए कहा। तीनों ने अपने अपने रकसैक उतारे और होटल में प्रवेश कर गए, काउन्टर पर पहुँचते ही वहां उपस्थित बन्दे ने अनिकेत का गर्मजोशी से स्वागत किया, जो इस बात का सूचक था की वह अनिकेत का परिचित था, पहचान पत्रों की एक-एक प्रति रखने के पश्चात उन्हें कमरे की चाभी मिल गई, कमरा तीसरी मंजिल पर ही स्थित था। अनिकेत ने दरवाजा खोला, कमरा काफी बड़ा था और वहां एक किंग साइज बेड के साथ एक मेज, दो कुर्सियां, और एक छोटा सिंगल डोर वार्डरोब भी था जो हर लिहाज से ठहरने के लिए पर्याप्त था। कमरे से ही अटैच बाथरूम और टॉयलेट था, कमरे में अच्छी खासी जगह थी। उन तीनों के लिए एकदम पर्याप्त और काफी जगह थी वहां । बयालीस इंच की एक एलईडी टीवी दीवार पर लगी हुई थी जिसमें उन्हें कोई दिलचस्पी ही नहीं थी। वैसे भी उन्हें अगले दिन सुबह ही निकलना था, आधी दोपहर यहीं बीत चुकी थी।

□□□

“भाई सब फटाफट नहा धो कर फ्रेश हो जाओ, फिर हम बाहर कहीं खाना खाते हैं, और मार्केट घूमते हुए कुछ जरुरी कपड़े वगैरह खरीद लेंगे जो आगे काम आयेंगे।” अनिकेत ने कहा।

“बाहर खाना क्यों खाना है ? यही मंगवा लेते है ना।” मानव ने कहा।

“भाई यहाँ का खाना महंगा पड़ जायेगा और मजा भी नहीं आयेगा, इससे अच्छा बाहर खाते हैं और थोड़ा घूम भी लेते है।” अनिकेत ने कहा।

“अनिकेत भाई, मुझे वह बजरंग बली की बड़ी सी मूर्ति है न जो फिल्मों में दिखाई देती है, वह देखना है, उसके सामने फोटो खिंचवाने की इच्छा है, अक्षरधाम, इण्डिया गेट और लाल किला भी कभी नहीं गया तो वहां भी जाना है।” विनय बोला।

“भाई बजरंगबली के दर्शन करवा दूंगा, करोल बाग़ मेट्रो से या सड़क से मुश्किल से पन्द्रह मिनट का रास्ता है, इण्डिया गेट हम रात में उसी समय चले जायेंगे, लेकिन अक्षरधाम और लालकिला फ़िलहाल संभव नहीं,हमारे पास केवल सुबह तक का समय है, सुबह हरिद्वार के लिए बस पकड़नी है, तो जो नजदीक है वही जा सकते हैं अभी। बाकी हम अपनी अपनी ट्रिप निपटा कर वापस तो यही आने वाले है तब आराम से पूरी दिल्ली घूम लेना ।” अनिकेत उसकी उत्सुकता पर हंसते हुए कहा।

“आगरा जा सकते हैं ? यहाँ से मेरे ख्याल से डेढ़ सौ दो सौ किलोमीटर ही दूर होगा, ताजमहल भी लगे हाथों निपटा लेते है।” मानव बोला।

“भाई उसके लिए समय चाहिए बहुत, एक पूरा दिन जाएगा आने जाने में, तो पहले हम दूर के सब निपटा लेते हैं, आने के बाद यदि समय रहा तो सब कर लेंगे।” अनिकेत ने कहा।

“समय रहेगा तो मथुरा और वृन्दावन भी चलेंगे।” विनय चहका।

“भाई ज्यादा न उड़ो, यह सब एक ट्रिप में करना है तो भरपूर समय चाहिए, अभी हमने जो निश्चित किया है पहले उन स्थानों को प्रमुखता देते है, उसके बाद समय और बजट रहा तब तय करेंगे, पहले तैयार तो हो जाओ यार, और मानव भाई तुम यार गंजी और तौलिया लपेटे एकदम बुत बन कर खड़े हो गए हो, यह नहीं कि फटाफट नहा धो कर दूसरों को भी निपटने दो।” अनिकेत ने हल्का सा घुड़का तो मानव ने दांत निपोर दिए और बाथरूम में चला गया।

“अरे यहाँ तो साबुन, शैम्पू, तौलिया, यहाँ तक कि शेविंग रेजर भी है।” बाथरूम के बंद दरवाजे के भीतर से हैरान मानव की आवाज आई।

“भाई नहा लो पहले, यह सब मिलता है, एकदम से ऐसे बर्ताव मत करो जैसे जंगल से आये हो।” विनय हंसा।

बारी बारी दोनों भी नहा कर तैयार हो गए, और कुछ ही देर में होटल से निकलकर बाहर मुख्य मार्केट में आ गए, चार बजने को थे, हवा में ठंडक थी, लेकिन इतनी भी नहीं कि उन्हें जैकेट्स की आवश्यकता पड़ती, इसलिए वे टी शर्ट और जींस में ही निकल लिए, वही स्थित एक रेस्टोरेंट में पेट भर खाने के बाद वे मार्केट में चहल कदमी करते रहे, चारों ओर शोर सा था, सैकड़ों लोग सैकड़ों दुकानें, पूरी सड़क शोर-शराबे, खरीदार और विक्रेताओं से मानो अटी पड़ी थी। ऊपर से कपड़े, बेल्ट, बैग्स इत्यादि बेचने वाले लोगों को पकड़-पकड़ कर अपना सामान खरीदने का आग्रह कर रहे थे।

“बेल्ट ले लीजिये सर, एकदम लेदर है, ब्रांडेड है, कस्टम का माल एकदम सस्ते में।” एक व्यक्ति मानव के सामने आकर खड़ा हो गया, उसने अपने हाथ टंगे बैग में पर्स और बेल्ट्स सजा रखी थी, बेल्ट दिखने में वाकई शानदार और बढ़िया दर्जे की प्रतीत हो रही थी। लेकिन उन तीनों को उनमें कोई दिलचस्पी नहीं थी।

“नहीं चाहिए भाई।” मानव ने उसे टालने का प्रयास किया।

“बढ़िया क्वालिटी है, सस्ते में है सर।”

“नहीं चाहिए, है मेरे पास।”

“किसी और के लिए ले लीजिये फिर, तोहफे में दे दीजिये, दो लीजिये एक के दाम में।”

“नहीं! ऐसा कोई नहीं जिसे तोहफे में दे सकूँ, नहीं चाहिए।” मानव अब उकता सा गया। बेल्ट वाला फिर दूसरे किसी के चक्कर में आगे बढ़ गया।

“आईये सर, यहाँ आइये जींस, टी शर्ट, सूट, ब्रांडेड है सब, साठ प्रतिशत छूट है सर।” आगे बढ़ते ही फिर किसी ने पकड़ लिया।

“भाई, है मेरे पास ढेर सारे कपड़े।” मानव उकताया।

“यह ब्रांडेड है सर।” सेल्समैन यूँ बोला मानो मानव ने कभी ब्रांडेड पहने ही नहीं हो, उसे शर्मिंदगी सी हो गई।

“अबे जो पहना हूँ वो भी ब्रांडेड ही है भाई, ऐसी क्या बात बोल रहे हो ?” मानव उखड़ पड़ा।

“नहीं सर मेरे कहने का मतलब था ब्रांडेड वाली साठ से अस्सी प्रतिशत डिस्काउंट में है सर, एक बार देख लीजिये, देखने के पैसे थोड़े ही न लगने है।”

“भाई मेरे पास जो है वही नहीं पहने जा रहे, इनको लेकर भी क्या करूंगा ?”

“किसी और के लिए ले लीजिये, गिफ्ट के काम आयेंगे, सस्ते में बढ़िया माल मिलेगा।”

“अबे यार ! तुम लोगों को बड़ी परवाह है गिफ्ट्स की ? नहीं चाहिए मेरा कोई नहीं है, अनाथ हूँ एकदम।” मानव झल्लाया। उसे झल्लाते देखना अनिकेत और विनय के लिए काफी मजेदार था। अनिकेत चूंकि ऐसे वाकयों से रोज दो चार होता था इसलिए वह आसानी से बिना देखे कन्नी काट कर आगे बढ़ते जा रहा था, मानव उनके पीछे पीछे हो लिया। भीड़ ज्यादा हो रही थी, इसी बीच ई रिक्शा भी चल रही थी, उनसे भी परेशानी अलग हो रही थी। अभी तीनों आगे बढ़े ही थे की मानव के सामने फिर एक व्यक्ति आकर खड़ा हो गया।

“सर बेल्ट ले लीजिये, एकदम लेदर है, कस्टम का माल है।”

“अरे यार अभी तो पीछे मिले थे, ना कह दिया था ना आपको ? आदमी को पहचानते नहीं क्या ?” मानव फिर उसी सेल्समैन को अपने सामने देख लगभग त्रस्त होते हुए बोला।

“सॉरी सर।” कहकर सेल्स मैन फिर से भीड़ के बीच कहीं गुम हो गया।

मानव और विनय अपने आसपास बिकती चीजों की वैरायटी देख कर ही हैरान थे, कहीं लेदर बैग्स बेचे जा रहे थे, कहीं जूते, परफ्यूम्स, टी शर्ट्स, बेल्ट्स, खिलौने, जींस, लेडिज ड्रेसेज, ट्रैक्स, के साथ गर्म जैकेट्स और ऊनी कपड़े भी इफरात में बिक रहे थे, खरीदारी करने वालों की भीड़ से ज्यादा भीड़ चहल पहल बिक्री करने वालों की लग रही थी। ठंड का मौसम होने के नाते हर अंतराल पर जैकेट्स बिक रही थी, मानव एक जगह स्टायलिश जैकेट्स देख कर रुका, वहां बाकायदा कार्ड बोर्ड पर पांच सौ रुपये दाम लिखा हुआ था।

मानव ने अनिकेत को बाह पकड़ कर उस ओर खींचा।

“भाई यहाँ शानदार जैकेट्स है वह भी पांच सौ में मिल रही।” मानव बोला।

“भाई वह सब न देखो, जब पसंद करोगे तब दाम बढ़ा देंगे, बोल देंगे की यह अलग दाम वाली है और पांच सौ वाली ऐसी दिखा देंगे जो तुम्हें पसंद ही नहीं आयेगी। मैं जानता हूँ, वैसे भी हमारे पास साधारण ठंड में, मेरा मतलब दिल्ली और यूपी की ठंड से बचने लायक जैकेट्स पहले से ही है, केवल हम अंत में जहाँ जायेंगे वहां के लिए हल्के और असरदार गर्म कपड़ों की जरूरत है, जो हम केवल वही प्रयोग करेंगे, उसके अलावा तो रोज पहनने से रहे, तो केवल दो

एक दिन के लिए पांच सौ- आठ सौ में ऐसे कपड़े क्यों खरीदे जिनका फिर उपयोग ही न हो सके ? वैसे भी वहां फैशन नहीं ठंड से बचाव करना ज्यादा महत्वपूर्ण है।" अनिकेत ने समझाते हुए कहा, मानव उसकी बातों से सहमत हुआ।

"तो कहाँ से ख़रीदे ?" विनय ने प्रश्न किया।

"भाई यह मार्केट बहुत लंबा है, चलते रहो, यहाँ डेढ़ सौ दो सौ में भी जैकेट्स मिल जाएंगी पटरी पर या फुटपाथ पर।" कहकर अनिकेत ने उन्हें अपने पीछे आने का संकेत किया और आगे बढ़ गया। वे उसके पीछे चल दिए। अभी वे आगे बढ़े ही थे कि मानव के पीछे से किसी ने आवाज दी।

"सर बेल्ट्स लेंगे ? एकदम क्वालिटी और ब्रांडेड है, कस्टम का माल है सर।" मानव पीछे पलटा।

"भाई तुमने तीसरी बार मुझे ही पकड़ा है। नहीं चाहिए मेरे बाप, काहे पीछे पड़े हो ?" मानव त्रस्त हो गया था। सेल्स मैन ने फिर सॉरी कहा और भीड़ में गुम हो गया। लेकिन उससे पीछा इतनी आसानी से छूटने वाला नहीं था, आगे भी दो एक बार वह मानव को पुन: बेल्ट बेचते हुए मिला, मानव हर बार कन्नी काट जाता।

"लगता है उसे तुमसे कुछ ज्यादा ही लगाव है ?" अनिकेत हंसा। विनय भी मानव की खीज पर मुस्कराया। कुछ ही दूर काफी भीड़ लगी हुई थी, वैसे भीड़ तो पूरे रास्ते में थी, लेकिन यहाँ इतनी कम जगह में भी अत्यधिक सघन भीड़ थी।

"जैकेट ले लो, कोई भी ले लो डेढ़ सौ रुपये, डेढ़ सौ रुपये।" भीड़ के मध्य एक विक्रेता चीख रहा था, उसके सामने अलग अलग डिजाइन्स के ढेरों जैकेट्स का ढेर सा लगा हुआ था। लोग पागलों की तरह उस ढेर में से अपनी पसंद की जैकेट खोजने का प्रयास कर रहे थे। अनिकेत वहां रुका।

"भाई यहाँ से देख लो, इससे सस्ता नहीं मिलेगा, और जैकेट्स भी बढ़िया है यहाँ।" कहकर अनिकेत खुद उस ढेर में टटोलने लगा, अनिकेत और विनय लगभग छह फीट के पहलवान व्यक्ति थे इसलिए उनके नाप की ढूंढने में उन्हें काफी मशक्कत करनी पड़ी। वही मध्यम कद और शरीर के मानव के लिए तो मानो पूरा ढेर लगा हुआ था, वह अनेक जैकेट्स हाथ में लेकर देख रहा था, उसके पास पसंद करने के लिए अनेक विकल्प थे। काफी प्रयास के बाद विनय और अनिकेत को आखिर उनके नाप की जैकेट्स मिल ही गई, अनिकेत को जो मिली वह ट्रेंच कोट की भांति ही कोई कोट था, बस उसपर हुड बना हुआ था। विनय ने भी एक हुड वाला जैकेट अपने लिए खोज निकाला। तो मानव अब भी जैकेट्स के ढेर में उलझा हुआ था।

"भाई कोई भी एक सिलेक्ट कर लो। आगे भी जाना है हमें।" अनिकेत ने कहा तो मानव ने दो जैकेट उठा कर दिखाए।

"इनमें से कौन सी ज्यादा अच्छी रहेगी ?"

"वो ग्रीन वाला सही है, ले लो।" अनिकेत ने बस ऊपर से एक नजर देखकर कह दिया। विनय ने साढ़े चार सौ रुपये विक्रेता को दिए और तीनों अपनी जैकेट्स को तह करके अपनी बाजुओं में दबा कर आगे बढ़ गए।

"भाई यकीन नहीं आता साढ़े चार सौ में इतनी बढ़िया जैकेट्स ? और आपने तो ओवर कोट ही ले लिया है, इससे सस्ता भला और कहाँ मिलेगा ? मैं तो सोच रहा हूँ एक बार केवल शॉपिंग के लिए ही दिल्ली आ जाऊं।" विनय अपनी इस खरीदारी पर अचंभित था।

“आगे से कनटोप और दस्ताने ले लेते है, जरूरत पड़ेगी।” अनिकेत कह कर एक पटरे वाली दुकान पर जाकर रुका। वहां ऊनी दस्ताने, मोज़े और कनटोप वगैरह मिल रहे थे।

“भाई ! अनिकेत काफी तगड़ी तैयारी कर रहे है, अतिरिक्त जैकेट, कनटोप, से लेकर ऊनी दस्ताने और मोज़े तक खरीदवा रहे है, आखिर हम जा कहां रहे है इनके साथ ? कही लेह लद्दाख की योजना तो नहीं बना रहे ?” मानव ने विनय से फुसफुसाते हुए कहा।

“अरे पगला गए हो आप भी, लेह लद्दाख उत्तराखंड में थोड़े ही पड़ता है।” विनय ने कहा।

“फिर पक्का मसूरी या शिमला का प्लान किये होंगे अनिकेत भाई। अगर यह है प्लान में तो भी मजा आ जायेगा, मैंने कभी स्नोफॉल नहीं देखा, इसी बहाने यह भी देख लूँगा।” मानव चहकते हुए बोला।

“अगर मसूरी या शिमला होता तो अनिकेत भाई छिपाते नहीं, इनका कुछ और ही प्लान चल रहा है। खैर देखेंगे आगे।” कहकर विनय अनिकेत के पास आया और अपनी पसंद के अनुसार कनटोप और दस्ताने खरीद लिए।

“अब इसे होटल में रख कर हम बजरंग बली की मूर्ति की ओर चलते हैं, जहाँ आप लोगों को जाना था।” अनिकेत ने कहा और हमेशा की तरह आगे बढ़ गया।

“चलो सेनापति जी आगे बढ़ चुके हैं।” विनय हंसा।

“सर बेल्ट चाहिए ? क्वालिटी माल है, ब्रांडेड? “ एक जानी पहचानी आवाज ने मानव का ध्यान भंग किया, मानव ने उस ओर देखा।

“कस्टम का माल होगा न ?” मानव ने सेल्स मैन को घूरते हुए कहा, उसका बस चलता तो वह उसे कच्चा ही चबा जाता।

“भाई ये पिछले पौने घंटे में तुम आठवीं बार मुझे मिले हो। अब क्या मैं आपके पैरों में गिर कर बोलूँ कि मुझे नहीं चाहिए आपकी बेल्ट ? यार समझ में नहीं आता क्या आपको, अरे इतनी बार मिलने पर तो लोग एक दूसरे की खातिरदारी करने लायक पहचान बना लेते है, चाय वाय पीने पिलाने लगते हैं, अरे रिश्ता जोड़ लेते हैं, समधी बन जाते है और यार तुम आठ बार मिलकर भी मेरी सूरत तक नहीं पहचान पा रहे ? हद मचा रखी है यार।” मानव भड़क गया। बेल्ट वाला खिसियानी हंसी हंस कर सॉरी बोल कर भाग खड़ा हुआ, बात बेल्ट बेचने से समधी बनने तक पहुँच जायेगी यह उसने सोचा भी नहीं था।

अनिकेत और विनय बस किसी प्रकार अपनी हंसी दबा रहे थे।

□□□

करोल बाग़ मेट्रो स्टेशन से लगभग दस मिनट पैदल चलने के बाद दूर से ही हनुमान जी की विशालकाय प्रतिमा दिखाई देने लगी थी। अँधेरा हो चुका था, वातावरण में ठंड बहुत ज्यादा बढ़ चुकी थी, तीनों ने अपने गर्म कपड़े पहले ही पहन लिए थे।

“भाई, भाई ! हनुमान जी का मुकुट और आँखें देखो, क्या गजब चमक रही है, लाइटिंग लगाई है भाई उसमें तो।” मानव किसी बच्चे की भांति चहका। विनय भी उस विशालकाय मूर्ति को देख रहा था, उसने बिना कुछ कहे मोबाइल निकाला और उसकी अनेक तस्वीरें खींच ली। जाहिर सी बात है इतनी दूर से दिखाई देने के बावजूद भी एक सेल्फी भी ले ली।

वे कुछ ही देर में उस व्यस्त चौराहे पर पहुँच चुके थे जहां मूर्ति स्थापित थी। मानव और विनय यह देख कर आश्चर्यचकित रह गए कि वह केवल मूर्ति नहीं बल्कि एक समूचा मंदिर है। और हनुमान जी के विशालकाय पैरों के मध्य एक राक्षसी का मुख बना हुआ है, उस राक्षसी

की काली जीभ बाहर निकली हुई थी और बड़े बड़े नुकीले सफ़ेद दांत ऊपरी और निचले हिस्से में बने हुए थे। उस की जीभ पर से होते हुए श्रद्धालु उसके मुंह में प्रवेश कर रहे थे जो की मंदिर का प्रवेश द्वार था। मानव ने भी यहाँ तड़ातड़ कई तस्वीरे खींच ली और खिंचवा भी ली। रात होने के कारण कृत्रिम प्रकाश में नहाई हुई हनुमान जी की भव्य प्रतिमा अद्भुत प्रभाव डाल रही थी। प्रतिमा का भगवा रंग प्रकाश से मानो दमक रहा था। मंदिर के सामने ही मेट्रो का पुल था, जहाँ से अनेक मेट्रोज गुजर चुकी थी।

"बस भाई ! यही तो है वह आइकोनिक सीन, जो हर दूसरी तीसरी फिल्म में नजर आता है जिसमें दिल्ली हो। पुल से गुजरती हुई मेट्रो और उसके बगल में दिखते विशालकाय हनुमान जी। और भाई इनकी हाथ जो छाती फाड़ने की मुद्रा में है, उसके नीचे तो श्री राम और माता सीता की प्रतिमा भी दिख रही है।" मानव आश्चर्यचकित होते हुए बोला, उसने पहली बार हनुमान जी के हाथों के मध्य गौर किया था। विनय ने भी चौंकते हुए वहां देखा, श्री राम और माता सीता की प्रतिमा देखकर उसने श्रद्धा से हाथ जोड़ लिए।

"भाई यह जो हाथ देख रहे हो ना ? वह ऑटोमेटिक है, कुछ ख़ास मौके पर उन्हें चलाया जाता है, तब हनुमान जी के हाथ हिलते है, मानो छाती फाड़ रहे हो और श्री राम सीता के दर्शन होते है। और यह जो मंदिर के प्रवेशद्वार के रूप में राक्षसी का मुंह देख रहे हो ना ? वह असल में सुरसा है, जब हनुमान जी समुद्र पार कर लंका जा रहे थे तब सुरसा राक्षसी ने मुंह फाड़ कर उनका रास्ता रोक लिया था तो हनुमान जी उसके मुंह में प्रवेश कर गए थे। जिससे उसे मोक्ष प्राप्त हुआ था, यह द्वार उसी का प्रतीक है, चलो सुरसा के मुख से प्रवेश करते हुए मंदिर में जाए और दर्शन करें।" अनिकेत ने जानकारी प्रदान की।

तीनों मुख से होते ही मुख्य मंदिर में पहुंचे और सिंदूरी रंग से बनी श्री हनुमान जी की प्रतिमा के समक्ष पूर्ण श्रद्धा से नतमस्तक हो गए। दर्शन होने के पश्चात वे बाहर निकले, अब उनका अगला पड़ाव इंडिया गेट था।

"यह प्रतिमा कितनी ऊँची होगी अनिकेत भाई ?" विनय ने जिज्ञासवश प्रश्न किया।

"एक सौ आठ फुट ऊँची है। चलो अब सड़क के उस पार जाकर एक तस्वीर खिंचवाते है, वहां से बढ़िया दृश्य आएगा, मेट्रो का ब्रिज भी दिखेगा और उसके ऊपर हनुमान जी की दमकती प्रतिमा भी। दिल्ली की एक यादगार तस्वीर होगी वह।" इस बार खुद अनिकेत ने तस्वीर लेने की बात कहकर उन्हें चौंका दिया।

तीनों ने सावधानी से सड़क पार की और नियत स्थान पर जाकर तस्वीर खिंचवाई। उसके बाद कैब से वे इंडिया गेट पहुंचे, रात का समय था, इंडिया गेट रोशनी से जगमगा रहा था, मानव और अनिकेत पहली बार इंडिया गेट को अपनी आँखों से देख रहे थे। उन्हें इंडिया गेट के बीचोंबीच बने अमर जवान ज्योति को देखकर गर्व सा महसूस हुआ, इंडिया गेट परिसर में वे काफी देर तक घूमते रहे, काफी तस्वीरें खिंचवाने और घूमने के बाद वे वापस करोल बाग़ के लिए रवाना हो गए, वापसी में ही अनिकेत के बताये एक सस्ते रेस्टोरेंट में खाना वगैरह निपटा लिया गया, अनिकेत इस छोटे से रेस्टोरेंट का कायल था, वह बेफिजूल में केवल चमक दमक में पैसे लुटाने वाला व्यक्ति हरगिज नहीं था, वैसे भी इस रेस्टोरेंट में खाना सस्ता और बढ़िया भी था। जब तक वे करोल बाग़ वापस लौटे बाजार सिमट चुका था, मार्केट बिलकुल सुनसान हो चुका था। अब ठंडक भी अत्यधिक बढ़ती जा रही थी, तीनों अपने होटल के समीप पहुंचे

ही थे दो पुलिस वालों को वहां राउंड मारते देखा, एक व्यक्ति जो शायद कोई विक्रेता था, दुकान बंद करके दुकान के सामने इकट्ठा हुए कागजों के ढेर को जला रहा था।

दोनों पुलिस वालों ने उसे कागज जलाते देख घुड़क दिया।

“रे भाई ! सारी दिल्ली ‘पल्लुशण’ से मरी जा री और तू कागज जला रा ? बंद कर इसे, बुझा तुरंत।” एक पुलिसवाले ने लगभग फटकारते हुए विक्रेता को डपट दिया। बेचारा फौरन आग बुझाने लगा, वह अपराधबोध से ग्रस्त हो गया जैसे पूरी दिल्ली के प्रदूषण का कारण अकेला वही था।

“वाह ! मान गए, अनिकेत भाई आपकी दिल्ली पुलिस को, असल मायने में इन्हें पर्यावरण की असली परवाह है, ऐसी मुस्तैदी वह भी प्रदूषण के मामले पर ? कमाल है।” विनय ने अपनी हंसी छिपाते हुए कहा, उसने अपना स्वर भरसक धीमे रखा जिससे कि पुलिस वाले सुन ना पाए, पुलिस वाले अपने रुबाब में मस्त आगे बढ़ गए, आज उन्होंने सारी दिल्ली को धुएं में डूबने से जो बचा लिया था।

“मैं भी पहली बार ही देख रहा हूँ यह।” अनिकेत को भी हंसी आ रही थी, मानव बस अपना सिर खुजाते रह गया।

❑❑❑

हरिद्वार की ओर

वे सुबह आठ बजे उठ गए थे, ठंड के कारण आलस आ रहा था लेकिन उन्हें जितनी जल्दी हो सके उतनी ही जल्दी निकलना था। आज ही हरिद्वार की गंगा आरती देखनी थी उन्हें, जिसके लिए जल्दी निकलना जरूरी था। एक घंटे के भीतर ही तीनों तैयार हो चुके थे। अपने बैग्स और सामान की जांच के पश्चात वे निकल पड़े, काउंटर पर पहुँच कर चेक आउट किया, और मेट्रो स्टेशन की ओर बढ़ गए। चूंकि मेट्रो स्टेशन दस मिनट के पैदल रास्ते में था इसलिए उन्हें किसी ऑटो या कैब की कतई आवश्यकता नहीं थी। तीनों बैग टाँगे पुन: मार्केट में थे, मार्केट सुबह से ही सजनी शुरु हो गई थी, और भीड़ भी अत्यधिक थी। अनिकेत के साथ वे मेट्रो पहुंचे और कश्मीरी गेट के लिए टोकन लेकर बैग इत्यादि की जांच करवा कर मेट्रो में सवार हो गए।

"आइएसबीटी कश्मीरी गेट से ऋषिकेश और हरिद्वार के लिए बस मिलती रहती है, रोडवेज से चले या एसी करना चाहिए ?" अनिकेत ने विनय की ओर देखते हुए कहा।

"रोडवेज में नहीं, हम एसी करते हैं, स्लीपर रहेगा तो आराम रहेगा, पता नहीं कितने घंटे लग जाए पहुँचने में, तो आराम से चलेंगे।" विनय ने कहा, अनिकेत ने सहमति में सिर हिला दिया। कुछ ही देर में वे कश्मीरी गेट बस अड्डे पर थे, अनेक बसों की पंक्तियाँ देख कर वे थोड़े गड़बड़ा से गए थे। अभी मुख्य गेट पर बढ़ने ही वाले थे कि एक व्यक्ति ने उसका रास्ता रोक लिया।

"सर, हरिद्वार, ऋषिकेश कहाँ चलना है ?" उस व्यक्ति ने कहा।

"हम कर लेंगे भाई, आप रहने दीजिये।" विनय ने कहा, उसने पहले ही जानकारी जुटा ली थी और वह प्राइवेट बसों की धाँधलियों और गड़बड़ियों के विषय में अच्छी तरह जानता था।

"अरे सर फुल एसी बस है, स्लीपर रहेगा, रोडवेज सौ जगह रुकते-रुकाते जायेगी, ये नॉन स्टॉप जायेगी, केवल एक जगह खाने पीने, टॉयलेट के लिए पन्द्रह बीस मिनट रुकेगी बस। सरकारी बसों के मुकाबले जल्दी और आराम से पहुँच जायेंगे।" उस व्यक्ति ने कहा तो विनय ने अनिकेत और मानव की ओर देखा।

"कितना लगेगा ?" विनय ने पूछा।

"साढ़े पांच सौ रुपये प्रति व्यक्ति।"

"जाने दीजिये, महंगा है, हम सरकारी से चले जायेंगे।" मानव ने मुंह बिचका लिया, साढ़े पांच सौ उसके हिसाब से ज्यादा थे।

"सर कोई भी गैरजरूरी पैसा नहीं ले रहे है, आराम से जाइएगा, सरकारी में आपको शाम हो जाएगी। और अपनी बस अभी निकल जाएगी फौरन।" उसने कहा।

"पांच सौ देंगे हर आदमी के पीछे, मंजूर है तो बोलो नहीं तो जय राम जी की।" विनय ने कहा।

"ठीक है सर, चलिए मेरे पीछे आइये आपकी टिकट बनवा देते है और बस तक छोड़ देते है।" कहते हुए वह आगे बढ़ गया।

"भाई हम चले जाते सरकारी बस से, वह सस्ता पड़ता।" मानव ने कहा।

"सस्ता जरूर पड़ता लेकिन हालत खराब हो जाएगी और दूसरे हम टाइम से गंगा आरती में भी नहीं पहुँच पायेंगे।" विनय ने कहा और वह उस व्यक्ति के पीछे चल दिया। वह मुख्य बस अड्डे से परे एक कोने में चला गया, विनय ने एक दुकान से पानी की बोतलें और नमकीन वगैरह के पैकेट भी ले लिए।

“रास्ते में कुछ भी नहीं खाना है हमें, मैंने सुन रखा है इन प्राइवेट बस वालों के कॉन्टैक्ट्स होते है होटलों में, जहाँ ये रुकेंगे वहां उलटे-सुलटे दामों में खाना मिलता है, विरोध करने पर गुंडई भी दिखाने लग जाते है। इसलिए स्नैक्स वगैरह ले लिए।” विनय ने उन्हें बताया। दोनों आज्ञाकारी बच्चे की तरह बस सिर हिलाते हुए उसे सुनते रहे। उस व्यक्ति ने खुले में टेबल लगाए एक व्यक्ति से तीन टिकट कटाई और विनय से पन्द्रह सौ रुपये ले लिए, और एक दूसरे मरियल से लड़के को आवाज देकर तीनों को बस तक पहुंचा देने का आदेश दे दिया। अब वे उस लड़के के पीछे चल रहे थे, वे मुख्य बस अड्डे से लगभग एक किलोमीटर चलते हुए, एक कोने में खड़ी प्राइवेट बसों की ओर बढ़े, उस लड़के ने उन्हें उनकी बस दिखा दी, ड्राइवर ने टिकट देखकर ऊपरी बर्थ की कोई भी सीट लेने के लिए कह दिया। उन्होंने ऊपर की बर्थ पर अपने बैग्स रखे और तीनों ऊपर जाकर बैठ गए।

तीनों के हिसाब से पैर फैलाने के लिए पर्याप्त जगह थी, और प्राइवेसी के लिए हर बर्थ पर पर्दे भी लगे हुए थे। सवा ग्यारह हो रहे थे। बस अभी भी भर रही थी, कुछ सवारियां शोर मचाने लगी, वे शायद बहुत पहले से ही बैठे थे। ड्राइवर सब को सीट दिखा रहा था, विनय ने नीचे जाते ड्राइवर से पूछा।

“कितने बजे निकलेंगे ?”

“बारह पचास !” उसने कहा।

“बारह पचास ? अरे उस बंदे ने तो कहाँ फौरन निकलने वाले है ?” विनय बिगड़ गया।

“भाई वो तो दलाल है, कुछ भी बोलेगा। बस तो हम चला रहे है, बारह पचास के पहले नहीं निकलेगी, आप चाहे तो वापस जाकर पैसे ले लो।” ड्राइवर ने दो टूक कह दिया और आगे बढ़ गया। तीनों ठगे से रह गए।

“लो भाई, दो अनुभव सीख लो, जो आदमी आपको बस दिलाने का दावा करें वो बस एक दलाल है जिसे किसी तरह अपना कमीशन पाना है, उसकी कही हर बात झूठी हो सकती है, उस पर विश्वास न करें। दूसरी सीख, बस में एक बार आने पर ड्राइवर के हिसाब से गाड़ी चलेगी, आपको बताया हुआ समय केवल ग्राहक फांसने के लिए बोला गया झूठ होगा।” विनय ने भुनभुनाते हुए कहा।

“भाई, प्राइवेट बसेज में यह आम बात है, ऊपर से कश्मीरी गेट में तो खुली लूट है, अकेले दुकेले हो तो सबसे बढ़िया विकल्प केवल सरकारी बस है।” अनिकेत ने कहा, मानव केवल उन्हें देख रहा था, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह आखिर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करें।

“चलो कोई बात नहीं भाई, अब बातें करेंगे तो समय कब और कैसे कट जायेगा पता ही नहीं चलेगा।” अनिकेत ने विनय का पारा शांत करने का प्रयास किया।

विनय कुछ कहता तब तक उसका फोन बज उठा, प्रीति का फोन था। उसने बेसब्री से फोन उठाया।

“हेल्लो ! हां, मैं अपडेट करने ही वाला था, अरे सुनो तो...नहीं ऐसा कुछ नहीं। अच्छा मेरी फेसबुक पोस्ट देखी ? ऋषिकेश जाने वाली ? हां रिवर राफ्टिंग करने का मन है न, अरे ठीक है...मैं संभाल सकता हूँ खुद को, इतना भी लापरवाह और बेपरवाह नहीं हूँ मैं, समझता हूँ अच्छा बुरा। बच्चे की तरह ट्रीट करना बंद करो, क्या मतलब कि फोन नहीं किया ? किया तो था निकलते समय, अब हर पल थोड़े ही ना कर सकता हूँ ? तुमने कौन सा खुद से किया इतने समय में ? अरे थका हुआ था यार, खुद का ही होश नहीं था, जब से आये है तब से चैन से एक

पल भी नहीं बैठे है, मैसेज किया था ना कल, अब ये मत बोलो यार, मैसेज में भला अपनापन नहीं झलकता ? क्या बकवास है यह , अरे कह दिया ना मैं खुद को संभाल लूँगा, नहीं यह नहीं मानने वाला, ऋषिकेश जाऊँगा तो रिवर राफ्टिंग करूँगा, कुछ नहीं होगा, सब करते है। देखो अब इतना ओवर प्रोटेक्टिव मत बनो, ऐसे नहीं बात कर सकती तुम, मैं संभाल लूँगा खुद को, हां जानता हूँ मेरी कितनी परवाह है तुम्हें..” विनय बड़बड़ाता जा रहा था, धीरे धीरे वह अपने आपे से बाहर होता जा रहा था।

अनिकेत और विनय खामोशी से उसे सुन रहे थे।

“प्रीति प्लीज़ रहने दो ये, यह जताना बंद करो कि तुम्हें मेरी परवाह है, तुम्हें मेरा ख्याल है, अगर मेरी परवाह होती मेरा ख्याल होता, इतनी ही फिक्र होती तो मुझे तलाक के कागजात नहीं भेजती तुम..हे..हेलो..सुन रही हो न तुम ? हेलो..” दूसरी ओर से लाइन कट चुकी थी।

तलाक जैसा शब्द सुन कर अनिकेत और मानव एकदम से चौंक पड़े, वे विनय की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते रहे, विनय को अपनी गलती का अहसास होते ही वह लज्जित हो गया।

“विनय भाई, बात क्या है ? अगर बुरा न मानो और हमें बताने लायक समझो तो बता सकते हो।” मानव ने कहा।

विनय खामोश रहा, उसके चेहरे की मांसपेशियाँ भावनाओं की अधिकता से फूल पिचक रही थी, वह अपने आप को सम्भालने प्रयास कर रहा था।

□□□

विनय और प्रीति

“कम ऑन विनय! तुम्हें वहां कोई नीचा नहीं दिखा रहा था, तुम समझते क्यों नहीं हो ?” प्रीति समझाते समझाते थक सी गई थी।

“देखो! मैंने पहले भी कहा था मुझे यह सब नहीं अच्छा लगता, मैं ऐसे माहौल में नहीं रह सकता। इसके बावजूद तुम मुझे जबरदस्ती राजेश की सगाई में ले गई।” विनय झल्ला रहा था, वह सगाई समारोह से ही उखड़ा-उखड़ा सा था।

“राजेश कोई गैर नहीं है विनय, वह तुम्हारा साला है, मेरा सगा भाई है, दामाद हो तुम उस घर के, परिवार का हिस्सा हो तुम, इसमें जबरदस्ती जाने जैसी कोई बात ही नहीं थी, तुम क्यों ऐसा करते हो ? तुम्हारे इस व्यवहार के कारण दूसरों को तकलीफ होती है, उनके बारे में भी कभी सोच लिया करो।”

“दूसरों की तकलीफें ही समझ में आती है, कभी मेरी तकलीफ नहीं दिखाई देती तुम्हें?” विनय का स्वर ऊँचा हो गया।

“वो इसलिए विनय क्योंकि तुम्हें कोई तकलीफ नहीं दे रहा, तुम खुद तकलीफें पैदा करते हो, पता नहीं क्यों लेकिन सब कुछ ठीक चल रहा हो तो तुम्हें हमेशा ऐसा क्यों महसूस होता है की कुछ ठीक नहीं है ? क्यों जान बूझकर तनाव लेते हो ?”

विनय ने हालांकि सगाई समारोह में अपने चेहरे पर मुस्कान बनाये रखी थी इसके बावजूद उसकी नकली मुस्कान प्रीति से छुपी नहीं रह सकी, सगाई समाप्त होने से पहले ही वह बिना बोले सीधे घर आ गया था, प्रीति के काफी कुरेदने पर उसने बताया। विनय उस समारोह में उपस्थित व्यक्तियों के नकली व्यवहार से कुढ़ रहा था, कोई भवनायें नहीं थी, सभी महंगे कपड़े, भारी गहने पहने बस चलते फिरते स्टेट्स की दुकान नजर आ रहे थे, हर कोई वहां मानो अपने स्टेट्स का दिखावा कर रहा था, भारी फाउंडेशन और मेकअप में पुते नकली, मुसकुराते कृत्रिम चेहरे, बात बिना बात के बनावटी हंसी हंसते लोग, प्रीति की सभी रिश्तेदार, गहनों से लदी फदी थी, उन सब में केवल एक प्रीति ही थी जिसके शरीर पर सबसे कम आभूषण थे, एक मानव ही था जिसके कपड़े महंगे नहीं थे, वह प्रीति की बेचारगी साफ़ महसूस कर रहा था, प्रीति खुश थी लेकिन अपनी झूठी शान और दिखावे को ही सब कुछ मानने वाले रिश्तेदार उसे जाने अनजाने उसकी कमी का अहसास करवा देते थे, मानव यह समझ रहा था, वहां कहने को सब रिश्तेदार और जान पहचान के थे, लेकिन वह मात्र एक समूह था जो एक दूसरे की झूठी खैरियत पूछकर दूसरों की बुराई करने वाले, बिना बात के नकली भाव मुद्राएं बनाकर चीखने चिल्लाने वाली चीखे कृत्रिम और बनावटी खुशियों का एक विकृत सा स्वरुप लग रहा था। वहां उपस्थित हर व्यक्ति बातों बातों में ही दूसरे को नीचा दिखा रहा था।

ऊँचे स्टेट्स, पैसे वाले लोग, सब के सब सुविधा सम्पन्न, किसी भी चीज की कमी नहीं थी, कमी थी तो बस भावनाओं की, जो नितांत नकली और बनावटी थी, उनमें आपस में ना लगाव था और ना प्रेम, कहने को सब परिवार के सदस्य थे लेकिन सब एक-दूसरे कुढ़ रहे, जल रहे, सुलग रहे, वह ऐसे बनावटी और नकली वातावरण में घुटन महसूस करता था, उसका दम घुटता था ऐसे माहौल में।

एक दूसरे से अंग्रेजी में बात करते लोग, जबकि सब हिंदी जानते है, परिवार की भाषा हिंदी अवधि है लेकिन बस दिखावे के लिए संवाद अंग्रेजी में करना है, छोटे बच्चों को ‘आप’ कहकर संबोधित करने वाले बनावटी लोग, यह जो अपने बच्चों से अंग्रेजी बोलना और

जबरदस्ती का आप-आप करके बोलने वाले लोग है न, उन्हें खुद नहीं पता कि यही आप-आप कह कर संबोधित किये जाने वाले बच्चे बाहर बिना ‘एफ’ वर्ड के एक लाइन नहीं बोल पाते, वहां इनका आप-आप और बनावटी लहजा धरा का धरा रह जाता है, मानव इसलिए नहीं कुढ़ रहा था कि उसकी अंग्रेजी कमजोर थी। वह इसलिए कुढ़ रहा था कि वह हिंदी जानता समझता था, वह ही क्यों, वहां उपस्थित सभी समझते थे, लेकिन इसके बावजूद एक-दूसरे से जबरदस्ती अंग्रेजी में बतिया रहे थे, मानो इंगेजमेंट न होकर कोई कार्पोरेट पार्टी हो गई हो, विनय जितना सोचता उसे उतना अधिक झल्लाहट होती, वह बस किसी तरह से इस पूर्णतया नकली वातावरण से भाग जाना चाहता था। और वह इंगेजमेंट खत्म होते ही बिना एक क्षण रुके चला भी गया। सास ससुर और विजय उसे इस प्रकार जाते देखते रहे , उन्हें समझ में ही नहीं आ रहा था कि उनसे आखिर गलती क्या हुई है।

विनय सदैव ऐसा नहीं था, विनय की शादी अपने से ऊँचे स्टेट्स वाली प्रीति से हुई थी, सोशल मिडिया से पहचान होने के बाद कुछ मुलाकातें और मुलाकातों के पश्चात दोनों परिवारों का आपसी परिचय, एक ही कास्ट के होने के कारण किसी को इतनी आपत्ति नहीं हुई, शादी के समय प्रीति का परिवार उनसे अधिक सम्पन्न अवश्य था किन्तु इतना अधिक भी फासला नहीं था, प्रीति के माँ बाप समझदार थे, बेटी की पसंद वो भी अपनी कास्ट में होने के कारण उन्हें ज्यादा आपत्ति नहीं हुई, जो थोड़ी बहुत झिझक थी वह भी विनय के मिलने के बाद दूर हो गई। विनय बेहद मितभाषी व्यक्ति था, उसके शर्मीले और मृदु स्वभाव से प्रीति के परिवार वाले प्रभावित थे। शादी भी हो गई, किन्तु विनय उनके परिवार से अधिक घुल मिल ना पाया।

इसी बीच प्रीति के दोनों भाइयों को अच्छी जॉब लग गई, पिता का प्रमोशन हो गया तो उनका स्टैंडर्ड पहले से भी ज्यादा बढ़ गया। विनय जो पहले से ही संकोची व्यक्ति था वह इस बदलाव से और ज्यादा कतराने लगा। पता नहीं क्यों उसके मन में एक हीन भावना सी पनपने लगी। इससे धीरे-धीरे वह अत्यधिक तनाव में रहने लगा जिस कारण उसका पूरा व्यक्तित्व ही बदल गया, वह हर छोटी बड़ी बात पर उखड़ जाता, गुस्सा तो उसके नाक पर रहने लगा था, वह पहले जो अपने ससुराल वालों से घुलने मिलने के लिए कतराता था अब और भी कटा कटा रहने लगा।

“कब तक और किस-किस से भागते रहोगे विनय ? तुम्हारे हिसाब से तो कोई भी सही नहीं है यहाँ, तुम जैसा सोचते हो यह दुनिया वैसी नहीं है, नहीं बदल सकते तुम सबको, सबका अपना अपना स्वभाव है, जो जैसा है वैसा ही रहने दो, अरे जब खुद को ही नहीं बदल सकते तो दूसरों से कैसी उम्मीद और क्यों ? किसी को क्या लेना देना है की तुम क्या सोचते हो ? अकेले क्यों कुढ़ते रहते हो, इस तरह क्यों जलते सुलगते रहते हो विनय? तुम यह क्यों नहीं सोचते कि इससे मुझे कितनी तकलीफ होती है।” प्रीति लगभग रुंवासी हो गई।

“मुझे वहां शर्मिंदगी सी हो रही थी, मैं देख रहा था तुम्हारा वह चेहरा जब तुम्हें अपने गहने कम होने का अहसास होकर मुरझा जाता था, तुम्हारी सहेलियां, तुम्हारे रिश्तेदारों की सहानुभूति रुपी शब्दों में छिपे व्यंग्य मैं समझ रहा था।” विनय ने प्रीति का चेहरा थाम लिया।

“मुझे किसी चीज की कमी नहीं है विनय, मैं तुम्हारे साथ खुश हूँ। मैं अपने गहने कम होने की वजह से दुखी नहीं होती और न मुझे उसकी कमी महसूस होती है, तुम्हें पता है मेरे लिए गहनों का कभी कोई मोल नहीं रहा। बस थोड़ा सा अपनों का व्यवहार दुखी करता था। गहने

जरूरी नहीं है मेरे लिए।" प्रीति की आँखें भर आई, जो निःसंदेह किसी भी पल छलक पड़ती। विनय से कुछ कहते न बना, उसने उसे अपने सीने से लगा लिया।

"मुझे तुम पर यकीन है विनय, और तुम अकेले नहीं हो, मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुममें कोई कमी नहीं है। बस तुम बनावटी भावनाओं को पसंद नहीं करते और नकली लोगों के बीच नहीं रह सकते, लेकिन यह दुनिया ऐसे लोगों से भरी पड़ी है, तुम अपना खून और सुकून इनके लिए जलाओ ये इस लायक नहीं है।" प्रीति का स्वर भर्रा रहा था, प्रीति के सीने से लगते ही मानव का सारा गुस्सा, सारी बेचैनी सारा अवसाद, उसके प्रेम की ऊष्मा से वाष्प बन कर उड़ गया। एक प्रीति ही तो थी जो उसे समझती थी।

□□□

विजय ने काफी भाग दौड़ के पश्चात एक आलीशान और महंगे काम्प्लेक्स में फोर बीएचके का शानदार घर खरीदा था। गृह पूजा में विनय को आमंत्रित करना स्वाभाविक था। विनय प्रीति को लेकर ऑटो करके कॉम्प्लेक्स के सामने रुका, चार विशालकाय टॉवर के सम्मिलित समूह को देखकर उसका हृदय धक्क रह गया। कॉम्प्लेक्स के गेट पर ही उन्हें रोक दिया गया, प्रीति ने सिक्योरिटी रजिस्टर में अपना ब्यौरा दर्ज करवाया और उन्हें आमन्त्रण पत्र दिखाया। सिक्योरिटी ने गेट खोल दिया, प्रीति पुन: ऑटो में जा बैठी।

"काफी बड़ा घर लिया है, मुझे तो समझ में ही नहीं आ रहा है कि मैं गृह प्रवेश के समय क्या तोहफा दूं। विजय के पास तो सब कुछ है, इतना महंगा फ्लैट जो ले सकता है, भला उसे तोहफे की क्या जरुरत है ?" विनय को अजीब सी शर्मिंदगी हो रही थी। संयोग से जय नीचे ही खड़ा मिल गया, जो आने वाले दूसरे मेहमानों का स्वागत कर रहा था, जय प्रीति और विजय का छोटा भाई था। विनय ने ऑटो सीधा जय के सामने रोका और पैसे देकर ऑटो वाले को विदा कर दिया। विनय को देखकर जय खुश हुआ, बाकी मेहमानों को छोड़ कर वह विनय की ओर बढ़ा और पूरी गर्मजोशी से उसके गले लगा।

"मुझे ख़ुशी हुई जो आप यहाँ आये जीजा जी। आपके बगैर तो यह पूजा अधूरी रहती।" कहकर वह प्रीति के भी गले लगा। बाकी मेहमानों को मुसकुराते हुए आगे बढ़ने का संकेत करके वह प्रीति का हाथ थामे आगे बढ़ गया। विनय उनके पीछे चलता रहा, जय की आत्मीयता से उसका संकोच थोड़ा कम हुआ। कॉम्प्लेक्स पार्किंग की ओर अनेक महंगी गाड़ियों की आवाजाही हो रही थी, जो निःसंदेह विजय के मेहमान थे।

"क्या दीदी आप भी, ये ऑटो को अंदर तक लाने की क्या जरुरत थी ?" जय धीरे से फुसफुसाया। प्रीति ने अजीब सी नजर से उसे देखा।

"मेरा मतलब था, इतना शानदार और महंगा काम्प्लेक्स है, सभी रिश्तेदार और मेहमान शानदार गाड़ियों में आ रहे है, ऐसे में मेरी बहन ऑटो में आ रही है, तो लोगों को अजीब लगता है न ?" जय धीरे से बोला, प्रीति ने उसे इशारे से चुप रहने को कह दिया, उसे डर था कही विनय यह सुन न ले। उसने विनय को देखा, विनय उसे देख कर मुस्कराया तब उसे चैन मिला।

भगवान का शुक्र है कि विनय ने कुछ भी नहीं सुना।

लेकिन विनय की उस मुस्कुराहट में एक वितृष्णा सी थी, जिसे प्रीति पहचान नहीं पाई। विनय ने सब सुन लिया था, ऑटो में आने से जय का स्टेट्स कम हो रहा था, उसे शर्मिंदगी हो रही थी। वह कुछ न बोला और अपने तोहफे के बक्से को सम्भाले उनके पीछे चल पड़ा।

□□□

उस विशालकाय फ्लैट का इंटीरियर देख कर विनय की आँखें चुंधिया सी गई, चारों ओर जाने अनजाने लोगों का जमावड़ा सा लगा था, घर के मुख्य कमरे में पूजा हो रही थी। विनय इतने लोगों के बीच थोड़ा हिचकिचा रहा था, उसकी सास ने विनय को बलिहारी नजरों से देखा, सास पर नजर पड़ते ही विनय ने उनके चरण स्पर्श किये, सासु ने ढेर सारा आशीर्वाद दिया और उसे गले लगा लिया। पूरे परिवार में बस एक प्रीति की माँ ही थी जिनका प्रेम उसे निश्छल प्रतीत होता था, एक उन्हीं में उसे अपनत्व मिलता था। सासु जी ने उसे पानी मिठाई वगैरह का आग्रह किया जिसे हमेशा की तरह विनय ने सविनय नकार दिया, और हमेशा की ही तरह उसे सासु जी जबरदस्ती खिला कर ही मानी। विजय अपनी पत्नी के संग पूजा में व्यस्त था, जय मेहमानों का स्वागत कर रहा था, खाने की व्यवस्था के लिए कैटरिंग कर रखी थी। विजय पूजा से उठा तो उसकी दृष्टि विनय पर पड़ी, विनय थोड़ा सकुचा रहा था, विजय आगे बढ़ा और उसने उसे गले लगा लिया।

"बधाई हो विजय ! आखिरकार घर भी हो गया। बहुत बहुत बधाई।" विनय ने यह शब्द मन से कहे थे, वह वाकई विजय के घर लेने पर खुश था।

"बस अब अगली बधाई देने का अवसर हमें मिलना चाहिए विनय, मुझे पता है तुम्हारा भी घर इस साल हो ही जायेगा।" विजय ने चहकते हुए कहा, उसके भाव हालांकि उत्साह के थे किन्तु इतने लोगों के सामने बोलने से विनय को थोड़ा सा अजीब लगा। यहाँ उपस्थित सभी में से केवल वही एक रिश्तेदार था जिसके पास मुंबई में खुद का घर नहीं था। वह बस मुस्करा कर रह गया।

सामने एक मेज पर मेहमानों द्वारा उपहार स्वरूप दिए गए महंगी चीजों का अम्बार सा लगा था, उन्हें देखकर विनय चाहकर भी अपना तोहफा आगे बढ़ाने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। प्रीति उसकी हिचकिचाहट को समझ रही थी। उसने विनय का हाथ पकड़ा।

"जीजा जी ! कुछ छिपा रहे है, तोहफा लाये है मगर देंगे नहीं।" जय ने उसके हाथ से पैकेट लगभग छिनते हुए कहा। विनय का मन किया कि वह उस पैकेट को पुन: छीन ले किन्तु वह चाहकर भी ऐसा नहीं कर सकता था। मेहमानों और रिश्तेदारों की भीड़ उनके इर्द गिर्द खड़ी थी, ऐसे में विनय को बेहद शर्मिंदगी सी हो रही थी कि कही उसका तोहफा सब के सामने ना खोल दिया जाए। जय उत्साह से उसकी पैकिंग खोलने लगा लेकिन विजय ने मौके की नजाकत देखते हुए उसका हाथ पकड़ लिया।

"ये हमारे विनय का दिया गया तोहफा है और ये केवल मेरे लिए है, तो इसे खोलने का अधिकार भी केवल मेरा ही रहेगा। इसे तो मैं सबसे बाद में खोलूँगा और अपने सबसे करीब रखूंगा। मैं इसे अलमारी में रखता हूँ, क्योंकि मुझे पता है विनय ने जो भी दिया है वह मेरे लिए सबसे बेशकीमती तोहफा होगा।" विजय ने विनय के कंधे पर हाथ रखा, विनय बस उसे देखता ही रह गया, उसे समझ में नहीं आ रहा था वह क्या प्रतिक्रिया दे। प्रीति विजय के गले लग गई, विजय उसका बड़ा भाई था, लेकिन वह घर का सबसे समझदार व्यक्ति भी था, वह विनय की कशमकश को समझ रहा था, वह जानता था कि जाने अनजाने उनके बीच फासला बढ़ते जा रहा है और रिश्ता बस एक नाजुक डोर से बंधा हुआ है, हालांकि शादी से पहले जब प्रीति ने अपनी पसंद विनय के बारे में घर में बताया था तो उसका विरोध केवल विजय ने ही किया था। वह विनय को पसंद नहीं करता था, या प्रीति का अपने लिए हमसफर चुनना उसे पसंद नहीं आया था। लेकिन माँ बाप की मर्जी के आगे उसने ज्यादा विरोध भी नहीं किया,

शादी के बाद भी वह अक्सर विनय से घुलने मिलने से कतराता था, यही हाल विनय का भी था, वह अपने बारे में विजय के विचार जानता था, उसे पता था विजय उसे कुछ ख़ास पसंद नहीं करता।

लेकिन बीतते समय के साथ विनय का व्यवहार देख कर उसके मन में विनय के लिए इज्जत काफी बढ़ चुकी थी। अब वह वाकई विनय का बेहद सम्मान करने लगा था, विनय शौकिया लेखन भी करता था, उसका जब भी कोई लेख किसी पत्रिका में प्रकाशित होता प्रीति उसकी एक कॉपी अपने मायके भेज देती, विजय भी सब की नजरों से बचा कर विनय के लेख पढ़ा करता था, कहते है लेखन आदमी के व्यक्तित्व से प्रभावित होता है और विनय के लिखे लेख, कहानियां, मानवी भावनाओं का संग्रह सा होता था। रिश्ते, उलझन, प्यार और मानवी जीवन के भावनात्मक पहलुओं पर उसकी पकड़ थी। उसकी लेखनी से ही विजय ने जाना था कि विनय निःसंदेह दिल का साफ़, भावुक और सुलझा हुआ व्यक्ति है। आज विनय के चेहरे से ही उसने उसके संकोच को भांप लिया था, इसलिये उसका तोहफा जान बूझकर नहीं खुलने दिया।

विनय बस मुसकुराता रहा, लेकिन उसे मुसकुराने में भी काफी दिक्कत हो रही थी, लग रहा था मानो इन सब के बीच वह एक एलियन हो, विजय अब मेहमानों के खाने पिने की तैयारियों में लग गया, विनय भी यथासम्भव घर के कार्यों में हाथ बंटाने आगे बढ़ा ही था कि प्रीति की चचेरी बहन रास्ता रोक कर खड़ी हो गई।

"बस जीजा जी! यही दिन देखना बाकी रह गया था अब तो, अरे इतना बड़ा घर लिया है, इतना शानदार इंटीरियर किया है, शहर का जाना माना कैटरिंग किया है खाने के लिए, तो आपको क्या लगता है हमने नौकर नहीं रखे होंगे ? सब व्यवस्था है, आपको यह सब करने की जरूरत नहीं है।" गुड्डी ने खिलखिलाते हुए कहा।

हर बात पता नहीं क्यों तीर बनकर विनय के सीने धंसी जा रही थी। इससे पहले भी तो वह घर के कामों में हाथ बंटा चुका था, शादी, ब्याह, पूजा जैसे अवसरों पर खुद मेहमानों की व्यवस्था करता था, उन्हें खाना परोसने से लेकर पानी पिलाने तक के काम उसने अपने हाथों से किये थे, आखिर यह अपना परिवार है, परिवार के काम में हाथ बंटाने में कोई कमतरता तो नहीं थी और ना ही कोई इससे छोटा हो जाता है, और आज मुझे बताया जा रहा है इन कामों के लिए नौकर रख लिए गए है, मतलब वाह! पहले जो काम मैं किया करता था वह नौकरों वाला था ? या फिर अब बताया जा रहा है कि हमारे पास नौकर है, तुम्हारी जरूरत नहीं? हर पल हर क्षण हर जगह, कोई भी तो ऐसी चीज नहीं है जहाँ मुझे शर्मिंदगी नहीं हो रही, जहाँ मुझे अहसास नहीं दिलाया जा रहा की तुम हमारे स्टेट्स के नहीं हो।

उसका मन खिन्न हो गया, उसने अपने चारों ओर देखा, फिर वही नकली माहौल, नकली लोग, एक-दूसरे को बातों से नीचा दिखाते हाई क्लास कहलाये जाने वाले लोग, अपने भारी भरकम मेकअप के तले अपना कुरूप मन छिपाए महिलाएं। लगाव, प्यार और रिश्तेदारी का अभिनय करते अभिनेता। चारों ओर बस उन्हीं की भीड़ थी। उसका दम फिर घुटने लगा, यहाँ किसी को किसी कोई मतलब नहीं था, सब अपने में व्यस्त थे, किसी को भी अपनों की सुध नहीं थी और न ही परवाह। वह भीड़ में भी अकेला था, ऐसे में उसकी नजरें प्रीति को खोजने लगी, लेकिन प्रीति भी अपनी रिश्तेदारों के साथ व्यस्त थी।

नकली हंसी और मुस्कुराहटों को देख देखकर विनय का मन घृणा और अवसाद से भरने लगा था। वह एक क्षण भी यहाँ रुकने में असमर्थ था लेकिन वह प्रीति को छोड़कर नहीं जा सकता था। उसने स्वयं पर काबू रखा, वह अच्छे से जानता था कि प्रीति कि माँ उसे आज जाने नहीं देगी, वह अक्सर ऐसा ही करती है, विनय कुछ घंटों के लिए भी आये तो भी उसे जबरन पूरा दिन रुका लेती। विनय शांत रहा उसके मन में शादी से लेकर अब तक की सारी बातें आ रही थी और जा रही थी। उसका दिमाग अनेक प्रश्न बना रहा था और खुद ही उन प्रश्नों के उत्तर भी गढ़ रहा था, यह स्थिति रिश्तों के लिए सबसे खतरनाक होती है, जब आप खुद ही सवाल और खुद ही उनके जवाब भी गढ़ने लगो। हर सवाल अपने जवाब के रुप में एक बड़ी गलतफहमी पैदा करता है और हर ग़लतफ़हमी रिश्तों के बीच की खाई और चौड़ी करते जाता है, यही स्थिति विनय की हो रही थी।

वह भावनाओं के आवेग का एक जीता जागता विस्फोटक बन चुका था, जो कभी भी सम्पूर्ण आवेग के साथ फट पड़ने को उतारु था।

□□□

सारे मेहमानों के जाने के पश्चात रात के खाने के लिए केवल परिवार ही शेष रह गया था। रात का खाना सभी एक साथ खा रहे थे, खाने के दौरान जय और विजय की ढेर सारी बातें हो रही थी, सभी मेहमानों के विषय में बात हो रही थी, महंगे तोहफों का भी उल्लेख किया जा रहा था, विनय खामोशी से अपने खाने को समाप्त करने में लगा हुआ था।

“मेरे ख्याल से अब मुझे चलना चाहिए।” विनय ने खाना समाप्त करके कहा। उसकी बात सुनकर सभी शांत हो गए, वे विनय को इस प्रकार घूरने लगे जैसे उसने कोई अनहोनी बात कर दी हो।

“ऐसे कैसे ? रात रुक जाओ, सुबह चले जाना आप।” सासु जी ने उसे साफ़ मना कर दिया।

“जी मुझे काम है, सुबह-सुबह ऑफिस भी जाना है, तो मैं नहीं रुक सकता।” विनय ने पुन: निवेदन किया।

“रुक जाओ न, पहली बार तो नहीं रुक रहे हम।” प्रीति ने जोर देते हुए कहा।

“बस मैं निकल रहा हूँ, मुझे वाकई में काम है, कुछ जरूरी प्रोजेक्ट्स है उन्हें पूरा करना है।” विनय अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हो गया।

“इतनी रात गए कैसे जायेंगे ?” विजय ने कहा।

“विजय, यह मुंबई है, यहाँ रात नहीं होती, मैं चला जाऊँगा। रात भर ऑटो टैक्सी चलती रहती है।” विनय का रुकने का बिलकुल भी मन नहीं था। प्रीति और विजय ने उसे मनाने का भरपूर प्रयास किया, लेकिन विनय अपनी जिद पर अड़ा था। उसे यहाँ बिताया एक-एक क्षण मानो भारी पड़ रहा था, वह कैसे बताता कि अब पहले वाली बात नहीं रही, अब मुझे अहसास होता है कि मैं आप में से एक नहीं हूँ, अब मुझे शर्मिंदगी होती है, अब मुझे हर क्षण यह महसूस करवाया जाता है अब मेरी औकात आप के सामने खड़े रहने की नहीं है।

“चलिए आप सबसे मिलकर अच्छा लगा, अब निकलता हूँ।” कहकर विनय उठ खड़ा हुआ और उसने प्रीति की ओर देखा, प्रीति अपनी कुर्सी पर स्थिर थी।

“दीदी का मन नहीं है जाने का, रुक जाइए न जीजा जी।” जय ने कहा।

“कोई बात नहीं, यह कल आ जायेंगी, मैं निकलता हूँ। नमस्ते!” विनय दरवाजे की ओर बढ़ा, जय तेजी से चलते हुए विनय के सामने आकर खड़ा हो गया। सारा परिवार उसे इस प्रकार जाता देख कर स्तब्ध था, वे समझ चुके थे विनय को कोई बात बुरी लगी है।

“इतनी रात को आप टैक्सी ऑटो नहीं करोगे, चलिए मैं आपको अपनी गाड़ी में छोड़ देता हूँ, अब आप नहीं मान रहे है तो जबरदस्ती करना भी नहीं अच्छा लगता, ऐसे जाने देने के लिए हमें बेहद शर्मिंदगी हो रही है लेकिन आप सुनने को राजी ही नहीं है।” जय ने विनय की आँखों में देखते हुए कहा, विनय ने नजरें चुराई।

“तुम्हें पता है जय आखिर असल समस्या क्या है ? असल समस्या यही है जो तुम बात बात पर मुझे अपनी हीनता का अहसास दिलाने का प्रयास करते हो, मैं जानता हूँ तुम्हारे पास अब शानदार गाड़ी है, और मेरे पास एक स्कूटी तक नहीं, लेकिन यह बात जाहिर करना जरुरी नहीं है। मैं कोई पहली बार तुम्हारे घर से ऐसे नहीं जा रहा हूँ। हम पहले भी जाते आये है ऑटो और टैक्सी से, यह पहली बार तो नहीं है, यह तुम भी अच्छे से जानते हो।” विनय के स्वर में तल्खी थी।

“और प्लीज़, प्लीज़, मैं हाथ जोड़ कर विनती करता हूँ, मुझे यह सब मत जताया कीजिये कि आप कितने सुविधा सम्पन्न है। पता है मैं आप सब के लिए सार्वजनिक रुप से शर्मिंदगी का विषय हूँ, मेरा परिचय आपके स्टेटस में दाग लगाता है, मुझे पता है यह सब।” विनय आखिरकार फट पड़ा।

“विनय, हमारा ऐसा कोई उद्देश्य नहीं है, तुम हमारा परिवार हो और परिवार शर्मिंदगी नहीं होता, अगर जाने अनजाने तुम्हारा दिल दुख गया हो तो माफ कर दो, लेकिन इस तरह बर्ताव मत करो।” विजय उसके करीब आते हुए बोला।

“अच्छा ? तुम्हें पता है सुबह आते समय क्या हुआ। जय को शर्मिंदगी हो रही थी मेरे आने से, वह भी केवल इसलिए क्योंकि मैं ऑटो से आया था, तुम्हारे इस शानदार कॉम्प्लेक्स की लाइफस्टाइल के स्टैंडर्ड ऑटो पर खरे नहीं उतरते ना, इतने हाई स्टेटस वाले मॉडर्न समाज में मेरे आने से आपकी इज्जत कम होती है ना, वही क्यों विजय, तुमने भी क्या किया? मेरे तोहफे को सब के सामने अलमारी में रखवा दिया।” विनय तमतमाया हुआ था।

“वह तो मैंने तुम्हारे ही लिए किया था, मैं तुम्हारी हिचक समझ रहा था इसलिए मैंने उससे बचाने के लिये तुम्हें तोहफा सब के सामने नहीं खोलने दिया।” विजय ने उसे समझाया, उसे खुद पर ग्लानि हो रही थी कि उसके कारण विनय का दिल दुखा।

“यही तो! यही कह रहा हूँ मैं, तुम्हें पता है तोहफा खोलने से मेरी बेइज्जती होती, मेरी बेइज्जती अपरोक्ष रुप से तुम्हारे परिवार से ही जुड़ी हुई है, तुमने आखिर जाहिर कर ही दिया कि मैं केवल तुम्हारे लिए एक मजबूरी हूँ, जिसे केवल ढोया जा सकता है, निभाया नहीं जा सकता।”

“विनय, कोई भी ऐसा कुछ भी जान बूझकर नहीं कर रहा। तुम हमेशा गलत ही क्यों सोचते हो ?” अब बात प्रीति के भी बर्दाश्त के बाहर हो चुकी थी।

“मैं कुछ गलत नहीं सोच रहा, लेकिन मैं ऐसे माहौल के लिए नहीं बना हूँ, मैं चाह कर भी इस तरह नकली नहीं रह सकता। मैं तुम इन लोगों के बीच एडजेस्ट नहीं कर पा रहा हूँ, मुझे भी ऐसा लगता है जैसे तुम लोग भी बहुत कोशिश कर रहे हो लेकिन मुझे अपने बीच सामान्य नहीं पा रहे हो, इस सारे माहौल में फंस सा गया हूँ, मेरा दम सा घुटने लगा है अब इन सबसे,

पता है कोई साफ़ नहीं बोलता लेकिन यहाँ मौजूद हर शख्स या तो मुझे सहानुभूति की नजरों से देखता है या फिर मजबूरी की। मैं सब समझता हूँ, मैं कोई बेवकूफ नहीं हूँ, लेकिन आप यह क्यों नहीं समझ रहे कि मैं ऐसा ही हूँ, शुरुआत से ही ऐसा हूँ, मुझे बनावटी लोग, बनावटी माहौल नहीं रास आता।"

"तुम शुरू से ऐसे नहीं थे विनय।" प्रीति ने रुंधे कंठ से कहा।

"हाँ! क्योंकि तब मुझे कोई यह जताने वाला नहीं था कि तुम्हारी औकात हमारे सामने खड़े रहने की नहीं है, तुम हमारे परिवार के लिए शर्मिंदगी हो। ठीक है, मेरा स्टैंडर्ड शुरू से ही ऊँचा नहीं था, आप जानते थे यह सब। जब तक उन्नीस बीस का फर्क था सब सही चल रहा था, लेकिन जैसे ही यह फर्क जमीन आसमान का हो गया सब बदल गए, उस समय मुझे कभी शर्मिंदगी नहीं होती थी कि प्रीति के गले में गहने नहीं है, लेकिन अब मुझे महसूस होता है, तब मैं ऑटो से आने में भी शान समझता था लेकिन अब मुझे उसमें शर्मिंदगी महसूस होती है, तब मैं हर छोटे बड़े मौकों पर बुलाया जाता और आता था, क्योंकि मेरा परिवार है यह, लेकिन अब हर मौके पर आने में हिचकिचाहट होती है, तब मैं सबको जन्मदिन पर तोहफे दे सकता था, दीवाली पर मिठाई होली पर रंग लगा सकता था, लेकिन अब तुम्हारे लेवल के गिफ्ट्स मैं खरीद नहीं सकता और मेरे स्तर के देने में शर्म आती है, आप सब ने हर मौके पर जाने अनजाने मुझे यह जताने में कोई कसर बाकी नहीं रखी कि मैं एक लूजर हूँ। हां ठीक है घर नहीं ले पाया मैं, लेकिन ले लूँगा जल्द ही लूँगा, गहने नहीं बनवाये, गाड़ी नहीं ली, फ़ालतू के खर्चे नहीं करता क्योंकि मेरी सबसे पहली प्राथमिकता केवल घर है, घर लेने के बाद मैं सब ले लूँगा धीरे-धीरे, लेकिन आप अगर चाहते है कि रातों रात मैं आपके स्टैंडर्ड से खुद को जोड़ना सीख जाऊँ तो नहीं होता यह मुझसे। मैं आप सब की नजरों में मेरे लिए दया देखता हूँ, मुझे चुभता है यह, मैं दया का पात्र नहीं हूँ, प्लीज़ मुझे इस तरह किश्तों में अपमानित करना बंद करें आप सब, आपकी खामोशियों में छुपे व्यंग्य और दया समझ में आते है मुझे, नहीं सह सकता मैं यह सब।" विनय का स्वर और अधिक ऊँचा हो गया, उसकी आँखों में बहता तरल बाहर आने को तत्पर सा था।

"विनय, तुम बहुत बड़ी गलतफहमी में हो, कोई भला क्यों तुम्हें अपमानित करना चाहेगा ?" विजय परेशान हो गया था, वह विनय की दिन ब दिन बढ़ती गलतफहमियों को महसूस कर रहा था।

"बस विजय, अब बस भी करो, तुम्हारे कहने से क्या होता है ? चेहरे पर सब दिखाई दे जाता है मुझे , लेकिन आप सबको भी समझना होगा मैं रातों रात अपनी लाइफस्टाइल नहीं बदल सकता, समय लगेगा और मैं क्यों बदलू खुद को ? क्यों आप मुझे जैसा हूँ वैसा स्वीकार करने में हिचकते है ? सच बताओ आप सब को कभी यह नहीं लगता कि प्रीति की शादी मुझसे करवाकर आपने गलती कर दी है? सच बताना।" विनय का चेहरा गुस्से और भावनाओं की अधिकता से तमतमा रहा था, आँखें आंसुओं को रोकने के प्रयास में सुर्ख लाल हो चुकी थी, उसकी गले की खिंची हुई नसें तक स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

"उन्हें नहीं, लेकिन तुम मुझे यह सोचने पर जरुर मजबूर कर देते हो विनय।" प्रीति अपने परिवार को गलत समझे जाने पर खुद को संभाल नहीं पाई, उसने अब तक विनय की हर बदतमीजी को बर्दाश्त किया था, यह पहला मौका नहीं था जब विनय ने अच्छे खासे माहौल को खराब किया था, यह पहला अवसर नहीं था जब विनय ने उसके परिवार को अपमानित

किया था, प्रीति उसे वर्षों से समझाते आ रही थी, हर बदतमीजी को बर्दाश्त करती आ रही थी लेकिन आज उसके सब्र का बाँध टूट गया था।

“आखिर तुम्हारी समस्या क्या है विनय ? अगर मेरे भाई को अच्छे पैकेज की नौकरी मिल गई तो उसमें इनकी क्या गलती है ? पापा का प्रमोशन हो गया उनकी सैलरी दुगुनी हो गई तो क्या उनकी गलती है ? सालों से हम दो कमरे के दडबे नुमा सरकारी फ्लैट में रहते आये है, घर खरीदने का सपना न जाने कितने वर्षों से पापा देखते आ रहे थे, अगर बेटों ने अपनी काबिलीयत, मेहनत, पढ़ाई-लिखाई, डिग्री, और नौकरी के दम पर खुद के घर का उनका सपना साकार किया तो क्या इसमें उनकी गलती है ? तुम क्या चाहते हो कि पैसे होकर भी हम फिर उसी तरह अभाव में जियें जैसे अब तक जीते आ रहे थे ? हम पैसे और सुविधा होते हुए भी उसी जिन्दगी को जियें जिससे हम पीछा छुड़ाना चाहते थे ? क्यों करें हम ऐसा, केवल इसलिए कि घर के दामाद को इससे अपना स्टेट्स छोटा लगता है, अपनी कमी दिखती है, अपने लूजर होने का अहसास होता है ? तुम ऐसा क्यों सोचते हो ? तुम हमें अपना क्यों नहीं मानते ? अगर अपना मानते, अपना परिवार कहते तो तुम्हें मेरे परिवार की खुशहाली पर प्रसन्नता होती,तुम्हें अच्छा लगता, तुम उनको देख कर खुद को कम समझने के बजाय उनसे प्रेरणा लेते, अगर हम खुद कुछ बन नहीं पा रहे इसलिए जो बन गया है उसे दोष देना कहा तक सही है ? बहुत हो चुका विनय, तुम्हें अपनी यह आदत बदल लेनी चाहिए। हर बार ऐसा नहीं हो सकता, तुम्हें कोई हक नहीं है इस तरह मेरे परिवार को अपमानित करने का।” प्रीति रोते हुए बोली, जाने कबसे रोका हुआ उसके आंसुओं का सैलाब आज मुक्त हो चुका था।

“तुम्हारा परिवार ? यह तुम्हारा परिवार है और मैं क्या हूँ प्रीति ?” विनय के स्वर में आवेश, क्रोध और दुःख का सम्मिलित भाव था।

“तुम्हारी समस्या क्या है तुम्हें पता है विनय ?” प्रीति बोली, प्रत्युत्तर में विनय चुप रहा, उसका कंठ भर्राया हुआ था, आँखें अब आंसुओं का बोझ संभाल पाने में असमर्थ थे। प्रीति की कही बातें उसे किसी नश्तर की भांति चुभ रही थी।

“तुम्हारी समस्या यह है कि तुम खुद ही सवाल बनाते हो और खुद ही उसका जवाब भी देते हो, खुद ही समस्या पैदा करते हो और खुद ही उसमें रोते रहते हो, तुम्हारी सोच हद से ज्यादा नकारात्मक हो चुकी है, तुम्हें सकारात्मकता दिखाई ही नहीं देती, तुम हर किसी का केवल नकारात्मक पहलू ही देखते हो, तुम एक निगेटिव आदमी हो विनय और ऐसे लोग ना केवल खुद दुखी रहते है बल्कि दूसरों को भी तकलीफ देते है, तुम्हें खुशियाँ रास नहीं आती, जब सब कुछ सामान्य चल रहा हो तो तुम्हें कमी खलती है, तुम अस्वस्थ हो जाते हो कि सब सामान्य क्यों है ? कोई तकलीफ तो होनी चाहिए, कोई दुःख तो होना चाहिए, फिर तुम जानबूझकर उसमें कुछ ना कुछ नुक्स निकालते हो, कोई ना कोई रास्ता बना ही लेते हो दुःख तक पहुँचने का, दिन-रात बस पता नहीं क्यों निगेटिव ही सोचते रहते हो। बंद करो विनय , प्लीज़ इस निगेटिविटी से बाहर निकलो, यह तुम्हारी जिन्दगी नर्क कर देगी इसका तुम्हें अहसास होगा लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।” प्रीति ने हाथ जोड़ लिए, वह हताश होकर फर्श पर ही बैठ कर सुबकने लगी। विजय और जय ने उसे सहारा दिया।

“हमने आज तक यह कभी नहीं सोचा कि तुमसे हमारी बेटी की शादी करके हमने कोई गलती की है, लेकिन तुमने आज यह अहसास दिला दिया।” पहली बार प्रीति के पिता ने यह

शब्द कहे, उनकी पत्नी ने उन्हें चुप कराने का प्रयास किया लेकिन वो उसका हाथ झटक कर आगे बढ़े।

“हमने अब तक नहीं सोचा था और ना हमारे भीतर ऐसा कुछ कभी था, देखो अपनी उस प्रीति की ओर देखो, क्या इसी दिन के लिए तुमने इससे प्यार किया था ? मेरी बेटी सोने चांदी और संपत्ति की लोभी कभी नहीं रही विनय, अगर होती तो वह तुम्हें अपना जीवनसाथी कभी नहीं स्वीकार करती। तुम्हारे साथ वह जैसी भी है उसने कभी झूठे लफ्ज एक शिकायत नहीं की, वह तुम्हारे साथ खुश रहना चाहती है, लेकिन तुम केवल अपना सोचते हो, अपनी तकलीफें दिखाई देती है तुम्हें जो तुम्हारी खुद की ही बनाई हुई है, आज मैं कहता हूँ आखिर तुमने इन आंसुओं के अलावा प्रीति को क्या दिया है ? तुम्हें इस पर ज़रा भी तरस नहीं आता ? इतनी उम्मीद से यह तुम्हें अपने परिवार में शामिल करना चाहती है लेकिन तुम्हारे भीतर न जाने कौन सी हीन ग्रन्थि पल रही है कि तुम किसी को अपना ही नहीं पा रहे हो, सब तुम्हें अपना रहे है, कोशिश करते है तुम्हें कोई परेशानी ना हो, लेकिन तुम्हारा स्वभाव ही विचित्र है, कब क्या चीज तुम्हें बुरी लग जाए यह खुद तुम भी नहीं जानते। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि तुम्हें कोई हीन भावना या अपमान का भाव नहीं खा रहा, तुम्हें तुम्हारी जलन खा रही है, जला रही है। अपने ही परिवार की समृद्धि से इतनी जलन क्यों विनय ? घर, संपत्ति, जायदाद, पैसा सब फ़ालतू चीजें है, यह सब आती जाती रहती है लेकिन रिश्ते ऐसे नहीं है, आदमी जिन रिश्तों के साथ जन्मता है वह उसके साथ आजीवन रहते है, जो रिश्ते वह बनाता है वह उसके हाथ में रहते हैं उसके व्यवहार में रहते है, रिश्तों की कद्र करना सीखो विनय, मुझे तुम पर गुस्सा नहीं बल्कि तरस आ रहा है कि तुम कितने अभागे हो, जो सब कुछ तुम्हारे पास होकर भी तुम उसे अपना नहीं पा रहे हो, मेरी बेटी के लिए बस मुट्ठी भर खुशियाँ पर्याप्त है विनय, उसके हक की खुशियाँ उससे क्यों छीन रहे हो ?”

विनय निःशब्द हो गया, सारे घर में मातम सा सन्नाटा छा गया।

विनय से कुछ कहते नहीं बना, वह पलटा और दरवाजे की ओर बढ़ गया।

“विनय मुझे साथ चलने को नहीं कहोगे ?” प्रीति उसे निर्मोही सा जाते देखते रही, उसकी आँखों में अब भी उस पत्थरदिल के लिए उम्मीद थी।

“अगर तुम्हें मेरे साथ आने के लिए कहना पड़े तो वह कैसा साथ प्रीति? तुम्हें मेरा साथ देना होगा तो तुम आओगी, मेरा जितना अपमान होना था वह हो चुका, अब मैं फिर कभी इस घर की दहलीज पर कदम नहीं रखूँगा और तुम्हें अगर मेरे साथ चलना हो तो तुम्हें भी यह स्वीकार्य होना चाहिए, या तो मैं, या तुम्हारा यह परिवार। चुनाव तुम्हारे हाथ में है।” विनय पीठ किये खड़ा रहा, वह एक पल को भी पीछे नहीं मुड़ा, प्रीति के आंसू उसे पिघलाने की ताकत रखते थे और वह अब पिघलना नहीं चाहता था।

“तुम हमारा परिवार ही तो हो विनय।” प्रीति ने उसका हाथ पकड़ लिया।

“मैंने अपना निर्णय सुना दिया।” कहकर विनय ने प्रीति का हाथ छुड़ा लिया और दरवाजे पर जाकर ठिठक गया, वह अब भी इस उम्मीद में था कि प्रीति उसके साथ आयेगी।

“प्रीति कहीं नहीं जाएगी, तुम्हें जाना है तो जा सकते हो। तुम्हारी सनक की वजह से प्रीति दुःख नहीं झेलेगी, जब तुम्हें तुम्हारी गलती का अहसास हो तब तुम वापस चले आना, परिवार के दरवाजे हमेशा खुले है तुम्हारे लिए।” इस बार विजय ने कहा और प्रीति का हाथ थाम लिया। प्रीति उसे देखती रह गई, विजय का कंठ भर्राया हुआ था।

विनय ने अपने बहते आंसुओं को दोनों हाथों से बेसब्री से पोंछा और पैर पटकते हुए आगे बढ़ गया। उसने एक बार भी पीछे मुड़ कर देखने की जरूरत नहीं समझी।

□□□

विनय हमेशा पहल का इंतज़ार करता रहा लेकिन पहल नहीं हुई, दोनों ओर से पहल का इंतज़ार हो रहा था, इसी बीच विजय ने हार मान कर समझौता करना चाहा और विनय को घर खरीदने के लिए सहायता करने का प्रयास भी किया, लेकिन विनय ने इसे फिर अपने अहम पर चोट समझकर अपने आप को उससे एकदम दूर कर लिया। बात बिगड़ती ही चली गई। आखिरकार एक दिन तलाक के कागजात घर पर पहुँच गए। विनय बस किंकर्तव्यविमूढ़ बना रहा, उसकी जलन खामोशी और बेचैनी ने उसे हमेशा के लिए खुशियों से दूर कर दिया था। प्रीति ने उसके नए उपन्यास के प्रकाशित होने पर फोन भी किया, लेकिन अब उनमें केवल औपचारिक बातें ही होने लगी, दोनों अपने जज्बातों को दबाए रहे, उन्हें यह नहीं समझ में आया कि जज्बात दबाने से रिश्ते कमजोर हो जाते है यदि आप किसी के लिए अपनापन रखते है तो उसे जताना भी चाहिए, समय पर अपनापन न मिलने से रिश्ते अपनी धार खो देते है, और वह रिश्ता बस जिन्दगी भर का अफ़सोस बन कर रह जाता है।

□□□

हरिद्वार में आगमन

विनय ने कुछ नहीं छिपाया, उसे बहुत दिनों बाद किसी से मन की बात कहने का अवसर मिला था, उसने अपने आप को थोड़ा हल्का महसूस किया, लेकिन जाने अनजाने में उसकी आँखों से दो आंसू लुढ़क कर नीचे जा गिरे, उसने फौरन अपनी आँखों को हथेली से उन्हें साफ़ किया। अनिकेत और मानव उसे एकटक देख रहे थे, उसके भीतर पनपते भावनाओं के तूफ़ान को दोनों साफ महसूस कर सकते थे। उसी समय बस एक झटके से रुकी, शाम के साढ़े छह बज चुके थे, लेकिन बाहर अँधेरा हो चुका था और बस अब भी मेरठ की सीमावर्ती क्षेत्रों में ही घूम रही थी। अनिकेत ने खिड़की से बाहर की ओर देखा। बस पता नहीं किस रास्ते से जा रही थी, आसपास की दुकानों एवं इमारतों पर लिखे बोर्ड्स को देखकर उसे पता चला कि वे अब भी मेरठ पार नहीं कर पाए है।

“भाई, कायदे से तो हमें अब तक गंगा आरती देख कर होटल में एक नींद भी पूरी कर लेना चाहिए था, तुम्हें नहीं लगता बारह बजे से सात बजे तक लगभग सात-आठ घंटे बहुत ज्यादा ही हो चुके है? और अब भी मुझे लग रहा है कि हम नौ बजे के पहले पहुँचने वाले नहीं है और अब ये बस किसी ढाबे पर रोकी है साहब ने।” अनिकेत ने चिंतित स्वर में कहा।

“यह तो गड़बड़ हो गई भाई, हमारा आज का पूरा दिन बेकार गया फिर तो, पूरा प्लान ही गड़बड़ हो गया भाई, सोचा था आज ही हर की पौड़ी पर गंगा आरती देख लेते और सुबह ऋषिकेश चलते, वहां एक दिन रुककर अगले दिन अनिकेत भाई की ट्रिप पर निकल लेते, लेकिन ये साले कमिशनखोर बस वाले, इतनी धीमी गति से बस चलाते है।” विनय तमतमा उठा, वह अपनी योजना को विफल होता देखकर क्रोधित हो गया था, बस के भीतर शोरगुल हो रहा था, उन्होंने अपने स्लीपर के पर्दे हटा कर देखा तो सवारियां ड्राइवर से भिड़ी हुई थी, जोरदार बहसबाजी हो रही थी।

“ये गाड़ी चलाते हो तुम ? सालों इस ढाबे पर तुम्हारा कमीशन बंधा है इसलिए जानबूझकर गाड़ी धीमी चलाई ताकि शाम तक यहाँ पहुँच जाए, तुम्हारे कमीशन के चक्कर में हम लोग काहे तकलीफ सहे ?” कुछ यात्री आक्रामक रवैया अपनाए हुए थे।

“मैंने कहा था, इन प्राइवेट बस वालों की लूट है हर जगह, ये जानबूझकर टाइम लगाते है, एक काम करो, इस ढाबे पर कोई मत जाओ, रहने दो जैसे का तैसा इसे भी।” एक यात्री ने कहा जिससे सब सहमत नजर आये, किन्तु कुछ की मजबूरियां भी थी, महिलाएं बच्चे भी थे जो भूख प्यास और टॉयलेट की वजह से परेशान थे, विनय, अनिकेत और मानव को भी काफी देर से टॉयलेट की इच्छा हो रही थी। रास्ता भर कुछ खाने की इच्छा ही नहीं हो रही थी, निरंतर बस में बैठे रहने के कारण वैसे ही जी खराब हो रखा था तो खाने की इच्छा ही मर गई थी।

“चल भाई ड्राइवर का तो कुछ नहीं बिगड़ना है, वह तो साला जाकर होटल में बैठ गया है, ज्यादा बहसबाजी करोगे तो यही खड़ा हो जायेगा कुछ नहीं बिगाड़ पाओगे, आसपास सब सुनसान है, इस ढाबे और पेट्रोल पम्प के अलावा कहीं कुछ भी नहीं है, तो कम से कम पानी तो ले ही लेते है, और कब से पेट फूल रहा है, सुसु की जबरदस्त तलब लग रही है।” मानव अपनी स्लीपर की सीढ़ियों की सहायता से नीचे गलियारे में उतरता हुआ बोला, दोनों सहमति के साथ उतर गए और पेट्रोल पम्प से लगे शौचालय में जाकर हल्के होकर पुन: वापस आ गए, वापसी में ढाबे से ही पानी की बोतलें खरीदी और खुशकिस्मती से पानी एमआरपी पर ही मिला। ढाबे और पेट्रोल पम्प के शौचालयों में यात्रियों की कतार लगी थी, सर्दियों के महीने

में सात-आठ घंटे पानी के आवेग को भला कौन नियंत्रित कर सकता है ? वह भी तब, जब मंजिल अभी भी घंटों दूर थी। सभी यात्रियों के आने के पश्चात ड्राइवर महोदय डकार मारते हुए अपनी सीट पर जा बैठे, ड्राइवर एकदम गैंडे की चमड़ी से बना प्रतीत होता था, उसे यात्रियों की बकबक और गुस्से से मानो कोई फर्क ही नहीं पड़ता था।

“भाई, आप तो बोले हरिद्वार पांच घंटे में पहुंचा देंगे, और यहाँ सात से आठ घंटे हो गए अब भी मेरठ के ही चक्कर लगा रहे हो, आखिर कब पहुँचाने का इरादा है मालिक ?” विनय ड्राइवर के ऊपर भुनभुना रहा था।

“सड़क देख रहे हो आप ? इतनी खराब सड़कें है, गाड़ी तीस किलोमीटर से चालीस भी नहीं चल सकती और अगर इतनी ही जल्दी है तो लो मैं उठ जाता हूँ, आप ही चला लो।” कहकर ड्राइवर वाकई चलती गाड़ी में ही स्टेयरिंग छोड़ कर खड़ा हो गया, जिसने भी यह देखा उनकी तो साँसे ही अटक गई। मानव और अनिकेत की तो चीखे ही निकल पड़ी, गाड़ी सड़क पर रफ्तार से दौड़ रही थी और वह सीट पर खड़ा था।

“भाई गलती हो गई हमारे दोस्त से, माफ़ कर दो नादान है, नहीं समझता, सड़क खराब है, दिखता नहीं इसे। बैठ जाओ भैया गाड़ी चलाओ आप।” अनिकेत ने हाथ जोड़ लिए।

“ए भैय्या तोहार गोडे गिरत हइ, बईठ जा गुरुदेव, आपन सीट पर।” मानव ने हाथ जोड़ लिए, उसका कलेजा मानो मुंह को आ गया था।

“अपने दोस्त को समझा दो, गाड़ी चलाते वक्त टोका ना करें, रास्ते खराब है कहीं रास्ते से उतर कर उलट-पलट गई तो सब के सब मरा जाओगे।” ड्राइवर ने चेतावनी रुपी धमकी देते हुए कहा और आराम से ऐसे बैठ गया मानो कुछ हुआ ही न हो।

“अरे भाई बैठ जाओ ना आप लोग, हो गया अब तो रोते गाते पहुँच ही गए है।”

“थोड़ी दूर के लिए काहे बखेड़ा कर रहे हो भाई।”

“अबे मरवाओगे क्या सबको ?”

“ड्राइवर सर्कस में था क्या ? साला स्टंट दिखा रहा है स्टीयरिंग छोड़ कर।”

“अरे इनसे ना भिड़ा करो, नहीं तो दो बजे रात में पहुंचाएंगे।”

“जाओ भाई अपनी अपनी जगह, हार्ट फेल करवाकर मानोगे क्या ?”

“भैय्या हरी द्वार जीवित ही जाना है, अपनी अस्थियाँ बहाने नहीं जाना है, शांति की तलाश में मोक्ष प्राप्ति करवा दोगे आप लोग।”

ऐसी ही विभिन्न टिप्पणियों से सम्पूर्ण बस गूंज रही थी। तीनों अपने स्थान पर जाकर यथावत बैठ गए, काफी देर के बाद जब किसी दुकान पर ऋषिकेश का पता दिखा तब उनकी जान में जान आई।

□□□

रात के करीब साढ़े नौ बज रहे थे, वे हरिद्वार पहुँच चुके थे। तीनों ने अपने बैग टांग लिए, बैग की स्ट्रीप्स मजबूती के साथ खुद से कसकर बाँधने के बाद वे आगे बढ़े। यात्री धीरे-धीरे उतर रहे थे, विनय ने दोनों का हाथ पकड़ कर धीमे चलने के लिए कहा, ड्राइवर आराम से बेफिक्र होकर पान मसाला चबा रहा था, तीनों अब दरवाजे के पास खड़े थे, मानव और अनिकेत उतर चुके थे, विनय अभी भी दरवाजे पर ही खड़ा था दोनों उसे देखते रहे और समझने की कोशिश करते रहे कि वह आखिर क्यों नहीं उतर रहा।

“मेरे तीन कहते ही, तुम्हारी सामने जो गली है उसमें भागना।” विनय ने धीमे से कहा और इससे पहले कि दोनों कुछ समझ पाते विनय ने बस का दरवाजा खोलकर पानमसाला थूकते ड्राइवर को देखा, उसकी पीठ उसे स्पष्ट दिखाई दे रही, विनय ने अपनी पूरी शक्ति समेटी और एक जोरदार ठोकर ड्राइवर की कमर में जड़ दी। ड्राइवर दरवाजे से लड़ते, भिड़ते, चीखते हुए सीधे बाहर जा गिरा।

“@#$ साले! और रोआब पेलेगा हमसे।” विनय चीखा और दरवाजे से लगभग छलांग लगाते हुए बाहर कूदा।

“भागो बे !” वह सीधे सामने वाली अँधेरी गली में दौड़ पड़ा, दोनों तो पहले स्तब्ध रह गए, लेकिन माजरा समझते ही उनके छक्के छूट गए, सर पर पाँव रख कर दोनों विनय के पीछे उस गली में भागे।

“साले!! कुत्तों, पीठ पर वार किया रे। अरे मर्द की औलाद है तो सीने पर वार करता।” ड्राइवर दर्द से बिलबिलाता रहा। किसी तरह लड़खड़ाते और खांसते हुए वह खड़ा हुआ, पानमसाले की सारी पीक उसके गले में ही रह गई थी। किसी ने उसका हाथ पकड़कर खड़ा किया।

“धन्यवाद भाई ! ये साले हरामखोर @#$,$#@ पीठ पीछे वार करके भागे है। सामने से आते तो पता चलता मर्द क्या होता है, डरपोक, कायर।” ड्राइवर सैकड़ों गालियाँ देता रहा।

“भाई मैं सीने पर वार करने ही तो वापस आया हूँ, मर्दानगी वाला डायलॉग नहीं मारना चाहिए था तुझे।” कहकर सहारा देने वाले शख्स ने एक लात उसकी छाती पर जड़ दी, अबकी बार उसकी गले में अटकी पीक पेट में ही पहुँच गई और वह सीधे सड़क के किनारे धुल में जा गिरा। वह अनिकेत था, ड्राइवर के बोल सुनकर वापस आ गया था। अबकी बार लात मारते ही वह फिर से उसी गली की ओर भागा। मानव और विनय के तो होश ही उड़ गए थे अनिकेत को वापस जाता देखकर। अब तीनों साथ भाग रहे थे।

“अरे गजब सनकी हो आप लोग यार। विनय भाई ने लतियाया ठीक था, लेकिन अनिकेत भाई आपको क्या सनक चढ़ गई लतियाने की ? वह भी वापस उसी के किले में घुसकर।” मानव हाँफते हुए बोला, उसने इतनी ज्यादा बकलोली अपनी जिन्दगी में कभी नहीं की थी।

“अरे एक तो मर्दानगी को ललकार दिया था, दूसरे मैं भी दोपहर से गुस्से से भरा बैठा हूँ, ऊपर से साला गाड़ी की स्टीयरिंग छोड़ कर खड़ा हो गया था। अब याद रखेगा आगे से हमें।” तीनों हांफ रहे थे, लेकिन भागते जा रहे थे।

“अबे रुक जाओ बे ! ड्राइवर ने किसी का चेहरा ही नहीं देखा है और ना उसने हमें इस गली की ओर भागते देखा है, हम बिना मतलब भाग रहे है, इतने यात्रियों के झुण्ड में घंटा पता चलेगा उसे लतियाने वाले कौन थे, वह बस दांत भींचकर रह जायेगा।” हांफते हुए अनिकेत बोला। इतनी ठंड के बावजूद उनके माथे से पसीना चू रहा था। तीनों अपने घुटनों पर हाथ रखे खड़े होकर हांफने लगे। मानव और विनय तो मार्ग में ही एक दीवार के सहारे पीठ टिकाये बैठ गए।

“ओ तेरी! जिन्दगी में पहली बार ऐसी हरकत की है यार, हाहाहा सारा फ्रस्ट्रेशन ही निकल गया।” विनय बोला और उसकी हंसी छूट गई। तीनों पेट पकड़ कर हंसने लगे और कुछ देर इसी तरह जमीन पर बैठे रहे, आते जाते लोग उन्हें किसी नमूने की भांति देखते और आगे बढ़ जाते।

□□□

“भाई गूगल मैप के हिसाब से हम जहां उतरे है, वहां से ‘हर की पौड़ी’ सात किलोमीटर दूर है।” विनय ने मोबाइल में मैप चेक करते हुए कहा। यहाँ आने के बाद जो सबसे पहली चीज उन्होंने महसूस की थी, वह थी ठंड। दिल्ली के मुकाबले हरिद्वार में दुगुनी ठंड थी, ठंडी हवाएं कानों में सांय सांय कर रही थी, थोड़ी भागदौड़ में इस ठंड का अहसास नहीं हुआ, किन्तु जैसे ही तीनों सामान्य हुए उन्हें मौसम में आये इस बदलाव का फौरन अहसास हो गया।

“भाई ! यहाँ तो जबरदस्त ठंड पड़ रही है, मेरे रोम रोम में सिहरन हो रही है।” मानव की कंपकंपी छूट रही थी, और यही हाल दोनों का भी था।

“मेरे ख्याल से अपने दस्ताने और कनटोप निकालने का समय आ गया है, कान, और उंगलियाँ सुन्न सी हो रही है।” अनिकेत ने सुझाव दिया, तीनों ने उसपर अमल करने में ही भलाई समझी। दस्ताने और कनटोप लगाने के पश्चात थोड़ी राहत महसूस हुई।

“चलो यहाँ से ऑनलाइन कोई कैब बुक करते है हर की पौड़ी तक।” विनय ने मोबाइल में देखा तो पता चला हरिद्वार और ऋषिकेश में उनकी ऑनलाइन बुकिंग एप की सुविधा ही नहीं है।

“कैब बुक नहीं हो सकती, यहाँ इसकी सर्विस नहीं है, लोकल ऑटो या टैक्सी करते है।” विनय ने कहा और उसी गली की ओर बढ़ गया जहाँ से वे वापस आये थे, मुख्य सड़क उसी गली के छोर पर थी। लेकिन उनका उत्साह तब ठंडा पड़ गया जब लोकल ऑटो वाले ने ७०० रुपये मांग लिए।

“सात सौ रुपये ? सात किलोमीटर के ? भाई मजाक लगा रखा है क्या, एकदम ही नया समझ लिए हो हमें तो, दिल्ली से ही है हम, कम से कम हम से तो थोड़ा लिहाज रखो ठगी के मामले में।” विनय ऑटो वाले की गैरजरूरी मांग और खुली लूट को देखकर भुनभुनाया। फिर वह वहां खड़ी एक प्रवासी वैन की ओर बढ़ गया, उसने तो ऑटो वाले का भी रिकॉर्ड ध्वस्त करते हुए २००० रुपये की मांग रख दी।

“भाई आप लोग तो मजबूरी का लाभ उठाने लग गए है, किस हिसाब से २००० होते है ? मतलब बस हरिद्वार के नाम पर यात्रियों को लूटो आप लोग।” विनय कुढ़ते हुए बोला।

“साहब, सिंगल राउंड है, वापसी में कुछ नहीं मिलेगा और हर की पौड़ी उलटी साइड में है यहाँ से, आप अगर पुराने होते तो रास्ते में ही उतर जाते, सात किलोमीटर पहले। आप बस के आखिरी स्टॉप तक आ गए इसी से पता चलता है आप लोगों को कोई जानकारी नहीं है यहाँ की।” ड्राइवर ने कहा।

“भाई आप रहने दो, माफ़ करो हमें। हम दूसरा बंदोबस्त कर लेंगे।” कहते हुए विनय ने दोनों को अपने पीछे आने का संकेत किया और सड़क पार करके दूसरी ओर एक दुकान की ओर बढ़ा। दुकानदार उन्हें ही काफी देर से देख रहा था।

“भाई साहब हमें हर की पौड़ी जाना है, आप बता सकते है इस तिराहे पर कौन सा रास्ता जाएगा ?” विनय ने दुकानदार से पूछा, जो तीस के आसपास का ही कोई युवक था।

“भाई सबसे पहले तो आप इन ऑटो और कैब वालों के चक्कर में न पड़ो, रात में ये बहुत लूटते है, नाम खराब कर रखा है ससुरों ने पूरे हरिद्वार का। इतना भी नहीं समझते कि यात्री यहाँ दर्शन करने आया है, बाहर से आया है तो उसके मन में हरिद्वार के प्रति गलत छवि मत बनने दो। लेकिन यहाँ किसको परवाह है। भाई आप ना एक काम करो, या तो आप जिस ओर से

आये है उस ओर खड़े हो जाओ, स्टेशन से कोई भी बस निकलेगी उसमें से आधी तो हर की पौड़ी से ही होते हुए जाएगी आप उनमें से किसी में भी बैठ जाओ, और अगर फिर भी बात न बने तो साइकिल रिक्शा कर लीजिये, यहाँ से दो ढाई किलोमीटर ही हरिद्वार रेलवे स्टेशन है सीधे मार्ग पर, रिक्शा आपको वहां तक पहुंचा देगी, और वहां से आपको ऑटो मिल जाएगी हर की पौड़ी के लिए।" दुकानदार ने तफसील से पूरी जानकारी दी।

"भाई आपका बहुत बहुत धन्यवाद, आप जैसे लोग है तभी इंसानियत बची हुई है, आप नहीं होते तो पता नहीं कितनी देर और भटकना पड़ता।" मानव ने उसका धन्यवाद किया और तीनों बैग टाँगे तिराहे के उस छोर की बढ़ गए जहाँ वे उतरे थे। दो चार बस वहाँ से गुजरी लेकिन उनके रोकने के प्रयास के बावजूद कोई नहीं रुका। बगल में चाय की दुकान पर सुस्ताते वृद्ध साईकिल रिक्शा वाले ने उन्हें परेशान देखा और उनकी वेशभूषा से उनके बाहरी होने का अंदाजा लगा लिया।

"परेशान है साहब आप लोग ?" उसने कहा।

तीनों ने उसकी ओर देखा, फुल स्लीव का मटमैला शर्ट, सर पर ऊनी टोपी जो कान तक खिंची हुई थी, आधी बाह का स्वेटर पहने वह कमजोर सा व्यक्ति था।

"जी हमें हर की पौड़ी जाना है और समझ नहीं आ रहा कैसे जाए, ऑटो टैक्सी वाले तो जो मन में आ रहा है वही औना पौना दाम बोल रहे है। क्या करें समझ में नहीं आ रहा।" विनय ने कहा।

"साहब आप मेरी रिक्शा में बैठ जाइए, मैं आपको स्टेशन पहुंचा देता हूँ, वहां से ऑटो मिल जाएगी सस्ते में। रात का समय है तो पचास रुपये प्रति व्यक्ति तक ले लेंगे वो।" उसने कहा और अपने कान में खोंसी हुई बीड़ी निकाल कर सुलगा ली।

तीनों ने एक बार उसकी जर्जर काया और रिक्शा की ओर देखा। उन्हें संदेह था कि वो उन्हें दस मिटर भी खींच पायेगा।

"बाबा ! आप खींच लोगे हमें ?" अनिकेत ने शंकित स्वर में कहा।

"आप बैठिये, मेरा यह रोज का काम है।" कहकर रिक्शा वाला साइकिल की सीट पर जा बैठा।

"किराया कितना लेंगे ?" मानव ने पूछना उचित समझा।

"आप जो ठीक समझे दे दीजियेगा।" उसने कहा।

तीनों ने एक-दूसरे की ओर देखा और मूक सहमति देकर अपने अपने बैग्स के साथ जा बैठे, आगे की सीट पर मानव और विनय बैठ पाए तो पीछे वाली सीट पर हैंडल पकड़ कर अनिकेत बैठ गया। उसे डर लग रहा था कि उनके वजन से साइकिल कही पीछे से उठ कर खड़ी ना हो जाए। रिक्शा चालक ने बीड़ी का भरपूर कश लिया और पैडल मारकर आगे बढ़ा, साइकिल लगभग रोती हुई सी सड़क पर आगे बढ़ गई। साइकिल की गति सामान्य थी, इतनी सामान्य कि तीनों यदि पैदल भी चलते तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन समस्या रास्ता पता होने की थी, इसलिए बैठना उनकी विवशता थी। कुछ दूर चलने पर चालक हांफने लगा, रिक्शा की गति धीमी हो गई, अनिकेत ने गति में आया अंतर महसूस किया, उसे शर्मिंदगी सी हो गई। ड्राइवर का कृशकाय शरीर और तीनों का वजन देखकर उसे प्रतीत हुआ मानो वह उस पर अत्याचार कर रहा हो।

“बाबा ! आप साइकिल रोको, मैं उतरता हूँ।” अनिकेत ने कहा तो चालक उसकी ओर देखने लगा।

“मैं चला लूँगा, आप फिक्र मत करो।” चालक उसकी मनोस्थिति समझते हुए बोला।

“नहीं वो बात नहीं है, मुझे ठंड लग रही है। बैठे-बैठे और ज्यादा लग रही है तो मैं चलते हुए आता ही रिक्शा के साथ। आप चलाइये।” अनिकेत ने कहा और अपना बैग रखकर वह वाकई में उतर गया। न केवल उतर गया बल्कि वह चालक की ओर ही आ गया।

“सबसे बढ़िया आप एक काम कीजिये, आप उतर कर पीछे बैठ जाओ, साइकिल मुझे चलाने दीजिये।” अनिकेत ने मुसकुराते हुए कहा, मानव और विनय उसे बस देखते रहे। चालक के चेहरे पर दुविधा के भाव उभर आये।

“अरे नहीं नहीं साहब ! हम चला लेंगे। आप बैठ जाइए, आप भला क्यों रिक्शा चलाएंगे ?” वह नम्रता से बोला।

“ठीक है, आप चलाने नहीं देंगे तो मैं साथ चलता हूँ, आप इसपर आपत्ति मत कीजिये, मुझे ठंड लग रही है, साथ चलने पर गर्मी बनी रहेगी।” अनिकेत का मूड सृष्ट था, वह रिक्शा में न बैठने का मन बना चुका था। चालक ने भी हार मानकर सर हिला दिया। अब अनिकेत रिक्शा के साथ चलता रहा, मानव और विनय उसे इस प्रकार चलते देख हंसते रहे। बीच बीच में चढ़ाई पड़ने पर अनिकेत रिक्शा को पीछे से धक्का देता रहता जिससे चालक को चलाने में आसानी होती। इस प्रकार रिक्शा धकेलते धकियाते कुछ ही देर में स्टेशन पहुँच चुके थे। रिक्शा वाले को उन्होंने साठ रुपये दिए, हिसाब से दस ही रुपये प्रति व्यक्ति होते थे, किन्तु अनिकेत उससे भाव ताव करना नहीं चाहता था, यह उसकी असली मेहनत थी।

चालक ने वहां खड़े कई रिक्शा चालकों से बात की और अंत में डेढ़ सौ रुपये में एक चालक हर की पौड़ी के लिए तैयार हो गया। तीनों ने चालक का धन्यवाद अदा किया और उसके साथ एक तस्वीर भी खींची। अब तीनों ऑटो में थे, ऑटो में और कोई सवारी नहीं थी।

“सर ! आपको सस्ते में मिल गया क्योंकि मैं हर की पौड़ी का ही रहने वाला हूँ, और घर जा रहा हूँ, नहीं तो इस समय दो से तीन सौ से कम कोई मानने वाला नहीं था। हर की पौड़ी में कहां जाना है आपको ?” ड्राइवर ने प्रश्न किया।

“जी हमें जाना है पैराडाईज इन होटल, जो शांति भवन के पास कहीं है।” मानव ने मैप में देखकर कहा।

“जी ! शांति भवन नाम से कई आश्रम है, लेकिन मैं एक पैराडाइज होटल जानता हूँ जिसके समीप शांति भवन है, वही होगा, आप मैप में देखते रहियेगा।” ड्राइवर ने कहा। अब शहरी गलियाँ समाप्त हो चुकी थी और ऑटो हाईवे पर पूर्ण गति से बढ़ी जा रही थी। हाइवे सुनसान था और दूर दूर तक इमारतें दिखाई नहीं दे रही थी, यहाँ ठंड में भी वृद्धि हो गई थी, जैकेट, दस्ताने और कनटोप तक इस ठंड से बचा पाने में असमर्थ थे। तीनों कांप रहे थे। ठंडी हवाएं सीधे ऑटो में प्रवेश कर रही थी।

कुछ ही दूर चलने पर गंगा के घाट दिखाई देने लगे। उस पर बने पुल और घाटों की श्रृंखला अब दिखाई देने लगी थी, रात में हाइवे से हर की पौड़ी का दृश्य बेहद मनोरम लग रहा था, घाट वाकई में बेहद स्वच्छ और सुंदर दिखाई दे रहे थे, रात में घाटों पर जगमगाते बिजली के खम्बों से आते प्रकाश से गंगा का बहता प्रवाह मानो मोतियों की धारा सी प्रतीत हो रहा था। तीनों ने गंगा के उस प्रवाह को देख कर श्रद्धा से हाथ जोड़ लिए।

“हर हर गंगे ! हर हर गंगे।” विनय ने जयघोष किया, दोनों ने उसी स्वर में जयघोष दोहराया। कुछ और दूर चलने पर उन्होंने महादेव की कई फीट ऊँची खड़ी प्रतिमा पेड़ों के झुरमुट से मानो झांकती सी दिखाई थी। वे उस प्रतिमा को देखते ही रह गए, इस सुनसान और अँधेरी रात में उस प्रतिमा की छटा ही निराली थी, विशालकाय और वृहद घाटों की श्रृंखला और गंगा के प्रवाह के किनारे स्थित इस प्रतिमा का एक अलग ही आकर्षण प्रतीत हो रहा था। तीनों ने उस प्रतिमा को देखकर पुन: हाथ जोड़ लिए।

“हर हर महादेव।” इस बार तीनों एक साथ बोल उठे। अब वे हर की पौड़ी क्षेत्र में थे, मैप के अनुसार होटल अब दस मिनट की दूरी पर था। मैप के अनुसार निर्देश प्राप्त करते हुए ड्राइवर सीधे होटल के सामने ही जाकर रुका। विनय ने उसे पैसे देकर धन्यवाद कहकर विदा किया और वे होटल में प्रवेश कर गए।

काउन्टर पर विनय ने अपने फोन में की गई ऑनलाइन बुकिंग का ब्यौरा दिखाया, जिसके साथ ही पहचान-पत्र की एक-एक प्रति जमा करवाकर, उन्हें कमरे की चाभी दे दी गई। रात के साढ़े ग्यारह बज चुके थे और सम्पूर्ण हरिद्वार सुनसान हो चुका था, मार्ग में एक भी व्यक्ति या गाड़ी उन्हें मुश्किल से ही दिखी होगी और इस समय खाने के लिए कोई होटल भी उन्हें मार्ग में दिखाई नहीं दिया था।

विनय ने काउन्टर पर खड़े व्यक्ति से पूछ लिया।

“भाई ! खाने की व्यवस्था हो पायेगी ?”

“सर इस समय कुछ नहीं बनता, सर्दियां है, आठ बजे तक सब बंद हो जाता है। फिर भी मैं पूछना चाहूँगा अभी होटल का स्टाफ अपना खाना बना रहा है तो क्या उस खाने से आप काम चला सकते है ?” वह थोड़ा सकुचाते हुए बोला।

“जी बिलकुल! वो भी तो खाना ही खाते होंगे ना ?” विनय हंसते हुए बोला।

“जी सर ! लेकिन वेरायटी नहीं मिल पाएगी इस समय, बस दाल रोटी ही मिल पाएगी।” वह थोड़ा और शर्मा गया यह बोलते हुए।

“बस भाई ! यही खाना है हमें, जम्मू और दिल्ली के खाने ने पेट खराब कर दिया है, हमें दाल रोटी मिल जाए भला इससे बड़ा सुख और कोई क्या होगा।” मानव चहकते हुए बोला तो सब मुस्करा दिए।

“आप कमरे में पहुँचिये, खाना भिजवाते हैं।” कहकर उसने उन्हें चाभी सौंप दी, एक परिचारक उन्हें उनके कमरे तक छोड़ ने आया।

कमरा बेहद ठंडा था, केवल एक हॉल और किंग साइज बेड था, बाथरूम-वाशरूम अटेच्ड था। कमरे में पंखा और एसी दोनों थे लेकिन उनकी हिम्मत नहीं थी उसे छूने की। तीनों ने अपने सामान फर्श पर फेंके और वाशरूम में बारी बारी फ्रेश होकर उस बिस्तर पर अलथी पलथी मार का बैठ गए।

“तो कल की क्या योजना है ? आज गंगा आरती का प्लान तो फेल हो गया, एक दिन तो हमारा उस कमीने बस वाले के कारण बर्बाद हो गया।” अनिकेत ने मानव की ओर देखा।

“सुबह जल्दी उठते है और सीधे ऋषिकेश निकल जायेंगे, सामान यहीं रहने देते हैं, ऋषिकेश में हम चार बजे तक रुकेंगे और फिर हर हाल में पांच से साढ़े पांच बजे तक यहाँ आकर हर की पौड़ी पर आरती देखेंगे। एक ही दिन में सब निपटा लेंगे तो परसों हम फ्री हो जायेंगे अनिकेत भाई की स्पेशल और रहस्यमई ट्रिप के लिए।” अंतिम शब्द विनय ने हंसते

हुए कहे थे। उसी समय दरवाजे की बेल बजी और परिचारक अंदर आ गया, उसने गरमागरम दाल और रोटी परोसी। इस हाड कंपाने वाली ठंड में गर्म दाल की खुशबु से बेहतर और कोई चीज नहीं हो सकती थी। सुबह से भूखे तीनों उस पर झपट पड़े। खाना खाने के बाद अब नींद की बारी थी, पंखा किसी ने भी ऑन नहीं किया इसके बावजूद बिस्तर बर्फ की सिल्ली की मानिंद ठंडा ही प्रतीत हो रहा था, आधे पौने घंटे तक करवटें बदलने के पश्चात बिस्तर में थोड़ी गरमाहट उत्पन्न हुई और वे रजाई मुंह तक ओढ़े गहरी नींद में सो गए। दिन भर की यात्रा की थकान उन्हें और अधिक जागने की अनुमति दे ही नहीं सकती थी।

□□□

“ऋषिकेश जाने के लिए साधन कहाँ से मिलेंगे ?” विनय ने काउन्टर पर कमरे की चाभी देते हुए परिचारक से पूछा, तीनों में से केवल मानव के पास उसका ऑफिस बैगपैक था, जिसमें कुछ जरूरत की चीजें थी। जाहिर सी बात थी तीनों अभी चेक आउट नहीं कर रहे थे।

“जी, ये सामने जो सड़क है, वहां से सीधे चले जाइएगा, पन्द्रह मिनट लगेंगे आप ऑटो स्टैंड पर पहुँच जायेंगे। वहां से ऋषिकेश के लिए रेगुलर ऑटो वगैरह मिल जाती है।” परिचारक ने मुसकुराते हुए कहा और चाभी ड्रावर में रख दी।

“ठीक है, हम शाम तक वापस आ जायेंगे। कमरा साफ़ ही है किसी प्रकार की सर्विस की आवश्यकता नहीं होगी।” विनय ने कहा और तीनों होटल गेट से बाहर निकल आये। इस समय सुबह के आठ ही बज रहे थे, ऋषिकेश जाना था इसलिए वे जल्दी ही उठ कर तैयार हो गए थे, उन्हें पता था ऋषिकेश में पूरा दिन भी कम पड़ जाने वाला है। अब वे मुख्य सड़क पर थे जो आगे जाकर ऋषिकेश वाले हाईवे से जुड़ जाती थी, हवा में ठंडक थी सड़क पर बिलकुल भी चहल पहल नहीं थी, कभी कभार भूले भटके गेरुए वस्त्र पहने कोई साधू सन्यासी या एकाध विदेशी जरूर दिखाई दे जाता। हां बंदर इफरात में थे, होटल के सामने सड़क के दूसरे छोर पर बंदरों का एक पूरा परिवार टहल रहा था। उन्हें देखते ही तीनों को वैष्णो देवी वाले बंदरों की घटना याद आ गई।

“अबे नजरें मत मिलाना कोई, चुपचाप सिर झुकाए आगे बढ़ो।” मानव ने कहा और तेज कदमों से मुख्य सड़क पर आगे बढ़ने लगा। उसे लग रहा था मानो बंदर सब कुछ छोड़कर उसके पीछे ही पड़ने वाले है। बाकी दोनों के मन भी कम अधिक मात्रा में यही भय था, किन्तु यहाँ के बंदरों ने उनमें कोई विशेष रुचि नहीं दिखाई, वो अपने ही काम में व्यस्त रहे।

“भूख लगी है, पहले नाश्ता कर लेते है कहीं।” विनय ने सुझाव दिया।

“लेकिन यहाँ कोई होटल ही दिखाई नहीं दे रहा है और ना ही कोई स्ट्रीट फ़ूड का ठेला वगैरह, लगता नहीं कि ऋषिकेश पहुँचने से पहले कुछ खा पायेंगे।” अनिकेत की नजरें काफी देर से सड़क के दोनों कोनों का विश्लेषण कर रही थी, दोनों ओर कुछ आश्रम एवं होटल्स के अलावा और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, रेस्टोरेंट में खाने का मतलब अनावश्यक खर्चा और इस समय किसी भी प्रकार का अनावश्यक खर्च बजट पर असर डाल सकता था।

“यहाँ से ऋषिकेश उन्नीस या बीस किलोमीटर ही है, हम आधे पौने घंटे में पहुँच जायेंगे, तो पहले पहुँच जाते है फिर वही आराम से कुछ खायेंगे, अपना पहुंचना ज्यादा जरूरी है फिलहाल।” मानव ने समय की कमी को देखते हुए कहा। इसी बीच एकाध दो ऑटो उनकी बगल से गुजरी लेकिन कोई रुकी नहीं, तीनों हर ऑटो को देख कर ऋषिकेश-ऋषिकेश की आवाज लगाते लेकिन कोई रुक नहीं रहा था। काफी देर बाद जब वे हाइवे तक पहुँच चुके थे

तब उनके सामने से आते एक ऑटो ने उन्हें ऋषिकेश के लिए गुहार लगाते देखा तो रुक गया और ऑटो उनकी ओर मोड़ दी।

“चलिए सर।” ऑटो चालक ने कहा।

“कितना लगेगा ऋषिकेश का ?” विनय ने टटोला उसे पता था पचास से ज्यादा नहीं लगने वाला एक व्यक्ति का।

“पचास रुपये प्रति सवारी, लेकिन आगे और सवारियां बिठाऊंगा।” ड्राइवर ने कहा तो तीनों मान गए और ऑटो में लद गए , ऑटो आगे जाकर कुछ स्थानों पर रुक-रुक कर सवारियां भर्ती रही, खुशकिस्मती से सवारियां भी जल्दी मिल गई , अब ऑटो पूरी रफ्तार से ऋषिकेश की ओर बढ़ रहा था।

मार्ग बेहद सुंदर था और दोनों ओर हरियाली थी, एक ओर तो घना जंगल ही था, इस ठंड में सूर्य की गुनगुनी किरणों का अहसास उनके लिए सुकूनदेह था।

मार्ग में एक किनारे लगा बोर्ड देखकर मानव चौंक उठा।

“भाई यहाँ तो बोर्ड लगा हुआ है, सावधानी से गाड़ी चलाए और मार्ग में न उतरे बाघ वगैरह का खतरा है, यहाँ बाघ रहते हैं ?” मानव को सिहरन सी महसूस हुई।

“यह रास्ता राजाजी नैशनल पार्क की सीमा से सटा है भाई, यह बगल वाला जंगल उसी का हिस्सा है, अब जानवरों को तो सीमा से कोई लेना देना होता नहीं, तो वो कभी भी सड़क पर आ सकते है, इसलिए चेतावनी के लिए बोर्ड लगाये गए हैं।” विनय ने जानकारी प्रदान की।

तीनों दम साधे मार्ग के किनारे के जंगल की ओर देखने लगे, उन्हें उम्मीद थी कि शायद कोई जानवर दिख जाए, काफी देर तक देखते रहने किन्तु आधा मार्ग पार करने के पश्चात भी केवल एक्का दुक्का बंदरों के अलावा और कोई प्रजाति दिखाई नहीं दी, अलबत्ता कुछ बाइकर्स जंगल की ओर मुंह करके मूत्रविसर्जन करती अवश्य दिखाई दे रहे थे।

“अरे यार ये मूत्रविसर्जन वाली प्रजाति तो किसी भी स्थान पर मिल जाती है, इनको बाघ, चीते और तेंदुओं का भय नहीं होता क्या ?” मानव उनकी निर्भीकता या दुस्साहस पर हैरान होते हुए कहा।

“देख भाई, लम्बा रास्ता है, इमरजेंसी आ गई तो आदमी क्या करेगा भला ? ऐसे ही कोई भी जंगल के बीच जाकर थोड़े ही खड़ा हो जाएगा जब तक की अर्जेंसी ना हो, वैसे तो यह गलत बात है, आप को यदि पता है आप लम्बे मार्ग पर जा रहे है तो फ्रेश होकर ही निकलना चाहिए, जिससे यदि कुछ ना मिले तो भी कुछ देर तक संभाल सके। मैं तो हमेशा इसलिए निकलने के पहले फ्रेश हो लेता हूँ, कायदे से पानी ज्यादा पीना अच्छा जरूर होता है, लेकिन मैं लम्बे सफर पर अक्सर बिना मतलब और बिना प्यास के पानी पीने से बचता हूं।” अनिकेत ने कहा।

“चलो कोई नहीं, अब आधा घंटा बीत चुका है, शहरी गलियाँ, दुकानें और होटल्स दिखने लगे है, अब हम कुछ ही देर में ऋषिकेश में होंगे।” विनय ने मैप देखते हुए कहा।

कुछ ही देर में रास्ता संकरा हो गया और रास्ते के किनारे गहरे हरे रंग का गंगा का प्रवाह दिखाई देने लगा, वे गंगा के इस स्वरूप को पहली बार ही देख रहे थे, लेकिन वह दृश्य बार-बार झाड़ियों, पेड़ों और इमारतों के मध्य छुप सा जा रहा था, जिस कारण वे मन भर कर निहार भी नहीं पा रहे थे।

“अरे वो देखो, वो तो लक्ष्मण झूला लग रहा है।” मानव ख़ुशी से चीख पड़ा।

“भाई! यह राम झूला है, लक्ष्मण झूला अभी डेढ़ किलोमीटर दूर है यहाँ से।” एक सहयात्री ने मानव की ग़लतफ़हमी दूर करते हुए कहा।

राम झुला दूर से ही दिखाई पड़ रहा था, वह बेहद सुंदर और आकर्षक प्रतीत हो रहा था, वृहद और विशालकाय गंगा के गहरे हरे पानी के प्रवाह पर दो किनारों को जोड़ते झूलेनुमा उस पुल की सुन्दरता ने उन्हें मोह लिया था, यहाँ की हवा में अब गंगा के शीतल जल की ठंडक भी थी तो उसमें गंगा की लहरों से उत्पन्न होता मधुर संगीत तक स्पष्ट सुनाई दे रहा था। राम झूला के दूसरे छोर पर ही गुलाबी रंगों में बने आश्रमों की श्रृंखला सी दिखाई दे रही थी। जहाँ घाट बने हुए थे।

“मैं उस आश्रम को पहचान गया हूँ, वह परमार्थ आश्रम है, काफी बड़ा और सुंदर आश्रम है वह, देश विदेश से सैलानी यहाँ योग सीखने और ऋषिकेश में घूमने आते हैं, इसके घाट पर प्रसिद्ध गंगा आरती भी होती है, उस समय घाट पर पैर रखने तक की जगह नहीं होती।” विनय ने अब तक किये हुए अध्ययन के आधार पर जानकारी दी।

ऋषिकेश पहुँचते-पहुँचते तगड़ी भूख लग चुकी थी, ऑटो वाले का किराया देकर तीनों ने सामने दिखते एक छोटे से होटल में पराठों और दही का तगड़ा नाश्ता किया। पेट में गरमागरम आलू के पराठे जाते ही उन्हें चैन मिला। ठंड अत्यधिक थी ऐसे में चाय के बगैर काम चलना मुश्किल था तो चाय भी मंगवा ली गई।

“भाई विनय, हम पहुँच तो गए ऋषिकेश, अब बताओ आगे क्या करना है, कहाँ घूमना है ?” अनिकेत ने पराठा तोड़ते हुए कहा।

“सबसे पहले रिवर राफ्टिंग करना है, उसके बाद लक्ष्मण झूला, तेरह मंजिला शिव मन्दिर, मुनि की रेती पर टहलेंगे, राम झूला जायेंगे, तब तक शाम होने लगेगी इसलिए हम वापस हरिद्वार के लिए प्रस्थान करेंगे ताकि गंगा आरती में शामिल हो सके।” विनय ने अपनी योजना बताई।

“रिवर राफ्टिंग ?” दोनों के गले में निवाला एक साथ फंस गया।

“हाँ !” विनय मुस्कराया।

“भाई, हम सीधे सीधे घूम क्यों नहीं सकते ? मेरा मतलब ऋषिकेश में हो, यहाँ काफी चीजें है काफी जगहें है जहाँ घूमने के लिए सारा दिन कम पड़ जाए, वह सब करते है न। रिवर राफ्टिंग कौन करें भाई ? मुझे तो तैरना भी नहीं आता।” मानव ने कहा, वह रिवर राफ्टिंग की कल्पना मात्र से सिहर गया था।

“मुझे भी कहाँ स्वीमिंग आती है, लेकिन इतनी फिक्र मत करो, इसमें कुछ भी डरने वाली बात नहीं है। मजा आएगा, एक बार चल के तो देखो, और स्वीमिंग आये या ना आये लेकिन सेफ्टी का भरपूर ध्यान रखा जाता है। किसी को कुछ नहीं होगा।” विनय ने समझाने का प्रयास किया।

“आप तो ऐसे बोल रहे हो जैसे पता नहीं कितनी बार कर चुके हो।” अनिकेत चाय का घूंट लिया।

“मेरा भी पहली ही बार है, लेकिन मैं करना चाहता हूँ और आप दोनों भी साथ रहोगे।” विनय ने फैसला सुना दिया।

“भाई ठंड से कंपकंपी छूट रही है, ऐसे में पानी में क्यों कुदवा रहे हो ?” अनिकेत ने कहा, वह रिवर राफ्टिंग की कल्पना करके ही वह थोड़ा बेचैन हो रहा था।

“अरे कुछ नहीं, बहता पानी है। उतना ठंडा नहीं होगा जितना हम सोच रहे है, बस अब फटाफट नाश्ता समाप्त करो, मैं किसी एजेंसी से बात करता हूँ, इस समय हम लक्ष्मण झूला क्षेत्र में ही है, देख नहीं रहे हो हर जगह बोटिंग, कैम्पिंग, रिवर राफ्टिंग, जैसे एडवेंचर स्पोर्ट्स वालों की एजेंसीज़ भरी पड़ी है। हम सबसे पहले दिखने वाली एजेंसी में जाकर रेट पता करते है, वैसे जहां तक मुझे पता है पांच सौ रुपये प्रति व्यक्ति चार्ज लगता है सोलह किलोमीटर राफ्टिंग का।” विनय ने अपनी जानकारी बताई जो उसने आने से पहले ही जुटा ली थी।

“सोलह किलोमीटर की राफ्टिंग ?” दोनों फिर चौंके, उन्हें उम्मीद थी कि राफ्टिंग शायद दो या तीन किलोमीटर की होती होगी, लेकिन यह उनकी उम्मीद के विपरीत था।

“अरे इतना हैरान मत हो, बहाव के साथ पता भी नहीं चलता, कब सोलह किलोमीटर हो जायेंगे हम जान भी नहीं पायेंगे, बस बातें बंद और नाश्ता निपटाओ।” विनय ने अधिकार से कहा, अब ना करने का सवाल ही नहीं उठता था, अब जिसकी बारी थी उसके साथ हर टास्क करना ही था। यह एक अनकहा सा करार हो चुका था।

अनिकेत ने अनिश्चितता से मानव की ओर देखा, मानव का मन बिलकुल भी नहीं हो रहा था, लेकिन विनय इस समय बिलकुल भी समझने को तैयार नहीं था, अब उसका साथ तो देना ही था। दोनों बेमन ने सर हिला कर हां कह दिया। नाश्ता वगैरह निपटा कर विनय सीधे होटल से निकलते ही नाक की सीध में जो सबसे पहली एजेंसी दिखी वही जा पहुंचा। काउन्टर पर दो व्यक्ति बैठे हुए थे, कमरे में उत्तराखंड के विभिन्न हिस्सों की तस्वीरें एवं नक्शे लगे हुए थे, चार धाम यात्रा, पंचकेदार यात्रा, ट्रेकिंग, कैम्पिंग, रिवर राफ्टिंग इत्यादि हर प्रकार के स्पोर्ट्स के कैटलॉग्स और तस्वीरों के कोलाज से कमरा सजा हुआ था।

“भाई आप क्या चार्ज करते है रिवर राफ्टिंग का ?” विनय ने आते ही नमस्कार करके पहला प्रश्न यही किया, बाकी दोनों दीवारों पर लगी तस्वीरों को निहारने लगे। अनिकेत उन तस्वीरों को देखते हुए किसी ख़ास तस्वीर को देख कर एकदम से खुश हो गया और उस तस्वीर के नजदीक जा पहुंचा, मानव से उसकी आँखों की यह चमक छुपी नहीं रह सकी, वह समझ गया की अगली ट्रिप शायद इन्हीं तस्वीरों में से किसी एक जगह होनी है जो अनिकेत लेकर जायेगा। अनिकेत उसकी खोजी नजरों को पहचान गया और उसने फौरन दृष्टि किसी और तस्वीर पर स्थिर कर दी, मानव समझ ही नहीं पाया वह कौन सी तस्वीर देख कर प्रसन्न हुआ था। अभी वे खोये ही हुए थे कि विनय उनके सामने आ खड़ा हुआ, उसका चेहरा ख़ुशी से दमक रहा था।

“बात हो गई है, तीनों का एकमुश्त पन्द्रह सौ रुपये लगेंगे, राफ्टिंग पॉइंट यहाँ से सोलह किलोमीटर दूर है, ये अपनी गाड़ी से उस पॉइंट तक पहुंचाएंगे और वहां से हम राफ्टिंग करते हुए यहाँ पहुंचेंगे, लक्ष्मण झूला से कुछ दूर पहले और कोई कपड़े वगैरह चेंज करने हो तो कर सकते है, नहीं करने तो भी कोई बात नहीं।” विनय चहकते हुए कहा, वह खुद ही गाइड बना हुआ था।

“अरे हमारे मोबाइल वगैरह भीग जायेंगे, वह सब कहाँ रखेंगे ?” अनिकेत ने शंका व्यक्त की।

“राफ्ट पर ड्राई बैग मिलेगी, जिसमें सारी चीजें डाल सकते है जो भीगने से बचानी हो, उसमें पानी नहीं जायेगा, हम बेफिक्र होकर राफ्टिंग पॉइंट तक मोबाइल लेकर जा सकते है, किनारे पर फोटो वगैरह खिंच कर ड्राई बैग में रख देंगे। अब चलो पन्द्रह मिनट में हमारा बैच

निकलेगा, हमें यहाँ से पिक अप कर लेंगे।" विनय ने कहा और दीवारों पर लगे कैटलॉग्स को देखने लगा, मानव और अनिकेत को शंका हुई कि विनय कही एडवेंचर के चक्कर में कोई और @#यापा न कर बैठे, उनकी नजरें विनय की नजरों का पीछा कर रही थी कही वह कोई और आफत ना मोल ले ले।

विनय ने एक तस्वीर पर उँगली रखी और बोला..

"बंजी जम्पिंग भी करेंगे।"

मानव और अनिकेत ने एक-दूसरे की ओर देखा, उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था, रिवर राफ्टिंग के लिए तो फिर भी गिरते पड़ते तैयार हो चुके थे, लेकिन बंजी जम्पिंग ? उसके लिए कलेजा चाहिए था, जो उस समय केवल विनय में था। दोनों के हाथ पाँव फूलने लगे।

"चलो गाड़ी आ गई, आप बैठ जाइए, बाकी मेम्बर्स भी गाड़ी में ही है।" एजेंसी वाले ने उन्हें कहा तो वे गाड़ी की ओर चल दिए। गाड़ी में उनके अलाव पांच महिलाएं थी, पुरुषो में केवल वही तीन थे और एक उनका गाइड।

गाड़ी अब पतली गलियों और घुमावदार सड़कों से होते हुए राफ्टिंग पॉइंट की ओर बढ़ने लगी, तीनों की धड़कने अनायास ही बढ़ने लगी थी, मोड़ पर मुड़ते ही लक्ष्मण झूला और गंगा का प्रवाह दिखाई देने लगा, गाड़ी तेजी से रास्ते में बढ़ते जा रही थी, एक ओर पहाड़ तो दुसी ओर गंगा का वृहद और सुंदर प्रवाह, गंगा के दूसरी ओर पेड़ों का घना जंगल सा दिखाई दे रहा था, सम्पूर्ण वातावरण में मानो पहाड़ों की मिट्टी, बहते पानी, रेत और जंगल की सौंधी सी महक तैर रही थी।

कुछ देर चलने के पश्चात उनकी गाड़ी एक गली की ओर मुड़ गई, जो मुख्य सड़क से विपरीत दिशा में थी, वह रास्ता बेहद खतरनाक और कटीले ढलान वाला था, जिसमें गाड़ी को प्रवेश करते देख तीनों के साथ-साथ अन्य प्रवासियों का भी कलेजा मुंह तक आ गया। किन्तु ड्राइवर को मानो कोई फर्क ही नहीं पड़ता हो, वह उस सीधी चढ़ाई पर नीचे की ओर उतरता चला गया, गाड़ी उछलते कूदते एक संकरी सी गली में आकर रुकी। ड्राइवर, गाइड और उसका साथी वहां उतरे और एक छोटी सी इमारत की ओर बढ़ गए जहाँ दो-तीन अलग अलग रंगो की राफ्ट रखी हुई थी। उनमें से लाल वाली राफ्ट उन तीनों ने उठाई और गाड़ी की छत पर लाकर अच्छे से बाँध दिया। इसी के साथ आठ चप्पू और हेल्मेट्स के साथ लाइफ जैकेट्स भी गाड़ी में रखवा दिए गए। और फिर गाड़ी दुबारा स्टार्ट हुई, अबकी बार वे जहाँ से उतरे थे वही गाड़ी चढ़ानी थी, वह चढ़ाई एकदम खड़ी थी, कोई मनुष्य भी वहां से चढ़ने के बारे में दो बार सोचता, लेकिन ड्राइवर अलग ही मिट्टी का बना था, उसने सम्पूर्ण गति से गाड़ी आगे बढ़ाई और चढ़ाई पार कर गया। अनिकेत, विनय और मानव दिल थामे उसकी स्टंट बाजी देखते रहे।

"भाई ये तो रिवर राफ्टिंग के पहले ही स्टंट दिखा कर मार डालेगा।" अनिकेत को अब भी उसकी ड्राइविंग ओर विश्वास नहीं हो रहा था।

"अरे ये इनका रोज का काम होगा, इनके यहाँ की सड़कें भी तो ऐसी ही है। बस हमें समतल जगहों की आदत है इसलिए घबराहट हो रही है, फिक्र न करो वह अपने काम में उस्ताद है।" विनय ने कहा, हालांकि गाड़ी को सीधी खाईनुमा ढलान पर उतरते देख कर खुद उसकी भी सिट्टी पिट्टी गुम हो गई थी। मानव तो चुप ही बैठे रहा, वह राफ्ट को देखकर ही हलकान हुआ जा रहा था।

ऊँचे नीचे घुमावदार रास्तों से होते हुए गाड़ी अब अपने गन्तव्य स्थल की ओर बढ़ रही थी, अब गंगा का निर्मल प्रवाह स्पष्ट दिखाई देने लगा था, दूर से हरे रंग सा प्रतीत होता प्रवाह जैसे जैसे समीप आ रहा था उसकी रंगत गहरी नीली होती जा रही थी। गाड़ी ने मुख्य रास्ते से फिर एक मोड़ लिया और जंगल एवं पहाड़ के मध्य बने संकरे मार्ग पर आगे बढ़ चली, थोड़ा आगे जाकर वह संकरा मार्ग छोड़ कर गाड़ी उससे भी संकरे कच्चे मार्ग पर उतर गई, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वे किसी जंगल में प्रवेश कर रहे हो, मुख्य मार्ग पर ठंड अपेक्षाकृत कम थी, किन्तु जैसे-जैसे वे नदी के बहाव के समीप पहुँच रहे थे ठंड से सिहरन बढ़ती जा रही थी। आखिरकार गाड़ी नदी के रेतीले तट पर पहुंची और वहां बने एक पक्के निर्माण की ओर जाकर रुक गई। गाइड ने सभी को उतरने और जूते चप्पल वगैरह गाड़ी में ही रखने के निर्देश दिए।

तीनों उस सफ़ेद रेतीले तट पर नंगे पाँव उतरे, ठंडी और सफ़ेद रेत उनके पांवों में महसूस हो रही थी, नंगे पैर जमीन पर रखे मानो एक अरसा हो गया था, आज उन पैरों से ठंडी और मुलायम रेत स्पर्श पाकर उनके शरीर में हल्की सी झुरझुरी दौड़ गई थी, नदी के किनारे ढेरों पत्थर बिखरे पढ़े थे जो कभी पानी की जद में आकर अपना कटाव खोकर गोल मटोल से हो गए थे, पत्थर काफी थे किन्तु कोई भी पत्थर ऐसा नहीं था जहां नंगे पैर चलने पर चुभन महसूस हो, उन्होंने गंगा के उस अद्भुत प्रवाह को अपने एकदम सामने बहते देखा, नदी की लहरों का शोर चारों ओर गूंज रहा था, वे एकटक उस दृश्य को निहार रहे थे, अभी वे आगे बढ़ते इससे पहले ही गाइड ने सीटी बजाकर सबको रुकने का संकेत किया और आकर सबको लाइफ जैकेट्स कसकर पहनाई।

"गाइज ! ये लाइफ जैकेट है, जो आपको पानी में गिरने पर डूबने नहीं देगी, इसकी स्ट्रिप ऐसे टाईट करें और ध्यान रहे किसी की भी जैकेट ढीली ना हो, अगर ढीली रह गई तो पानी में जाते ही जैकेट सिर से होते हुए बाहर आ जायेगी।" उसने लगभग चीखते हुए कहा। उसकी बात सुनकर सबने सिर हिला दिया, गाइड को छोड़ उस दल में आठ सदस्य थे, जिनमें से तीन अनिकेत, मानव और विनय ही थे, बाकी पांच महिलाएं थी, अनिकेत और मानव ने पहली बार उन महिलाओं को देखा, उनमें केवल दो युवतियां थी और तीन लगभग ४० से ५० के मध्य की। उनकी उम्र और रिवर राफ्टिंग का जोश देखकर दोनों को ग्लानि हुई कि वे हट्टे कट्टे होकर भी किस तरह घबरा रहे है, लेकिन जब उन्होंने उनके चेहरे देखे तब उन्हें अहसास हुआ कि वे महिलायें उनसे भी ज्यादा घबराई हुई थी।

"यहाँ ध्यान दीजिये, सभी हेल्मेट्स पहनिए, हेलमेट को इन स्ट्रिप्स के जरिये टाईट कीजिये, आप सोचेंगे पानी में भला हेलमेट का क्या काम ? तो गाइज! हेल्मेट्स हमें पानी के बहाव के दौरान यदि किसी पत्थर से टकराते है तो उनसे सिर को बचाने के लिये है। इसलिए हेलमेट से कोई लापरवाही नहीं।" कहते हुए उसने खुद हेलमेट पहन कर दिखाया और बाकी सदस्यों को भी पहनाया जो थोड़े असमंजस थे या जिन्हें समझ में नहीं आ रहा था।

"चलिए अपना अपना पैडल उठा लीजिये, पैडल मतलब चप्पू। और ध्यान रहे कोई भी इसे चप्पू कहकर नहीं पुकारेगा, क्योंकि कमांड्स के दौरान पैडल शब्द ही प्रयुक्त होगा, इसलिए कोई कन्फ्यूज़न नहीं होना चाहिए, समझे ?" सिंगल पसली गाइड ऐसे दहाड़ा मानो वह कोई मिलिट्री का जनरल हो।

"यस सर !" प्रत्युत्तर में सभी इस प्रकार चीखे मानो वाकई वह सेना की कोई टुकड़ी हो और अपने अंतिम मिशन पर जा रही हो।

“नाउ, जैकेट्स चेक, हेलमेट चेक, पैडल लो और मूव।” उसने उँगली से तट की ओर संकेत किया जहां दल को बढ़ना था। मानव, अनिकेत और विनय की तिकड़ी आगे बढ़ी, गुलगुले ठंडे पत्थरों पर पानी की बौछारें पड़ रही थी जो उनके शरीर को भिगो रही थी, गाइड अपने सहायक के साथ राफ्ट लेकर आया और उसे नदी में एक पत्थर पर रस्सी के सहारे बाँध दिया। अब वे लगभग टखने तक पानी में खड़े थे, पानी उनकी उम्मीद से कही ज्यादा ठंडा निकला, पैर मानो सुन्न से हो गये और इसी बीच पानी की लहरे पत्थरों से टकराकर उन्हें भिगो जाती, जिससे रही सही कसर भी पूरी हो जाती। वहां पानी इतना साफ़ था कि नदी के भीतर पड़े पत्थर तक शीशे की भांति साफ़ दिखाई दे रहे थे, तीनों पानी की इस शुद्धता को देखकर विस्मित थे, बीच बीच में कोई लहर अचानक से चट्टान से टकराती जिससे सब के सब उस टकराव से निर्मित बौछारों में भीग जाते।

“ओके ! आप सभी अपने वॉलेट, मोबाइल और जो भी चीज है जिसे भीगने से बचाना चाहते है, वह इस ड्राइ बैग में डाल दे।” कहकर गाइड ने लाल रंग का प्लास्टिक का एक झोला उनकी ओर बढ़ा दिया, सभी सदस्यों ने बारी बारी से अपने मोबाइल और पर्स वगैरह उसमें डाल दिए, जिसे गाइड ने फौरन सील करके राफ्ट के एक कोने में सुरक्षित बाँध दिया।

“नाउ! अब मैं आपको कुछ इंस्ट्रक्शन्स दूंगा जिसे आप सबको ध्यान से सुनना है और उसी को फ़ॉलो करना है, क्योंकि राफ्ट आपको ही चलानी है।” गाइड ने कहा।

“क्या मतलब हमको चलानी है ? आप नहीं चलाओगे क्या ?” अनिकेत हक्का बक्का रह गया, यह उसके लिए वाकई भयावह था।

“नहीं ! मैं कुछ भी नहीं करने वाला, मैं बस निर्देश दूंगा और आपको उसके अनुसार राफ्ट को चलाना है और दिशा देनी है, मैं बस आपको चलाते हुए देखूंगा। यह आपका एडवेंचर है, इसलिए आप के ही हाथों में कमान होगी।” ड्राइवर ने साफ़ साफ़ कह दिया, रिवर राफ्टिंग के लिए उत्तेजित विनय को भी इस बात की बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी, वह ड्राइवर की बात सुनकर एकदम से सकते में आ गया। मानव और अनिकेत से उसे खा जाने वाली नजरों से देखा, वह खिसियानी हंसी हंस कर रह गया।

“अब ये मत बोलना कि तुम्हें इसके बारे में पहले ही पता था।” अनिकेत ने कुछ कहने जा रहे विनय को घुड़क दिया, विनय एकदम शांत हो गया, वह बिलकुल यही कहने वाला था।

“आप लोग यहाँ ध्यान दीजिये, बातें करने का समय गया।” गाइड के चीखते ही सबने उसकी ओर देखा।

“सबसे पहले आपको राफ्ट के बारे में जानकारी देता हूँ, आप सोच रहे होंगे कि इन लहरों पर और चट्टानों से लड़ते-भिड़ते यदि राफ्ट क्षतिग्रस्त हो गई तो क्या होगा ? तो निश्चिंत रहे, यह राफ्ट आठ हिस्सों में बनी है, जो एकदम अलग अलग है, एक भी हिस्सा यदि क्षतिग्रस्त होता है तो बाकी सात हिस्से सुरक्षित रहेंगे। दूसरी बात, आप सभी को अपना एक-एक पैर आपके सामने बने हुए हिस्से के बीच फंसाना है, और राफ्ट के किनारे वाले हिस्से पर बाहर की ओर बैठना है और एक बात ध्यान में रखिये, अगर कोई भी गिरता है तो बेफिक्र रहे, वो डूबेगा नहीं, लाइफ जैकेट उसे डूबने नहीं देगी। वो हड़बड़ाये नहीं, उसके नजदीक जो साथी बैठा रहेगा वो अपने इस पैडल को उलटा पकड़कर उसका अंतिम सिरा उसे पकड़ा देगा, उस सिरे को पकड़े रहना है। अगर आप पैडल की सीमा से दूर है तो राफ्ट से एक रस्सी बंधी हुई है, वह फेंक कर आपको खींच लिया जायेगा। कोई सवाल ?” गाइड गला फाड़ते हुए बोला।

मानव ने हाथ ऊपर किया, गाइड ने उसकी ओर देखा।

“बोलिए !”

“जी वह सब ठीक है, लेकिन नदी का बहाव तेज है, चप्पू… म…मेरा मतलब वो क्या बोले आप इसको ..?” मानव ने चप्पू उठाते हुए कहा।

“पैडल !” गाइड ने कड़क स्वर में कहा।

“हां, अगर गिरने वाला बंदा सीधे गिरकर पैडल या रस्सी की पकड़ में आये बगैर इस बहाव में बह गया तो ?” मानव के प्रश्न को सुनते ही दल के बाकी सदस्यों की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई, गाइड भी इस प्रश्न के लिए तैयार नहीं था, वह भी हड़बड़ा गया।

“मैं हूँ उसके लिए, आप ज्यादा फिक्र ना किया करो।” उसने मानव को ही घुड़क दिया।

“चलिए अब आगे आते है पैडल पर, ये पैडल है। इसके भी तीन हिस्से है, पहला जिससे आप पानी को धकेलेंगे जो सबसे निचला भाग है, दूसरा यह इसका मध्य भाग जो पानी धकेलने वाले भाग से थोड़ा ऊपर है, आपको इस हिस्से पर एक हाथ से पकड़ बनाये रखना है और तीसरा हिस्सा है यह टॉप वाला, जिसे आप ऊपर से दूसरे हाथ से पकड़ेंगे, जिससे मजबूत पकड़ बनी रहेगी। फिर आते है पैडल मारने पर, तो उसके लिए आपको अपनी बाजुओं का नहीं, बल्कि पूरे शरीर का इस्तेमाल करना है, पानी में पैडल मारते समय आपको कंधे से होकर पीठ तक को झुकाना है, और पूरी ताकत से पैडल मारना है। फिर आते है कमांड्स पर, तो जब मैं कहूँगा फॉरवर्ड तब पूरी ताकत से एक साथ आप पैडल को आगे की ओर से पानी में खींचते पीछे तक ले जायेंगे। और जब कहूँगा बैक फॉरवर्ड तब आपको पैडल उलटी दिशा में खींचना है। जब कहूँगा फ़ास्ट तब आपको एक जल्दी-जल्दी पैडल मारने है, जब कहूँगा स्टॉप तब आप पैडल को अपने पैरों पर रख लेंगे और राफ्ट को उसके हाल पर छोड़ देंगे। तो सबसे मजबूत वाले सदस्य आगे बैठेंगे।” गाइड के कहते ही सारी महिलाओं ने अनिकेत और विनय की ओर देखा।

दोनों की हालत पहले ही खराब थी और अब उन्हें सबसे आगे बैठना था, विनय जो खुद राफ्टिंग के लिए आया था वह भी अब फंसा हुआ महसूस कर रहा था, लेकिन अब और कोई रास्ता भी नहीं था, महिलायें बड़ी उम्मीद से उनकी ओर देख रही थी। उन्होंने चुपचाप सिर हिला दिया।

“क्या यह श्मशान है ?” मानव ने गाइड से पूछा। गाइड उसके इस प्रश्न पर अचकचा गया।

“मेरा कहने का मतलब है, जहाँ हमारी जिप्सी रुकी है उसके आगे जो छोटी सी खुली इमारत है, उसके बोर्ड पर अस्थिदहन केंद्र जैसा कुछ लिखा दिखाई दे रहा था। तो क्या हम जिस पॉइंट से राफ्टिंग कर रहे है वह बेसिकली एक श्मशान घाट है ?” मानव सहजता से बोल गया लेकिन उसकी इस सहजता से दल के बाकी सदस्यों की हालत पतली हो गई।

“नो मोर क्वेश्चन्स ! अब समय है अपने अपने स्थान पर बैठने का।” गाइड ने बात टाल दी और उन्हें राफ्ट में बैठने का संकेत किया, सभी गाइड द्वारा बताई गई पद्धति से बैठे, उसी समय उन्हें नदी में लहरों पर उछलती राफ्ट दिखी। मानव, अनिकेत और विनय उस राफ्ट को ही देख रहे थे, अचानक से आती विशालकाय लहर पर वह राफ्ट मानो एकदम से नाच उठी। घूमते हुए राफ्ट उस लहर की भीतर तक जा घुसी और वापस निकल आई।

यह दृश्य देखकर विनय का राफ्टिंग का पूरा जोश ठंडा पड़ गया।

“हे भगवान ! रक्षा करना।” विनय मन ही मन बुदबुदाया। अब गाइड ने राफ्ट की रस्सी खोल दी और खुद सबसे पीछे जाकर बैठ गया।

राफ्ट को गंगा की लहरों के हवाले कर दिया गया। नाव हिचकोले खाने लगी, गाइड ने चीख कर पैडल मारने का निर्देश दिया, इसी के साथ अनिकेत, मानव और विनय ने पूरी शक्ति से पैडल से पानी को पीछे धकेलना आरंभ कर दिया, अभी वे कुछ समझ पाते इससे पहले ही उनके सामने एक बड़ी सी लहर दिखाई दी, वे कुछ करते इससे पहले ही लहर सम्पूर्ण आवेग के साथ राफ्ट पर आ गिरी, उनकी राफ्ट लहर के भीतर तक प्रवेश करते हुए तीव्र गति से उछाल भरते हुए बाहर निकली, सब के सब इस रोमांच से चीख पड़े, लेकिन लहरों को उनकी चीखों से कोई फर्क नहीं पड़ना था वह उन्हें पूरी बेरहमी से नहलाती चली गई, इस बड़ी लहर के कारण सब के सब तरबतर हो गए, अब तक बौछारों से ही भीग रहे थे लेकिन अब सीधे पानी के फव्वारे के मध्य प्रवेश करके एक ही झटके में सभी सिर से पाँव तक पूर्णतया तरबतर हो गए थे, ठंड की तीव्र अनुभूति ने सभी के रोम रोम खड़े कर दिए।

“रुकना नहीं है, फॉरवर्ड, फॉरवर्ड।” गाइड चीखा, उसके चीखते ही सभी पूर्ण शक्ति से पानी धकेलने लगे, यह काम जितना सोचा था उतना सरल भी नहीं था, कंधे के जोड़ तक मानो खुल कर अलग हो जाने वाले से प्रतीत हो रहे थे, पानी अपनी तीव्र गति से बह रहा था, लहरें उन्हें भिगो रही थी, कभी वे लहरों के ऊपर सवार हो आगे बढ़ जाते तो कभी लहरें उनके ऊपर से उन्हें भिगोती हुई निकल जाती। राफ्ट भयंकर रूप से हिचकोले खाते हुए घूम रही थी, वह एक सीध में न जाते हुए चक्करघिन्नी सी घूमने लगी।

“अरे भाई राफ्ट घूम काहे रही है जगह पर ?” मानव हड़बड़ा कर बोला, उसे अपने सामने तेज बहाव और लहरें स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

“मेरा कंधा मानो उखड़ जाएगा इतनी ताकत से खेना पड़ रहा है, पीछे वाले लोग जोर लगा भी रहे है या नहीं ?” अनिकेत ने पीछे देखा, महिलायें और युवतियां इस तरह पैडल चला रही थी मानो पानी से मलाई छांट रही हो, अनिकेत समझ गया कि कुल मिला कर सारा भार विनय और अनिकेत पर ही है, क्योंकि वही दोनों नेतृत्व कर रहे थे, शीघ्र ही वे हांफने लगे, सांस फूलने लगी। गाइड ने आपसी तालमेल ना देखते हुए सीटी बजाई और चीख कर सबको रुकने का आदेश दिया, उसके आदेश देते ही बताये अनुसार सभी ने पैडल अपने अपने पैरो पर रख लिए और गाइड की ओर देखने लगे।

“क्या हो रहा है ये ? आपस में कोई तालमेल नहीं है, फॉरवर्ड कहने के बावजूद कोई आगे पैडल मार रहा है तो कोई पीछे, ऐसे में राफ्ट आगे नहीं बढ़ पाएगी, जगह पर घूमती रहेगी या किसी चट्टान से जा टकराएगी, सबको एक साथ हाथ चलाना है, एक दिशा में हाथ चलाना है, तभी नाव आगे बढ़ेगी, तभी दिशा बदलेगी। चलो चलो हाथ चलाना है अब और महिलायें, आप भी दल का हिस्सा है तो कृपया आप भी पूर्ण शक्ति से पैडल चलाइये, मैं देख रहा हूँ आपके पैडल चलाने में वो जोश और ताकत गायब है जो जरूरी है, इसलिए कम ऑन।” गाइड गला फाड़कर चीखा, हालांकि लहरों के शोर में उसकी आवाज इतनी असरदार प्रतीत नहीं हो रही थी।

नाव शांति से पानी पर तैर रही थी, कुछ ही सेकंड्स पैडल मारने के पश्चात सभी की सांस फूलने लगी थी, इसलिए उन्हें राफ्ट का इस तरह शांति से बहना अच्छा लग रहा था, वे अपनी साँसे संयत करने का प्रयास कर रहे थे। अनिकेत, मानव और विनय की नजरें एक-दूसरे से

मिली और गाइड के आदेश के साथ ही तीनों ने पूरी शक्ति से राफ्ट को धकेलना शुरू कर दिया। अनिकेत और विनय तो अपने पूरे कंधे के साथ ही राफ्ट से बाहर झुक कर पूरी शक्ति से पानी धकेल रहे थे, उनकी देखा देखी महिलाओं ने भी प्रयास आरंभ कर दिया। लहरें फिर बनने लगी और रबर की राफ्ट उन पर बुरी तरह उछलने लगी , हर उछाल के साथ सभी अपने पांवों की पकड़ पर दबाव और अधिक बढ़ा लेते जिससे वे गिरने से बचे रहें। कुछ ही मिनट लहरों से लड़ते-भिड़ते और पूरी शक्ति से पैडल मारते-मारते उनके शरीर का रोम रोम दुखने लगा, सम्पूर्ण शरीर मानो शक्ति हीन सा हो गया, अनिकेत ने गाइड की ओर इस उम्मीद में देखा कि शायद वह स्टॉप बोलकर रुकने का आदेश दे दे। किन्तु गाइड ने उसे पीछे देखते हुए पाकर डपट दिया।

“आगे ध्यान रखो, आगे। पूरी ताकत से हाथ चलाओ, कलाइयों का नहीं पूरे कंधे का प्रयोग करो, हमें यह हिस्सा पार करना है।” गाइड पूरी बेरहमी से चीखा, महिलाओं का तो मुंह एकदम रोने जैसा हो रहा था, उनके हाथ अब कांपने लगे थे, चप्पू अब चलाने की शक्ति अब चुक चुकी थी।

“ओके ! नाउ स्टॉप। सब रुक जाए, कुछ मिनट ऐसे ही बैठे रहो, आराम करो, सांस लो।” गाइड को अंततः उन पर दया आ ही गई , उसके कहने से पहले ही मानव ने पैडल उठा कर अपने पैरों पर रख भी लिया था। अब सब शांत था। कोई किसी से कुछ नहीं बोल रहा था, गाइड के हेलमेट पर कैमरा लगा हुआ था, महिलाओं के दल ने शायद फोटोग्राफी के लिए अलग चार्ज दिए थे, इसलिए वह उनके कहेनुसार उनकी तस्वीरें और वीडियो बनाने में व्यस्त हो गया। बाकी तीनों शांत बैठे रहें। आरंभ में जो डर था वह अब कही दूर जा चुका था, अब बस नीला स्वच्छ पानी, पहाड़, जंगल और शीतल हवा उन्हें आल्हादित कर रही थी, सम्पूर्ण नदी में अब केवल बहते पानी और जंगलों से आती विभिन्न पक्षियों का कलरव गूंज रहा था, जो एक अद्भुत संगीत की भांति प्रतीत हो रहा था।

तीनों इस समय शांत थे, उन्हें यह शांति अच्छी लग रही थी। राफ्ट बहाव के साथ धीमे धीमे आगे बढ़ रही थी।

“यह जम्पिंग पॉइंट है, अगर किसी को पानी में छलांग लगानी हो तो उतर सकता है, लेकिन राफ्ट से लगी यह रस्सी पकड़ कर रहे, फिक्र की कोई बात नहीं है।” गाइड ने शांत स्वर में कहा, उसके स्वर से तीनों का ध्यान भंग हुआ, अभी तो थोड़ा सुकून सा मिलने लगा था ऐसे में गाइड का टोकना उन्हें पसंद नहीं आया, किन्तु विवशता थी, उन्हें उसके निर्देशों पर ही चलना था। महिलाओं ने पानी में उतरने की इच्छा जताई और सावधानी से दो महिलाओं के साथ दोनों युवतियां उतर गई, बस एक अंदर ही बैठी रही। तीनों मित्र उन्हें उतरते हुए देखते रहे।

“यार राफ्ट में आगे बैठने के नाम पर सब के सब पीछे हट गई थी, चप्पू चलाने में बिलकुल भी मेहनत नहीं की, लेकिन जहाँ कूदने की बात आ गई फौरन कूद गई।” मानव बुदबुदाया।

“आप लोग भी कूदने वाले है ?” गाइड ने प्रश्न किया, तीनों की उस बहती नदी में कूदने की हिम्मत ही नहीं थी, लेकिन गाइड के प्रश्न पूछते ही दल की महिला सदस्यों ने उनकी ओर देखना आरंभ कर दिया।

“अरे यार ये महिलायें अपनी ओर देख रही है, नहीं कूदे तो इज्जत का फालूदा हो जायेगा।” मानव बोला।

"खुद कूदे तो कूदे ना, दूसरों को काहे इस तरह मजबूर करना ?" अनिकेत ने विनय की ओर देखा, विनय आशंकित अवश्य था किन्तु वह कूदने की तैयारी कर रहा था।

"एक बार सोच लो विनय।" अनिकेत ने उसकी बांह पकड़ते हुए कहा।

"सोच लिया भाई, तैरना मुझे भी नहीं आता, लेकिन अब नहीं तो कभी नहीं।" कहकर विनय राफ्ट से धीरे से पानी में कूद गया, कूदते ही वह एक बार नीचे गया और पुन: ऊपर आ गया, उसके कूदने के पश्चात बाकी दोनों के रुकने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। दोनों राफ्ट की रस्सी पकड़े पानी में उतर गए। उतरते ही ठंडे पानी का स्पर्श पाकर मानो उनके सीने से निचला सम्पूर्ण भाग सुन्न हो गया, कुछ देर ठंड में रहने के पश्चात जब शरीर पानी का थोड़ा आदि हुआ तब जाकर राहत मिली, लाइफ जैकेट्स के कारण वे पानी पर तैर रहे थे, इसके बावजूद उन्होंने राफ्ट की रस्सी को मजबूती से पकड़ रखा था।

"शांत रहिये, राफ्ट की रस्सी को आराम से पकड़े रहिए, घबराने की कोई जरूरत नहीं है। " गाइड ने निर्देश दिया। जिसके बाद तीनों ने रस्सी पर पकड़ हल्की बना ली, सीने के नीचे से सम्पूर्ण हिस्सा गहरे पानी में तैर रहा था, अब तक वे उस नीले पानी को दूर से ही देखते आ रहे थे, अब उसमें डुबकी लगा चुके थे। कुछ देर तक स्वाभाविक भय के कारण हाथ पैर थोड़ा छटपटाये और उसके पश्चात जब उन्हें अपने सुरक्षित होने का अहसास हुआ उनकी छटपटाहट अपने आप कम हो गई।

राफ्ट पानी के बहाव में धीमी गति से बह रही थी और वे भी उस के साथ अपने आप बहे जा रहे थे, यहाँ पानी काफी शांत था, अनिकेत दो चार डुबकियां लगा कर नाक मुंह में पानी भर चुका था, खांसते छींकते जब वह थोड़ा सामान्य हुआ तब उसने अपने आसपास देखा, दोनों ओर पहाड़ियां और हरियाली छाई हुई थी। उन के बीच गंगा का प्रवाह, इसके अलावा दूर दूर तक कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। विनय ने भी अपने अशांत मन को पानी के बहाव के साथ खुला छोड़ दिया । काफी दिनों बाद उसने खुद को इतना शांत और संयत अनुभव किया था। वही हाल मानव का भी था, वह उस पल के लिए कृति और उससे जुड़ी सारी उलझनों को भूल चुका था, उसे बस बहना था, गंगा की आगोश में वह स्वयं को भारहीन सा अनुभव कर रहा था।

अनिकेत गुमसुम सा था, शांत और विचार शून्य, उसके मन में उस समय कोई विचार कोई परेशानी अथवा कोई तनाव नहीं था, सदैव चलने वाले विचारों का चक्र इस समय मानो थम सा गया था, वह सब कुछ भूल चुका था, उसे अपने होने तक का अहसास ना रहा, शरीर भारहीन सा बह रहा था और मन बहाव के साथ हिचकोले खा रहा था।

"ओके! अब आप सब ऊपर आ सकते है, यहाँ से आगे रैपिड पॉइंट आयेगा, जहाँ लहरें बहुत ज्यादा है और वहां व्हर्लपूल अर्थात भंवर भी बनते है, हमें उस पॉइंट से गुजरना है। यह समय आपकी सम्पूर्ण शक्ति का इम्तिहान होगा, याद रखिये इस पॉइंट पर आप सबको अपनी पूरी ताकत का इस्तेमाल करना है, टीम वर्क में कोई लापरवाही नहीं, सब साथ होंगे तो ही हम इसे पार कर पायेंगे।" कहकर वह एक-एक करके सबको राफ्ट में खींचने लगा। कुछ ही देर में सभी राफ्ट में थे।

"तो कैसा रहा अनुभव गंगा की लहरों में डूबने का।" गाइड अपने चिरपरिचित अंदाज में बोला।

"सुपर्ब !!" महिलाओं का दल हर्षातिरेक में चीखा, लेकिन अनिकेत, मानव और विनय बस मुस्करा दिए, उनके पास अपने अनुभव को व्यक्त करने के लिये शब्द ही नहीं थे। अब

राफ्ट रैपिड पॉइंट की ओर बढ़ने लगी, यहाँ बड़ी चट्टानों के कारण अवरोध से बने हुए थे जिससे पानी टकराकर प्रचंड लहरों एवं भवरों का स्वरुप ले रहा था।

उनकी राफ्ट कुछ ही क्षणों में लहरों के उस तूफ़ान से टकराने वाली थी, सब अपने अपने स्थान पर पूरी तैयारी के साथ आ डटे, विनय और अनिकेत सबसे आगे बैठे रहे, दिशा मोड़ने का सारा दारोमदार उन्हीं के कंधों पर था। बस अब गाइड के निर्देश की प्रतीक्षा थी, नीले पानी से बनती लहरों के टकराने से उठती दुधिया बौछारों को देखकर उनके हृदय की धड़कने तेज हो गई, इस समय उनका शरीर भय से कांपने के बजाय एक अजीब से रोमांच को महसूस कर रहा था, अपने भीतर एक झुरझुरी को उन्होंने स्पष्ट महसूस किया, तीनों ने अपनी मांसपेशियों की सम्पूर्ण शक्ति एकत्रित की, भयंकर रूप से उफनती लहरें अब सामने थी, उनकी राफ्ट ने पहले ही उछलना आरंभ कर दिया। लहरों का भयंकर शोर उनके हृदय के भीतर तक सुनाई दे रहा था, पानी कि बौछारों एवं लहरों के टकराने के शोर में और कुछ भी दिखाई नहीं डे रहा था।

“फॉरवर्ड! फ़ास्ट फास्ट फास्ट !” गाइड चीखा, उसके चीखते ही विनय और मानव ने अपने आधे शरीर को राफ्ट के अगले हिस्से में लहरों के समीप झुका दिया, इतने समीप कि लहरें उनके कंधों को भिगोती चली गई, पूरे कंधे, बाहों और पीठ की शक्ति को एकत्रित करके उन्हें पैडल पानी में डाल कर खींचना आरंभ कर दिया। नाव लहरों पर कूदती चली गई, लहरें कई दिशाओं से बन रही थी, मानव अपनी सम्पूर्ण शक्ति से पैडल मार रहा था किन्तु उसे महसूस हो रहा था कि उसके हाथ दर्द करने लगे है, किन्तु यह समय रुकने का हरगिज नहीं था, लहरें पूरी शक्ति से उफनती हुई राफ्ट को कभी उछालती तो कभी उन्हें ऊपर से भिगो कर चली जाती, वे लगातार पानी की मोटी बौछारों से नहा रहे थे, कभी किसी लहर को चीरती हुई राफ्ट आगे बढ़ती, तो कभी अचानक से कई फीट तक लहरों पर जा कर पुन: नीचे आ जाती, सभी ने अपने पैरों से मजबूती से स्वयं को राफ्ट में फंसा रखा था, इसके बावजूद स्वयं को गिरने से बचाना अपने आप में एक चुनौती थी। रह रह कर लहरों के थपेड़े उन्हें और उनकी राफ्ट को बुरी तरह झिंझोड़ रहे थे।

इस समय अपने स्थान पर केवल जमे रहने के लिए उनकी शक्ति का एक-एक कतरा प्रयुक्त हो रहा था, आगे एक भंवर सा उत्पन्न हो रहा था, पानी वहां दुधिया लहरों का स्वरुप लिए घूमता सा प्रतीत हो रहा था। अनिकेत और विनय चूंकि सबसे आगे थे इसलिए उन्हें स्वाभाविक रूप से सबसे अधिक बल का प्रयोग करना पड़ रहा था, थकान और दर्द के कारण वे हांफ रहे थे, कंधों के जोड़ से लेकर पीठ और कमर तक में दर्द महसूस हो रहा था, ऐसे में अपने सामने लहरों से बने उस भंवर को देखकर उनकी साँसे ही रुक गई।

लहरों का शोर प्रचंड था, उन्हें उसके अलावा कुछ भी बड़ी मुश्किल से सुनाई दे रहा था। अनिकेत ने भंवर की जगह पर एक पतला सा प्रवाह देखा जहां बहाव अपेक्षाकृत शांत था, उसने विनय को चीखते हुए निर्देश दिया।

“विनय दाहिनी ओर, दाहिनी ओर मारो पैडल, लगातार, लगातार बिना रुके मारो।” अनिकेत चीखा और खुद उसने पैडल को पूरी शक्ति से पानी के भीतर धंसा कर दाहिनी ओर पानी को धकेलना आरंभ कर दिया, विनय ने भी उसका अनुसरण किया। वे लगातार पूरी शक्ति से निरंतर हाथ चला रहे थे, किसी भी हाल में उन्हें उस भंवर वाले क्षेत्र से बचकर निकलना था, बाकी सदस्य भी पूर्ण शक्ति के साथ पैडल मार रहे थे लेकिन सारा दारोमदार केवल अनिकेत मानव और विनय पर ही टिका हुआ था, वे ही थे जो थके होने के बावजूद

निरंतर बिना रुके पैडल चला रहे थे, बाकी सदस्य जब तक एक पैडल घुमाते तब तक वे तीनों चार-पांच पैडल मार चुके होते थे।

अनिकेत पुरे जोश में चीखते हुए पैडल मारता रहा, विनय और मानव भी उसी जोशो खरोश में चीख चिल्ला रहे थे, इस समय उनके मन में भय का रत्ती मात्र भी अंश नहीं दिखाई दे रहा था, वे चीखते फिर पैडल मारते, किसी लहर से उछलते तो फिर चीखते, हर्ष और रोमांच से उनका रोम रोम कांप रहा था। गाइड भी अपने हाथ में पैडल थामे पूर्णतया तैयार था, वह किसी भी आपात स्थिति में राफ्ट का नियंत्रण अपने हाथों में लेने के लिए लगभग तैयार था, गाइड भी चीख चिल्लाकर लगातार उत्साह बनाने का प्रयास कर रहा था, निरंतर लहरों के मध्य उछलते भीगते, तैरते, वे काफी देर से भीग रहे थे, किन्तु इस ठंडे पानी के बावजूद लगातार पैडल मारने से उन्हें ठंड बिलकुल भी महसूस नहीं हो रही थी।

आखिरकार अनिकेत और विनय ने भंवर की लहरों को बचाकर राफ्ट को उस पतली धार की ओर मोड़ ही दिया जहां से पुन: भंवर में जाने का जोखिम हरगिज नहीं था। गाइड ने भी पीछे से पैडल चलाकर दिशा मोड़ने में सहयोग दिया, अनिकेत और विनय बेखयाली में पैडल मारते जा रहे थे, उन्हें जरा भी ध्यान नहीं था कि अब वे रैपिड सेक्शन से बाहर आ चुके थे। गाइड के निर्देश तक वे सुन नहीं पाए, बाकी सदस्यों ने स्टॉप का निर्देश सुनकर पैडल अपने पैरों पर रख दिए, लेकिन दोनों निरंतर चलाए जा रहे थे, मानव ने आखिरकार अपने आगे बैठे अनिकेत की पीठ पर धौल जमा दिया।

“अरे बस करो भाई, राफ्ट को हरिद्वार पहुंचा कर ही रुकोगे क्या ?” मानव हांफ रहा था, धड़कने चढ़ी हुई थी फिर भी हंसते हुए बोला।

तब अनिकेत और विनय ने अपने पैडल रोके और पैरों पर रख लिए, उन्होंने पीछे देखा तो पूरा दल उनपर हंस रहा था, वो खुद भी अपनी हंसी नहीं रोक पा रहे थे, थकान इतनी ज्यादा हावी थी कि ठीक से हंसा भी नहीं जा रहा था, अनिकेत तो राफ्ट में ही लोट गया और यही विनय ने भी किया, उनका शरीर दर्द तो कर रहा था लेकिन उन्हें हंसी भी आ रही थी, मानव की भी हंसी नहीं रुक रही थी। तीनों जी खोल कर पागलों कि तरह पुरे मन से हंस रहे थे। राफ्ट अब शांत पानी में तैर रही थी, गुनगुनी धूप सीधी उनके ऊपर पड़ रही थी, सम्पूर्ण वातावरण शांत था, लहरों का शोर भी नहीं सुनाई दे रहा था, महिलायें फिर से फोटोग्राफी में व्यस्त हो गई, और तीनों खुद को सम्भालने के बावजूद अपनी हंसी को रोक नहीं पा रहे थे, जब वे थोड़े संयत हुए तब पुन: राफ्ट में अपने स्थान पर जा बैठे। अब वे एकदम से शांत थे, गहरी गहरी सांसे ले रहे थे। अब ठंड से सिहरन होने लगी थी किन्तु गुनगुनी धूप के कारण राहत मिल रही थी, धूप की किरणें नदी के स्वच्छ और नीले पानी मोतियों की भांति चमचमा रही थी। वे धूप छाँव और पानी का खेल इत्मीनान से देख रहे थे।

“तो गाइज अब फिर से आप यहाँ पानी में कूद सकते है, राफ्ट को पकड़े रहें और जिसे थोड़ा दूर तक जाना है वह राफ्ट की रस्सी पकड़ कर जा सकता है, तो कौन कौन पानी में उतरने वाला है ..” गाइड की बात अभी पूरी भी नहीं हुई थी कि तीनों फौरन पानी में उतर गए, बाकी सदस्य उन्हें इस प्रकार उतरता देख चौंक ही गए।

पानी में तैरता शरीर एकदम हल्का सा प्रतीत हो रहा था, भारहीन शरीर में थकान और दर्द मानो एकदम से गायब हो गया था। वे आँखें मूंदे, पानी में डुबकियाँ लगाते हुए राफ्ट के साथ बहाव में बहते आगे बढ़ते रहे।

“गाइज, अब आप ऊपर आ सकते है, अब हम जम्पिंग पॉइंट की ओर बढ़ रहे है, हमें राफ्टिंग करते हुए काफी समय हो गया है, जम्पिंग पॉइंट पर खाने पीने की व्यवस्था है, किसी को यदि चाय नाश्ता वगैरह करना हो तो वह वहां कर सकता है, दूसरी बात, वहां से आप जम्प कर सकते है, पच्चीस फीट ऊँची चट्टान से सीधे पानी में कूद सकते है, तो अब हम वही बढ़ रहे है, कौन कौन कूदेगा ?” गाइड ने सन्नाटे को भंग करते हुए कहा। महिलाओं के दल से दोनों युवतियों ने झट से हाथ ऊपर उठा दिया, विनय की इच्छा थी लेकिन वह पहले जम्पिंग पॉइंट देखना चाहता था। कुछ ही देर राफ्ट किनारे स्थित चट्टानों की ओर बढ़ी, गाइड ने नीचे उतर कर राफ्ट की रस्सी को एक चट्टान में फंसा दिया, उसी चट्टान के पास छोटी छोटी दो एक टपरिया बनी हुई थी, जहाँ चाय,नू डल्स, बिस्किट जैसा छोटा मोटा नाश्ता वगैरह मिल रहा था। राफ्टिंग करने वाले काफी सैलानी वहाँ नाश्ता वगैरह कर रहे थे। गाइड दोनों युवतियों को लेकर सबसे ऊँची चट्टान की ओर बढ़ा, युवतियां जो कुछ देर तक साहस से परिपूर्ण लग रही थी, चट्टान के ऊपर पहुँचने के बाद ही कांपने लगी। एक ने तो हाथ खड़े कर दिए कि उससे नहीं हो पायेगा, दूसरी काफी हिम्मत के बाद और अपने साथियों के प्रोत्साहन के बाद कूदी। पानी में थोड़ा भीतर तक जाकर फिर वह ऊपर आई, कुछ देर तैरते रहने के पश्चात गाइड ने उसे राफ्ट की ओर बढ़ने का निर्देश दिया, राफ्ट के पास पहुँचने के बाद विनय ने ही उसका हाथ थाम कर उसे राफ्ट में बिठा दिया।

“तो अब हम चलें ?” विनय ने मानव और अनिकेत की ओर देखकर कहा। अब इतना जोखिम लेने के बाद उन्हें यह ज्यादा कठिनाई वाला कार्य लग भी नहीं रहा था, किन्तु किसी को भी तैरना नहीं आने के कारण स्वाभाविक भय अवश्य था।

“हम डूबेंगे तो नहीं, लाइफ जैकेट्स है हमारे पास। तो एक बार कोशिश करके देखते है।” अनिकेत ने सहमति दे दी।

“मैं भी साथ हूँ, लेकिन एक शर्त है।” मानव ने कहा, दोनों प्रश्नसूचक नजरों से उसकी ओर देखा।

“हम तीनों साथ जम्प करेंगे, बजाय एक-एक करके। इससे थोड़ी हिम्मत बनी रहेगी।” मानव ने कहा, दोनों उसके सुझाव पर एकमत से सहमत नजर आये। उन्होंने चट्टान पर खड़े गाइड को इशारे से तीनों के एक साथ कूदने के लिए कहा, थोड़ा बहुत ना नुकुर करने के पश्चात वह मान गया। तीनों कुछ ही देर में पत्थरों से होते हुए चट्टान के शीर्ष पर खड़े थे, कहने को तो चट्टान की उंचाई गाइड ने पच्चीस फीट बताई थी, किन्तु शीर्ष से चट्टान की उंचाई किसी पहाड़ की भांति प्रतीत हो रही थी, नीचे थमा हुआ गंगा का साफ़ पानी भी गहरा होने का आभास दे रहा था। ऊपर से नीचे देखने के पश्चात तीनों एक बार तो कांप ही गए।

“वैसे हम यहाँ से तीन लोगों को इजाजत नहीं देते लेकिन आप सबकी स्पेशल रिक्वेस्ट के कारण कर रहा हूँ, पानी में हाथ पैर हिलाते हुए कोई नहीं कूदेगा, कूदते समय थोड़ा आगे जाकर कूदना है, दोनों हाथों को एक-दूसरे से बाँधकर कंधों को पकड़ लेना है और सीधे एक सिद्ध में पैरों को चिपका कर कूदना है, जिससे आप पानी पर टकराने की बजाय पानी के भीतर प्रवेश कर जायेंगे और लाइफ जैकेट आपको पुन: सतह पर खिंच लेगा। घबराइये नहीं बस कर जाइए, बाकी सम्भालने के लिए मैं हूँ। कोई घबराएगा नहीं, जो जहाँ है वही रहेगा, यहाँ पानी ठहरा हुआ है तो कोई कही नहीं बहेगा और हां कूदने से पहले एक गहरी सांस भरनी है।” गाइड ने आखिरी शब्द मानव की ओर देखकर कहे, मानव खिसियानी हंसी हंस कर रह गया।

उसके बताए निर्देशानुसार तीनों किनारे जाकर खड़े हो गए, उन्होंने हाथों को विपरीत दिशा में एक-दूसरे से सटाकर कंधों को पकड़ लिया।

“मेरे तीन कहते ही कूदना है।” गाइड उनके पीछे से चीखा, तीनों ने एक नजर राफ्ट में मौजूद महिलाओं को देखा, उनकी नजरें अपने ऊपर ही स्थिर देखकर उन्होंने अपने चेहरे के भाव परिवर्तित करके जबरदस्ती की मुस्कुराहट का प्रदर्शन किया, मानो उन्हें इसमें काफी मजा आ रहा हो।

“एक।” गिनती आरंभ हो गई।

“कहने को कह दिया भाई, लेकिन यहाँ आकर लग रहा है कि हां कहकर गलती कर दी। अब भी समय है वापस चलते है।” मानव उस उंचाई और नीचे बहती नदी को देखकर ही कांप रहा था।

“दो..”

“अब वापस भी नहीं जा सकते, सबकी सब यही देख रही हैं, इज्जत का पंचनामा हो जायेगा अगर वापस गए तो। इससे बढ़िया यही रहेगा कि माँ गंगा का नाम लो और कूद पड़ो बस।” अनिकेत ने कहा और गहरी सांस ली।

“तीन..”

“हर हर..गंगे!” विनय और अनिकेत चीखते हुए कूद पड़े, मानव कुछ कहने ही वाला था लेकिन उनके कूदते ही वह भी हड़बड़ी में कूद पड़ा।

“हर हर..गडब..” मानव का जयकारा पूर्ण होने से पहले ही वह तीव्रता से नीचे गिरते हुए गंगा की सतह को चीरकर पानी के भीतर समा गया, नाक मुंह में पानी जाता हुआ स्पष्ट महसूस हुआ। एक क्षण के भी सौंवे हिस्से में वे ऊँची चट्टान से सीधे नदी के गहरे पानी के बीच पहुँच चुके थे, तीनों हड़बड़ा से गए, अचानक से खुद को गहरे पानी की भीतर देखना उनके लिए पहला ही अनुभव था। उनकी आँखें तक खुली हुई थी, पानी आश्चर्यजनक रुप से स्वच्छ था, तीनों एक-दूसरे को स्पष्ट देख सकते थे।

पानी के भीतर उन्हें एक-दूसरे के अलावा और कोई चीज दिखाई नहीं दे रही थी। हां किनारे स्थिर चट्टानों के निचले हिस्से अस्पष्ट से दिखाई दे रहे थे, गहरी खिंची हुई सांस के रूप में जो हवा फेफड़े में भरी हुई थी, अब वह खत्म सी होने लगी, तीनों एक दूसरे की ओर देखकर मुसकुराए, पहले वे घबराए हुए से थे लेकिन पानी के भीतर एक-दूसरे पर नजर पड़ते ही उनकी घबराहट समाप्त सी हो गई। इसी पल लाइफ जैकेट के दबाव से वे एक झटके में सतह पर खिंच गए। सतह पर आते ही उन्होंने एक लम्बी और गहरी सांस खिंची, एक क्षण के आसपास ही वे पानी के भीतर रहे थे, बाहर सिर निकलते ही अपने आप ही उन्होंने मुंह खोलकर नाक मुंह से भरपूर सांस ली। अब वे लाइफ जैकेट्स के सहारे ही पानी पर तैर रहे थे, नाक मुंह में पानी जाने के कारण तीनों खांस रहे थे। गाइड राफ्ट में बैठ कर उनकी ओर बढ़ा और एक-एक करके तीनों को राफ्ट में खिंच लिया। तीनों आगे वाले हिस्से में जाकर चुपचाप बैठ गए।

“अब आगे पानी शांत है, हमारा एंडिंग पॉइंट आ रहा है तो आप रिलैक्स हो कर बैठ सकते है।” गाइड ने कहा।

तीनों चुपचाप बैठे रहे, राफ्ट पहाड़ों और जंगलों की छाँव से निकल कर अब धूप वाले हिस्से में आ चुकी थी, नदी के दो छोरों को बांधता लक्ष्मण झूला अब स्पष्ट दिखाई देने लगा था। साफ़ स्वच्छ सफ़ेद रेतीले तट, बहता हुआ स्वच्छ और निर्मल गंगा का प्रवाह, जिसमें

सूर्य की झिलमिल किरणों से उत्पन्न होती चमक यूँ प्रतीत हो रही थी मानो असंख्य तारे माँ गंगा के आंचल में झिलमिला रहे हो। वह उनकी कल्पना से भी अधिक सुंदर दृश्य था, उनके पास न शब्द थे और ना भाव जिससे वे उस सुन्दरता को व्यक्त कर सके, न जाने क्या हुआ कि अनिकेत की आँखों से आंसू बह निकले, किन्तु भीगे होने के कारण किसी को दिखाई नहीं दिए, भीगे हुए तो मानव और विनय भी थे किन्तु उनकी आँखों की नमी इस पानी के कारण तो हरगिज नहीं थी।

अंतत: राफ्ट किनारे आ लगी। किनारे आने के पश्चात ड्राई बैग से अपना सारा सामान निकाल कर याद के लिए उन्होंने तट पर और गंगा के संग अनेक तस्वीरें खिंचवाई, अब बारह बजने को थे, उन्हें होटल पहुंचना था और खाना भी खाना था, दो सवा दो घंटे की राफ्टिंग के बाद उन्हें बेहद जबरदस्त भूख लगी हुई थी। गाइड की जिप्सी किनारे ही खड़ी थी जिसे शायद उसके सहायक ने वहां लाकर खड़ी की थी। राफ्ट फिर से जिप्सी के ऊपर लाद कर वे पुन: बुकिंग ऑफिस चल पड़ी। इस बार पन्द्रह मिनट में ही वे ऑफिस पहुँच चुके थे, और वहां पहुँच कर सीधे अपने होटल के कमरे में जाकर कपड़े वगैरह बदल कर ऋषिकेश की बाकी जगहों पर घूमने के लिए तैयार हो गए।

“सबसे पहले किसी होटल में कुछ खाते है, लक्ष्मण झूला का रास्ता अपने होटल की पिछली गली से ही जाता है तो हम वही चलते है, इसी बीच कही रुक कर खा पी लेंगे। हमारे पास ज्यादा समय नहीं बचा है, लक्ष्मण झूला वगैरह देखकर हम सीधे हरिद्वार की ओर प्रस्थान करेंगे ताकि समय पर गंगा आरती देख सके।” मानव ने योजना का अगला हिस्सा बताया, जिससे दोनों सहमत थे।

“अच्छा एक प्रश्न है मन में, रिवर राफ्टिंग करते समय यदि वाकई तेज बहाव में कोई गिर कर बह गया, या चट्टान से टकरा गया तो ?” मानव के मन में अब तक प्रश्न कुलबुला रहे थे।

“वैसे इस तरह के एडवेंचर स्पोर्ट्स के लिए पहले एक डिक्लेरेशन फॉर्म पर दस्तखत करवा लिए जाते है, जिसके अनुसार कुछ भी होने पर जिम्मेदारी केवल हमारी होती है, हम सब कुछ जानने समझने के पश्चात अपने जोखिम पर यह काम कर रहे है जिसमें कुछ हो जाने पर एजेंसी वालों की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।” अनिकेत ने अनुमान लगाते हुए कहा।

“भगवान का शुक्र है हमने ऐसे किसी कागज पर दस्तखत नहीं किये।” मानव ने कहा और अटक गया, उसे कुछ याद आया।

“विनय भाई, आपने एक पेपर पर दस्तखत किया था, वह क्या था ? पढ़े थे क्या उसे ?” मानव को कुछ याद आया।

“नहीं ! मैंने बस दस्तखत कर दिए थे।” विनय ने खिसियाते हुए सर नीचे कर लिया। अनिकेत और मानव तीखी नजरों से उसे घूरते रहे, वह नि:संदेह वही घोषणापत्र था जिसे पढ़े विनय ने पढ़ना भी आवश्यक नहीं समझा और दस्तखत कर दिए थे।

“अरे चलो चलो, भूख लग रही है।” कहकर विनय ने बात टालने का प्रयास किया। वे होटल से अब मुख्य सड़क पर आ चुके थे, उनके होटल के पीछे ही एक सीधा रास्ता जाता था, कुछ लोगों से पूछताछ करने के पश्चात वे उसी मार्ग पर चल दिए। वह सड़क लक्ष्मण झूले की ओर ही जाती थी। वह एक व्यस्त मार्ग था, जो मुख्यत: एक बाजार था, जहाँ कपड़ों से लेकर हैंडीक्राफ्ट्स तक की ढेर सारी दुकानें थी, इस समय दोपहर होने के बावजूद हवा में ठंडक थी, मार्ग देसी विदेशी सैलानियों से भरा पड़ा था।

मानव विदेशी सैलानियों को भारतीय कपड़ों में देखकर थोड़ा अचंभित सा था।

“भाई, ये विदेशियों को क्या चुल्ल मची रहती है, जब भी भारत में किसी स्थल पर आयेंगे तब भारतीय कपड़े पहनेंगे, ॐ या जय श्री राम वाले भगवे कुर्ते, शर्ट इत्यादि पहनते है, गले में रुद्राक्ष, माथे पर तिलक और हाथ में कलावा तक बाँध लेते है बिना किसी आपत्ति के, क्या जरूरत है इसकी ?” मानव ने प्रश्न किया।

“ अनेक कारण है भाई , उन्हें यह सब ‘कूल’ लगता है, इससे वो थोड़ा अलग महसूस करते हैं, वे माहौल में घुलने-मिलने का प्रयास करते हैं और वो भारतीय संस्कृति को समझने का प्रयास भी करते हैं इसलिए भी वैसा भेस बनाते हैं, मुख्य बात, अधिकतर धार्मिक जगहों से जुड़ी मर्यादाओं का भी सम्मान करते हैं, इसलिए भी भारतीय परिधान पहनते है। ” अनिकेत ने अंदाजे से जानकारी देने का प्रयास किया।

“एक ये है जो दूसरी संस्कृति से आकर भी हमारी संस्कृति का सम्मान करने का प्रयास करते हैं और एक हम हैं जो अपनी परम्पराओं, श्रद्धा, मान्यताओं और संस्कृति का मजाक बनाते हैं, उसकी गरिमा से खिलवाड़ करते हैं, सबसे पवित्र नदियों में से एक माँ गंगा के तट पर जहाँ श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं वही कैम्पिंग इत्यादि के नाम पर शराब, सेक्स, नशे तक का काम करके अपनी कुंठित मानसिकता का परिचय देकर वातावरण को दूषित करते हैं। ” विनय का चिरपरिचित क्रोध दिखाई देने लगा।

“भाई विदेशी भी यहाँ शांति या योग की खोज में नहीं आते, कई तो यहाँ भी केवल नशा करने आते हैं और दिन रात नशे में धुत रहते है, रही बात कपड़ों की तो भाई संस्कृति का सम्मान करना अलग बात है, लेकिन हमारे ही लोग इन्हें खूब बेवकूफ बनाते है, इन्हें लूटते रहते हैं, दस रुपये की चीजें भी इन्हें हजार में बेच देते हैं, जबरदस्ती कलावा, तिलक, आरती इत्यादि इनके मत्थे चिपका कर भी अच्छी खासी रकम ऐंठ लेते हैं। यह सब हम ही कर रहे हैं, ऋषिकेश कभी योग का गढ़ था लेकिन अब यहाँ नशा और बाकी बुरी चीजें भी अपने उफान पर है, इस माहौल को दूषित करने वाले भी तो हम ही हैं, जिस गंगाजल को हम बोतलों में भर कर मंदिर में सजाते है, उसी बहाव में बियर और शराब की बोतलें फेंक रहे है, अपनी श्रद्धा का अपमान तो हम ही कर रहे हैं। ” अनिकेत ने कहा, मानव केवल उन दोनों को सुन रहा था, उसे तो इन सब चीजों की जानकारी ही नहीं थी और यह जानने की इच्छा भी नहीं थी। वह केवल सकारात्मक पक्ष जानने का इच्छुक था।

बाजार में रौनक थी, तंग सड़क के दोनों ओर विभिन्न दुकानें और होटल्स थे, होटल्स, डोरमेट्री, आश्रम इत्यादि वहां इफरात में थे, भीड़ भाड़ वाले इलाके में बंदर भी चहलकदमी करते दिखाई दे जा रहे थे। तीनों बंदरों को देखकर दूर से ही रास्ता बदल लेते, बंदरों को लेकर उनके मन में जो भय बैठा हुआ था वह अब तक जस का तस था। एक साउथ इंडियन स्पेशल मेनू का बोर्ड देख कर विनय ठिठक गया।

“भाई ये पराठे, छोले, और गरिष्ठ भोजन अब ना जा पायेगा, तो मेरे ख्याल से यह होटल सही रहेगा, यहाँ साउथ इंडियन फ़ूड भी है, वह हल्का भी रहेगा और स्वाद भी बदल जायेगा, क्या कहते हो ?” विनय ने उस होटल के सामने रुकते हुए कहा। अनिकेत और मानव भी इस यात्रा में गरिष्ठ भोजन कर कर के वाकई में उकता चुके थे, मानव के सुझाव पर ना करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता था।

कुछ ही देर में तीनों टेबल पर बैठ चुके थे, विनय ने वेटर को बुलाकर मेनू के अनुसार ऑर्डर दिया।

“भाई मेरे लिए एक ओनियन उतप्पा, इनके लिए पुलाव और इनके लिए मेंदू वडा और मसाला डोसा।” विनय ने पहले ही दोनों से उनकी पसंद पूछ ली थी।

“तो अब आपकी ओर मुखातिब होने का समय है अनिकेत भाई।” विनय ने फुर्सत के क्षण देख कर प्रश्न करने का मन बना लिया।

“मतलब ?” अनिकेत ने ना समझने का अभिनय किया।

“मतलब यह अनिकेत भाई कि आप मेरे बारे में जान चुके मैं अपनी उलझन और समस्या बता चुका, विनय भाई ने बस में उनकी जिन्दगी के बारे में बताया और एक अनकहा पहलु हमारे सामने रखा, लेकिन दिल्ली से लेकर यहाँ तक केवल आप ही हो जो अब तक रहस्य की चादर ओढ़े बैठे हो, सब के बारे में सुन कर भी अपने बारे में एक लफ्ज नहीं बताया।” मानव ने चहकते हुए कहा।

“मेरे बारे में ऐसा कुछ नहीं है जिसे मैं बताना चाहूँगा, वैसे भी हम यहाँ घूमने आये हैं तो अपना ध्यान वहीं रखते हैं, निजी जिन्दगी के दुःख सुख तो आजीवन लगे रहेंगे, यह पल उन्हें याद करने का नहीं है। पुरानी बातों को याद करने के बजाय अभी जो हो रहा है उसमें जीते हैं और मजे लेते हैं।” अनिकेत ने सपाट स्वर में कहा, वह शायद बताना नहीं चाहता था।

“अगर हम यहाँ मजे ही करने आये है तब तो हमारी योजना विफल हो चुकी है अनिकेत भाई।” मानव ने अनिकेत की आँखों में झांकते हुए कहा।

“कहना क्या चाहते हो ?” अनिकेत ने उलझन भरे स्वर में कहा।

“मैंने आपको दिल्ली से जम्मू और जम्मू से ऋषिकेश तक के सफर में कई बार खोया हुआ महसूस किया है, कोई चीज है जो आपको हमेशा सताती रहती है, आपका कोई पहलू है जिसे आप चाहकर भी खुद पर हावी होने से रोक नहीं पा रहे है, शायद आप बताना नहीं चाहते या फिर हमें आपने अभी इतना करीब नहीं समझा है कि यह सब हमसे साझा कर सकें। “ मानव अपनी रों में कहता चला गया, विनय ने मानव के पैरो पर अपना पैर दे मारा, इसे चुप रहने का संकेत समझ कर मानव खामोश हो गया।

अनिकेत ने कोई उत्तर नहीं दिया, तब तक वेटर ऑर्डर लेकर पहुँच चुका था। ऑर्डर परोसने के पश्चात वह चला गया, अनिकेत ने ओनियन उतप्पा को देखकर बुरा सा मुंह बनाया, वह केवल बेरंग से चावल की रोटी पर कुछ बिखरे हुए कच्चे अधकच्चे प्याज के टुकड़े मात्र प्रतीत हो रहे थे, उसके साथ दी गई सांबर और चटनी इस हद तक फीकी थी कि उसे देखकर शर्त लगाई जा सकती थी की उसका स्वाद से दूर दूर तक कोई लेना देना नहीं था, सांबर पीले पन के बजाय अजीब सा मटमैला रंग लिया हुआ था।

यही हाल पुलाव का भी था, पुलाव भी बदरंग और फीका सा दिखाई दे रहा था जिसमें चावल से ज्यादा तो तरह तरह की फूल पत्तियाँ बिखरी हुई थी। डोसा तो इन दोनों से दो कदम आगे ही था, दो उंगलियों से कौर निकल जाने वाला डोसा तोड़ने के लिए अनिकेत को आज दोनों हाथों का प्रयोग करना पड़ रहा था, एकदम ही हद दर्जे का रुखा सा डोसा था वह, मेंदू वडा भी बुरी तरह मुरझाया हुआ सा था, साथ में दिया गया सांबर और चटनी भी अलग ही मनहूसियत लिए हुए थी।

तीनों का मुंह एकदम से उतर गया, लेकिन भूख तगड़ी लगी थी और ऑर्डर हो चुका था, विनय के अलावा बाकी दोनों झगड़ा या बहस करने के मूड में बिलकुल नहीं थे और विनय भी खाना चाहे जैसा हो लेकिन उसका अपमान करने में कभी यकीन नहीं रखता था, भले वह खाने के पश्चात चार बातें सुना जाए। तीनों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

“कोई बात नहीं, खा लो, समय कम है हमारे पास, दोपहर हो चुकी है, शाम जल्द ही हो जाएगी तो जल्दी जल्दी निपटाओ, लक्ष्मण झूला चलो और वापसी में यही से हरिद्वार के लिए ऑटो कर लेते है। समय रहते हर की पौड़ी पहुँच जायेंगे।” विनय ने सूखा सा उत्तपा पूरी शक्ति से तोड़कर सांबर में डुबाते हुए कहा। तीनों ने किसी प्रकार सारा भोजन समाप्त किया और ढेर सारा पानी पिया। इसके पश्चात बिल देने की बारी आई तो विनय काउन्टर पर जा पहुंचा।

“भाई सुनो ! एक बात कहना चाहूँगा, बुरा नहीं मानना।” विनय ने काउन्टर पर बैठे व्यक्ति से कहा।

“जी कहिये ?” वह मुस्कराया।

“भाई साउथ इंडियन स्पेशल का बोर्ड तो लगा दिया लेकिन आपने शायद कभी साउथ इंडियन फ़ूड टेस्ट नहीं किया है, आपको नहीं लगता आप जो खिला रहे है, वह कुछ और ही आइटम है? मेनू में दर्ज चीजें केवल नाम के लिए है, कौन है आपका शेफ ? कौन बनाता है यह ? उसे कहो के जाए पहले किसी ‘अन्ना’ की उडपी पर खा कर आये यह सब, कसम से कहता हूँ अगर वह असली उतप्पा, डोसा, मेंदुवड़ा और सांबर खाकर आये और इस होटल का खा कर सही सलामत रह जाए तो भैय्या जो कहो वह हार जाऊं।” विनय भुनभुनाया, लेकिन मानव और अनिकेत ने उसका हाथ पकड़ लिया, वे इस समय लड़ने के मूड में बिलकुल भी नहीं थे। विनय और भुनभुनाता किन्तु दोनों ने उसे खींच लिया।

“ चलो भाई, अब खा चुके है, झगड़े का कोई अर्थ ही नहीं है।” मानव ने समझाया, विनय ने एक नजर काउन्टर पर बैठ शख्स की ओर देखा, वह बेशर्मी से मुसकुराता हुआ उसे देख रहा था, उसे अफ़सोस या शर्मिंदगी जैसी चीज से दूर दूर तक कोई लेना देना ही नहीं था। समय कम था, जगह नई थी इसलिए झगड़कर ऊर्जा नष्ट करने का कोई तुक ही नहीं बनता था।

□□□

तीनों अब लक्ष्मण झूला वाले मार्ग पर थे, आखिरकार कुछ देर चलने के पश्चात वे पुल की ओर पहुंचे, गंगा नदी के दोनों किनारों को जोड़ता हुआ वह पुल तिरंगे रंग में रंगा हुआ सा था, पुल पर भीड़ बहुत ज्यादा थी। असल में वहां भीड़ के अलावा और कुछ भी नजर ही नहीं आ रहा था, वे सीढ़ियों से नीचे उतरे और पुल के आरम्भ की ओर बढ़े, भीड़ के मध्य मार्ग बनाते हुए वे आगे बढ़े, फोटोग्राफर वगैरह लोगों से फोटो खिंचवाने की सिफारिश कर रहे थे लेकिन तीनों के पास इसका समय नहीं था।

“वह जो पुल के सामने लाल रंग की तेरह मंजिला इमारत है ना, वह शिव मंदिर है। क्या कहते हो ? चले ऊपर ?” विनय ने कहा।

“अब आये है तो चलना ही है, वैसे भी गंगा नदी, उसपर बना लक्ष्मण झुला और यह मंदिर तो ऋषिकेश का लैंडमार्क ही है, यदि यहाँ नहीं गए तो ऋषिकेश जाने का कोई मतलब ही नहीं रहेगा, यहाँ पहले इस झूले पर कुछ तस्वीरें खिंचवा लेते हैं।” अनिकेत ने कहा और मोबाइल से तस्वीरें खींचने लगा।

“इस पुल पर तो पक्की सड़क बनी हुई है ?” मानव ने हैरानी से पुल के तल को देखा। उसे पुल थोड़ा हिलते हुए सा प्रतीत हुआ।

“यह मेरा वहम है या वाकई मुझे यह पुल हिलते हुए प्रतीत हुआ ?” मानव हैरान था। विनय उसको देख मुस्कराया।

“इसीलिए इसे झूला कहते है, क्योंकि यह हवा के साथ हिलता है, घबराओ नहीं यह काफी मजबूत है।” विनय ने उसे आश्वस्त किया।

“इसे लक्ष्मण झूला क्यों कहते है ?” मानव इस तथ्य से सर्वथा अनजान था।

“मान्यता है की जब श्री राम यहाँ आये थे, अपने वनवास के कुछ दिन उन्होंने ऋषिकेश के जंगलों में भी बिताए थे, तो गंगा पार करने के लिए लक्ष्मण जी ने यहाँ जुट की रस्सियों से एक पुल बनाया था जो कालांतर में कालातीत हो गया, तब उसकी जगह यह पक्का पुल बनाया गया, इसलिए इसका नाम लक्ष्मण झुला है।” विनय ने जानकारी दी, जो उसने इंटरनेट पर कही पढ़ा था।

“यहाँ कुछ दूरी ही दूरी एक शिव मंदिर भी है, नीलकंठ महादेव का। मान्यता है कि जब समुद्र मंथन में हलाहल विष निकला था तब इसी स्थान पर महादेव ने हलाहल का प्राशन करके समस्त संसार की रक्षा की थी, लेकिन उस मंदिर को यदि देखने जायेंगे तो हरिद्वार की गंगा आरती के लिए समय पर नहीं पहुँच पायेंगे।” विनय ने विवशता जाहिर की। भीड़ भरे लक्ष्मण झूले से वे लोगों से बचते बचाते आगे बढ़ते रहे, गंगा का विशाल और स्वच्छ प्रवाह यहाँ से स्पष्ट दिखाई दे रहा था, सम्पूर्ण पानी का रंग गहरा हरा दिखाई दे रहा था, कुछ नाव उसमें तैरती हुई सी दिखाई दे रही थी, तो घाटों और किनारों पर श्रद्धालु डुबकी लगाते और सफ़ेद शुभ्र तटों पर गंगा के सानिध्य में भक्ति भाव से बैठे हुए थे। तीनों मंत्रमुग्ध सा यह वातावरण देख रहे थे। आखिरकार उन्होंने कुछ देर बाद लक्ष्मण झूला पार करके दूसरे किनारे पर पहुँचकर वे तेरह मंजिले शिव मंदिर पर जाकर वे दर्शन भी कर चुके थे, इसमें काफी समय चला गया और वे थक भी गए।

“भाई शिव मंदिर के दर्शन हो गए है, अब शाम के पौने चार बज रहे है, तो बेहतर यही होगा कि हम अब पुन: अपने होटल के पास चलते है, वहां से नियमित वाहन मिलते है हर की पौड़ी के लिए।” विनय ने सुझाव दिया और सदैव की तरह अनिकेत और मानव ने केवल सिर हिलाकर सहमति जता दी। लक्ष्मण झूला पार करके वे आगे बढ़े, फिर से वे उसी बाजार में पहुँच चुके थे, अब भीड़ पहले से अधिक बढ़ चुकी थी। माहौल एकदम ही अलग सा हो गया था, शाम की ठंडक में श्रद्धालुओं एवं सैलानियों के उत्साह को मानो और ही बढ़ा दिया था।

वे मार्ग में कुछ गाड़ी वालों से हर की पौड़ी जाने के लिए भाव ताव करते रहे लेकिन वे भी अवसर देख कर लूटने से बाज नहीं आ रहे थे। नौ सौ रुपये से लेकर दो हजार तक दाम बता रहे थे, जिसे वे नकारते रहे। आखिरकार किसी ने उन्हें बताया की सामने वाली गली से यदि ऊपर जाए तो आगे ऑटो मिल जायेंगी जो सीधे हर की पौड़ी के लिए जाती है। तीनों बताई गई गली में प्रवेश कर गए।

वह संकरी गलियों का एक जाल सा था, दोनों ओर विभिन्न प्रकार की दुकानें सजी हुई थी, संकरी गलियों से गुजरते हुए वे आगे बढ़ते जा रहे थे, हर गली पार करते ही लम्बी लम्बी सीढ़ियाँ पड़ती थी।

"भाई आखिर कितनी सीढ़ियाँ है यहाँ ? हर मोड़ पर लगता है कि अब मुख्य सड़क पर आ जायेंगे अब आयेंगे, लेकिन हर मोड़ पर और सीढ़ियाँ, भाई वैष्णो देवी की यात्रा याद आ गई।" मानव हांफते हुए बोला, विनय को भी इस रास्ते का कोई अंदाजा नहीं था किन्तु वह इन रास्तों का आनन्द ले रहा था, अनिकेत भी भूलभुलैया जैसी संकरी गलियों के बने रास्तों को देखकर थोड़ा अचंभित सा था, कुछ ही देर में वे उस सड़क पर पहुँच चुके थे, जहां उनका होटल था।

"अरे ये तो ठीक होटल के पीछे निकला ?" विनय चहका।

"हमने गौर नहीं किया किन्तु ऑटो स्टैंड हमारे होटल से कुछ ही दूरी पर है, वह देखो सड़क के अंतिम छोर पर लोगों की भीड़ है और कुछ वाहन भी। निःसंदेह वही है।" कहकर विनय तेज क़दमों से वहां बढ़ा, दोनों उसी तेजी से उसके साथ बढ़े। ऑटो वालों से भाव ताव हुआ, नया समझ कर वह भी औने पौने दाम बताने लगा।

"भाई साहब हमें पता है हर की पौड़ी का किराया प्रति व्यक्ति पचास रुपये है, आप अस्सी रुपये किस हिसाब से बोल रहे हो ? हम रिजर्व थोड़े ही कर रहे हैं, आप और सवारियां भी तो बिठाएँगे ही।" विनय ऑटो वाले से बहस करता रहा, उसने स्टैंड पर लगे किराया सूचि की ओर देखा, हर की पौड़ी के किराया वाला हिस्सा खुरचा हुआ था।

"आप लोग किराए की सूचि से किराए का हिस्सा ही मिटा के रखे हैं, सैलानियों को हैरान कर रहे है बस। आपको बिठाना है तो बिठाओ नहीं तो हम दूसरी ऑटो कर लेंगे।" विनय ताव में आ रहा था, वह इस प्रकार की लूट देखकर चिढ़ गया था।

आखिरकार दो तीन गाड़ी वालों से बात करके एक ऑटो वाला साठ रुपये प्रति व्यक्ति की दर पर तैयार हुआ, विनय उससे बहस करता किन्तु अब समय नहीं था, पौने पांच बज रहे थे, आरती बीत जाने का डर था तो वे उसी में सवार हो गए।

गाड़ी टेढ़े मेंढ़े रास्तों से होते हुए हरिद्वार की ओर बढ़ गई, मानव ने ऑटो के भीतर लगे किराया सूचि को देखा, वहां भी हर की पौड़ी का किराया मिटाया हुआ था। विनय ने उसे नजरंदाज कर दिया, वह आरती के लिए जा रहा था तो अपना मन खराब नहीं करना चाहता था। ठंडी ठंडी हवा के झोंको के मध्य गंगानदी को देखते हुए वे आगे बढ़ते रहे। चलती गाड़ी में ठंड ज्यादा लगने लगी थी।

"विनय भाई कुछ जानकारी वगैरह दो हर की पौड़ी के विषय में।" मानव ने चर्चा आरम्भ करने की गरज से कहा।

"हर की पौड़ी अर्थात हरी के चरण, कहते है भगवान विष्णु यहाँ सशरीर उतरे थे, जहां उनके चरण पड़े थे उसे हरी अर्थात विष्णु के चरण जिसे पैडी कहा गया, नामकरण हुआ, कालान्तर में यही हर की पौड़ी में परिवर्तित हो गया। हम जहाँ आरती देखने जायेंगे वह स्थान है 'ब्रह्म कुंड' यहाँ समुद्र मंथन के दौरान निकले अमृत की कुछ बूंदें गिरी थी, अमृत की बूंदें जहाँ जहां गिरी वहां कुंभ लगता है, प्रयाग, नासिक, उज्जैन और हरिद्वार, इन चार स्थानों पर अमृत की बूंदें गिरी थी, जिस कारण इन स्थानों पर नहावन को मोक्ष दाई माना जाता है।" विनय ने संक्षेप में जानकारी दी। अनिकेत और अधिक जानने का इच्छुक था, हालांकि वह गूगल पर पढ़ सकता था, किन्तु एक दूसरे से सुनना उसे अधिक रुचिकर प्रतीत हो रहा था।

"हर की पौड़ी के जो घाट है, वह सर्वप्रथम महाराज विक्रमादित्य ने अपने भाई भ्रुतुहरी के स्मरणार्थ बनवाये थे, इस स्थान पर ब्रह्मा जी का आवाहन हुआ था जिस कारण इसे ब्रह्म कुंड नाम पड़ा। एक विष्णु कुंड भी है जहां मान्यताओं के अनुसार स्वयं भगवान विष्णु ने स्नान

किया था। गंगा के बहाव को यहाँ कृत्रिम रूप से अनेक घाटों में बांटा गया है, हर घाट की अलग कहानी है, माँ गंगा हरिद्वार से ही पहाड़ों को छोड़ कर मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है। यहाँ स्नान करने से जन्म जन्मान्तर के पाप कटते है ऐसा कहना है, किन्तु वह तो व्यक्ति की मंशा पर निर्भर करता है, यदि आप स्वार्थ वश केवल पाप नाश की इच्छा लिए स्नान करेंगे तो भला कैसे आपके पाप कटेंगे आप तो वहां भी स्वार्थ की गठरी उठाये चल रहे है।" विनय फिर अपनी आदत के अनुरूप भुनभुनाया।

"भाई! भाई ! भाई ! अरे खुद पर नियंत्रण रखो, उन्हें अपने हाल पर छोड़ दो, हर जगह खून जलाना सही नहीं है।" अनिकेत ने उसकी बात काटते हुए कहा, विनय बस मुस्करा कर रह गया।

"हरिद्वार को चार धाम का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है, चार धाम से आशय सम्पूर्ण भारत के चार धाम नहीं, बल्कि केवल उत्तराखंड में स्थित चार धाम।" विनय ने अपनी बात जारी रखी।

"कौन कौन से है ?" मानव ने प्रश्न किया।

"बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री और गंगोत्री यह चार धाम है जो उत्तराखंड में है।" विनय ने अपनी रिसर्च के अनुसार जवाब दिया।

"क्या हम अपनी ट्रिप में से किसी एक धाम पर जा सकते है ?" मानव की उत्सुकता बढ़ गई।

"नहीं ! इस समय सारे धाम के कपाट बंद रहते है, दीपावली के पश्चात चारों धाम के कपाट बंद हो जाते है जो फिर अप्रैल या मई में तिथिनुसार ही खुलते है, इस दौरान दर्शन नहीं होते।" इस बार अनिकेत ने कहा, यह जानकारी विनय के लिए भी नई थी। बातों बातों में वे अब उसी हाइवे पर पहुँच चुके थे जहां से वे दिल्ली से हरिद्वार पहुंचे थे, भगवान शिव की विशाल प्रतिमा उन्हें दूर से ही दिखाई देने लगी थी। गंगा के घाट और उनपर बने पुल दृष्टिगोचर होने लगे थे।

कुछ ही देर में ऑटो हरिद्वार स्थित अपने स्थानक पर पहुँच चुकी थी, चालक से मार्ग की जानकारी पूछने के पश्चात तीनों ऑटो से उतरकर हाईवे पार करके दूसरे छोर पर पहुंचे, वे हर की पौड़ी की दूसरी ओर पहुंचे थे जहां इमारतें और चहल पहल नाममात्र के थे। अब ठंड अत्यधिक बढ़ गई थी, तीनों के कान सुन्न होने लगे थे, वे सामान्य पतली सी जैकेट पहने हुए ही होटल से निकले हुए थे, दस्ताने और कनटोप की आवश्यकता उन्हें प्रतीत नहीं हुई थी। किन्तु यहाँ पहुंचकर उन्हें अपने निर्णय पर पछतावा हो रहा था, शाम की लाली वातावरण में फ़ैल चुकी थी।

"भाई ! आरती छूट ना जाए हमसे, कल भी नहीं देख पाए थे।" मानव के माथे पर चिंता की रेखाएं स्पष्ट दिखाई दे रही थी, अनिकेत भी शंकित था, वे जहाँ उतरे थे वह काफी बड़ा परिसर था, जहाँ अनेक मार्ग बने हुए थे, वे उलझन में थे कि कहीं रास्ता भटक ना जाए। वहां श्रद्धालुओं एवं सैलानियों की आवाजाही एकदम नाममात्र की ही थी, उन्हें शंका भी हो रही थी कि कहीं वे गलत स्थान पर तो नहीं उतर गए थे।

"सर ! गंगा आरती वाला घाट का रास्ता कौन सा है ?" विनय ने वहां खड़े कुछ पुलिस वालों में से एक से प्रश्न किया।

“वह आगे जाकर आप बांये मुड़ जाइए, पक्का रास्ता है, सीधे चले जाइये कहीं नहीं मुड़ना, फिर दस मिनट चलने के बाद एक पुलिया आएगी, वह पार करके आप सीधे ब्रह्म कुंड वाले घाट पर पहुँच जायेंगे।” पुलिस वाले ने विस्तार से और आसान शब्दों में मार्गदर्शन किया। तीनों ने उसे धन्यवाद दिया और तेज कदमों से उसके बताये मार्ग पर बढ़ गए। थोड़ी दूर चलने के पश्चात उन्हें गंगा पर बना एक पक्का पुल दिखाई दिया, उन्होंने वहां फिर कुछ लोगों से मार्ग पूछा, पुल पर पहुँचते ही उन्हें श्रद्धालुओं एवं सैलानियों का हुजूम सा दिखाई दिया, कल कल बहती गंगा की लहरों का स्वर उनके कानों में गूंजने लगा, पुल के नीचे ही गंगा का तीव्र प्रवाह था, जो सांझ के कारण काफी गहरा और काला प्रतीत हो रहा था, वे जिस हरी नीली गंगा का अब तक दर्शन करते आये थे, वह साँझ के कारण स्याह दिखाई पड़ रही थी, ठंड से उनके हाथ पैर और दांत तक कांप रहे थे, ठंडी हवा भी निरंतर चल रही थी। घाट पर वही एक मात्र पुल नहीं था, वहां अनेक पुलों का एक जाल सा बना था, जो विभिन्न घाटों को एकसूत्र में पिरो रहा था। घाट पर अनेक छोटे बड़े और सुंदर मंदिर बने हुए थे। हर पुल पर भीड़ थी। वे पुल की सीढ़ियों से उतर कर आरती वाले घाट पर पहुँच चुके थे, घाट के किनारे अनेक दुकानें, होटल, और मंदिर समान मात्रा में बने हुए थे, घाटों पर फूल, मालाएं और दीपों की छोटी बड़ी दुकानें सजी हुई थी। लोगों की भीड़ में चलते हुए वे आगे बढ़ते रहे, एक पुल के नीचे पहुँच कर उन्हें गंगा माँ के मंदिर के दर्शन हुए, उसके आगे ही ब्रह्म कुंड था जहां इस समय इतनी भीड़ थी कि पैर रखने तक की जगह नहीं थी।

“भाई पूजा वाले घाट पर तो इतनी भीड़ है कि लगता ही नहीं हमें जगह भी मिलेगी, हमें देर हो गई आने में, जल्दी आते तो बैठने के लिए कोई ना कोई स्थान मिल जाता।” विनय ने कहा।

घाट के दोनों किनारों पर श्रद्धालुओं की भीड़ लगी हुई थी, सम्पूर्ण गंगा परिसर आसपास की दुकानों की रोशनियों से प्रतिबिम्बित हो रहा था, पानी में पड़ती रोशनियाँ झिलमिला रही थी। गंगा आरती की तैयारियाँ हो रही थी, पुजारी अपने अपने स्थान पर पहुँच चुके थे।

“एक काम करते है, हम पूजा वाले घाट के बजाये उसके सामने वाले घाट पर चलते है जहाँ वह बड़ी घड़ी वाला टावर दिखाई दे रहा है, वहां से हमें स्पष्ट दिखाई देगा वहां भी भीड़ है लेकिन इतनी नहीं कि जगह न मिल सके।” मानव ने दूसरी ओर के घाट को देखते हुए कहा, दोनों को उसकी बात जमी, वे वहां पहुँचने का रास्ता ढूंढने लगे, सहसा अनिकेत को आभास हुआ कि वे उसी पुल के नीचे खड़े है जो दूसरे छोर पर जाता था। तीनों ने तेज क़दमों से पुल को पार किया और मानव द्वारा बताये घंटा घर के सामने आ पहुंचे, उनके पहुँचते ही वातावरण में हर हर गंगे, जय माँ गंगे के नारे गूंजने लगे। सम्पूर्ण वातावरण दिव्य एवं भक्तिमय हो गया था। तीनों यह भूल ही गए कि उन्हें बैठने के लिए कोई स्थान खोजना था, वे मंत्रमुग्ध होकर उस वातावरण का आनन्द ले रहे थे, उन्हें उस समय अपना भान ही नहीं था।

दूसरे किनारों पर दीप प्रज्वलित हुए और आरति एवं मंत्रों के स्वर गूंजने लगे, हर ओर बस जय माँ गंगे, हर हर गंगे के स्वर गूंजने लगे। घंटियों, शंखों एवं मंत्रोच्चार के स्वरों से सम्पूर्ण घाट गूंज रहा था। सम्पूर्ण घाट पर श्रद्धालु और सैलानी एवं श्रद्धालु दीप जला कर आरती में अपना सहभाग दे रहे थे। फूलों, अगरबत्ती और दीप की सुगंध सम्पूर्ण वातावरण में महसूस की जा सकती थी। दीपों की रोशनियों से सम्पूर्ण नदी लाल और केसरी रंग में मानो नहा सी उठी थी ।

प्रवाह में प्रवर्तित होती दीप किरणें अद्भुत प्रकाश का निर्माण कर रही थी। तीनों उस विस्मित कर देने वाले दृश्य को अपलक देखे जा रहे थे। उनके हाथ स्वयमेव सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ जुड़ गए, वे भी सम्पूर्ण हर्ष एवं उत्तेजना के साथ हर हर गंगे, जय माँ गंगे का उद्घोष करके उस श्रद्धा सैलाब का भाग बन चुके थे। तीनों कड़कड़ाती ठंड में पूर्ण उत्साह के साथ उस आरती में सम्मिलित होते श्रद्धालुओं की भक्ति और इच्छाशक्ति देख कर अचंभित थे, इस भयंकर ठंड में भी श्रद्धालु घुटने तक गंगा के बर्फीले पानी में खड़े होकर पूर्ण तल्लीनता से माँ गंगा की पूजा कर रहे थे, दीपदान कर रहे थे, क्या बच्चे, क्या बूढ़े क्या नौजवान, किसी पर भी ठंड और मौसम का मानो कोई प्रभाव ही नहीं पड़ रहा था और ना ही उन्हें उसकी तनिक भी परवाह थी। सम्पूर्ण वातावरण रोशनाई से जगमगा रहा था। कुछ ही देर में आरती समाप्त हुई। तीनों अब तक अपने स्थान पर किसी बुत की भांति स्थिर खड़े रहे, अब पुजारी और पण्डे किनारों पर स्थित श्रद्धालुओं को आरती प्रदान कर रहे थे, प्रसाद बंट रहा था, यह अलग बात थी कि उसका मूल्य भी चुकाया-लिया जा रहा था। उन्हें तब होश आया जब पूजा-आरति के स्वर बंद हुए और केवल माँ गंगा के कलकल का स्वर ही वातावरण में शेष रहा। वे काफी देर तक घाट की सीढ़ियों पर बैठे उस दृश्य को निहारते रहे।

कितना विचित्र सा दृश्य था, इतने लोग, इतने श्रद्धालु, देश के हर हिस्से से आये लोग इस समय एक रंग में रंगे नजर आ रहे थे। सब एक भाव से भाव विभोर हो रहे थे, मानो हर प्रकार भेद समाप्त हो गया हो, यह शक्ति केवल गंगा में ही हो सकती थी जो सारे जगत के भेद भाव भुला कर सबको एक सूत्र में पिरोने का सामर्थ्य रखती थी। अनिकेत चमत्कारों पर विश्वास नहीं करता था किन्तु यह सब किसी चमत्कार से कमतर भी तो नहीं था, विनय और मानव जो सदैव पूजा-पाठ और कर्मकांड इत्यादि से दूर रहते आये थे, जिनके स्वभाव का एक हिस्सा लगभग नास्तिक सा हो गया था, वे भी यहाँ स्वयमेव बिन कहे भक्ति रस में डूबे हुए से थे। ना जाने क्या था कि मानव ने कटरा जाने की योजना बनाई और ना जाने क्या बात थी जो विनय ने ऋषिकेश और हरिद्वार को ही चुना।

“सुनो ! मेरे मन में एक ख्याल आ रहा है।” मानव ठंड से किटकिटाते हुए बोला।

“बोलो।” अनिकेत और विनय एक स्वर में बोले, वे गंगा के उस अद्भुत प्रवाह को निहार रहे थे, श्रद्धालुओं ने दीप दान किये थे, बहते दीप और फूलों के दोने अद्भुतरुप से सुंदर दिख रहे थे। जिन पर से एक क्षण भी नजरें हटाना कठिन प्रतीत हो रहा था। अब ठंड पुन: महसूस होने लगी थी, तीनों के रोम सिहरन से खड़े हो गए थे। वही उन्हीं की बगल में कुछ हाथ दूर कुछ लोग गंगा की धारा में डुबकी लगा रहे थे। इस भयंकर ठंड में भी वे मात्र एक कच्छा पहन कर बर्फीले ठंडे पानी में डुबकी लगा रहे थे। हर डुबकी पर ऐसे चीख रहे थे मानो उबलते पानी में जा गिरे हो। फिर भी हर हर गंगे का जाप करते हुए डुबकियां जारी थी।

“भाई, हम तीनों को डुबकी लगानी चाहिए।” मानव ने उन लोगों को देखते हुए कहा, वह जानता था इतनी ठंड को देखते हुए दोनों मना कर देंगे।

“भाई ठंड देख रहे हो ? दांत बज रहे है हमारे, और ऐसे में इस बर्फीले पानी में डुबकी लगाना कहाँ की समझदारी है ?” विनय कल्पना मात्र से ही सिहर उठा था।

“देख लो, हम हरिद्वार आये है, यदि यहाँ आकर भी गंगा में डुबकी नहीं लगाये तो आना व्यर्थ हो जाएगा हमारा। वैसे भी अब पता नहीं कब दोबारा आने का अवसर मिले, जब आये ही है तो इस अवसर को क्यों व्यर्थ जाने दे ?” मानव ने पूर्ण निर्धार कर लिया था।

“लेकिन हम गंगा स्नान तो रिवर राफ्टिंग के दौरान ऋषिकेश में ही कर चुके है, तो इस औपचारिकता की क्या आवश्यकता ?” अनिकेत ने अपना तर्क दिया, कोई और समय होता तो अवश्य डुबकी लगाने के विषय में सोचता किन्तु इस ठंड में डुबकी लगाना उसे समझदारी नहीं लग रही थी।

“अरे वहां की महत्ता अलग है और इस ब्रह्मकुंड की अलग, देखो मैं तो नहीं समझाने वाला, मैं चला डुबकी लगाने, देखो उन लोगों को, वे चालीस पैंतालीस या पचास साल के लग रहे है, चीख रहे है, ठंड से कांप रहे है फिर भी गंगा में डुबकी लगा रहे है। हम तो अभी भी जवान ही है, अब नहीं तो कभी नहीं।” कहकर मानव खड़ा हो गया।

“अरे लेकिन..” विनय कुछ बोलता तब तक मानव अपनी जैकेट और शर्ट उतार चुका था। शर्ट उतारते ही ठंड से सारे शरीर में झुरझुरी सी दौड़ गई लेकिन वह अपने निश्चय पर अड़ा रहा। अनिकेत और विनय ने एक-दूसरे की ओर देखा उन्हें घाट पर इस प्रकार से कपड़े उतार कर डुबकी लगाना थोड़ा अजीब लग रहा था। किन्तु उन्होंने अन्य श्रद्धालुओं की ओर देखा, वहां यह सामान्य बात थी। वैसे भी वे जहाँ बैठे थे वहां महिलाओं की उपस्थिति नाममात्र की थी और जो थी वे भी अधेड़ या बूढ़ी महिलाएं थी तो वो थोड़े असहज अवश्य थे किन्तु इतने भी नहीं।

तीनों ने अपनी अपनी जैकेट्स और शर्ट्स उतार कर घाट पर रखी, उनका ऊपरी शरीर अब पूर्णतया निर्वस्त्र था और ठंड से कांप रहा था। दांत पर दांत बज रहे थे।

“अरे भाई जींस भी उतारनी पड़ेगी ?” अनिकेत थोड़ा संकोच कर रहा था।

“भाई उतारनी ही होगी, अंडरवेयर तो फिर भी पहने पहने सूख जायेगी, लेकिन जींस यहाँ से लेकर ऋषिकेश तक नहीं सूखने वाली। ठंड से पाला मार जाएगा हाइवे पर जाते समय, इसलिए समझदारी इसी में है कि जींस उतार दो।” मानव ने जींस उतार दी, वह एक बॉक्सर पहने हुए खड़ा था।

अनिकेत और विनय भी सकुचाते हुए जींस उतार चुके थे, गनीमत थी कि उस ओर कोई महिला वगैरह नहीं थी। वे नंगे बदन ठंड से कांपते हुए घाट की सीढ़ियों से नीचे बढ़े।

“बहाव बड़ा तेज है गंगाजी का, बह ना जाए हम।” विनय हर हर करके बहते प्रवाह को देखकर उसमें उतरने के लिए घबरा रहा था।

“यह जंजीर इसलिये बंधी हुई है, इसे पकड़ कर नीचे उतरो और डुबकी लगाओ, कह कर मानव ने घाट पर बंधी जंजीर थाम कर सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए माँ गंगा का स्मरण किया, घुटने भर पानी में पहुँचते ही उस बर्फीले स्पर्श से उसकी आत्मा तक मानो आर्तनाद सी कर उठी। लेकिन उसने हिम्मत ना हारते हुए नाक पकड़ कर एक सम्पूर्ण डुबकी लगाई और क्षण भर रहने के पश्चात पानी से बाहर निकला।

“अरी मोरी मैय्या।” मानव की चीख निकल गई, उसकी चीख सुनकर दोनों सीढ़ियों पर ही ठिठक गए। मानव ने उन दोनों की ओर देखा और फिर हर-हर गंगे का जय घोष करते हुए डुबकी लगाई, तीन चार डुबकियां लगाने के पश्चात वह पानी कांपते थरथराते बाहर निकल कर सीढ़ियों पर जा बैठा।

“ज..ज..जाओ आप लोग।” मानव बड़ी मुश्किल से बोला।

दोनों उसका हाल देख कर थर्राए हुए थे, लेकिन अब कोई और रास्ता भी नहीं था, दोनों जंजीर पकड़ कर घुटने भर पानी में पहुंचे, पानी के स्पर्श मात्र से उनकी आत्मा परमात्मा में विलीन सी होती महसूस होने लगी।

“भाई लगता है कहीं मोक्ष प्राप्ति यही ना हो जाए आज।” विनय थरथराते स्वर में बोला।

“एक..दो..तीन..” अनिकेत ने विनय को संकेत किया और दोनों एक साथ पूरी शक्ति से चीखे।

“हर हर गंगे !” और छपाके के साथ दोनों ने डुबकी लगा ली। डुबकी लगाते ही पूरा शरीर मानो सुन्न सा हो गया। वे पुन: डुबकी लगाने के लिए तैयार थे।

“हर हर महादेव।” उन्होंने युद्ध सा जयघोष किया और फिर डुबकी लगा बैठे, उनकी चीखे निकल रही थी, किन्तु हर चीख के पश्चात जय माँ गंगे, हर हर गंगे और महादेव के नाम का आर्तनाद सा कर उठते, जिससे थोड़ा सा जोश और बढ़ जाता। आखिरकार चार डुबकियां लगाने के पश्चात वे भी ठंड से कांपते हुए मानव के साथ आकर बैठ गए, जब तक गीले थे तब तक कपड़े नहीं पहन सकते थे, कपड़ों के गीले होने का डर था। उसी समय अवसर देखते हुए एक चायवाला उनके समीप अपनी केटली लेकर पहुँच गया।

“साब चाय ?” उसने उनकी हालत देखते हुए पूछा। वह उसी घाट पर मंडरा रहा था और डुबकी लगाने वालों के आसपास ही घूमता रहता था, वह जानता था इस ठंड में डुबकी लगाने के पश्चात आदमी को या तो स्वर्ग दिखाई देगा या फिर चाय।

तीनों ने एक स्वर में हाँ कहा और गरमागरम चाय का कप थाम लिया। विनय ने वहां पड़े कपड़ों में पैसे निकाल कर उसे चुकता किये।

“भ..भाई, थी तो यह बेवकूफी ही..” विनय ने कांपते हुए चाय की चुस्की ली।

“लेकिन मजा आ गया..बहुत मजा आया..” अनिकेत थरथरा रहा था, किन्तु उसके चेहरे पर हंसी उभर आई। तीनों एक साथ हंस पड़े।

“हर हर गंगे ! जय माँ गंगे।” तीनों एक स्वर में बोले और चाय की चुस्कियों में व्यस्त हो गए। थोड़ी देर बैठने के पश्चात जब शरीर थोड़ा सूखा तब उन्होंने कपड़े पहन लिए, हालांकि अंडर वेयर गीले ही थे किन्तु और कोई पर्याय ही नहीं था।

“चलो ब्रह्मकुंड वाले हिस्से के पीछे ही बड़ा बाजार दिखाई दे रहा है, वहां चलकर कुछ गरमागरम खाते है, शरीर में गर्मी आएगी, फिर निकलते है ऋषिकेश।” विनय ने सुझाव दिया। तीनों कुछ देर घाट पर बैठने के पश्चात कुछ तस्वीरें लेकर बाजार की ओर बढ़ चले। एक दुकान से चाट और टिक्की खाकर उन्होंने अपने पेट की क्षुधा शांत की। हालांकि चाट और टिक्की बड़ी ही अजीब और बेस्वाद सी थी। वापसी में किसी दुकान से प्लास्टिक की छोटी बोतलें लेकर उन्होंने घाट से गंगा जल भर भी लिया।

“यह हरिद्वार का गंगा जल।” विनय ने उस बोतल को श्रद्धा से माथे पर लगाया और जैकेट की जेब में डाल लिया। तीनों जिस रास्ते से आये थे वापस उसी रास्ते की ओर बढ़ गए। वह मार्ग आते समय जितना सुनसान था जाते समय उस से भी अधिक निर्मनुष्य हो गया था, इक्का दुक्का लोग ही नजर आ रहे थे। आते समय दिखाई देते रिक्शा का झुण्ड भी एकदम से गायब हो चुका था। वे हाइवे पर पहुंचे, ठंड और अधिक बढ़ गई थी। दो तीन बसों को हाथ दिखाकर रोकने का असफल प्रयास किया, कोई भी नहीं रुका।

आखिरकार एक ऑटो उनके समक्ष आकर रुकी जो ऋषिकेश ही जा रही थी। तीनों उसमें सवार हो गए और अपने गन्तव्य की ओर बढ़ गए। इस अँधेरे और सुनसान हाइवे से उन्हें घाटों का सुंदर नजारा दिखाई दे रहा था, घाट के मध्य स्थित महादेव की विशालकाय प्रतिमा पर उनकी दृष्टि पड़ी, तीनों ने समान श्रद्धा भाव से हाथ जोड़ लिए और महादेव का स्मरण किया।

“सब कुछ हो गया, लेकिन फिर भी लग रहा है जैसे कुछ छूट सा गया। क्या रह गया याद नहीं आ रहा।” विनय को कुछ कमी सी लग रही थी।

अनिकेत और मानव की नजरें आपस में मिली। वे मुसकुराए विनय उनकी मुस्कुराहट का कारण समझ नहीं पाया। लेकिन दोनों जानते थे कि विनय रिवर राफ्टिंग के पश्चात भाग दौड़ में बंजी जम्पिंग भूल ही गया था। जो अनिकेत और मानव के लिए राहत की बात थी, वे तो याद दिलाने से रहे।

“कुछ नहीं ! होता है, माँ गंगा का सानिध्य ही ऐसा है कि मिलकर वापसी में कुछ ना कुछ छुटा हुआ सा प्रतीत होता है, हमें भी हो रहा है।” मानव ने बात गोल कर दी।

मानव ने अपने मोबाइल का वीडियो कैमरा ऑन किया।

“अब हम हरिद्वार से ऋषिकेश की ओर बढ़ रहे है, हाइवे पर ठंड बहुत ज्यादा है। हमने इस कड़ाके की ठंड में भी गंगा स्नान किया और आरती के दर्शन किये, वाकई बेहद शानदार अनुभव रहा। मेरी जिद पर विनय और अनिकेत भाई ने भी अंडरवेयर पहन कर गंगा में डुबकी लगाई। भूख लगी थी इसलिए हमने वही एक दुकान से चाट और टिक्की खाई। “ कहकर मानव हंसा, दोनों भी मुस्करा दिए।

“उस वाहियात चाट- टिक्की खाने के बाद तो भूख भी मर गई है, होटल जाकर मैं तो कुछ भी नहीं खाने वाला और थकान भी बहुत हो गई है, सीधे जाकर सोना है। कल जल्दी उठना है, मानव और विनय आप दोनों के हिस्से की ट्रिप अब पूरी हुई। अब कल मेरी बारी।” अनिकेत कैमरे की ओर देख कर मुस्कराया।

“अब तो बता दो भाई, हम कहाँ जा रहे है ?” विनय की उत्सुकता चरम पर थी किन्तु अनिकेत बस मुस्करा कर रह गया।

“कल पता चल जाएगा।” अनिकेत ठंडी हवाओं से उत्पन्न सिहरन को महसूस कर रहा था। कुछ देर मार्ग के वीडियो रिकॉर्ड करने के पश्चात मानव ने मोबाइल बंद कर दिया।

❑❑❑

अंतिम पड़ाव, अनिकेत की ट्रिप

सुबह दस बजे तक ही नहा-धो कर नाश्ता वगैरह करके तैयार थे, अपने बैग्स में सारा सामान बटोर कर उन्होंने होटल से चेक आउट किया। कुछ ही देर में वे मुख्य मार्ग पर खड़े थे, अनिकेत अब काम पर लग चुका था। उसने रात में ही ड्राइवर को फोन करके होटल का पता दर्ज करवा दिया था, ड्राइवर उसी क्षेत्र में कही पहुँच चुका था किन्तु उसे होटल की सही स्थिति जानने में दिक्कत आ रही थी, अनिकेत उसे फोन पर दिशा निर्देश दे रहा था।

“ देखते रहो, गाड़ी यही है लेकिन उसे होटल का लोकेशन नहीं मिल रहा, मैंने आसपास की जानकारी दे दी है।” अनिकेत ने दोनों से कहा। ठंड अत्यधिक थी इसलिए वे जैकेट्स वगैरह पहने हुए थे, किन्तु दस्ताने और कनटोप से अभी भी परहेज कर रखा था।

“गाड़ी बुक कर रखी है ? दूर जा रहे है क्या ? हरिद्वार-ऋषिकेश से बस वगैरह तो है दुनिया भर की फिर खुद की गाड़ी क्यों ?” मानव ने बजट का हिसाब लगाया।

“फिक्र न करो, यह सब बजट में शामिल है अपने, तीनों में डिवाइड करके भी ज्यादा नहीं होगा। वैसे भी उत्तराखंड के पहाड़ी और दुर्गम रास्तों में खुद की गाड़ी ही ज्यादा सुविधाजनक रहेगी बजाय बस के, बस वगैरह अपने नियत समय से ही चलेंगी लेकिन खुद की गाड़ी कभी भी कहीं भी किसी भी समय ले जा सकते है, इसलिए मुझे यही सही लगा।” कहते हुए अनिकेत की नजर अगले दोराहे पर खड़ी कार पर पड़ी। उसने नम्बर देखकर पहचान लिया।

“वह रही अपनी कार, चलो।” कहकर अनिकेत उस ओर बढ़ गया, ड्राइवर पैंतालीस से पचास के बीच का अधेड़ व्यक्ति था, अधगंजा सिर और अधपके बाल, मूंछे तक आधी सफ़ेद हो चुकी थी, जिसे किसी भी प्रकार के रंग रोगन से काला रखने से परहेज किया गया था। तीनों ड्राइवर के पास पहुंचे, अनिकेत ने उससे हाथ मिलाया।

“जी मैं अनिकेत! हरी भाई से बात हुई थी आपकी।” अनिकेत ने उसे याद दिलाया। ड्राइवर मुस्कराया और गाड़ी की डिक्की खोल दी जिससे वे अपना सामान उसमें रख सके, तीनों ने अपने रकसैक उसमें रखे।

“आप लोग पन्द्रह मिनट बैठिये मैं कुछ सब्जी वगैरह खरीद कर लाता हूँ, हरी भाई ने कहा था आते समय लेते आना, क्योंकि वहाँ थोड़ी मुश्किल होगी।”ड्राइवर ने कहा तो अनिकेत ने सिर हिला कर अनुमति दे दी। तीनों अब पिछली सीट पर सवार हो चुके थे।

“चलो तो हम यहाँ अब अपने वीडियोज बनाते हैं।” कहते हुए मानव ने अपने मोबाइल का विडियो कैमरा ऑन करके उसका रुख तीनों की ओर किया।

“तो अब हम ऋषिकेश से अपने अगले गंतव्य की ओर निकल पड़े हैं, हमने अपनी इस ट्रिप के दौरान पहली यात्रा माँ वैष्णो देवी की थी, दूसरे सफर में हम दिल्ली घूमे, फिर हम आये ऋषिकेश और हरिद्वार, ऋषिकेश में विनय भाई के कहने पर रिवर राफ्टिंग की, इन्हें बंजी जम्पिंग भुला कर हमने शाम को हरिद्वार में गंगा आरती का लाभ उठाया और भयानक ठंड में भी गंगा स्नान करके पुण्य कमाया। दो ट्रिप समाप्त हो चुकी है, मेरी और विनय भाई की योजना समाप्त हुई, अब इस क्षण से अनिकेत भाई की रहस्यमय ट्रिप आरम्भ होती है, जिसे उन्होंने अब तक रहस्य के पर्दे में रखा हुआ है। लगे हाथों उन्हीं से पूछ लेते है।” कहकर मानव ने कैमरे का रुख अनिकेत की ओर कर दिया।

“फिलहाल तो मैं यही कहूंगा कि धैर्य रखें, हम जहां भी जा रहे हैं वह निःसंदेह बहुत बढ़िया और यादगार जगह होगी। फ़िलहाल इस सफर और रास्तों का आनंद लीजिये।” अनिकेत कैमरे की ओर देखकर मुस्कराया।

तब तक ड्राइवर सब्जियां लेकर पहुँच गया था और अपनी ड्राइविंग सीट पर काबिज भी हो चुका था। ड्राइवर ने कैमरे की ओर देखकर मुस्कुराहट दिखाई।

“ये है हमारे ड्राइवर जी, अर्थात हमारे मार्गदर्शक जिनका नाम हमें अब तक नहीं पता।” मानव ने कैमरा ड्राइवर की ओर मोड़ा।

“नारायण !” ड्राइवर ने शर्माते हुए कहा।

“तो हमारे मार्गदर्शक है नारायण जी ! तो उन्होंने अब इंजिन स्टार्ट कर दिया है, गाड़ी घुरघुरा रही है, धड़कते दिलों से हम अपनी यात्रा का आरंभ कर रहे हैं, आरंभ से पहले हम एक साथ माँ गंगा और महादेव का स्मरण करेंगे।” मानव ने दोनों की ओर देखा।

“हर हर महादेव ! जय माँ गंगे।” तीनों ने एक साथ जयघोष किया, ड्राइवर ने भी बारीक आवाज में अपना योगदान दिया और गाड़ी चल पड़ी। मानव ने मोबाइल बंद कर दिया।

❑❑❑

गाड़ी ऋषिकेश छोड़ कर अब पहाड़ी रास्तों पर दौड़ी जा रही थी, जल्द ही घुमावदार रास्ते आरंभ हो गए। मार्ग संकरा और धुल मिट्टी से युक्त था, किसी प्रकार का निर्माण हो रहा था, जिस कारण सम्पूर्ण रास्ता उबड़ खाबड़ और धुल मिट्टी से सना हुआ था। तीनों ने उड़ती धुल को देखते हुए गाड़ी के शीशे चढ़ा लिए। गाड़ी पहाड़ी रास्ते पर दौड़ रही थी, एक ओर ऊँची पहाड़ियां तो दूसरी ओर खाई में स्थित गंगा नदी का बहाव, मध्य में संकरा रास्ता, यह मार्ग तीनों को रोमांचित करने के लिए पर्याप्त था।

“हम कब तक पहुँच जायेंगे नारायण जी ?” अनिकेत ने चालक से प्रश्न किया।

“अभी दिन के ग्यारह बजने को है, उम्मीद करता हूँ ग्यारह घंटों में पहुँच जायेंगे।” चालक ने यूँ कहा मानो ग्यारह मिनट की ही बात हो।

“ग्यारह घंटे ?” तीनों अपनी सीट से लगभग उछल ही पड़े।

“भाई ऐसी कौन सी जगह जा रहे है हम ? उत्तराखंड छोड़ कर बाई रोड हिमाचल की ओर तो नहीं जा रहे हम ?” विनय ग्यारह घंटे सुनकर ही घबरा गया था। उसे दिल्ली से हरिद्वार तक का थकाऊ और उकताहट भरा सफ़र याद आ गया। वही हाल मानव का भी था।

“भाई दिल्ली से हरिद्वार तक कम से कम स्लीपर तो था, उठते-बैठते-लेटते हम पहुँच गए थे, लेकिन गाड़ी में लगातार ग्यारह घंटे बैठना कुछ ज्यादा ना हो जाएगा ? पीछे की हड्डियां अकड़ जायेंगी भाई।” मानव बोला।

“लेकिन नारायण जी! जहां तक मैं जानता हूँ, जहां हम जा रहे है वहां का ऋषिकेश से लगभग दो सौ किलोमीटर का ही तो अंतर है? यदि गाड़ी पचास किलोमीटर प्रतिघंटे के हिसाब से भी चली तो हम चार या ज्यादा से ज्यादा छह घंटे में पहुँच जाने चाहिए। फिर ग्यारह घंटे का हिसाब कैसे ?” अनिकेत हड़बड़ा गया था, उसका सम्पूर्ण गणित बिगड़ गया था, वैसे भी यात्रा के आरंभ से ही समीकरण बिगड़ते आये थे।

“सर! उत्तराखंड के रास्तों के बारे में आप शायद नहीं जानते, इन पहाड़ी दर्रों में गाड़ियां तीस किलोमीटर प्रति घंटे के हिसाब से ही चलती है, लेकिन अब चूंकि रोड कटिंग भी जारी है तो इस वजह से बीस किलोमीटर प्रति घंटा भी चल जाए तो खैरियत है।” ड्राइवर ने कहा।

“रोड कटिंग क्या बला है ?” विनय ने कुतूहल वश प्रश्न किया।

“चार धाम परियोजना चल रही है यहाँ, आप सड़क के किनारे पोस्टर देख सकते है, कई हजार करोड़ का प्रोजेक्ट है जी, यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ के दुर्गम मार्ग को चौड़ा और मजबूत किया जा रहा है, पहाड़ी सड़कें जोखिम भरी है, ज़रा सी लापरवाही और गाड़ी सीधे सैकड़ों फीट गहरी खाई में जा गिरेगी, हर हफ्ते कोई न कोई गाड़ी खाई में जा गिरने से अनेक लोग मारे जाते हैं। सड़कों को कई लेन बढ़ा कर मजबूत और चौड़ा किया जा रहा है। बरसात और सामान्य दिनों में भी कई बार पहाड़ियां धसक जाती है जिस कारण जान माल की हानि होती है, इन पहाड़ीयों और सड़क के मध्य मजबूत अवरोधक खड़े किये जा रहे है, पहाड़ों के कारण रास्ते दुर्गम और लंबे है, तो अनेक पहाड़ियों को खोद कर सुरंगो का निर्माण किया जा रहा है, सड़कों के दोनों ओर स्थानक, दुकानें और अन्य सुविधाओं का निर्माण किया जा रहा है। इतना तो मैं जानता ही हूँ कि इस प्रोजेक्ट के पश्चात यहाँ काफी कुछ सरल हो जायेगा और रोजगार के अवसर भी बढ़ जायेंगे। रात के आठ बजे के बाद दुर्घटनाओं का जोखिम देखते हुए प्राइवेट गाड़ियों की आवाजाही इन मार्गों पर बंद कर दी जाती है, जिस वजह से भी कई लोग फंस जाते है, यह प्रोजेक्ट होने के बाद ऐसा होना बंद हो जायेगा और रास्ता भी सुगम हो जायेगा एवं चारों धाम की दूरी भी बहुत कम और सरल हो जाएगी।” नारायण ने धाराप्रवाह कहना जारी रखा।

“कुछ दिनों तक तकलीफ होगी, लेकिन यह जरुरी है। सर्दियों में अनेक रास्ते और गाँव बर्फ बारी से प्रतिवर्ष बाकी दुनिया से कट जाते है, इस योजना के कारण ऐसे अवरोध कम हो जायेंगे और उन गाँवों में विकास के साथ साथ रोजगार भी बढ़ेगा और पलायन भी कम होगा।” नारायण सांस लेने के लिए रुका।

तीनों हतप्रभ से उसे सुनते जा रहे थे। कहीं वह फिर से ना बोल पड़े इसलिए अनिकेत ने उसका ध्यान बंटाना ही उचित समझा।

“वह गाड़ी के डैशबोर्ड पर जो कंटीली टहनी रखी है, वह कोई विशेष टहनी है क्या ?” अनिकेत उस टहनी को गाड़ी में बैठते ही देख चुका था और उसकी विशेषता जानने का इच्छुक था।

“यह ‘पेमरु’ की लकड़ी है साहब।” नारायण ने नाम बताया।

“पेमरु में कुछ ख़ास बात है क्या ? शायद कुछ शुभ वगैरह होने जैसी बात ?” विनय ने अंदाजा लगाया।

“जी बिलकुल सही पहचाना सर। दरअसल महादेव के पास एक दंड होता है जो इसी लकड़ी का बना होता है, इसलिए इसे शुभ माना जाता है, यह केवल इन्हीं क्षेत्रों में पाया जाता है, किंवदंतियों के अनुसार जहां महादेव वास करते है अथवा जहाँ उनका परिवेश है यह वृक्ष वहीं उगता है।” नारायण ने सविस्तार से जानकारी प्रदान की।

“हम जहाँ जा रहे है क्या वहां यह लकड़ी मिलेगी ? हम यादगार के लिए इसे अपने पास रखना चाहेंगे।” अनिकेत ने कहा।

“हाँ ! मैं ले आऊंगा आपके लिए , आप बेफिक्र रहिये।” नारायण की नजरें मार्ग पर ही स्थित थी। गाड़ी खतरनाक और अंधे मोड़ो पर चढ़ी जा रही थी, तीनों स्पष्ट महसूस कर रहे थे कि वे जैसे जैसे आगे बढ़ रहे है, मार्ग और उंचा होता जा रहा है, क्योंकि सड़क के किनारे वाली खाई वैसे वैसे और गहरी होती जा रही थी, कुछ देर बाद ही उन्हें गाड़ी के पीछे पहाड़ों

की श्रृंखलाएं दिखनी प्रारम्भ हो गई, वे समझ गए थे उनकी गाड़ी इन पहाड़ों को पार कर चुकी है, और आगे का सम्पूर्ण मार्ग इन्हीं पहाड़ियों पर बना हुआ है जो उंचा ही होता जायेगा। कुछ देर पश्चात उन्हें भव्य पहाड़ियाँ चारों ओर से घेरे हुए थी। बेहद ही अद्भुत मार्ग था वह, पहाड़ों की उंचाई, खाई और उसमें बहती साफ़ स्वच्छ गंगा। गंगा तट के शुभ्र रेतीले किनारे उन्हें स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। इससे सुंदर दृश्य उन्होंने शायद ही कभी देखा था। मानव ने बाकायदा इस दृश्य को मोबाइल कैमरे से फिल्माना आरंभ कर दिया, वह कोई भी पल छोड़ना नहीं चाहता था।

“अब हम अनिकेत भाई की ट्रिप पर निकल चुके हैं, हमें ऋषिकेश छोड़े लगभग डेढ़ घंटे हो चुके है, हम भयंकर घुमावदार रास्तों पर आगे बढ़ रहे हैं, काफी अंधे मोड़ है यहाँ, लगता है मानो हर मोड़ पर किसी ना किसी गाड़ी से भिडंत हो ही जाएगी। यह भय इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि सरकारी बसें हर प्रकार की गति अवरोध और नियमों को तोड़ते हुए अंधाधुंध गति से भागी चली जा रही है, जबकि मोड़ अत्यधिक कटीले और संकरे है, एक सेकण्ड की चूक और सब खत्म।” मानव ने कहना जारी रखा, उसी समय एक अंधे मोड़ पर द्रुत गति से आती रोडवेज से वे ज़रा सा छूते हुए निकले, रोडवेज धुआंधार गति से आगे बढ़ गई किन्तु तीनों की सांस अटक गई।

“अरे @#$, साले चू@#$! ये रोडवेज वाले तो एकदम अंधे जैसे बस चलाते है, इसलिए हर हफ्ते खाई में पड़े रहते है। खुद तो मरते है साथ में यात्रियों को भी ले मरते है साले।” नारायण ने गाली बकते हुए कहा।

“ऐसे दृश्य यहाँ आम है, कुछ नहीं कर सकते। हम अपनी ओर से नियमों के अनुसार ही चलेंगे। खैर आते है रास्तों पर, तो ऋषिकेश छोड़ने के पश्चात ही ऐसा लग रहा है मानो हम जमीन से उंचाई की ओर बढ़ते जा रहे हैं, रास्ते ऊँचे होते जा रहे हैं, पीछे मुड़कर देखने पर ही पता चल रहा है की हम दो तीन पहाड़ियों को पार कर चुके है और आगे भी पहाड़ियों की अनंत श्रृंखलाएं दिखाई दे रही है। सब एक से बढ़कर एक ऊँची-ऊँची पहाड़ियां, अनिकेत और विनय भाई का तो नहीं जानता किन्तु मैंने अपने जीवन में इतनी ऊँची पहाड़ियां और इतनी गहरी खाई कभी नहीं देखी, बहुत जबरदस्त अनुभव है यह, हमारे रोंगटे से खड़े हुए जा रहे है और गजब का दृश्य मैं दिखाता हूँ..” कहते हुए मानव ने मोबाइल का रुख सड़क के दूसरे किनारे की ओर किया जहां गंगा नदी का नीला प्रवाह पहाड़ों के मध्य से होते हुए बह रहा था।

“यह देखिये, माँ गंगा का स्वच्छ और निर्मल प्रवाह ! यह दृश्य वाकई कमाल का है, इसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता, यह अनुभव करने की चीज है, इसीलिए मैं इसे वीडियो के जरिये समेट रहा हूँ। हरे भरे जंगलों से आच्छादित पहाड़ियों के मध्य कल कल बहती नीली और हरी छटा लिए गंगा और उसके स्वच्छ सफ़ेद शुभ्र रेतीले तट से लेकर पथरीले किनारे और उनसे टकराकर उफनती सफ़ेद लहरें, सब कुछ कितना स्पष्ट दिखाई दे रहा है, एकदम स्वप्निला दृश्य है यह, हम तीनों मंत्रमुग्ध से है, लेकिन अनिकेत भाई अब भी अपना रहस्य बरकरार रखे हुए है, वे मंद मंद मुस्करा रहे है, रास्तों का मजा ले रहे है लेकिन अब भी नहीं बता रहे कि हम कहाँ जा रहे हैं। तो अनिकेत भाई आप कैसा महसूस कर रहे हैं ?” मानव मुस्कराया।

“हम लगभग पौने दो घंटे से गाड़ी में है, नारायण जी ने ग्यारह घंटे की बात करके एकदम से हताश ही कर दिया था, किन्तु इन सुंदर दृश्यों को देखकर लग रहा है जैसे यह मार्ग कभी

समाप्त ही ना हो और हम इन्हीं वादियों में घूमते रहे और इस दिव्य वातावरण का आनंद उठाते रहे।” अनिकेत ने कहा।

“अनिकेत भाई, यह आप ज्यादा बोल गए। ऐसा मत सोचो भाई, ग्यारह घंटे बहुत होते है।” विनय हंसते हुए बोला। मानव ने अपना कैमरा बंद किया।

अनिकेत सड़क पर लगे पथप्रदर्शक देख रहा था, जहाँ विभिन्न स्थानों के अंतर दर्शाए गए थे।

“नारायण जी ‘देवप्रयाग’ पर गाड़ी रोक दीजियेगा।” अनिकेत नेचालक को संबोधित किया।

“अभी हमें लगभग दो घंटे और लगेंगे देवप्रयाग पहुँचने में, निश्चिंत रहिये वहां रोक दूंगा।” नारायण ने गाड़ी धीमी कर दी, आगे गाड़ियों की कतार लगी हुई थी। सड़क का काम चल रहा था, बड़े बड़े हाइड्रोलिक यंत्रो द्वारा मिट्टी और पत्थर मालवाहक वाहनों में भरे जा रहे थे। जब तक वाहन भर कर निकल नहीं जाते तब तक मार्ग बंद रहना था। मालवाहक भरने में लगभग पन्द्रह मिनट तो लगने थे।

“साहब यही है रोड कटिंग ! सड़क चौड़ी करने के लिए पहाड़ खोदे जा रहे है, जिससे गिरी मिट्टी और मलबा भरने के लिए सड़क कुछ देर के लिए बंद रहती है, हम हर कुछ किलोमीटर पर इस का सामना करने वाले है, ग्यारह घंटे इसी व्यधान को जोड़कर होते है।” नारायण ने जानकारी दी। फिलहाल तीनों के पास गाड़ी में बैठे रहने के अलावा और कोई चारा भी नहीं था।

“अनिकेत भाई ! यह देवप्रयाग क्या है ?” विनय ने प्रश्न किया।

“देवप्रयाग से ही माँ गंगा का नामकरण ‘गंगा’ पड़ता है। उसके पहले वह अनेक धाराओं में विभाजित रहती है।” अनिकेत ने कहा। दोनों का मुंह खुला का खुला रह गया, एक प्रकार से वे गंगा का आरंभ देखने वाले थे, इस ख्याल ने ही उन्हें रोमांचित कर दिया था। मानव ने फौरन मोबाइल पर देवप्रयाग सर्च करना चाहा किन्तु अफ़सोस यहाँ उसका नेटवर्क ही नहीं था। अब वह केवल पहुँचने का इंतज़ार ही कर सकता था।

□□□

लगभग साढ़े चार बजे के आसपास वे देवप्रयाग क्षेत्र पहुंचे। रास्तों के मोड़ से ही वह अद्भुत दृश्य दिखाई देने लगा था, दूर से ही दो विभिन्न नदियों का संगम दिखाई दे रहा था। मानव और विनय उस दृश्य को मुंह फाड़े देख रहे थे, किन्तु मार्ग के मोड़ के कारण दृश्य अभी स्पष्ट नहीं था। कुछ मिनटों पश्चात ड्राइवर ने कार सड़क के किनारे सुरक्षित अंतर पर खड़ी कर दी।

“साहब यहाँ से व्यू पॉइंट है, सैलानी और श्रद्धालु यहीं से तस्वीरें खिंचवाते है, आप यहाँ से देख लीजिये फिर हम घाट पर भी चलेंगे जिसके लिए आगे जाकर एक मोड़ लेना पड़ेगा।” नारायण ने उन्हें बताया। तीनों बगैर समय व्यर्थ किये गाड़ी से बाहर निकले और रास्ते के दूसरे छोर की ओर बढ़े, रास्ते के किनारे बैरिकेड लगे हुए थे, इस समय वे पहाड़ी रास्ते पर थे और नदी नीचे स्थित खाई में बह रही थी। हवा काफी तेज चल रही थी, इतनी उंचाई से भी बहती नदी की कलकल और हवा का स्वर स्पष्ट सुनाई दे रहा था, वे सड़क पार करके बैरिकेड्स पर पहुंचे, इस समय वहाँ उनके अलावा और कोई भी नहीं था, बीच में एक्का दुक्का वाहन भले ही सड़क से गुजर रहे थे।

वे एकदम किनारे पर खड़े थे, उनके सामने दो विशालकाय पहाड़ियों के मध्य से गहरी नीली नदी बहती हुई स्पष्ट दिखाई दे रही थी, दूसरे पहाड़ पर इमारतों का एक जाल सा बना हुआ था, इमारतों की सधी हुई बनावट और खुशनुमा रंग अलग ही छटा प्रदान कर रहे थे, हल्के नीले, गुलाबी, पीले, मटमैले और सफ़ेद रंगो की अनेक इमारतें उस स्थान की बनावट को आकर्षक बनाती थी, शाम की हल्की धूप में वह स्थान सोने की भांति दमक रहा था। पहाड़ी के निचले हिस्से में इमारतों और भवनों के झुण्ड के मध्य सबसे निचले भाग पर हल्के गुलाबी रंग का आकर्षक घाट बना हुआ था, वह घाट तिकोना था, उसके अग्रभाग को दो विभिन्न नदिया छु रही थी, अर्थात वह संगम का अग्रभाग था।

एक नदी सड़क की सीधी दिशा से आ कर सामने वाले पहाड़ों के मध्य से बहती दूसरी नदी से इसी तिकोने घाट पर आकर मिल रही थी, दोनों नदियों के पानी का अलग रंग स्पष्ट देखा जा सकता था, एक गहरा नीला था तो दूसरा हरी रंगत लिए हुए था, दोनों नदियाँ वहां मिलकर एक विशालकाय नदी में परिवर्तित हो रही थी, किन्तु कुछ अंतर तक एक बहाव होने के पश्चात भी दोनों रंगो का पानी स्पष्ट देखा जा सकता था। मानव और विनय का मुंह खुला का खुला रह गया, वैसे तो यहाँ आने की योजना अनिकेत ने बनाई थी किन्तु वह भी यहाँ पहली बार ही आया था, उसके मुख पर भी आश्चर्य के भाव थे, वह तस्वीरों में इस स्थान को देख चुका था किन्तु असलियत में यह स्थान उसकी कल्पना से भी कहीं अधिक सुंदर और दिव्य प्रतीत हो रहा था। तीनों उस दृश्य को खामोशी से निहारते रहे।

“यह स्थान समुद्रतल से लगभग सत्ताईस सौ फीट से अधिक उंचाई पर स्थित है, मान्यताओं के अनुसार यहाँ श्री राम के पिता दशरथ जी ने तप किया था, श्री राम जी ने भी इस स्थान पर तप किया था, ये दो नदियाँ देख रहे हो ना ? एक भागीरथी है और दूसरी अलकनंदा, इन दोनों का जो सम्मिलित संगम है वह कहलाता है ‘गंगा’ तो कह सकते है की यह गंगा का नामकरण स्थल है, भगवान श्री राम रावण वध के पश्चात यहाँ आये थे और तपस्या की थी, कहते हैं उन्होंने अपने माता पिता का तर्पण भी यहीं किया था, इसी स्थान पर देव शर्मा नामक भक्त ने विष्णु जी की तपस्या की थी, भगवान विष्णु ने उन्हें दर्शन दिए जिसके पश्चात इस स्थान को उनके नाम पर देवप्रयाग माना गया। प्रयाग अर्थात जहाँ दो नदियों का संगम हो, हमारे धार्मिक मान्यताओं के अनुसार पांच प्रयाग माने गए है, जिनमें बाकी के प्रयाग विष्णु प्रयाग, रुद्र प्रयाग, नंद प्रयाग और कर्ण प्रयाग हैं।” अनिकेत ने उस दृश्य को निहारते हुए जानकारी दी, वहां से उठती ठंडी हवाएं उसका रोम रोम सिहरा रही थी, सम्पूर्ण अस्तित्व एक विचित्र सी भावना का अनुभव कर रहा था जिसे वह शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता था।

“वाह ! वैसे अगर आप इसकी महत्ता नहीं भी बताते तो भी इसकी दिव्यता में कोई फर्क नहीं पड़ता।” विनय ने कहा।

“अभी और सुनो, जब श्री राम के पूर्वज राजा भागीरथ ने गंगा का आव्हान किया तब गंगा के साथ तैतीस कोटि देवता भी उतरे जो इसी स्थान पर अवतरित हुए थे, इसलिए इस स्थान को देवताओं का निवास भी कहा जाता है। वो जो थोड़ा सा मटमैला पानी देख रहे हो ना वह भागीरथी है और जो स्वच्छ और गहरा नीला पानी देख रहे हो वह है अलकनंदा, भागीरथी गोमुख से निकलती है और अलकनंदा बदरीनाथ की ओर से आती है, किन्तु दोनों यहाँ मिलकर गंगा में बदल जाती है।” अनिकेत ने पूर्ण श्रद्धा से हाथ जोड़ लिए।

“जब गंगा जी धरा पर अवतरित हुई तब उनका वेग अत्यधिक होने के कारण महादेव ने उन्हें अपनी जटाओं में धारण किया था, जिस कारण वे अनेक धाराओं में बंट गई, यह सभी धाराएं अलकनंदा और भागीरथी में मिलती हुई आखिरकार इस संगम पर एक हो कर गंगा कहलाती है। यहाँ एक रघुनाथ जी का मंदिर भी है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह दस हजार वर्ष पुराना है। चलो यहाँ से जी भर कर देख लो और घाट पर चलो, समय बेहद कम है और सफर लम्बा है। मानव भाई आप शायद फिल्माना भूल रहे है।” अनिकेत ने हंसते हुए मानव को याद दिलाया। मानव ने हड़बड़ा कर मोबाइल निकाला और अपनी अपनी कमेंट्री के साथ रिकार्डिंग शुरु कर दी। कुछ तस्वीरें खिंचवाने के पश्चात वे पुन: गाड़ी में थे, चालक उन्हें घाट की ओर ले जा रहा था।

“शाम हो रही है, आठ बजे के पहले हमें चेक पोस्ट पार करने होंगे नहीं तो हमें जहाँ है वही रोक दिया जायेगा और सुबह ही छोड़ा जाएगा, इसलिए घाट पर ज्यादा समय ना बिताये तो बेहतर, हम वापसी में घाट पर इत्मीनान से समय व्यतीत करेंगे।” चालक ने सुझाव दिया, उसकी बात सही भी थी।

वे कुछ ही देर के सफर के पश्चात अब घाट की सीढ़ियों पर थे, पानी जितना ऊपर से स्वच्छ दिखाई दे रहा था, उससे कही ज्यादा स्वच्छ यहाँ से दिख रहा था, वे घाट की सीढ़ियों से नंगे पैर उतरते हुए पानी में उतरे, दोनों नदियों को अपने सामने मिलते देखने का अनुभव अद्भुत था, कानों में बस नदी की धारा का कलकल संगीत और वातावरण पानी तथा मिट्टी की अलग ही गंध तैर रही थी, सब कुछ इतना दिव्य और सुंदर था कि उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वे जो देख रहे है वह सच है। मानव अब भी फिल्मा रहा था।

“अब हम देवप्रयाग के संगम घाट पर है, यहाँ दो पौराणिक नदियाँ मिलकर माँ गंगा का स्वरुप ले रही है और हम इसके साक्षी बन रहे है, वाकई में यह बेहद दिव्य अनुभव है और मैं इस समय अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने के लिए खुद को असमर्थ पाता हूँ, हमने कुछ बोतलें अपने साथ लाई हुई हैं, जिसमें हम इस संगम का पानी यादगार और श्रद्धा चिन्ह के तौर पर ले जाने वाले है। हर हर गंगे।” मानव ने जयघोष किया, अनिकेत और विनय ने उसका साथ दिया और वे उन सीढ़ियों पर टखने तक पानी में खड़े उस स्पर्श का अनुभव करते रहें। समय की कमतरता थी इसलिए उन्हें ना चाहते हुए भी निकलना था, पहाड़ों में वैसे भी अँधेरा जल्दी हो जाता है। वे मन ही मन माँ गंगा का स्मरण करते हुए पुन: अपनी गाड़ी में जा पहुंचे। गाड़ी अपने फिर से उन घुमावदार ऊँचे रास्तों पर बढ़ चली। अनिकेत अब भी उस दृश्य में खोया हुआ सा था, उसके पास शब्द ही नहीं थे।कुछ देर पश्चात ही मानव गाड़ी से बाहर देखते हुए लगभग चीखा।

“अरे वह देखो भाई लोग, अनगिनत पहाड़ों के मध्य दूर कहीं सफ़ेद सा पहाड़ दिखाई दे रहा है, क्या दृश्य है भाई ? वह पहाड़ बर्फाच्छादित है, पूर्णतया बर्फ से ढंका हुआ और यहाँ तक दिखाई दे रहा है।” मानव सड़क की दूसरी ओर दिखाई देते अनगिनत पहाड़ों के मध्य दूर कही दिखाई देती सफ़ेद पर्वत श्रृंखलाओं को देखकर हर्षातिरेक में चीखते हुए कहा। अनिकेत ने एक नजर उस दृश्य को देखा और मुस्करा कर रह गया। उसके मन में कुछ चल रहा था, वह बेचैनी सी महसूस कर रहा था।

“क्या हुआ अनिकेत भाई ? आप बेचैन से लग रहे हो।” विनय ने उसे मचलते देख कर प्रश्न किया।

“हम लगातार उंचाई की ओर बढ़ते जा रहे है, अनेक पहाड़ों को पार करते हुए आगे बढ़ रहे है तो ऐसे में उंचाई से बेचैनी इत्यादि होना सामान्य बात है।” मानव ने तर्क दिया और पुन: उस दृश्य को देखने लगा। बीच बीच में नदी का बहाव, जंगल, पहाड़ों पर स्थित छोटे बड़े नगर, गाँव इत्यादि आकर्षक दृश्य भी दिखाई दे जाते।

“आप दोनों ने अपने अपने बारे में मुझे बताया, अब चूंकि हमारा सफर काफी लम्बा है, हम नौ दस बजे से पहले नहीं पहुँचने वाले, तो मेरा मन चाहता है कि मैं अपने बारे में भी कुछ बताऊँ, आप लोगों से कुछ बांटूं।” अनिकेत ने धीमे से कहा, मानव ने फौरन अपनी नजरें खिड़की से हटा कर अनिकेत पर स्थिर कर दी। अनिकेत ने उनकी ओर देखा, दोनों उत्सुक से नजर आ रहे थे।

□□□

Book
House1
चैनल जॉइन करने के लिए telegram
डाउनलोड करने के बाद सर्च में
@BOOKHOUSE1 लिखे और सर्च करे

https://t.me/bookhouse1

अनिकेत और कोमल

कोमल अस्तव्यस्त पड़े घर को संवार चुकी थी, अनिकेत के हफ्ते भर के कपड़ों को धोकर टांग दिया था। अब वह किचन में कुछ बनाना चाह रही थी, लेकिन किचन में कुछ भी बनाने लायक सामान उपलब्ध नहीं था। वह थोड़ी झुंझलाई और बाहर आई, उसके माथे पर पसीने की बूंदें दमक रही थी। अनिकेत को इतना भी ख्याल नहीं आया कि वह कम से कम पंखा ही चालू कर देता, वह अब तक बिना शर्ट के ही बैठा हुआ था।

“चलो अब आप नहा लो।” कोमल ने अनिकेत पर तौलिया फेंकते हुए कहा।

“घर में तो राशन का आधा अधूरा सामान है, कुछ भी ढंग का नहीं बना सकते यहाँ तो, मैंने पास के रेस्टोरेंट से खाने का ऑर्डर कर दिया है। अब आप जल्दी जल्दी नहा कर रेडी हो जाओ, उठो! नहीं तो यह काम भी मुझे ही करना होगा।” कोमल ने कमर पर हाथ रखकर हुक्म देते हुए कहा तो उससे नजरें चुराते हुए अनिकेत उठ खड़ा हुआ, वह वाशरुम की ओर बढ़ा लेकिन कुछ याद आते ही पलटा और कोमल की ओर बढ़ा, कोमल अनिकेत को इस प्रकार अपनी ओर आते देखकर थोड़ी सकुचाई, कोमल की पीछे ही दीवार पर पंखे का स्विच था, अनिकेत ने वह स्विच दबा कर पंखा ऑन किया। कोमल मुस्करा कर रह गई। वापस जाते हुए अनिकेत ने उसके माथे पर झिलमिलाते पसीने को अपनी हथेली से पोंछा तो कोमल थोड़ी सकपका सी गई। अनिकेत बिना कुछ बोले सीधे वाशरुम में चला गया।

कोमल का मन अनिकेत के इस अपनत्व भरे स्पर्श को पाकर हर्षित हो गया, यह कोई नई बात नहीं थी। कोमल और अनिकेत का रिश्ता सदैव से ऐसा ही रहा था, अनिकेत उसकी हद से ज्यादा फिक्र करता था। कोमल जानती थी कि अनिकेत उसके लापरवाह और उद्दंड व्यवहार से चिंतित रहता है, इसलिए जाने अनजाने वह उसकी बेहद परवाह करता है, मीरा दोनों के इस रिश्ते की नजरें उतारते नहीं थकती थी। उसे कोमल का अनिकेत के साथ घुलना मिलना बिलकुल भी बुरा नहीं लगता था। अनिकेत शर्मिला व्यक्ति था, मीरा के पश्चात कोमल ही वह पहली लड़की और संभवतः पहली रिश्तेदार थी जिससे वह स्वयं इतना जुड़ा हुआ महसूस करता था। इतने सालों में कोमल इस अपनत्व के लिए मानो तरस गई थी, वह सख्त और अपने मूल्यों पर अडिग अवश्य थी किन्तु आखिरकार उसमें एक स्त्री का हृदय था जो सदैव प्रेम का, अपनत्व का अभिलाषी था। उसे यह अपनत्व, प्रेम और दुलार अनिकेत और मीरा से ही मिलता था। शादी के कड़वे अनुभव ने उसे भावनाविहीन बना दिया था।

शादी के पहले उपजी कड़वाहट के कारण अनिकेत और मीरा का रिश्ता सदैव के लिये बदल गया था, कोमल को यह बिलकुल भी पसंद नहीं था कि कोई उसे जज करें, उसके बारे में कोई धारणा बनाये, उसके निर्णयों को कोई गलत ठहराए। अनिकेत ने यही किया था। वरुण से बढ़ती मुलाकातों और उन मुलाकातों से उपजे प्यार के बारे में उसने सबसे पहले यदि किसी को बताया था तो वह अनिकेत ही था। अनिकेत को तब पहली बार पता नहीं क्यों अजीब सा लगा, उसने एक विचित्र सी भावना को अपने भीतर महसूस किया। उसने किसी प्रकार से वरुण के बारे में जानकारी एकत्रित की और उसे पता चला कि वह एक तलाकशुदा व्यक्ति है और तलाक का कारण उसका आक्रामक और संकुचित बर्ताव था।

उसने समय रहते कोमल को इस विषय में चेताया, लेकिन वह अड़ गई, वह वरुण के लिए सपने सजा चुकी थी और उसने उसका जो स्वरुप सोच लिया था वह उस स्वरुप से कतई समझौता नहीं करना चाहती थी। अनिकेत ने उसे अनेकों बार समझाने का प्रयत्न किया किन्तु

कोमल को ना सुनना था और ना उसने सुना। अनिकेत उसे अपने सामने बर्बाद होता नहीं देख सकता था किन्तु वह विवश था, उसने मीरा से यह बात बताई लेकिन मीरा के समझाने पर भी कोमल के कानों पर जू तक नहीं रेंगी। मीरा ने अनिकेत को कोमल के करीब रहने के लिए कहा, वह नहीं चाहता था किसी तीसरे के कारण उनका यह अपनत्व वाला रिश्ता खराब हो। लेकिन शुरुआत हो चुकी थी। धीरे-धीरे कोमल पूरी तरह से वरुण को समय देने लगी, जहाँ पहले मीरा,अनिकेत के बगैर वह कही नहीं जाती थी, अब उन्हें याद भी मुश्किल से करती थी। पहले वह अपनी हर छोटी बड़ी बात, अपनी हर ख़ुशी अनिकेत से बाँटती थी, हर मौके बेमौके फोन किया करती थी, महीने में दो बार मिलना भी तय रहता था, वही सब वरुण के आते ही बदल गया था। कोमल जान चुकी थी कि अनिकेत वरुण को पसंद नहीं करता और वह कोमल और वरुण के रिश्ते से कुढ़ता है। अनिकेत के समझाने का उसपर कभी कोई असर नहीं हुआ, उलटे उसने अनिकेत को ही नजरंदाज करना शुरु कर दिया, जहाँ वह अनिकेत के रुप में एक सच्चे दोस्त को पाकर खुश हुआ करती थी, आज वही अनिकेत उसके लिए किसी बंधन के समान हो चुका था, जिस रिश्ते में उसे अपनापन मिला था, जिसके साथ रहकर वह मुसकुराती थी। अपने लिए अनिकेत की चिंता में जहाँ उसे अपनत्व का सुख मिलता था उसके निश्छल प्रेम का भाव दिखता था, जो अनिकेत कभी उसके लिए बेस्ट हुआ करता था, वही आज उसके लिए धीरे धीरे एक बेड़ी बन चुका था।

दोनों का रिश्ता पूर्णतया एक कच्चे धागे से बंधा हुआ था, धीरे-धीरे वह अपनापन कहीं गायब सा हो गया, किन्तु केवल एक ओर से। कोमल ने अनिकेत को महत्व देना कम कर दिया था, वह केवल औपचारिकता के लिए उनसे मिलती थी। अनिकेत इस कड़वाहट को भांप चुका था, उसे उसपर गुस्सा नहीं था। वह उसके स्वभाव को पहले ही जानता था, वह केवल उसकी चिंता करता था, उसे यकीन था की कोमल वरुण के साथ जाने के अपने निर्णय पर पछताएगी, लेकिन उसे अफ़सोस तब होगा जब वह सब कुछ खो चुकी होगी। अब अनिकेत के समझाने पर कोमल उससे भी झगड़ने लगी, उसने गुस्से में यहाँ तक कह दिया कि आप को मुझे बोलने का कोई हक नहीं है। यह शब्द अनिकेत के भीतर तक धंस चुके थे, बस इस एक पंक्ति से उसने वह सारे अधिकार गंवा दिए जो उसे कोमल ने दिए थे।

“ओह मैं कितनी गलत थी अनिकेत ! मैंने कभी आपका पक्ष जानने का प्रयास नहीं किया और ना ही मेरी फिक्र में छिपे आपके अपनत्व की कद्र की। आखिरकार वही हुआ जिसका अंदेशा आपने जताया था।” वाशरूम का दरवाजा खुलने की आवाज से कोमल यादों के भंवर से बाहर निकली। उसकी पलकें गीली हो चुकी थी और आंसू की एक लकीर उसके गालों से बहते हुए ठोड़ी तक जा पहुंची, जिसे उसने फौरन मिटा दिया, उसने एक नजर अनिकेत को देखा और अनिकेत ने उसे देखा। अनिकेत अब भी सकुचा रहा था। वह कुछ कहती तब तक दरवाजे की घंटी बज उठी।

“खाना आ गया लगता है, आप तैयार हो जाए मैं परोसती हूँ।” कहकर कोमल दरवाजे की ओर बढ़ गई। दरवाजे पर डिलीवरी बॉय मुसकुराते हुए खड़ा था इससे पहले की अनिकेत पेमेंट करता कोमल ने ही पिज्जा डिलीवरी बॉय को पेमेंट कर दिया। अनिकेत, उसे पेमेंट करता देख स्थिर रहा। कोमल ने पिज्जा को करीने से टेबल पर सजाया।

नहीं! यह वह कोमल नहीं रही अब। वह तो हर मौके पर अनिकेत से पैसे खर्च करवाना अपना पूरा हक समझती थी, यहाँ तक कि बचे हुए खुले पैसे तक वह किसी बच्ची की तरह

अपने पास रख लेती, अनिकेत जानबूझकर कई मौके पर खुल्ले पैसे होने के बावजूद बंधे देता था और बदले में मिले खुल्ले पैसे पर जब कोमल अपना अधिकार जता लेती तो उसे उस अधिकार और मासूमियत में कोमल का अपनापन दिखाई देता था। उसका प्रेम झलकता था, हम हर किसी पर तो ऐसे हक नहीं जता सकते, वो तो कोई अपना ही होता है जिसपर हम अपना अधिकार समझते है, अनिकेत उसके इस अधिकार को सदैव बनाये रखना चाहता था, लेकिन आज कोमल स्वयं पेमेंट कर रही थी। समय के साथ चीजें बदल चुकी थी, और बदला था बहुत कुछ। कोमल ने अनिकेत को टेबल के सामने वाली कुर्सी पर बैठने का संकेत किया।

"मुझे तो बड़ी भूख लगी है, आप बैठ रहे हो या मैं शुरू करूँ?" कोमल ने बेसब्री दिखाई जो एकदम से बनावटी ही थी। अनिकेत मुस्कराया और कुर्सी पर बैठ गया, दोनों कुछ क्षणों तक निःशब्द से बैठे रहे, अनिकेत ने पिज्जा का एक टुकड़ा उठाया और मुंह में डाल लिया। आज उसे पता नहीं क्यों हमेशा से बेस्वाद लगने वाले इस पिज्जा में अलग ही स्वाद मिल रहा था। कोमल अनिकेत को पिज्जा खाते देखती रही, उसका निवाला मुंह तक जाने से पहले ही रुक गया, आँखों में आती नमी को उसने फौरन छुपा लिया।

अनिकेत आप ऐसे तो नहीं थे कभी। उसे याद था जब से वो अनिकेत को जानने लगी थी और जब से अनिकेत ने उसे अपने परिवार के रूप में स्वीकार किया और अपना माना तब से वह कुछ भी खाते या पीते रहे, यदि उस समय कोमल साथ होती तो पहला निवाला अपने हाथों से वह उसी को खिलाया करता था। अपनी ससुराल में खाना खाते समय कोमल भी पूरे हक से मीरा और अनिकेत की थाली के सामने बैठ जाती, मीरा और अनिकेत अपने हाथों से उसे खिलाया करते। लेकिन आज अनिकेत ने इतने वर्षों के पश्चात भी उसे निवाला नहीं खिलाया और ना ही ऐसा कोई उपक्रम किया। क्या अब हमारा रिश्ता केवल औपचारिकता भर रह गया था ? इसमें अनिकेत की भी कोई गलती नहीं थी, कोमल इसके लिए स्वयं जिम्मेदार थी।

उसने अपने जीवन में कभी अपने किसी काम के लिए पछतावा या अफ़सोस नहीं किया, लेकिन अनिकेत को अपने से अलग करने का उसे पछतावा हुआ और वह भी तब जब वरुण से उसका मोहभंग हुआ, जब उसे वरुण की असलियत पता चली, वही असलियत जो अनिकेत ने बताई थी, हर वह बात जिसके लिए अनिकेत ने चेताया था वह हर बात सच साबित हुई, कभी न टूटने वाली कोमल तिनका तिनका बिखरती रही, अपना रिश्ता बचाती रही, लेकिन कब तक ? आखिरकार विराम देना ही एक मात्र उपाय था, तब उसे अनिकेत का चेहरा दिखाई दिया, उसका वह दारुण मुख दिखाई दिया जो उसके कहे कड़वे शब्दों से कातर हो गया था।

"आप होते कौन हो मुझे बोलने वाले ? आप मेरी जिन्दगी में दखल अन्दाजी नहीं कर सकते, आपको यह अधिकार नहीं है।"

भले ही यह शब्द कोमल के मुंह से निकले थे लेकिन इसके पीछे कारण केवल वरुण ही था। वह वरुण के खिलाफ एक शब्द भी सुनना पसंद नहीं करती थी, अनिकेत भले ही उसकी कितनी भी फिक्र करता हो लेकिन वह उसे अपने और वरुण के बीच आता देख अपना आपा खो बैठी थी। अनिकेत इस वाकये के बाद कोमल से कटा रहने लगा, उसे इन शब्दों से बेहद ठेस लगी थी, वह जानता था यह केवल कोमल का क्षणिक क्रोध है, गुस्सा उतरते ही वह पुनः सामान्य हो जाएगी। लेकिन फिर भी कुछ ऐसा था जो पता नहीं क्यों अनिकेत के भीतर तक जा धंसा था। वह क्या था और क्यों था खुद अनिकेत ही नहीं जान पा रहा था।

उसे जब यह अहसास हुआ कि उसकी वजह से कोमल परेशान है तो वह अपने आप उसके रास्ते से हट गया, वह अपने आप को उसका दोस्त बने देखना चाहता था, परेशानी नहीं। वैसे भी कोमल ने उस दिन के बाद से खुद ही सम्पर्क करना कम कर दिया, वह न तो पहले की भांति मैसेज करती और ना ही फोन करती, यहाँ तक कि अनिकेत के जन्मदिन पर भी उसने शुभकामनाओं का मैसेज तक नहीं किया और ना ही अनिकेत ने ऐसा कोई प्रयास किया, दोनों को यह बात समान रुप से लगी। अनिकेत को कोमल के संदेश की उम्मीद थी और कोमल को अनिकेत की, एक दूसरे के पहल की प्रतीक्षा करते हुए किसी ने भी पहल नहीं की, नतीजतन उनके बीच दूरियाँ बढ़ती चली गई। अनिकेत समझ चुका था कि कोमल अपनों से अधिक दूसरों को महत्व देती है, उसे अपनों की विवशता से कोई लेना देना नहीं था, वह केवल अपनी खुशियाँ और अपने स्वार्थ में इस कदर अंधी हो गई थी कि उसे सही और गलत का कोई ध्यान ही नहीं रहा, आँख मूंदे वह वरुण के साथ चल दी। घरवाले जब राजी नहीं हुए तब आखिरकार उसने मीरा के बहाने अनिकेत से ही सहायता मांगी, उसने अनिकेत सीधे-सीधे सहायता न मांग कर मीरा से अपने और वरुण के रिश्ते के लिए घरवालों को मनाने के लिए दबाव बनाया, मीरा ने उसे लाख समझाया वरुण सही आदमी नहीं है, लेकिन कोमल पर मानो उसका भूत सा सवार था, कोमल सनक पन में कुछ कर न जाए इसलिए आखिरकार अनिकेत ने ही हार मान कर अपने सास ससुर को मना लिया।

किन्तु कोमल ने अनिकेत से झूठे मुंह भी धन्यवाद नहीं किया। कैसे कहती, उसका झूठा अहंकार उसके सामने सदैव की तरह दीवार बन कर खड़ा था। मीरा ने खुद उसे अकेले में इस बारे में कई बार समझाया भी कि एक बार अनिकेत से बात कर लो, कम से कम धन्यवाद ही कर दो, उनकी मध्यस्थता के बिना यह शादी कभी संभव नहीं हो पाती।

यह बात कोमल भी जानती थी इस शादी को करवाने के पीछे यदि कोई था तो वह केवल और केवल अनिकेत ही था। लेकिन उसने अपना अक्खड़ पन नहीं छोड़ा।

“उन्होंने मेरे लिए किया, अनिकेत से अगर पूछो तो वे खुद भी इसे मुझ पर कोई अहसान नहीं मानेंगे, इसके बजाये उन्होंने इसे मेरे प्रति अपना फर्ज समझ कर किया है और किसी की जिम्मेदारी और फर्ज के लिए थैंक्स या धन्यवाद नहीं किया जाता, मेरा हक है उनपर और उनका कर्तव्य है मेरी मदद करने का।” कोमल ने रुंधे गले से कहा, उसके लिए कमजोर दिखाई देना कितना मुश्किल था।

“कभी अपने भी फर्ज को समझ लिया करो कोमल। कभी दूसरों के लिए भी कुछ कर लिया करो, किसी का अहसानमंद होने में कोई बुराई नहीं है, वह भी तब जब आप वाकई उसके अहसान के तले दबे हो।” कहकर मीरा वहां से चली गई, काश मीरा कोमल की आँखों में तैरते तरल को देख पाती।

आखिरकार शादी का दिन भी आ गया, अनिकेत ने हर कड़वाहट भुला कर कोमल की शादी की तैयारियों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया, वह शायद समझ चुका था कि यह वह अंतिम क्षण है जिसमें कोमल उनके साथ है और वह यादों के सुनहरे पन्नों में सजा कर रखने लायक समय को केवल झूठी कड़वाहट में व्यर्थ नहीं कर सकता था। कोमल अनिकेत को शादी की तैयारियों में तल्लीन देखकर दंग रह जाती, न जाने कितनी बातें थी उसके मन में जो अधूरी रह गई थी।

“काश आपने वरुण को समझा होता अनिकेत, आपकी फिक्र मैं समझती हूँ, लेकिन आप मेरा नजरिया भी समझे होते कभी। मैं बच्ची नहीं हूँ, मैं भी अपना अच्छा बुरा समझती हूँ। कुछ सोच कर ही मैंने वरुण पर यकीन किया है, उम्मीद है आप जल्दी ही उसकी अच्छाइयों से वाकिफ हो जायेंगे, आप भोले है, आदमी की पहचान नहीं है आपमें अभी।”

कोमल अपने आप को समझाने के लिए अनेक बहाने बनाती, लेकिन उसका मन शादी की उमंग से उल्लसित था, आखिरकार वरुण और वह एक होने जा रहे थे, उसका सपना सच होने जा रहा था, वरुण को अपना जीवन साथी बनता देख वह ख़ुशी से फूली नहीं समा रही थी। उसकी ख़ुशी उसके चेहरे के निखार के रुप में छलक रही थी। वह अनेक बार चाहती कि उसकी इन खुशियों में अनिकेत भी शामिल हो, वह फिर से उसे छेड़े, उसके साथ बातें करें, कम से कम आखिरी बार ही सही अपने हाथों से उसके सर को सहलाये जैसा वह अक्सर किया करता था। तड़प तो अनिकेत में भी थी, लेकिन वह अब कटा रहने लगा, वह डरता था कहीं कोमल उसकी बातों का गलत मतलब न निकला ले और बेफिजूल में परेशान हो जाए।

इसके पहले अनिकेत ने कभी इस विषय में नहीं सोचा था, वह अपना प्रेम, दुलार दिखाने में कभी पीछे नहीं रहा और ना कभी उसने संकोच किया था।

उसका संकोच उस शब्द से बढ़ गया था “आपको मेरे निजी मामलों में दखल देने का कोई हक नहीं है, आप होते कौन है मेरे बारे में बोलने वाले।”

इन शब्दों ने उसके रिश्ते को फिर से एक औपचारिकता में और संकोच में बाँध दिया था, अब वह कोमल के सामने पड़ता भी तो शादी के बाद पहली बार जिस प्रकार संकोच किया करता था, उसी प्रकार बर्ताव करता था। कोमल यह बात अच्छे से समझ रही थी। आखिरकार शादी हो गई, विदाई का समय आया, माता-पिता, भाई और मीरा से गले लग कर कोमल की आँखें नम हो गई। अनिकेत मीरा की बगल में नजरें चुराए खड़ा रहा। कोमल को कुछ कचोट रहा था, एक अहसास उसे अंदर से खाये जा रहा था, कुछ बहुत ही अपना सा मानो पीछे छूट रहा था। उसे अपराधबोध सा होने लगा, उस क्षण उसका घमंड, उसका स्वार्थ सब मानो कहीं पीछे छूट गया, वह अनिकेत के समक्ष आकर ठिठक गयी, अनिकेत उसकी अवस्था भांप गया था, कैसे ना भांपता वह, खुद कोमल को ही अपने विषय में इतना नहीं पता था जितना अनिकेत ने उसे जान लिया था। अनिकेत ने दुल्हन के रुप में दमकती कोमल को डबडबाती आँखों से देखा, पता नहीं उसके मन में क्या आया के उसने मीरा की आँखों से काजल निकाल कर थरथराते हाथों से कोमल के माथे पर टीका लगा दिया। कोमल की भावनाओं का बाँध टूट गया, वह समझ चुकी थी यह अपना पन अब दुबारा नहीं मिलेगा, उसने अपने शब्दों से अनिकेत का दिल दुखाया है लेकिन अनिकेत इसके बावजूद उससे कभी नफरत नहीं कर सकता, वह तो हमेशा उसके साथ था।

कोमल की आँखों से आंसुओं का मानो सैलाब सा फूट पड़ा और वह अनिकेत के सीने से लग गई। खूब रोई कोमल, कभी किसी के सामने स्वयं को कमजोर ना जताने वाली कोमल आज एक बच्ची की तरह बिलख रही थी। अनिकेत ने अपने बहते आंसुओं को रोक लिया, वह रो देता तो कोमल को कौन सम्भालता।

“मुझे माफ़ कर दीजिये।” कोमल ने अपने जीवन में पहली बार किसी से माफ़ी मांगी थी।

“किस लिए ?” अनिकेत ने केवल इतना कहा, कोमल आश्चर्य से अनिकेत को देखती रही, कैसे भूल सकते हो आप वह सब ? कैसे ?

अनिकेत मुस्करा रहा था।

“खुश रह कोमल ! मुझे तेरी पसंद और समझदारी पर पूरा विश्वास है और मैं यही चाहूँगा कि मैं गलत निकलूँ, मेरी सोच गलत साबित हो जाए।” अनिकेत ने यह इतना धीमे कहा जिसे केवल कोमल और मीरा ही सुन पाए। कोमल भावावेश में पुन: अनिकेत के सीने से लग गई, इस बार अनिकेत के हाथ कोमल के सर पर थे। अनिकेत ने सदैव की भांति कोमल के सर को चूमा, वह अपनी रुलाई बड़ी कठिनाई से रोके हुए था। आखिरकार वह क्षण आ ही गया जब कोमल ने घर के बाहर सदा के लिए कदम रख दिए।

अनिकेत कुछ कमी सी महसूस कर रहा था, कोमल वरुण के साथ गाड़ी में बैठ चुकी थी। कोमल को कुछ खल रहा था, अनिकेत उसकी मनोदशा समझ रहा था, और मीरा भी तो अनिकेत का ही प्रतिरूप थी, वह उस कमी को महसूस कर रही थी। उसने मिठाई का एक पैकेट अनिकेत की ओर बढ़ा दिया।

“अपने हाथों से कुछ खिला दो उसे।” मीरा ने कहा, अनिकेत बिना कोई क्षण गंवाए गाड़ी के शीशे की ओर बढ़ा, उसने अपने हाथ में मिठाई का टुकड़ा उठा कर कोमल की ओर बढ़ाया, कोमल के आंसू थम नहीं रहे थे, यही तो कमी थी, यही अपनापन चाहिए था उसे, उसने अनिकेत के हाथ से मिठाई खाई, अनिकेत ने उसके आंसू पोंछे। और हंसते हुए विदा होने को कहा।

आखिरकार कोमल वहां से हमेशा के लिए चली गई, अनिकेत किंकर्तव्यविमूढ़ सा खड़ा रहा, उसने मीरा कि हथेली को अपने हाथ में महसूस किया।

“वह खुश रहेगी ! तुम्हारी शुभकामनायें उसके साथ है।” कहकर उसने अनिकेत के आंसुओं को अपनी हथेली से पोंछा।

❑❑❑

“कोमल तुम इतना बदल जाओगी मुझे ऐसा लगा ही नहीं था, तुम तो कोई और कोमल थी जिसे मैं जानता था।” अनिकेत ने थरथराती जुबान से कहा, उसके शब्दों की लड़खड़ाहट में छिपे संकोच को कोमल पढ़ रही थी।

“और आप भी तो मुझसे कभी इस तरह से संकोच नहीं किया करते थे ? आप नहीं बदले ?” कोमल ने कहा, उसे प्रतिवाद नहीं करना था किन्तु यह शब्द अपने आप उसके मुख से निकल रहे थे, यह उसके जज्बात थे जो आज स्वयं को भीतर छिपा पाने में असमर्थ से थे।

“काश तुम मीरा के जाने से पहले आ पाती, वह कितना खुश होती थी हमें साथ देखकर। लेकिन तुम्हारी भी विवशता थी कोमल, जिन्होंने उसकी मौत पर भी तुम्हें आने नहीं दिया।” बीती बातों की स्मृतियाँ अनिकेत के हृदय को खरोंच रही थी।

“वरुण ! उसे मैंने क्या समझा था और वह क्या निकला। आपको भी पता है उस समय मैं यूरोप में थी और वरुण एक बिजनेस मीटिंग में, जहां से उसका आना कतई संभव नहीं था, न वो आया और न मुझे आने दिया।” कोमल कसमसा उठी, आखिरी क्षणों में मीरा को न देख पाने का अहसास उसके लिए जिन्दगी भर का अफ़सोस बन कर रह गया था।

“उसके बाद भी तो नहीं आई कभी।” अनिकेत ने धीमे स्वर में कहा।

“उसके बाद आपसे नजरें मिलाने की हिम्मत नहीं थी मुझमें, वरुण और मेरे रिश्तों में खटास मीरा की मौत के बाद ही आ गई थी जब उसने मुझे आने नहीं दिया। यह भी नहीं सोचा कि

मीरा मेरी सगी बहन है। वह केवल अपने बारे में सोचता रहा, अपनी बिजनेस मीटिंग, अपना फायदा, बस अपना स्वार्थ..."

कहते कहते कोमल रुक सी गई, वह भी तो यही थी, उसने अपने अलावा कहां कभी किसी और के बारे में सोचा था, उसने भी तो हमेशा खुद को ही प्राथमिकता दी थी, अपनी खुशियों के लिए दूसरों की भावनाओं से खिलवाड़ तो वह शुरू से ही करती आई थी, फिर क्यों उसे आज तकलीफ हो रही थी जब किसी और ने वही उसके साथ किया जो वह हमेशा दूसरों के साथ करती आई, जो उसने मीरा के साथ किया, अनिकेत के साथ किया, वही तो उसके साथ भी हुआ, खुद पर गुजरने के बाद उसे दूसरों की तकलीफों का अहसास होने लगा।

अनिकेत उसकी मनोस्थिति को भांप चुका था, वह कोमल को शर्मिंदा होते नहीं देख सकता था।

"कोमल! इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है, गलतियां तो जिन्दगी का हिस्सा है। हम अक्सर इंसानों को पहचानने में धोखा खा जाते है, लेकिन इसमें हमारी कोई गलती नहीं होती।" अनिकेत ने उसे समझाया, उसका मन किया वह कोमल के माथे को सहलाकर पहले की तरह उसे सांत्वना दे, लेकिन अब वह पहले वाली बात भी तो नहीं थी।

"सही कहा अनिकेत! मैं समझने में हमेशा से कमजोर रही, आपको कभी नहीं समझा और न वरुण को पहचान पाई। काश मैं आप पर यकीन करती।" कोमल के मन में उथल पुथल चल रही थी, वह यह अनिकेत से कहना चाहती थी लेकिन कह नहीं पाई।

'तलाक के बाद मैं अपने घर वापस आ गई, लेकिन वरुण को मैंने चुना था, सबसे झगड़कर उसे अपना जीवन साथी बनाया था इसलिए किसी के मन में मेरे लिए कोई हमदर्दी नहीं थी, हर पल हर समय सबकी नजरें मुझे जताती रहती कि यह मेरी गलतियों का नतीजा है, मेरे कर्मों का फल है जो मैं भुगत रही हूँ। मैं उस घर में जहां हमेशा सर उठाये किसी राजकुमारी की तरह रहती आई थी, वहां मैं किसी से नजरें तक नहीं मिला पाती थी, भाई-भाभी ने भी मुंह मोड़ लिया, माता-पिता ने जहाँ तक हुआ साथ दिया लेकिन मेरी गलतियों का और मेरा बोझ ढोने में वे असमर्थ थे। अपनों से ऐसी उम्मीद मुझे नहीं थी, लेकिन मुझे यह अहसास हुआ कि उन्होंने भी मुझसे ऐसी ही उम्मीदें रखी थी जिनकी मैंने कभी परवाह नहीं की। आज वही तो वह मेरे साथ कर रहे है तो दुःख क्यों हो रहा है ? मैं ऐसे माहौल में नहीं रह सकती थी, मुझे सहानुभूति और अपराध बोध दोनों जताया जाता था, हर हफ्ते नए रिश्ते लेकर आ जाया करते थे कि देखो तुम्हारी पसंद गलत निकली, तुम तलाकशुदा भी हो और नैतिक पतन भी हो चुका है तो किसी से भी शादी कर लेना ही तुम्हारे लिए सही है। उन्हें कौन समझाये मेरे हृदय के भीतर जो प्रेम का अंकुर वरुण के साथ उत्पन्न हुआ था वह उसी के साथ खत्म भी हो गया। अनिकेत एक आप ही थे जो मुझे समझते थे, आपने मेरी हंसी के पीछे छिपे खोखले पन को पहचाना था, आप ही तो थे जो बिना कहे सब कुछ समझ जाते थे। लेकिन मैं आपको खुद से इतना दूर कर चुकी थी कि वापस नजरें मिलाने की हिम्मत नहीं थी मुझमें। मैंने फैसला किया, घर छोड़ दिया, सब के लिए मैं पहले ही मर चुकी थी, मेरी लापरवाहियों को झेलते झेलते सभी उकता चुके थे, उन्हें इस बात से तसल्ली ही मिली कि मैं अब घर में नहीं रहूंगी, बस समाज का थोड़ा सा हिल-हवाला देकर रोकने का प्रयास किया, लेकिन इस प्रयास में वह भाव ही नहीं था जिसके लिए मैं रुकने के लिए मजबूर हो जाती थी। मैंने छोड़ दिया सब, अकेले रहने लगी। मैं अकेले में बीते हुए खुशनुमा पलों को जब भी याद करती तो

मुझे केवल मीरा और आपके साथ बिताए हुए पल ही याद आते, हम तीनों के साथ बिताये पल ही तो मेरी जिन्दगी के सबसे खूबसूरत लम्हे थे, हर बार आपसे मिलने की इच्छा होती, आपका अकेलापन बांटने का मन होता जिसके बहाने मैं अपनी तनहाई भी कुछ पलों के लिए भुला पाती, लेकिन हर बार हिम्मत करके भी नहीं आ पाती थी। लेकिन आज नहीं रोक पाई खुद को।' कोमल ने हमेशा की तरह कुछ नहीं कहा, अपनी भावनाएं अपने मन में ही दबा कर रखी।

दोनों के बीच एक विचित्र सी खामोशी बनी रही, कोमल के लाख प्रयास के बावजूद आंसू की कुछ बूंदें उसकी आँखों से बाहर आ गिरे, अनिकेत फौरन उन्हें पोंछने के लिए उठा लेकिन उससे पहले ही कोमल ने अपनी हथेली से उन्हें मिटा दिया और उठ खड़ी हो गई।

"मैं चलती हूँ अनिकेत ! काफी समय हो गया आकर।" कांपते शब्दों से उसने कहा।

"इतनी जल्दी ?" अनिकेत ने बस इतना ही कहा, वह चाहता था कुछ पल और वह कोमल को रोक ले, लेकिन वह जानता था कोमल किसी के कहने पर कभी नहीं रुकी थी और ना आज रुकेगी।

"आज रुक जाऊंगी, बस एक बार रोक लो, मत जाने दो मुझे अनिकेत।" कोमल के भीतर मानो कोई चीख चीख कर कह रहा था, वह भीतर से तड़प रही थी वह चाहती थी कि अनिकेत पहले की तरह पूरे अधिकार के साथ उसका हाथ पकड़ कर उसे रोक ले, वह हमेशा की तरह इस बार अपना हाथ छुड़ा कर मना नहीं करती, बस एक बार रोक ले।

"मैं वह हक कब का खो चुका हूँ कोमल, तुमने हमारे बीच संकोच की जो दीवार खड़ी कर दी है, मैं उसे चाह कर भी लांघ नहीं पा रहा।" अनिकेत भी भीतर ही भीतर फटा जा रहा था, कितना अजीब था उनका रिश्ता, बिन कहे ही एक दूसरे की भावनाओं को वो पढ़ रहे थे, लेकिन जुबान से कहने में हिचकिचाहट हो रही थी।

"बस ! चलती हूँ, फिर मिलूंगी।" कोमल ने दरवाजा खोलते हुए कहा, अनिकेत अपनी जगह से उठा और उसके पास पहुंचा, कोमल को पूरी उम्मीद थी अनिकेत उसे हमेशा की तरह गले लगा कर, माथे पर चूम कर अपना दुलार व्यक्त करेगा, लेकिन अनिकेत ने ऐसा कुछ नहीं किया।

"मैं नीचे तक छोड़ कर आता हूँ।"

"नहीं ! मैं चली जाऊंगी, आप आराम कीजिए।" उम्मीद से चमकता कोमल का चेहरा एकदम से फीका पड़ गया।

"फिर आओगी ना ?" अनिकेत ने प्रश्न किया। कोमल मुस्करा उठी, और केवल हाँ में सर हिला दिया। अनिकेत उसे जाते हुए देखता रहा।

□□□

गाड़ी में खामोशी छाई रही, अनिकेत अब चुप था, उसके पास कहने के लिए कुछ भी शेष नहीं बचा था। विनय और मानव को भी समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या प्रतिक्रिया दें। वातावरण एकदम से गम्भीर सा हो गया, अनिकेत ने अपनी ओर की खिड़की का शीशा थोड़ा सा नीचे किया, काफी समय तक गाड़ी चलते रहने के कारण थोड़ी घुटन सी होने लगी थी, लेकिन शीशा खोलते ही ठंडी हवा के झोंको ने सिहरने पर विवश कर दिया, फिर भी उसने खिड़की बंद करने का प्रयास नहीं किया, दोनों ने भी उसका कोई विरोध नहीं किया, बल्कि खुली हवा पाकर उन्होंने भी राहत सी महसूस की।

"अब हम श्रीनगर पहुँच चुके है, कुछ किलोमीटर पश्चात हम धारी देवी मंदिर के पास से गुजरेंगे।" अनिकेत ने मार्ग में बने मार्गदर्शकों एवं दिशानिर्देशों को देखकर कहा, वह इस अजीब सी खामोशी को तोड़ने का प्रयास कर रहा था। वातावरण अब अंधुक सा होने लगा था, वे इस समय काफी उतार चढ़ाव भरे रास्तों से होकर एक नगर के मध्य से गुजर रहे थे, पहाड़ से सटे इस नगर में काफी इमारतें और निर्माण दिखाई दे रहे थे, स्पष्ट रुप से यह कोई प्रमुख शहर था।

"श्रीनगर ? वह तो कश्मीर में है ना ?" मानव ने प्रश्न किया, यही सवाल विनय के मन में भी उठा था।

"वह अलग श्रीनगर है और यह अलग, दोनों के नाम एक है बस।" अनिकेत मुस्कराया। एक बात जो उन्होंने गौर की थी रास्ते के आरंभ से ही ना पहाड़ खत्म हो रहे थे और ना ही बहती नदियों ने साथ छोड़ था। तीनों ने अपनी जिन्दगी में ऐसा कभी ना खत्म होने वाला परिवेश और मार्ग नहीं देखा था।

"धारी देवी की क्या कहानी है ?" विनय ने प्रश्न किया।

"धारी देवी को उत्तराखंड की रक्षक देवी कहा जाता है, मान्यता है कि यह चारों धाम की रक्षा करती हैं, धारी देवी को जागृत देवी माना जाता है, एक तथ्य यह भी बताया जाता है की इनकी प्रतिमा पर आयु का प्रभाव भी दिखाई देता है।" अनिकेत थोड़ा रुका।

"आयु का प्रभाव मतलब ?" मानव को समझ में नहीं आया।

"मतलब यह की उनकी प्रतिमा उम्र के अनुसार परिवर्तित होती है, उनका चेहरा कभी बालिका स्वरूप होता है, कभी युवती जैसा तो कभी किसी वृद्धा जैसा।" अनिकेत ने बात पूर्ण की।

"यह कैसे संभव है ? प्रतिमा पर भला उम्र का कैसा असर।" विनय सोच में डूब गया।

"प्यारे, यही किवदन्ती है, मान्यता है। हमारे देश में कुछ भी हो सकता है, धारी देवी काफी पुराने समय से है, माना जाता है की उनकी प्रतिमा कहीं से बहती हुई आई थी, उस दिन भारी बारिश हो रही थी, गाँव वालों को एक स्त्री के चीखने का स्वर सुनाई दिया, जिससे ग्राम वासी डर गए और बाहर निकले, गाँव वाले चीख की दिशा में बढ़े तो उन्हें नदी में वह प्रतिमा दिखाई दी और स्वर सुनाई दिया कि प्रतिमा जहाँ मिली है उसी स्थान पर स्थापित की जाए, जिसे स्थापित कर दिया गया। इनकी प्रतिमा को यदि हटाने का प्रयास किया जाता है तो उसके दुष्परिणाम होते है, अट्ठारवीं शताब्दी के अंत में स्थानीय राजा ने हटाने का प्रयास किया था तब केदारनाथ में भूकंप हुआ था जिसमें काफी नुकसान हुआ था। यहाँ तक कि कुछ वर्षों पहले जो केदारनाथ में जलप्रलय आई थी, माना जाता है उसके पीछे एक कारण धारी देवी

की मूर्ति का अपने स्थान से हटाना भी था। धारी देवी अत्यंत क्रोधी मानी जाती है, चार धाम की यात्रा के पहले इनके दर्शन अवश्यम्भावी माना जाता है, एक बिजली परियोजना के कारण जब मंदिर और मूर्ति को स्थानांतरित करने का प्रयास किया गया उसके बाद ही केदारनाथ में बादल फटा और जलप्रलय हुई।" अनिकेत फिर रुका।

"ये सच है ?" दोनों ने एक साथ प्रश्न किया।

"मुझे नहीं पता, मैंने वही बताया जो सुन-पढ़ रखा है, वैसे होने को तीन दिन बारिश भी हो रही थी। बाकी श्रद्धा की बात है, काफी चीजें है जिसे हम विज्ञान के नजरिये से समझ नहीं पाते, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं की उनका अस्तित्व नहीं है, बस यह है की अभी तक शायद विज्ञान उनका रहस्य नहीं जान पाया। तो हकीकत हो, दैवी शक्ति हो, संयोग हो, किवदन्ती हो या जो भी हो, किन्तु यही विविधता है भारत की। तो हम अब कुछ देर में धारी देवी के मंदिर के समीप से गुजरेंगे, अँधेरा होने को है रुक पाना संभव नहीं हो पायेगा, हम वापसी में समय देंगे और इत्मीनान से दर्शन करेंगे। फिलहाल सड़क से ही देख लेंगे, नारायण जी, मंदिर आने के कुछ समय पहले आप हमें सूचित कर दीजियेगा।" अनिकेत ने चालक को निर्देश दिया। उसने सिर हिला दिया। कुछ देर चलने के पश्चात उन्हें अलकनंदा नदी के भीतर बना हुआ एक मंदिर दिखाई देने लगा।

"सर ! धारी देवी जी का मंदिर दिखाई देने लगा है, अगले मोड़ पर मुड़ते ही वह सामने होगा।" चालक ने गाड़ी की गति थोड़ी धीमी कर ली ।

वे मंदिर के सामने से गुजरे, मंदिर जाने का रास्ता सड़क के किनारे से होता हुआ थोड़ा ढलान की ओर जा रहा था, नदी की धारा के मध्य स्तम्भों पर खड़ा वह मंदिर अपने आप एक अनूठा और विलक्षण निर्माण था, जिस पर नजर ना पड़े यह संभव ही नहीं था। तीनों ने गाड़ी के भीतर से ही धारी देवी के मंदिर को देखकर प्रणाम किया और अपनी सुखमय यात्रा का आशीष माँगा। कुछ ही पलों में वे धारी देवी मंदिर पार कर चुके थे। अब अँधेरा हो चुका था, सड़कों पर रोड कटिंग और ट्रैफिक मिलना आम हो गया, उनकी गति पहले की अपेक्षा और धीमी हो गई थी। नदी के बहाव के मध्य भी किनारे के सफ़ेद रेतीले तट अँधेरे में चमकते हुए स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। वे अब तक अनेक छोटे बड़े पुल पार कर चुके थे। काफी समय से चलते रहने के कारण उन्हें भूख लगने लगी थी। चालक ने एक स्थान पर छोटा सा होटल देखकर गाड़ी रोकी।

"अभी हमें लगभग तीन-चार घंटे लग जायेंगे या ज्यादा भी लग सकते है, चाय वगैरह पी लेते हैं, लगातार चलने के कारण पीठ अकड़ सी गई है और थकान भी होने लगी है, आप लोग भी नाश्ता वगैरह कर लीजिये।" कहकर चालक बाहर निकलकर होटल में प्रवेश कर गया। उसके पीछे पीछे तीनों होटल में पहुंचे, काफी देर बाद वे गाड़ी से बाहर निकले थे, यहाँ के वातावरण में हरिद्वार से भी अधिक ठंड थी। तीनों ने सिहरन सी स्पष्ट महसूस की, टॉयलेट वगैरह निपटाकर उन्होंने गरमागरम इन्स्टंट नूडल्स और चाय का नाश्ता किया जिसके बाद बदन में थोड़ी फुर्ती महसूस हुई और पेट में राहत का अनुभव हुआ। नाश्ता उम्मीद से कहीं अधिक स्वादिष्ट निकला, पेमेंट करने के पश्चात तीनों ने होटल काउंटर पर बैठे व्यक्ति को धन्यवाद दिया और पुन: गाड़ी में जा बैठे। अब यात्रा पुन: आरंभ हो गई थी, मार्ग में विभिन्न परियोजनाएं एवं पुलों के निर्माण हो रहे थे, चालक उन्हें हर स्थान की जानकारी दे रहा था।

"जब केदारनाथ में प्रलय आई थी ना साहब, तो बहुत से गाँवों को नुकसान पहुंचा था, सरकारी आंकड़ा, असल मरने वालों और लापता होने वालों के आंकड़े में जमीन आसमान का फर्क था। यहाँ कुछ किलोमीटर बाद नदी के दूसरे किनारे पर मेरे चचेरे भाई का घर है, वह भी उस आपदा में बह गया था, बस उनका परिवार बच गया, लेकिन घर नहीं रहा, बाद में पुनर्वास के दौरान पुन: घर बना। हम जिस सड़क पर है ना उसका आधा से ज्यादा हिस्सा पानी में था और ढह गया था, अभी हम जहां चल रहे है, पानी का स्तर इससे भी ऊपर तक पहुँच गया था। कई गाँवों का भूगोल ही बदल गया था और अनेक गाँव तो एकदम से ऐसे गायब हो गए जैसे कभी थे ही नहीं।" चालक ने कहा। चालक के बताये विवरण और आसपास के वातावरण को देखकर वे एकदम सिहर से गए, वे उस दृश्य का अंदाजा भी नहीं लगा सकते थे कि वह कितना भयानक रहा होगा। हालांकि पहाड़ के किनारे खुदाई से कटे हुए थे और उनमें पानी भी रिस रहा था। जिस कारण कई जगहों पर मार्ग के मध्य कीचड़ हो गया था, ड्राइवर कुशल था इसलिए बड़ी सावधानी से उस फिसलन भरे और तीखे कटाव वाले रास्तों को पार कर रहा था, ज़रा सी असावधानी और गाड़ी कीचड़ से फिसलकर सीधे दूसरी ओर स्थित खाई में जा गिरती, तीनों इस रास्ते को देखकर प्रलय के समय की उसकी हालत का अंदाजा भी नहीं लगा पा रहे थे, जब तक वे उस कीचड़ भरे रास्तें में थे तीनों दम साधे नि:शब्द बैठे रहे, नारायण के चेहरे पर भय का कोई भाव नहीं था, यह रास्ते उसके परिचित से थे।

"यहाँ से हम जितना रास्ता जायेंगे, उसमें आधा से ज्यादा रास्ता बह गया था, यह तो बाद में फिर से बनाया गया है, काफी समय तक सब कट गए थे मुख्य धारा से, यह नदी जो अभी आप आधी सूखी सी देख रहे हैं ना, वह उस समय एकदम से उफान पर थी, लगातार बारिश हो रही थी, बड़े बड़े पहाड़ रेत के ढेर की तरह धंस गए थे, आपदा में रास्ता समाप्त होने के पश्चात बहुत से सैलानी और श्रद्धालु जंगलों में भटकते रहे, भूखे प्यासे भटके अनेक श्रद्धालु वहाँ मारे गए। काफी दिनों तक उनके शव मिलते रहे, यहाँ तक की महीनों बाद भी कंकाल और अवशेष हर जगह से मिलते रहे थे। और संयोग देखिये साहब आपदा वाले दिन के एक दिन पहले ही मैं यहाँ एक सवारी के साथ मौजूद था, लेकिन घर पर बच्ची की तबीयत खराब हुई तो इमरजेंसी में मुझे यहाँ से निकलना पड़ा, महादेव की ही कृपा थी जो बच्ची की बीमारी का बहाना बना और मैं यहाँ से निकल गया, अगले दिन जब खबर सुनी तो सब दहल गए, परिवार ने कसम खिलवा ली कि दोबारा कभी इस मार्ग पर नहीं जाओगे, लेकिन उन्हें कौन समझाए जब मृत्यु आनी है तो आकर रहेगी। मरना होता तो उसी दिन ना मर जाता ? आम दिनों में मेरे फोन में वहां नेटवर्क नहीं रहता था, लेकिन उस दिन था, इसलिए फोन आया, उस दिन मेरी मौत लिखी ही नहीं थी तो महादेव भला मुझे कैसे मरने देते।" इस बार चालक का स्वर थर्राया हुआ था। उसने डैशबोर्ड पर रखी महादेव की प्रतिमा के चरण पूर्ण श्रद्धा से छुए।

तीनों उसकी कहानी सुन कर नि:शब्द से हो गये थे। इतना सब झेलने और देखने के बावजूद कैसे व्यक्ति की श्रद्धा हर आपदा पर भारी पड़ती है इसका जीता जागता उदाहरण उनके सामने था। मानव बिन बताये यह पूरी कहानी फिल्मा भी चुका था। काफी देर तक वे सड़क को निहारते रहे।

"अनिकेत भाई अब तो बता दो हम कहां जा रहे है ?" मानव ने पुन: आग्रह किया।

"चलो अब पहुँचने ही वाले है तो बता देने में हर्ज नहीं है, हम जहाँ जा रहे है उस जगह का नाम है 'चोपता'।" अनिकेत ने नाम बताया।

“ये कहां पड़ा ? क्या विशेषता है उसकी ?” विनय ने प्रश्न किया, विनय और मानव दोनों ने अपने जीवन में कभी यह नाम नहीं सुना था।

“बस कुछ देर में पहुँच जायेंगे तब विशेषता भी पता चल जाएगी। वैसे मानना पड़ेगा नारायण जी, यहाँ के लोगों की जीवटता का कोई जोड़ नहीं है, इन दुर्गम मार्गों पर भूस्खलन, बरसात और बादल फटने की घटनाएं जितनी आम बात है उसमें जीना वाकई बहुत मुश्किल है। फिर भी लोग यहाँ बिना शिकायत के रहते है वाकई दिल से मानना पड़ेगा।” विनय ने प्रशंसा के भाव में कहा।

“अब हम कुछ देर में ‘उकीमठ’ पहुँचने वाले है, यहाँ से करीब तीस से पैंतीस किलोमीटर का फासला रह जायेगा, अगर आप बस वगैरह से आते तो ऋषिकेश से यहाँ तक मिल जाती है, लेकिन वह भी समय के हिसाब से ही मिलेंगी सुबह सुबह ही पकड़ सकते हैं...” कहते कहते चालक के आगे के शब्द गले में फंसे के फंसे रह गए, उसके झटके से गाड़ी रोकी। चूंकि गाड़ी की गति पच्चीस किमी प्रति घंटे से ज्यादा नहीं थी इसलिए ज्यादा झटका नहीं लगा।

तीनों ने गाड़ी रोकने का कारण जानना चाहा किन्तु गाड़ी के सामने का दृश्य देखकर उनके होश फाख्ता हो गए, सड़क के किनारे वाली पहाड़ी पर स्थित जंगलों से एक बड़ा सा चमकती आँखों वाला जीव मार्ग के मध्य कूद कर आ गया था। गाड़ी की हेड लाइट्स में उसकी आँखें चमक रही थी। इस ठंड में भी उन्हें पसीने के चिपचिपे पन का अहसास हुआ, उनकी रीढ़ तक सिहरन दौड़ गई थी। सभी एकदम से हक्के बक्के रह गए थे, जुबान मानो पत्थर सी सख्त हो गई थी और आवाज तक निकल नहीं पा रही थी। वे उस जीव को अपलक देख रहे थे जिसे उनकी उपस्थिति से कोई फर्क नहीं पड़ रहा था।

“साहब! बाघ, गाड़ी के सामने बाघ है।” ड्राइवर ने माथे से पसीना पोंछते हुए कहा। तीनों ने पहली बार बाघ को जीते जागते अपने सामने यूँ टहलते देखा थ, उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी इस मार्ग पर ऐसी किसी चीज से सामना होगा। बाघ ने उनकी ओर देखा, हेडलाईट के प्रकाश में उसका सम्पूर्ण शरीर नहाया हुआ था, वह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, उसने एक जम्हाई सी ली और शान से चलते हुए सड़क की दूसरी ओर स्थित खाई में अँधेरे में कहीं गुम हो गया।

उसके जाने के कुछ क्षणों तक भी उन्हें अपना होश नहीं था, उन्हें अब तक विश्वास नहीं हो रहा था कि उन्होंने अपने सामने मुख्य सड़क पर इस प्रकार किसी बाघ को जाते देखा है, उन्होंने ऐसे किसी दृश्य की कल्पना तक नहीं की थी।

“यह तो आम बात है यहाँ साहब।” ड्राइवर ने हंसते हुए कहा, जबकि उसकी झूठी हंसी की आड़ में घबराहट स्पष्ट महसूस की जा सकती थी।

“आम बात है तो क्यों सांस अटकी हुई थी आपकी ?” मानव ने चुटकी लेते हुए कहा।

“बाघ है ही ऐसी चीज साहब, पहली बार देखो चाहे रोज देखो, डर आपको वही महसूस होगा जो पहली बार देखने पर हुआ था। बाघ तो फिर भी ठीक है, लेकिन यहाँ भालू भी सामान्य बात है।” ड्राइवर ने गाड़ी पुन: स्टार्ट की और धीमी गति से आगे बढ़ गया। तीनों अब भी सड़क के किनारे वाले अँधेरे में देख रहे थे जहां बाघ अदृश्य हुआ था, उन्हें लग रहा था कहीं वह गाड़ी पर अचानक छलांग ना लगा दे।

“घबराइये नहीं साहब! वह गाड़ी पर नहीं झपटता, वह चुपचाप अपने रास्ते निकल जाता है।” चालक ने गहरी सांस लेते हुए कहा। हालांकि भय के कारण अब भी उसकी धड़कने तेज थी।

“आपने अभी-अभी भालू कहां ?” मानव ने अपने गले को सूखता सा महसूस किया।

“हां ! सर्दियों में पहाड़ों पर जब बर्फ गिरती है, तब सारे जानवर पहाड़ों से नीचे मैदानी हिस्सों में आ जाते हैं।” चालक ने कहना जारी रखा।

“सारे जानवर ?” अब की विनय चौंका।

“यह सारा हिस्सा केदारनाथ के वन क्षेत्र में आता है, केवल पहाड़ों पर मार्ग और मकान, होटल इत्यादि देखकर आप भ्रम में मत रहिये, यह सम्पूर्ण क्षेत्र फ़ॉरेस्ट जोन में आता है, यहाँ हर प्रकार का जानवर है, भालू, बाघ, तेंदुए और चीते तो आम बात है यहाँ। अक्सर मार्ग में दिखाई दे जाते है।” इतना कहकर उसने पुन: ब्रेक दबाए। अब की बार फिर से उन्होंने गाड़ी के सामने देखा।

“ये भेड़िये हैं क्या ?” मानव की सांस ही रुक गई उन्हें देखकर।

“नहीं साहब यह लोमड़ियाँ है। भेड़िये इतने छोटे नहीं होते।” वह हंसा और हॉर्न बजाया, वे संख्या में कुल तीन थे और हॉर्न सुनकर रास्ते से हट भी गए।

“अनिकेत भाई, आप ट्रिप बोल बोल कर किस जंगल में ले आये ? और बर्फ से क्या मतलब ? यहाँ बर्फ गिरती है ?” विनय ने प्रश्न किया।

“जी !” चालक ने कहा।

“मैं खुद पहली बार जा रहा हूँ, तो इस प्रकार मेरी ओर मत देखो, मुझे भी उतनी ही जानकारी है जितना मैंने यहाँ के विषय में पढ़ा सुना है। तो शांत रहो, घबराओ मत यहाँ आने वाले हम पहले व्यक्ति नहीं है, बहुत से सैलानी आते रहते हैं यहाँ, और यहाँ फिलहाल किसी के जंगली जानवर से हताहत होने की खबर नहीं आती।” अनिकेत ने विश्वासपूर्वक कहा, हालांकि उसे खुद अपनी कही बात पर यकीन नहीं था। तीनों खामोश हो गए, और शीशे के बाहर देखने लगे, कुछ ही देर में वे एक छोटी सी बस्ती जैसी जगह से गुजरे।

“हमने उकीमठ पार कर लिया है, अब बस एक घंटे में गन्तव्य तक पहुँच जायेंगे।” ड्राइवर ने जानकारी दी। अनिकेत ने घड़ी देखी, रात के सवा नौ बज रहे थे। बीच बीच में वह फोन पर किसी से बात करके कुछ निर्देश देता रहा।

रास्ता एकदम निर्मनुष्य था, बस पहाड़, जंगल और अँधेरी खाइयां ही दिखाई दे रही थी, अब तक खाईयों में कहीं कहीं झिलमिलाती रोशनियाँ बस्ती अथवा नगरों का होने का आभास दे रही थी, किन्तु अब चारों ओर घुप्प अँधेरा हो चुका था जो इस बात का प्रमाण था कि यहाँ दूर दूर तक कोई बस्ती नहीं है।

“भाई रास्ता बड़ा ही भयानक सा लग रहा है, पहाड़, जंगल और खाई के मध्य हम एक संकरे और सुनसान रास्ते पर बढ़ रहे है, दूर दूर तक हमारी गाड़ी की हेडलाईट के अलावा और कोई रोशनी नजर नहीं आ रही है, बाघ सड़क पर घूम रहे है, भालू भी सुनाई दे रहे है, ऐसे में भगवान ना करें यदि गाड़ी खराब हो गई तो ?” बोलते बोलते कल्पना मात्र से मानव के रोंगटे खड़े हो गए।

“मानव भाई, आप चुप रहो यार, एक तो पहले ही कम जान जा रही जो आप और मनहूस बातें कर रहे हो।” विनय ने उसे घुड़क दिया, मानव की बातों से वह खुद भी डरा हुआ था। उसने अनिकेत की ओर देखा तो पाया वह मुस्करा रहा था और शीशे के बाहर देखे जा रहा था।

“क्या सड़क के किनारे वो सफ़ेद चीज बर्फ है ?” विनय ने अनिकेत की नजरों का पीछा किया तो अँधेरे में भी पहाड़ों और मार्ग के इर्द गिर्द चमकते हुए सफ़ेद हिस्सों को देखकर कहा। वह उन्हें देखकर रोमांचित था।

“हां ! यह बर्फ ही है।” चालक ने कहा। उसके कहते ही मानव ने भी शीशे से बाहर देखना आरंभ किया, वाकई में सड़क के किनारों पर टुकड़ों में सफ़ेद बर्फ दिखाई देने लगी थी। यह दृश्य देखकर उसका भय कहीं पीछे छूट गया, इस अँधेरे में भी बर्फ की सफेदी मानो चमक सी रही थी। वह मार्ग के दोनों को देखने लगा।

और उसी क्षण उन्हें खाई की दूसरी ओर काफी दूर अँधेरे में चन्द्रमा की दुधिया रोशनी में दमकती हुई सफ़ेद पर्वत श्रृंखलाएं नजर आई।

“क्या वह बर्फ के पहाड़ है ?” विनय उस दृश्य को अपलक निहारे जा रहा था, इस घने अँधेरे जंगल में भी वह पहाड़ दूर से ही हल्की सफेदी में नहाया हुआ स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

“हां, वह बर्फ के पहाड़ हैं।” ड्राइवर ने बताया। गाड़ी धीमी गति से चलती रही, अब सड़क पर भी बर्फ स्पष्ट दिखाई दे रही थी, जिस वजह से गाड़ी अतिरिक्त सावधानी के साथ चलाना जरुरी था।

“अद्भुत ! अद्वितीय ! क्या सुंदर दृश्य है यह।” अनिकेत का मुंह खुला का खुला रह गया। यही हाल मानव और विनय का भी था। घुप्प अँधेरे में भी वह सफ़ेद पर्वत श्रृंखला मोतियों के हार की मानिंद दमक रही थी। मानो उसके भीतर प्रकाश का कोई रहस्यमय स्रोत छिपा हो जो उसे प्रकाशित कर रहा था, ऐसे दृश्य उन्होंने केवल फिल्मों में देखे थे, अथवा परीकथाओं में ही सुने थे। किन्तु आज वे ऐसे ही परिवेश के समक्ष खड़े थे और यह दृश्य हर फिल्म, हर परिकथा, हर वर्णन से कही अधिक सुंदर तथा अकल्पनीय था। उनके एक ओर पहाड़ियों एवं जंगल का आधा भाग सफ़ेद दिखाई दे रहा था, दूसरी ओर अँधेरी खाई, मध्य में संकरा रास्ता और दूर कहीं चमकता हुआ शुभ्र पर्वत, एक बात और जिस ने उनका ध्यान खींचा, वह था तारों भरा स्वच्छ निरभ्र आकाश, सम्पूर्ण आकाश तारों से भरा हुआ था, तारों की यह झिलमिल रोशनी उन्होंने आज से पहले कभी ना किसी फिल्म में देखी थी और ना ही कभी किसी कहानी में वर्णन पाया था, असल जिन्दगी में देखना तो दूर की बात थी। वे इस दृश्य पर मंत्रमुग्ध से थे। तीनों इस सुंदरता को जी भर कर देखना चाहते थे। किन्तु बाहर अँधेरा अधिक होने के कारण अधिक स्पष्ट कुछ भी नहीं देखा जा सकता था। गाड़ी अँधेरी सड़क पर, ऊँचे-नीचे अंधे मोड़ों पर घूमती रही। कुछ ही देर पश्चात उनकी गाड़ी एक स्थान पर रुकी, अँधेरे में आसपास कुछ भी स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था, हां कुछ छोटे-बड़े लकड़ी वगैरह के मकान और एकाध बंद पड़ी ढाबानुमा संरचना सड़क के किनारे की बाई ओर दिखाई दे रही थी, अब वहां खाई की बजाय समतल जमीन सी दिखाई दे रही थी। उनकी दूसरी ओर छोटे मोटे पहाड़ी टीले अब भी दिखाई दे रहे थे।

“लीजिये साहब अब हम चोपता आ गए है। वह सामने है ‘हरी भाई’ जिनके यहाँ आपने रुकने का बंदोबस्त कर रखा है, यहाँ से कुछ दूर पैदल ही नीचे की ओर चलेंगे तो उनके कैम्प है जहां आपको रुकना है।” नारायण ने उन्हें कहा, तीनों सुबह से लगातार यात्रा कर रहे थे, वे

गाड़ी के बाहर आने को मचल रहे थे, तीनों ने लगभग एक साथ ही गाड़ी का दरवाजा खोला और एक झटके से बाहर आ गए।

“हे भगवान !” बाहर आते ही तीनों एकदम से संवेदना शून्य से हो गए। उनके दांत किटकिटाने लगे, सम्पूर्ण शरीर कांपने लगा। तीनों ने जैकेट पहन रखे थे इसके बावजूद उन्हें भीषण गलन का अहसास हो रहा था, कान और उंगलियाँ तो एक क्षण में ही सुन्न सी हो गई, कान में सांय सांय की आवाज सी गूंजने लगी। यह कल्पना से भी अधिक भीषण ठंड थी। ऐसी ठंड का सामना उन्होंने आज तक नहीं किया था। वे अपने स्थान पर खड़े भी नहीं हो पा रहे थे। उनके मुंह से भाप की मोटी लहर सी उत्पन्न होने लगी थी।

“य..यहाँ तो ब..बहुत ज्यादा ठंड है..अनिकेत भाई।” किसी प्रकार दांत किटकिटाते हुए मानव ने थर-थर कांपते हुए अपना वाक्य पूर्ण किया। उनसे कुछ ही दूरी पर दो व्यक्ति खड़े थे, वे उन्हें गाड़ी से बाहर निकलता देख कर फौरन उनकी ओर लपके।

“नमस्कार सर! मैं हरी हूँ। आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा था, बाकी बातें बाद में, पहले आप लोग बिना समय गंवाए जैकेट, दस्ताने और कनटोप फौरन पहन लो।” उसने निर्देश दिया। वैसे भी उसके कहने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी, तीनों उससे पहले ही कर की डिक्की में स्थित अपने बैग्स की ओर बढ़ चुके थे और उन्होंने बैग्स के ऊपरी हिस्से में रखे अतिरिक्त गर्म कपड़े निकाल कर फौरन पहन भी लिए जो उन्होंने दिल्ली से खरीदे थे। दस्ताने और कनटोप भी बिन कहे पहन लिए गए। तब जाकर कुछ जान में जान आई। किन्तु नाक और गाल अभी भी मानो ठंड से गल रहे थे। अनिकेत अपने मेजबान की ओर बढ़ा और गर्मजोशी से हाथ मिलाने के बजाय उससे गले मिला।

“हरी भाई! आज मिल ही गए आखिरकार, पिछले चौदह दिनों से आपके सम्पर्क में हूँ। अच्छा हुआ जो आपने अतिरिक्त गर्म कपड़े और दस्ताने, मोज़े इत्यादि खरीदने के लिए कह दिया, नहीं तो गाड़ी से उतरने के एक मिनट बाद ही हम जम जाते।” अनिकेत ने सिहरते हुए कहा, उसके हर शब्द के पश्चात मुंह से भांप निकलती स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

“आप लोग मेरे पीछे आइए, अपना कैम्प नीचे कीओर लगभग हजार कदम की दूरी पर ही है, संभल कर आइए मैं आपको रास्ता दिखाता हूँ।” कहकर हरी और उसके सहायक ने टॉर्च जलाई और नेतृत्व करने लगे, तीनों उसके पीछे पीछे चलने लगे।

“सर आपको पता है यहाँ का तापमान कितना है ?” हरी ने अनिकेत से प्रश्न किया। अनिकेत ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसे देखा।

“माइनस पांच डिग्री।” हरी ने बड़ी शान से कहा। हरी और उसका सहयोगी खुद दो तीन गर्म कपड़े लादे हुए थे, कनटोप गले तक खींचा हुआ था और मोटे दस्ताने पहने हुए थे जो उनकी बात की पुष्टि करते थे।

माइनस पांच डिग्री सुनकर तीनों की आँखें ही बाहर को निकल आने के लिए उत्सुक हो गई। वे बड़ी मुश्किल से उबड़ खाबड़ कच्चे रास्तों पर चलते रहे, मार्ग में उन्हें नालियों में जमी हुई सख्त बर्फ भी दिखाई दी।

“उस पर पैर मत रखियेगा, वह सख्त और ठोस बर्फ है, उसपर आदमी फिसलता है। यहाँ पानी जमा हुआ है। कल ही बर्फ गिरी है जो अब तक गली नहीं है।” हरी ने जानकारी दी। वे उसके साथ मुख्य सड़क को छोड़कर नीचे जंगलों की ओर उतरने लगे, उन्हें अपने आसपास घना जंगल स्पष्ट दिखाई दे रहा था, कुछ ऊँचे नीचे रास्तों पर चलने के पश्चात ही उनकी साँसे

फूलने लगी। वे एकदम हांफने लगे, खिंची हुई हर सांस के साथ मानो सर्द हवा उनके फेफड़े के भीतर तक महसूस हो रही थी। वे एक दूसरे की हांफती साँसों को स्पष्ट सुन पा रहे थे। जबकि वे कुछ ही मीटर चले थे इसके बावजूद वे पस्त हो गए थे। अब वे एक छोटे से मैदान के सामने आ गए थे, ऊँचे नीचे रास्तों पर वह समतल किया हुआ भाग था, जहां एक पंक्ति में पांच छोटे कमरानुमा टेंट बने हुए थे। हरी ने उन्हें सबसे मध्य वाला टेंट दिखाया।

वे टेंट में प्रवेश करते ही हैरान रह गए, उन्हें आभास तक नहीं था कि बाहर से सामान्य से कपड़े का तम्बू नजर आनेवाला टेंट भीतर से इतना शानदार भी हो सकता था। एक ही कमरा था, जिसमें दो कुर्सियाँ, एक मेज, एक डबल और एक सिंगल बेड और एक मध्यम आकार की अलमारी तक रखी हुई थी। फर्श पर हरे रंग का मुलायम कारपेट बिछा हुआ था। वे आश्चर्य से उस कमरे को देखते रहे।

“सर ! यहाँ इंग्लिश टॉयलेट और वाशरुम है।” कहते हुए हरी ने कमरे की पिछली दीवार का एक हिस्सा जिप से खिंच कर खोल दिया, वहां वाकई में टॉयलेट और बाथरुम बना हुआ था। तीनों एक दूसरे को ताकते रह गए।

“आपको एक खासियत बताता हूँ सर जी।” हरी ने चहकते हुए अनिकेत की ओर देखा।

“जी !”

“यहाँ सारा अली खान रुकी थी। जब केदारनाथ फिल्म की शूटिंग के समय आई थी। इसी कमरे में रुकी थी वो।” हरी ने उत्साह से बताया।

“लेकिन उसके लिए हम एक्स्ट्रा पेमेंट नहीं करने वाले।” अनिकेत ने कहा और ठहाका लगा कर हंस दिया। हरी भी मजाक समझ कर उसमें शामिल हो गया।

मानव और विनय बस एक-दूसरे का मुंह ताकते रह गए, उन्हें उस हिरोइन का नाम तक नहीं पता था, सो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था।

“मैं बाहर अलाव जला देता हूँ, कुर्सियां लगी हुई है, आप उसके मजे लीजिये तब तक हम खाना बनाते हैं।” कहकर हरी कैम्प से बाहर निकल गया। मानव ने फौरन अपना मोबाइल निकाल लिया और वीडियो कैमरा चालू कर दिया।

“हम इस समय एक अजीब सी जगह पर है जिसका नाम..” मानव अटका।

“चोपता !” अनिकेत ने कैमरे के सामने आते हुए कहा।”

“हां ! जिसका नाम है चोपता, हमें ऋषिकेश से यहाँ पहुँचने में लगभग बारह घंटे लग गए, रास्ते तो भाई साहब पूछिए मत, गजब के खतरनाक और एडवेंचरस, मार्ग में बाघ तक किसी कुत्ते बिल्ली की तरह यूँ ही गुजर गया भाई। अब हम यहाँ है, यहाँ कुछ माइनस पांच डिग्री तापमान बताया है हरी भाई ने, जो यहाँ के प्रबंधक है। वैसे इतनी भयानक ठंड देखकर उनपर अविश्वास करने का कोई कारण ही नहीं बचता हमारे पास। हमारा यह कैम्प किसी फाइव स्टार होटल के कमरे से कम तो कतई नहीं है, और यह जिस जगह पर बना है, मैं दावे के साथ कह सकता हूँ वह जगह स्वर्ग है स्वर्ग, अँधेरे में ज्यादा कुछ तो नहीं दिखाई दे रहा लेकिन इतना पता चल गया है कि कैम्प के पीछे जंगल और सफ़ेद बर्फ से ढंकी ऊँची पहाड़ियां है, और सामने घना जंगल। मतलब हद से ज्यादा सुंदरता होने की सम्भावना है यहाँ। बाकी तो सुबह उजाले में पता चलेगा। अब हम बाहर चल रहे है, अपने बैग्स हमने बेड के समीप रख दिए है, फ्रेश होकर हम बाहर अलाव पर बैठेंगे, ओह! गजब का अनुभव भाई। जंगल, पहाड़, और माइनस छह डिग्री की हाड कंपाती ठंड में अलाव, मतलब यार इससे बड़ा सुख क्या होगा।

जहां तक मेरा ख्याल है अनिकेत भाई अभी भी काफी कुछ छिपाये हुए है, तो जैसे उनके रहस्य पता चलेंगे मैं विडियोज में अपडेट करता रहूँगा।" कहकर मानव ने कैमरा बंद किया। वाशरूम इत्यादि से निपट कर वे ट्रैक पेंट्स और उसपर अपने सारे जैकेट्स, दस्ताने, मोज़े वगैरह पहनकर बाहर निकले और मैदान में रखी हुई कुर्सियों पर बैठ गए, उनके मध्य लोहे के एक पात्र में लकड़ियाँ सुलगा दी गई थी, वे उसकी तपिश में अपने हाथ पैरों को गर्म करने का प्रयास करने लगे।

उनके ऊपर साफ स्वच्छ तारों भरा आकाश था और कैम्प के पीछे सफ़ेद पहाड़ों की चमकती हुई ऊँची-ऊँची चोटियाँ।

"वो केदारनाथ की पर्वत श्रृंखला है सर, और उसके बगल में सतोपंथ है, और ये जो हमारे सामने पहाड़ों के पीछे चार कोनों वाला सबसे सफ़ेद पहाड़ है वो है चौखम्बा। थोड़ी उंचाई पर जाने के बाद नंदा देवी भी दिखाई देता है।" हरी ने उन्हें जानकारी दी।

"सतोपंथ ? यह नाम कहीं सुना हुआ सा लगता है।" अनिकेत ने याद करने का प्रयास किया।

"जी ! महाभारत के अंत में पांडव और द्रौपदी जी इसी पर्वत के रास्ते अपनी अंतिम यात्रा पर गए थे, जिसमें सभी पांडवों और द्रौपदी की मार्ग में ही मृत्यु हो गई, केवल युधिष्ठिर ही सशरीर स्वर्गलोक गए , यह वही पहाड़ है।" हरी जानकारी की प्रतिक्रिया देखने रुका। और उनके विस्मित चेहरे देख कर वह प्रसन्न हुआ।

"गजब ! मतलब भाई आखिर ले कहा आये हो आप हमें ?" मानव लगभग हर्ष से चीखते हुए बोला।

" यहाँ एक शिव मंदिर है, जिसे तुंगनाथ कहते है, जो पहाड़ी पर साढ़े तीन किलोमीटर उंचाई पर है, समुद्रतल से लगभग बारह हजार फीट की उंचाई पर खड़ा विश्व का सर्वाधिक उंचाई पर स्थित एकमेव शिवमंदिर। और उसके डेढ़ किलोमीटर ऊपर जाने पर है चंद्रशिला, वह उस पहाड़ी का शीर्ष है और वहां से सुना है स्वर्ग जैसा दृश्य दिखाई देता है, ख़ास तौर से वहां से सूर्य को उगते हुए देखना अद्भुत अनुभव होता है, वैसा सुंदर सूर्योदय आपको विश्व में और कहीं देखने को नहीं मिलेगा। तो उसे देखने के लिए हमें सुबह तीन या चार बजे ही अपनी ट्रेकिंग आरम्भ करनी होगी ताकि हम सूर्य उगने से पहले चन्द्रशिला पहुँच जाए।" अनिकेत ने अपनी योजना बताई।

"मेरी मानिए तो इस मौसम में सुबह की ट्रेकिंग का विचार छोड़ दीजिये, कल ही बर्फ गिरी हुई है, मुख्य चढ़ाई यहाँ से चार किलोमीटर दूर है, आगे सड़क पर बर्फ जमी होने के कारण यहीं से पैदल चलकर चार किलोमीटर जाना होगा, उसके बाद तुंगनाथ की साढ़े तीन किलोमीटर की ट्रेकिंग करनी होगी। बर्फ पड़ी होने के कारण और सर्दियों की वजह से घना अँधेरा होगा और जंगली जानवरों का भी डर रहेगा, भालू वगैरह भी दिख जाते है, तो मेरी सलाह मानिए सुबह उजाला होने पर ही चलते है। हरी ने सुझाव दिया।

"भाई ! बाघ अपनी आँखों के सामने देखा था हमने और यहाँ तो बाघ और भालू दोनों बताये जा रहे है, बाघ तो फिर भी ठीक है, भूखा नहीं होगा तो चुपचाप निकल भी जायेगा, लेकिन भालू तो सुना है बिना मतलब के दौड़ा-दौड़ा कर मारता है, भाई हम रास्ते भर एडवेंचर करते हुए ही आये है, मेरे ख्याल से इतना एडवेंचर भी बहुत हो गया अपने लिए, अनजान जगह

है, पहाड़ है, जंगल है, बर्फ है, तो लापरवाही भारी पड़ सकती है।” विनय ने तार्किक बात कही जिसे सुनकर अनिकेत भी सोच में पड़ गया।

“वैसे भी सर बर्फीला माहौल है, सुबह सूर्योदय भी धुंध के कारण नहीं दिखेगा, तो मेरी सलाह माने तो बेमतलब का जोखिम मत उठाइये, आपकी सुरक्षा हमारा कर्तव्य है इसलिए कह रहा हूँ।” कहकर हरी वापस अपने मुख्य कैम्प की ओर बढ़ गया जहां उसके सहायक खाने पीने की व्यवस्था कर रहे थे।

“ठीक है ! हम सुबह उजाले में ट्रेकिंग करेंगे।” अनिकेत ने निर्णय ले लिया। तब तक खाना लग चुका था, इस कड़ाके की ठंड में खाना परोसते ही फौरन ठंडा हो जा रहा था, हरी बार-बार दाल गर्म करता किन्तु हर बार परोसते समय वह ठंडी हो जाती। पीने के लिए भी गर्म पानी के मग रखे हुए थे। तीनों ने खान वगैरह निपटाया और बाहर आ गए, वे अपने आसपास के नज़ारे को देख रहे थे। उन्होंने आकाश में कभी इतने तारें नहीं देखे थे जितने यहाँ से दिखाई दे रहे थे, उनके समक्ष पूरी हिमालयन पर्वत श्रृंखला अपनी पूर्ण सुन्दरता के साथ रात में दमक रही थी। ठंड बेहद ज्यादा हो गई थी, उनका अब बाहर खड़ा रहना भी मुश्किल हो गया था। वे फौरन अपने कैम्प में पहुँचे। ठंड इतनी थी कि तीनों एक ही बेड पर कंबलों को तह कर के ओढ़ कर सोने का प्रयास करने लगे, उन्होंने जैकेट तक नहीं उतारी, काफी देर तक उनके शरीर कांपते और दांत किटकिटाते रहे, लेकिन दिन भर की दौड़ धूप के पश्चात उत्पन्न हुई थकान ने उन्हें जल्द ही निद्रा की आगोश में भेज दिया।

□□□

सुबह कुछ साढ़े बजे अनिकेत की नींद खुली, हालांकि ठंड के कारण देर रात नींद से आँख मिचौली होती रही, इसके बावजूद नींद पूरी हो गई सी प्रतीत हो रही थी, उसने विनय और अनिकेत की ओर देखा, दोनों अब भी सो रहे थे, वह उन्हें सोता छोड़ कैम्प के बाहर आ गया, कैम्प के बाहर भयंकर गलन वाली ठंड हो रही थी, सुबह का दुधिया उजाला फैलने लगा था, उसने अब अपने चारों ओर का किया, रात में वातावरण का सही अंदाजा नहीं लग पाया था, किन्तु अब उजाले में सब स्पष्ट दिखाई दे रहा था, कैम्प के सामने छोटा टीला था जिसके पार मुख्य सड़क थी जहां से वे आये थे, सड़क के दूसरी ओर जंगल थे और जंगलों में बर्फ की सफ़ेद चादर बिछी हुई थी, कैम्प के भी कुछ हिस्सों में बर्फ पड़ी हुई थी जो लगभग ठोस हो चुकी थी। वह ठंड से कांपते हुए हुए कैम्प के पिछले हिस्से में गया जहां दुधिया प्रकाश में सफ़ेद पर्वत नजर आ रहे थे। सफ़ेद बर्फाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं को अब वह स्पष्ट रुप से देख सकता था, उनका कैम्प जंगलों एवं बर्फीली पहाड़ियों के मध्य एक छोटे से मैदानी क्षेत्र में था। वह दूर से दिखाई देते उन पर्वत श्रृंखलाओं को मुंह बाए निहार रहा था, सहसा उसे कुछ याद आया और वह कैम्प की ओर भागा। भीतर आते ही उसने सबसे पहले मानव और विनय को झिंझोड़ कर उठाया। वे इस भयंकर ठंड में उठने के मूड में बिलकुल भी नहीं थे किन्तु अनिकेत ने उनकी एक नहीं सुनी और उन्हें लगभग खींचते हुए कैम्प से बाहर लाया और एक टीले पर लाकर खड़ा कर दिया।

“अरे क्या अनिकेत भाई, कुछ देर और सोने दो, बाहर तो जबरदस्त ठंड पड़ रही है।” विनय झुंझलाया, वह ठंड से ठिठुर रहा था, यही हाल मानव का भी था।

“अगर सो गए तो बहुत कुछ खो दोगे, वह सफ़ेद बर्फीली पहाड़ियां देखो, केदारनाथ, सतोपंथ, चौखम्बा इत्यादि।” अनिकेत ने पर्वतों की ओर उँगली से संकेत किया।

“वह तो यही रहेंगे, दिन भर समय है देखते रहने का।”विनय पुनः झुँझलाया।

“दिन भर केवल पर्वत देख सकते हो, लेकिन अब देखो और देखते रहो कुछ मिनट, जब सूर्य उगेगा तब तुम्हें पता चलेगा कि क्या मिस करने वाले थे तुम लोग।” अनिकेत पूरे उत्साह से बोला, दोनों मन मारकर देखने लगे, वे आधी नींद में अवश्य थे किन्तु उजाले में अपने आस पास का परिवेश देख कर वे भी अवाक रह गए थे।

कुछ ही देर में सूर्य की पहली किरन सामने वाली सफ़ेद पहाड़ी के शीर्ष पर पड़ी, और वह भाग सोने की भांति स्वर्णिम और लाल रंगत लिए चमक सा उठा, विनय और मानव वह दृश्य देखकर हक्के बक्के रह गए, किन्तु यह अभी आरंभ था, सूर्य की किरणें धीरे-धीरे उस पर्वत श्रृंखला को अपने कब्जे में लेती जा रही थी, सूर्य की लाल पीली किरणें उन सफ़ेद बर्फीली चोटियों से टकराकर परिवर्तित सी हो रही थी, उनके लिए वह बेहद अकल्पनीय दृश्य था, एक सम्पूर्ण पर्वत श्रृंखला सोने की परत चढ़ाये हुए पानी में नहाई सी लग रही थी, मानो गर्म लाल दहकता लावा सा पहाड़ियों के शीर्ष से बहकर चारों ओर फ़ैल रहा था। मानव भागते हुए कैम्प में गया और अपना मोबाइल लेकर आया।

“सुबह सुबह अनिकेत भाई ने हमारी नींद खराब करके हमें इस माईनस तापमान में लाकर खड़ा कर दिया है, लेकिन हमें अब इस चीज का कतई अफ़सोस नहीं है, क्योंकि हम अपने सामने जो दृश्य देख रहे है वैसा दृश्य हमने अपनी कल्पनाओं में भी नहीं देखा था, वह देखिए वह सम्पूर्ण पर्वत श्रृंखला सोने की भांति दमक रही है, सूर्य की किरणों से सम्पूर्ण बर्फीला पर्वत मानो किसी सोने के पर्वत में परिवर्तित सा होता दिखाई दे रहा है, मैं इसकी खूबसूरती को शब्दों में वर्णित नहीं कर सकता, किन्तु यह अद्भुत है, दिव्य है, सुंदर है, अतुलनीय है, मेरे जीवन का देखा हुआ अब तक का सबसे सुंदर दृश्य, मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि यही बात अनिकेत और विनय पर भी लागू होती है।” मानव ने फिल्माना आरंभ कर दिया। काफी देर तक उस माहौल को निहारने के पश्चात अब उन्हें फ्रेश होना था, उन्हें ट्रेकिंग पर भी निकलना था।

वाशरूम में पानी नहीं आ रहा था, उन्होंने फौरन कैम्प के सामने स्थित परिचालन कैम्प का दरवाजा खटखटाकर उन्हें पानी की समस्या बताई तब पता चला कि ठंड के कारण टंकी का पूरा पानी जम गया है, किसी प्रकार उन्होंने चार बाल्टियाँ गर्म करके उन्हें पहुंचाई जिससे उन्होंने ब्रश और नित्य क्रिया इत्यादि निपटाए, नहाने की तो किसी में हिम्मत ही नहीं थी। इस ठंड में नहाना मतलब आफत। हरी भाई नाश्ते का बंदोबस्त करने लग गए और तीनों जैकेट पहन पूर्णतया तैयार होकर बाहर कुर्सियों पर आ बैठे, इस स्थान पर रात में उन्होंने अलाव जलाया था। गुनगुनी धूप निकलने लगी थी और उस धूप के कारण ठंड का प्रभाव कम होने लगा, इसके बावजूद इतना ठंडा तापमान था कि जैकेट, कनटोप और दस्ताने उतारने का सहस उनमें नहीं था।

“तो अब आगे की योजना सुनो, हम अब नाश्ते के पश्चात दस बजे तक ही निकल पायेंगे, उससे पहले ट्रेकिंग सम्भव नहीं होगी, साढ़े तीन किलोमीटर की उंचाई पर ट्रेक करना है, तब तुंगनाथ मंदिर पहुंचेंगे, तुंगनाथ से भी डेढ़ किलोमीटर और ऊपर चन्द्रशिला है, हम वहां भी जायेंगे तो कुल मिला कर छह सात घंटे लग जायेंगे और हम शाम तक वापस कैम्प में पहुँच जायेंगे, एक बात ध्यान रखना मंदिर बारह हजार फीट से ज्यादा की उंचाई पर है, वहां ऑक्सीजन की मात्रा भी सामान्य से कम है, जिस वजह से थकान, सांस फूलना, सिरदर्द,

चक्कर या उल्टी इत्यादि हो सकती है, इसलिए जल्दबाजी में कोई ट्रेकिंग नहीं करेगा, हमारे पास पूरा दिन पड़ा है तो हम आराम से हिस्सों में ट्रेकिंग करेंगे। ठीक है ?” अनिकेत उन्हें आवश्यक निर्देश दिए।

“चन्द्रशिला और तुंगनाथ की क्या कहानी है ?” विनय इस स्थान का महात्म्य जानने को उत्सुक था।

“वो मैं ट्रेकिंग के दौरान ही बताऊंगा, उसका भी अपना ही मजा रहेगा।” अनिकेत मुस्कराया।

गरमागरम चाय और आलू पराठों का नाश्ता करने के पश्चात उन्हें थोड़ी राहत मिली, लेकिन इन सब में कब नौ बज गए पता ही नहीं चला।

“साहब! ट्रेकिंग के लिए जा रहे हैं तो गाइड ले लीजिये सही रहेगा।” हरी ने पराठे परोसते हुए कहा। पराठे वाकई उम्मीद से ज्यादा स्वादिष्ट थे और खाने पर कोई रोक टोक भी नहीं थी, सब कुछ टेंट के पैकेज में एकमुश्त शामिल था।

“नहीं ! हम गाइड नहीं चाहते, हम यहाँ खुद से घूमना चाहते हैं, रास्तों को और इस माहौल को महसूस करना चाहते हैं, मैंने यहाँ आने के पहले काफी रिसर्च की है और काफी कुछ पढ़ रखा है, रास्ता तो सीधा सा है, बस हमें तुंगनाथ मंदिर के गेट तक पहुंचा दीजिये। बाकी हम कर लेंगे।”अनिकेत को गाइड बिलकुल भी नहीं चाहिए था, वह चीजों को खुद देखना समझना चाहता था। हरी ने काफी प्रयास किया किन्तु तीनों ने तय कर लिया कि उन्हें गाइड की आवश्यकता नहीं है।

“आप लोगों ने ट्रेक शूज या स्नो शूज भी नहीं पहन रखे, आगे ट्रेक पर बर्फ है तो इन स्पोर्ट्स शूज में तकलीफ होगी, आप चाहे तो आपको किराए पर ट्रेक शूज दिलवा देता हूँ, यहाँ मिलते है।” हरी ने उनके स्पोर्ट शूज को देखकर कहा।

“मेरा ग्यारह नम्बर है।” अनिकेत ने कहा और संयोग से विनय का भी वही साइज था। हरी ग्यारह नम्बर सुनकर थोड़ा चिंतित हो गया।

“ग्यारह नम्बर के जूते उपलब्ध नहीं है, इनके नाप के मिल जायेंगे।” हरी ने मानव की ओर देखते हुए कहा।

“जब मेरे बाकी दो दोस्त बिना ट्रेक शूज के जा सकते है तो मैं भी ऐसे ही जाऊँगा।” मानव ने भी मना कर दिया। हरी ने काफी समझाया किन्तु वह नहीं माना।

“मानव अपना ऑफिस बैग ले लो, उसमें पानी की बोतलें और खाने के ड्राईफ्रूट्स के पैकेट्स रख लो जो हमने ऋषिकेश से खरीदे थे, ऊपर उसकी जरूरत पड़ेगी। काफी थकान होगी।” अनिकेत ने उसे और जरूरी निर्देश दिए। मानव ने देर ना करते हुए फौरन ऑफिस बैग में अनिकेत के बताये अनुसार सामान भर लिया, उसने बैग एक बार चेक किया। उसमें पहले ही उसकी, अनिकेत और विनय की लिखी की पुस्तकों की एक-एक प्रतियाँ रखी हुई थी। उनका कोई ख़ास भार नहीं था इसलिये उसने उन्हें रहने दिया।

अनिकेत काफी समय से कुछ कमी महसूस कर रहा था, उसने अपनी जेब में हाथ डाल कर सिगरेट का पैकेट निकाला। हालांकि वह सिगरेट का लती नहीं था, किन्तु मीरा के गुजरने के बाद से अकेलेपन के कारण शराब पीते हुए थोड़ा बहुत सिगरेट के कश भी लगा लिया करता था। हालांकि वह इन दोनों चीजों की गिरफ्त में हरगिज नहीं था, उसने नशे को अपने ऊपर कभी हावी नहीं होने दिया था, यही कारण था कि दिल्ली से आरंभ हुई इस यात्रा में उसने एक

बार भी सिगरेट नहीं सुलगाई थी। लेकिन इस ठंड भरे माहौल में उसे सिगरेट की तलब सी हुई। उसने पैकेट से एक सिगरेट निकाल कर होंठों में लगाई किन्तु सामने दिखाई देते केदारनाथ पहाड़ियों को देखकर ना जाने क्या हुआ की लाइटर जलाते उसके हाथ ठिठक गए। उसने सिगरेट मुंह से निकाल कर अधजले अलाव में फेंक दी।

वह खुद को बिना सिगरेट के भी बेहतर महसूस कर सकता था। और बिना कोई विचार किये उसने पूरा पैकेट ही अलाव में फेंक दिया। तब तक नारायण भी वहां आ पहुंचा, उसे देखकर तीनों चौंक पड़े, कल कैम्प आने के पश्चात वो उसे लगभग भूल ही गए थे।

“नारायण जी आप ? आप कहां थे रात भर ?” अनिकेत को ग्लानि सी हुई कि उसने एक बार भी नारायण का हालचाल जानने का प्रयास नहीं किया था।

“जी मैं खाना वगैरह खाकर हरी भाई के साथ ही सोया था। आप चिंता मत कीजिये, हमारा यह रोज का काम है, हम तो गाड़ी में ही स्लीपिंग बैग में सो जाते है।” वह हंसा।

“नारायण जी, इन्हें तुंगनाथ के रास्ते में जहाँ तक गाड़ी जायेगी वहां तक छोड़ दीजिये।” हरी ने उसे निर्देश दिया तो नारायण ने सर हिला दिया। कुछ ही देर में वे सभी ट्रेकिंग के लिए तैयार थे।

□□□

रास्ता सुहाना हो गया था, वे जैसे जैसे उस संकरे मार्ग पर बढ़ रहे थे वैसे वैसे उन्हें मार्ग के दोनों तरफ बर्फ बढ़ती ही दिखाई दे रही थी। आखिरकार लगभग डेढ़ किलोमीटर आगे जाकर गाड़ी रुक गई।

“क्या हुआ नारायण जी ?” विनय ने प्रश्न किया।

“आगे सड़क पर ठोस बर्फ जमी हुई है साहब ! ब्लैक आइस कहते हैं उसे, उस पर बहुत ज्यादा फिसलन होती है, यहाँ से मंदिर तक गाड़ी का जाना मुश्किल है, अगर गाड़ी फिसली तो सीधे किनारे वाली खाई में जा गिरेगी। खतरा है।” उसने विवशता जाहिर की, उसकी बात पर अविश्वास करने का प्रश्न ही नहीं उठता था, वे स्वयं उस बर्फीले परिवेश को देख रहे थे, दिखने में जितना सुंदर था असल में वह उतना ही खतरनाक भी था।

“तो हम यहाँ से पैदल निकलते हैं, यही एकमात्र रास्ता है मंदिर का तो हम भटकेंगे नहीं और सीधे गेट तक ही पहुँच जायेंगे, यह जो जंगलों के पार सुनहरा सा पहाड़ दिखाई दे रहा है, यही है ना तुंगनाथ का पहाड? “ अनिकेत ने उस पहाड़ को पहचानते हुए कहा।

“जी वही है ! ठीक है, यहाँ से पैदल जाने में कोई जोखिम नहीं है, आप जा सकते है। कोई तकलीफ हुई तो मेरा और हरी भाई का फोन नम्बर है ही, तो आप संपर्क कर लीजिएगा, यात्रा के लिए शुभकामनायें, भगवान महादेव आपकी यात्रा सफल करें।” नारायण ने शुभकामनायें दी, तीनों ने धन्यवाद कहा और गाड़ी से उतर गए, नारायण ने गाड़ी वापस कैम्प की ओर मोड़ ली। अब तीनों उस पक्की सड़क पर खड़े थे जो एक ओर पहाड़ी सफ़ेद बर्फीले जंगल तो दूसरी ओर खाई से के मध्य स्थित थी, उस सफ़ेद बर्फ को देखकर उत्साहित हो गए थे, सम्पूर्ण सड़क सफ़ेद बर्फ से नहाई हुई थी। उन्होंने आज तक कभी इस प्रकार बर्फ को अपने सामने नहीं देखा था, उन्होंने जी भर कर वहां तस्वीरें खिंचवाई।

“तो हमें ड्राइवर ने तुंगनाथ गेट से लगभग तीन किलोमीटर पहले ही छोड़ दिया है, हमें अब ट्रेकिंग यही से शुरू करनी है, इसका मतलब अब हमें लगभग साढ़े छह किलोमीटर चलना होगा।” मानव ने विडियो फिल्माते हुए कहा।

वह बर्फीली सड़क काफी घुमावदार थी, अनिकेत ने उस सम्पूर्ण सड़क को और सामने दिखाई देते पहाड़ को देखा और फिर अपने आसपास के बर्फीले जंगलों और टीलों की ओर एक नजर दौड़ाई, उसे वहां पैरो के निशानों से बने पगचिन्ह दिखाई दिए, स्पष्ट था कि यहाँ से भी आवाजाही का मार्ग था।

“मेरे ख़याल से यदि हम सड़क से जायेंगे तो हमें काफी समय लग जायेगा, तीन किलोमीटर सीधी सड़क का सफर है, तुंगनाथ का पहाड़ वह जंगलों से सामने ही दिखाई दे रहा है, तो मेरे ख्याल से हमें शार्ट कट लेना चाहिए, हम पहाड़ियों और जंगलों से होते हुए चलते है, यहाँ यात्रियों और रहिवासियों के पैरों से बनी हुई पगडण्डी स्पष्ट दिखाई दे रही है, हम इनके पीछे चल सकते है, क्या कहते हो ?” अनिकेत ने उनकी ओर देखा।

“क्या पता यह पग डंडी कहा जा रही है, इस पर चलना सही होगा ? जंगल है, रात में आते हुए बाघ देखा था, भूल गए क्या ? हो सकता है कोई जंगली जानवर ही सामने पड़ जाए।” मानव सशंकित स्वर में बोला। उसकी बात सुनकर एकबारगी विनय भी घबरा गया।

“अरे भाई वो सब निशाचर जीव होते है, दिन में नहीं निकलते। एक काम करते है इस पगडण्डी का पीछा करते है, तुंगनाथ का पहाड़ ऊपर की सीध में दिखाई दे रहा है, यदि यह मार्ग उस दिशा के बजाय किसी और दिशा में मुड़ा तो वापस आ जायेंगे, क्या कहते हो ? फ़ालतू में हमें ज्यादा चलना नहीं है क्योंकि ट्रेकिंग में अत्यधिक थकान होने वाली है, इसलिए अगर आसान रास्ता है तो हमें वही चुनना चाहिए।” अनिकेत ने कहा तो दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखकर मूक सहमति दे दी। इसी के साथ तीनों मुख्य सड़क छोड़ कर किनारे स्थित पहाड़ी रास्तों पर बढ़ गए, वहां आधी फीट तक बर्फ पड़ी हुई थी, बर्फ में चलने का यह पहला ही अनुभव होने के कारण वे उत्साहित थे, मानव यह सब फिल्माने से खुद को रोक नहीं पा रहा था। कुछ दूर चलने पर उन्हें पत्थरों से बना ट्रेकिंग मार्ग दिखाई दिया जिस पर ठोस बर्फ जमी हुई दिखाई दे रही थी, यह मार्ग तुंगनाथ पहाड़ की सीध में जा रहा था।

“लो देखो, पथरीला ट्रेक पाथ है यहाँ और ये उसी ओर जा रहा है, यानी हमने सही रास्ता चुना है। बस ठोस बर्फ से थोड़ा बचकर रहो।” इतना कहते ही अनिकेत खुद ठोस बर्फ पर पैर पड़ने से फिसला और आधी फीट की बर्फ की चादर में जा धंसा, भुरभुरी बर्फ में गिरने के कारण उसे चोट नहीं लगी लेकिन सारे कपड़ों पर बर्फ बालू की भांति चिपक गई, दोनों उसे इस तरह गिरता देख कर हंसे और हाथ देकर उसकी उठने में सहायता की, वह अपने कपड़ों से बर्फ झाड़ते हुए उठा।

“आदत डाल लो। अभी तो शुरुआत हुई है, हंसने के मौके सबको मिलने वाले है।” अनिकेत खिसियानी हंसी हंसा और मार्ग पर बढ़ गया, अभी उन्होंने ढंग की चढ़ाई आरंभ भी नहीं की थी उन्हें अपनी साँसे फूलती हुई सी प्रतीत हुई, वे हांफने लगे। आगे जाकर मार्ग के किनारे लगे पत्थरों पर बैठ कर अपनी साँसों को नियंत्रित करने का प्रयास करने लगे।

“भाई अभी तो दस मिनट भी नहीं चले और साँसे धौंकनी की तरह चलने लगी, थकान हो रही।” विनय ने लम्बी लम्बी साँसे ले रहा था, यहाँ सांस लेने पर भी भीतर मिंट की सी ठंडक महसूस हो रही थी।

“भाई सबसे उंचाई पर स्थित मंदिर यूँ ही नहीं कहा गया है, एक-एक घूंट पानी पियो और चलो। याद रहे एक साथ ज्यादा पानी नहीं पीना।” अनिकेत ने निर्देश दिए, उन्होंने एक-एक घूंट पानी पीया, कुछ मिनट बैठ कर फिर उस बर्फीले और सख्त मार्ग पर आगे बढ़ गए। मार्ग

में कही सूखी जमीन दिखाई देती तो कहीं बर्फ से संपूर्ण मार्ग ढंका होता था, अब धूप भी खिली हुई थी जो सफ़ेद बर्फ से परावर्तित हो रही थी जिस कारण वातावरण जगमगा सा रहा था। आगे जैसे जैसे रास्ता ऊपर की ओर बढ़ने लगा वैसे वैसे वह कठिन होने लगा, एक बार तो बर्फ से ढंकी झाड़ियों के मध्य से निकलना पड़ा। काफी देर तक चलने के पश्चात उन्हें अब बिना बर्फ की जमीन का दृश्य दिखाई दिया, लगभग एक घंटे बर्फ की सफ़ेद चादर के मध्य चलते हुए यह पहला पड़ाव आया था जहां बर्फ नहीं थी, वहां कोई उजाड़ सा गाँव था, जहाँ कोई रहता नहीं था, कुछ कच्चे पक्के मकानों के अवशेष दिखाई दे रहे थे, ट्रेकिंग पथ उन अवशेषों के आसपास से ही बना हुआ था। यहाँ पहुंचकर काफी देर बाद उन्होंने अपने चारों ओर देखा और वे हैरान रह गए।

केदारनाथ पर्वतश्रृंखला की सफ़ेद बर्फ से ढंकी विशालकाय एवं वृहद चोटियों से मानो समस्त वातावरण घिरा हुआ सा दिखाई देने लगा, यूँ प्रतीत हो रहा था मानो वह बर्फीला पर्वत इस स्थान की चारदीवारी हो और वे उसके भीतर किसी खुले कमरे में थे, यहाँ आकाश निरभ्र नीला और गहरा था, आकाश का इतना गहरा नीला रंग उन्होंने ना कभी देखा था और ना कभी सुना था। वे हक्के बक्के से इस विशाल दृश्य को नजरें फाड़े देख रहे थे, अब उन्हें प्रतीत हो गया था कि वे काफी उंचाई पर आ गए है, नीचे विशालकाय घने जंगलों से भरी खाई और दूर तक नीली परछाइयों के झुण्ड सी दिखाई देती अनेक पर्वत श्रृंखलायें स्पष्ट दिखाई दे रही थी। विशालकाय पर्वत बर्फ और घने जंगलों से अच्छादित थे, यहाँ आकर हवा में भी कुछ भारीपन सा महसूस होने लगा था।

एक स्थान पर आकर वे ठहर गए, यहाँ से मानो सम्पूर्ण हिमालय दिखाई दे रहा था, बेहद अद्भुत दृश्य था वह जिसका वर्णन शब्दों में करना लगभग असम्भव सा था। दूर से दिखाई देते चौखम्बा पर्वत के शीर्ष पर बर्फ के सफ़ेद बादलों का झुण्ड सा बह रहा था, जो उठते धुएं सा प्रतीत हो रहा था। तीनों ने उस स्थान पर विभिन्न मुद्राओं में जी भर कर तस्वीरें खिंची। इस दृश्य को देखकर वे अपनी थकान भूल गए थे। देर हो रही थी इसलिए अब आगे बढ़ना ही सही था। कुछ दूर और चलने के पश्चात बर्फ पुन: आरम्भ हो गई और पथरीला मार्ग उसमें ढंक सा गया, तीनों वहां अनेक बार फिसले, फिसलते फिसलते बचे, काफी बार गिरने से वे पस्त से हो गए। फिर भी आगे बढ़ते रहे। लगभग और एक घंटे पश्चात उन्हें कुछ मकान दिखाई देने लगे।

“ये पक्का तुंगनाथ के गेट के सामने वाले मकान है, हम अभी उसके पीछे है, चलो अब पहुँचने वाले है।” अनिकेत उत्साह से बोला। उसके पीछे चलते चलते मुश्किल से आधे घंटे में वे तुंगनाथ द्वार के सामने वाली सड़क पर पहुँच चुके थे। सड़क छोटी सी थी और उसके दोनों छोर पर कुछ ढाबे, छोटी दुकानें, और रहने के लिए कुछ छोटे मोटे होटल वगैरह थे, वहां ज्यादा घनी आबादी तो बिलकुल भी नहीं थी। सड़क के किनारे कुछ गाड़ियां अवश्य खड़ी थी, वे निश्चित ही श्रद्धालुओं और ट्रेकिंग के इच्छुक सैलानियों के वाहन थे।

“हमने मुख्य ट्रैक के पहले ही दो बोतल पानी खत्म कर दिया है, तो गेट के सामने दिखाई देते होटल से हम पानी की अतिरिक्त बोतलें ले लेते है और ठंड भी लग रही है तो चाय वगैरह पीते है।” अनिकेत ने कहा, ना करने का प्रश्न ही नहीं उठता था। उन्होंने कुछ अतिरिक्त बोतलें खरीदी, चाय और नूडल्स का नाश्ता किया, तब उनके शरीर में मानो जान सी आई। अब वे ट्रेकिंग के लिए पूर्णतया तैयार थे। दुकान से ही उन्होंने मार्ग के लिए तीन लाठियां भी खरीद ली जो अब तक की बर्फीली चढ़ाई को देखते हुए आगे अवश्य काम आती।

“तो अब हम भगवान महादेव के मंदिर तुंगनाथ के प्रवेश द्वार ओर पहुँच चुके है, अनिकेत भाई के अनुसार यहाँ से असली चढ़ाई आरंभ होती है, हम तीनों ने रास्ता बंद होने के कारण लगभग तीन किलोमीटर पहले से ही ट्रेकिंग आरंभ कर दी थी, जिसने हमें बुरी तरह थका दिया है और अभी असली चढ़ाई बाकी है, प्रवेश द्वार के सामने जो बोर्ड लगा है उसके अनुसार यह तृतीय केदार है, अब ये क्या है वह मुझे नहीं पता, इसके बारे में अनिकेत भाई कुछ बताएंगे।” उसने अनिकेत की ओर देखा।

“यह मंदिर पंचकेदार मंदिर श्रृंखला में से तृतीय क्रमांक पर आता है, पंचकेदारों में सबसे प्रमुख है केदारनाथ, उसके अलावा मधमहेश्वर, रुद्रनाथ, कल्पेश्वर और तुंगनाथ,इत्यादि पांच मंदिर आते है, इन्हें ही पंच केदार कहा जाता है, माना जाता है कि ये मंदिर पांडवों द्वारा बनाये गए है और कई हजार साल पुराने भी है, कुछ शताब्दियों पहले आदि गुरु शंकराचार्य ने इन मंदिरों को और उन तक पहुँचने का मार्ग खोजा था। तब तक केदारनाथ इत्यादि बर्फ में ही ढंके हुए थे। किवंदितियों के अनुसार इन केदारों पर सामान्य मनुष्यों की आवाजाही वर्जित है क्योंकि यहाँ महादेव साक्षात् वास करते है, इसलिए यहाँ मनुष्यों का आना जाना प्रतिबंधित माना गया है, लेकिन अब श्रद्धालुओं और सैलानियों की भीड़ बढ़ती जा रही है, लोग श्रद्धा से तो आते ही है किन्तु अब फैशन और ट्रेवल के शौक के कारण यहाँ हद से ज्यादा भीड़ बढ़ती जा रही है, जिस कारण अंधाधुंध निर्माण हो रहे है, इसी वजह से किसी भी आपदा में यहाँ भयंकर जनहानि होती है, केदारनाथ में आई जलप्रलय इसका एक जीता जागता उदाहरण है।” अनिकेत रुका।

“अब बाकी बातें बाद में, पहले बिना समय गंवाये हम प्रवेश द्वार के भीतर चलते है।” कहते हुए अनिकेत ने प्रवेशद्वार पर बनी सीढ़ियों पर श्रद्धा से माथा टिकाया, उसकी देखा देखी मानव और अनिकेत ने भी सीढ़ियों पर श्रद्धा वश माथा टेका।

“बोलो हर हर महादेव ! बाबा तुंगनाथ की..” अनिकेत सम्पूर्ण शक्ति से चीखा।

“जय !” मानव और विनय ने जयघोष किया, द्वार पर लगी हुई घंटियों को बजा कर उन्होंने ट्रेक पर पहला कदम रखा। आगे बढ़ते ही दो व्यक्ति जो शायद फ़ॉरेस्ट विभाग से संबधित थे, एक टेबल लगाए बैठे दिखाई दिए, वे यात्रियों के नाम वगैरह लिखवा कर सामान की जानकारी लिख रहे थे, औपचारिक जांच पड़ताल और जानकारी दर्ज करके एक पावती कटा कर तीनों आगे बढ़ गए।

पथरीला मार्ग एकदम सूखा हुआ था, वहां बर्फ का नामोनिशान तक नहीं था, प्रकृति के अलग अलग नज़ारे हर कदम पर अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहे थे। दोनों ओर जंगल और पहाड़ थे, वे उस ट्रेक पर चलते जा रहे थे, हर क्षण के साथ ट्रेक की उंचाई बढ़ती जा रही थी। कुछ देर चलने के पश्चात ही बर्फ से सामना हो गया, ट्रेकिंग पथ पूर्णतया बर्फ से ढंका हुआ था, किनारों पर भुरभुरी बर्फ थी और मध्य में कड़ी और चिकनी। तीनों बड़ी सावधानी से उस पर पैर रखते हुए आगे बढ़ रहे थे, शीशे की भान्ति चिकनी और फिसलन भरी सख्त बर्फ पर वे कई बार गिरते पड़ते उस पड़ाव को किसी तरह पार करते रहे, किनारे पर भुरभुरी बर्फ थी, जहाँ पैर धंसते थे, मुख्य मार्ग से चलने की अपेक्षा वहां चलना अधिक सुविधाजनक था।

मार्ग के बाये ओर छोटी सी खाई और वृक्षों का घना जाल था, उन्हें हर कदम संभल कर रखना था, उन्होंने बाई के बजाय दाहिना हिस्सा चलने के लिए अधिक सुरक्षित लगा क्योंकि उस ओर बर्फीले टीले थे जहां खाई में गिरने के मुकाबले कम खतरा था। हालांकि मार्ग हद से

अधिक सुहावना और सुंदर था, चारों ओर बस बर्फ ही बर्फ पड़ी हुई थी, उन्होंने अब तक जो बर्फ देखी थी, उससे दुगुनी बर्फ यहाँ पड़ी हुई थी, जमीन पर घास के नामोनिशान तक नहीं थे, दूर तक केवल बर्फ के अलावा कुछ दिखाई देता था तो वो थे ऊँचे और घने वृक्ष।

“किनारों पर स्थित भुरभुरी बर्फ पर चलो, मध्य में बर्फ ठोस हो चुकी है, हमारे स्पोर्ट शूज वहां बेकार है, वो पकड़ नहीं बना पा रहे, मेरे घुटने पर भी चोट लग गई है। सबसे सुरक्षित ये दाहिनी ओर के पथरीले पाथ के किनारे हैं।” मानव ने भुरभुरी बर्फ को देखते हुए कहा।

“सही कहा लेकिन संभल कर, हमें वहां की गहराई का अंदाजा नहीं है, भुरभुरी बर्फ के ढेर में यदि कोई गड्ढा या निचली जगह भी हो तो पता नहीं चलेगा। और पैर धंस कर गिरने अथवा फ्रैक्चर तक का खतरा हो सकता है, इसलिए हर कदम के पहले अपनी लाठियों को बर्फ में धंसा कर गहराई की जांच करके ही कदम रखो।” अनिकेत ने सुझाव दिया जो वाकई काम का था।

उनके पीछे ही पांच से छह लोगों का दल हर हर महादेव का नारा लगाते हुए आ रहा था, उस दल में से एक भी ऐसा सदस्य नहीं था जो उस ठोस बर्फ में गिरा ना हो, किन्तु फिर भी उनके उत्साह में कोई कमी नहीं आ रही थी।

बर्फ में लाठी धंसाते धंसाते मार्ग सुनिश्चित करना काफी समय खर्चने वाला कार्य था किन्तु उनके पास ट्रेकिंग शूज ना होने के कारण और कोई पर्याय भी नहीं था। वे लगातार उंचाई पर बढ़ रहे थे। इस दौरान वे और कई बार गिरे, किन्तु फिर महादेव का जयकारा लगा कर आगे बढ़ते रहे।

“भाई ! मैं तो कहता हूँ गिरने की स्पर्धा आयोजित करवा लो, ट्रेकिंग में जो सबसे कम बार गिरेगा वो विजयी कहलायेगा।” मानव कराहते हुए बोला। दोनों उसकी बात पर हंस दिए और उन्होंने वहां से हर बार के गिरने का हिसाब रखना आरंभ कर दिया। कुछ मोड़ भरे रास्तों से वह आगे बढ़ते रहे, यह अच्छी बात थी कि बीच बीच में पथरीले मार्ग पर खाई के किनारे रेलिंग बनी हुई थी, वे उस रेलिंग को पूरी शक्ति से पकड़े हुए चिकनी बर्फ पर आगे बढ़ते रहे, एक विशालकाय चट्टान से मार्ग दाई ओर घूम रहा था, किन्तु उस चट्टान के नीचे कचरे का ढेर लगा हुआ देख कर उनका मन वितृष्णा से भर गया।

“देखो यार, ऐसी जगहों पर भी बियर की बोतलें, खाली कैन्स, सिगरेट और नमकीन के पैकेट, पानी की खाली बोतलों और स्नैक्स के पैकेट्स आ ढेर लगा हुआ है, कैसे लोगों का मन करता है ऐसी जगहों पर गंदगी करने का ? क्या हक है उन्हें ऐसे स्थानों पर अपनी दूषित मानसिकता को साथ ले जाने का ? अगर यही श्रद्धा है तो भाई साहब बख्श दीजिये अपने देवताओं को इस श्रद्धा से।” विनय उस स्थान पर कचरे के ढेर को देखकर अपना आपा खो बैठा।

“यह सब श्रद्धालुओं का ही नहीं, बल्कि सैलानियों, ट्रेकिंग करने वालों और लोकल्स का भी काम है, लोग अपनी घृणित मानसिकता से बाज नहीं आने वाले। कितना मुश्किल है अपने साथ अपना कचरा वापस लाकर किसी कूड़ेदान में डालना ? आप इतनी उंचाई पर ट्रेकिंग कर लेते हो किन्तु थोड़े से कचरे का बोझ आपके हाथ संभाल नहीं पाते। हद है यह, सच में कुछ स्थानों को देवताओं के लिए ही छोड़ देना चाहिए, मानवों का आना वर्जित है तो वह सही ही है, देख लो आकर क्या कर रहे है।” मानव भी झुंझलाया, किन्तु उनके झुंझलाने और पैर पटकने से कुछ नहीं होने वाला था। उन्हें आगे बढ़ना ही था।

अब वे ऐसे मार्ग पर थे जिसके दाहिनी ओर सीधी चढ़ाई थी ओर ढलुआ मैदान जो नीचे दर्रे की ओर जाता था जहां घने जंगल दिखाई दे रहे थे, मैदान पूर्णतया बर्फ से आच्छादित था, वहां कही भी मिट्टी का एक कण तक दिखाई नहीं दे रहा था, जंगलों के ऊपर पहाड़ों का विशालकाय दृश्य दिखाई दे रहा था, चौखम्बा पर्वत अब दो पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य से पूरी शान से किसी राजा के मुकुट की भांति ही खड़ा दिखाई दे रहा था, वह पूर्णतया शुभ्र और बर्फ से ढंका हुआ चार कोनों वाला विशालकाय पर्वत था, चटख धूप के कारण वातावरण चमक सा रहा था, बर्फ के कण हीरे के असंख्य टुकड़ों की भांति चमचमा रहे थे, उनके चारों ओर मानो प्रकृति ने असंख्य तारें बिछा रखे से प्रतीत होते थे। दूर से दिखाई देते चौखम्बा के शीर्ष पर बर्फीली सफ़ेद धुल सी उड़ती हुई स्पष्ट दिखाई दे रही थी। सम्पूर्ण वातावरण ऐसा था मानो वे पृथ्वी के सबसे ऊँचे भाग पर आकर खड़े हो गए थे।

“भाई ! मैं बता नहीं सकता कि यह सब देखकर मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ। अद्भुत है यार यह सब, एकदम अद्भुत।” विनय की आँखें तक गीली हो गई इस अद्भुत और अकल्पनीय सुन्दरता को देखकर।

“भाई इसे इंडिया का स्वीट्जरलैंड कहते हैं।” उनके पीछे आते दल में से एक व्यक्ति ने अपने साथियों से वहां की विशेषता बताई। विनय को यह बात चुभ सी गई, वह उसकी ओर मुड़ा।

“सुनो भाई साहब।” उसने उस व्यक्ति को संबोधित किया जिसने स्वीट्जरलैंड से उसकी तुलना की थी।

“जी बोलिए।” वह मुस्कराया।

“ऐसा जरुरी क्यों है कि हमें अपने स्थानों को सुंदर बताना हो या उसका वर्णन करना हो तो विशेषणों के लिए हमें विदेशी नामों की जरूरत महसूस होती है ? क्या बिना विदेशी उदाहरणों के इसकी सुन्दरता वर्णन नहीं किया जा सकता ? आपको इसकी तुलना स्वीट्जरलैंड से क्यों करनी है ? भाई साहब होगा स्वीट्जरलैंड अपनी जगह की तोप, लेकिन चोपता-तुंगनाथ अपने आप में एक विशेषण है और इसका कृपया चोपता कहकर ही वर्णन कीजिये, यह अपने आप में कहीं अधिक सुंदर स्थान है, इसे स्वीट्जरलैंड कहकर इसका अपमान मत कीजिये।” विनय ने बड़ी मुश्किल से अपने स्वर में सौम्यता बनाये रखते हुए कहां। वह व्यक्ति उसकी बातों से शर्मिंदा सा हो गया।

“आपने सही कहा भाई, यह जगह अपने आप में ख़ास है और इसे पहचान के लिए किसी अन्य स्थान से तुलना की आवश्यकता नहीं है।” उसने नम्रता से अपनी गलती मान ली। विनय मुस्करा दिया, अनिकेत और मानव उसे देखते ही रह गए।

“भाई, ट्रेकिंग का मार्ग यहीं से दिखाई दे रहा है, काफी घुमावदार है और घूम घूम के पहाड़ के चक्कर लगा कर ऊपर जा रहा है, क्यों ना हम लंबा रास्ता लेने के बजाय सीधी चढ़ाई पर चढ़े और शार्ट कट ले, जैसे हमने पीछे किया था, इससे समय भी बचेगा और ब्लैक आइस वाले सख्त मार्ग पर चलने का जोखिम भी नहीं रहेगा, सीधी चढ़ाई पर भुरभुरी बर्फ है तो वहां गिरने का भी खतरा नहीं रहेगा, गिरे तो चोट भी नहीं लगेगी।” अनिकेत ने लम्बे और घुमावदार मार्ग को देखते हुए कहा। अब दोपहर हो आई थी। चटख धूप पड़ रही थी, उनके चेहरे इस धूप से लाल से प्रतीत हो रहे थे। जैकेट्स के भीतर हल्की गर्मी भी महसूस होने लगी थी। अनिकेत ने अपनी जैकेट उतार कर कमर में बाँध ली, मानव ने भी उसका अनुसरण किया किन्तु

कुछ ही मिनटों में ठंड से वे कांपने लगे, चारों ओर बर्फ ही तो थी, हवायें तक बर्फीली हो रही थी जिस वजह से बिना जैकेट के रहना उन्हें मुश्किल लगने लगा। उन्होंने पुन: जैकेट पहन लिए और सीधी चढ़ाई वाले मार्ग पर आगे बढ़ गए, भुरभुरी बर्फ एक से डेढ़ फीट तक जमी हुई थी, जिसमें चलना और अधिक थकाऊ काम था। उन्हें एक-एक पैर रखने में कठिनाई हो रही थी, कुछ स्थानों पर तो उनके घुटनों तक बर्फ थी जिसमें वे एक हिसाब से फंसते जा रहे थे, ऐसे में गिरना भी हो रहा था, चोट भले नहीं लग रही थी किन्तु निरंतर गिरते रहने के कारण वे जल्द ही अपनी रही सही ऊर्जा खोकर बर्फ के ढेर में ही पस्त होकर बैठ गये। अब वे सीधी चढ़ाई पर काफी दूर आ चुके थे।

"भाई हमने गलती कर दी यह रास्ता पकड़ कर, ट्रेकिंग पथ पर कम से कम मार्ग के उतार चढ़ाव का तो अंदाजा लग रहा था, किन्तु बर्फ से ढंकी इस पहाड़ी चढ़ाई पर उतार चढ़ाव का अनुमान लगाना तक कठिन हो रहा है, पैर रखते ही पता चलता है के वहां उम्मीद से ज्यादा गहरा गड्ढा है, कहीं पर ठोस चट्टान है, तो कही दर्रा है, अब पीछे भी नहीं जा सकते, एक तो इस एक डेढ़ फीट की बर्फ में चलना भी मेहनत का काम है, पैर धंसे जा रहे है, पूरी ताकत उन्हें खींचने में ही लग रही है, अब तो जैकेट्स, पैंट और दस्ताने तक इस बर्फ से भीगने लगे है, स्पोर्ट्स शूज तक में बर्फ जाती महसूस हो रही है।" अनिकेत हांफने लगा, वही हाल दोनों का भी था, वे पस्त हो गए थे, किन्तु आगे बढ़ना जरुरी था। तो किसी प्रकार वे बर्फ में गिरते पड़ते घिसटते हुए आगे बढ़ते रहे, जिसे शार्ट कट समझ कर वे आगे बढ़े थे वह मार्ग अब दुगुना समय और ऊर्जा ले रहा था, तीनों के तीनों अब चोटिल हो चुके थे, किसी की कलाई मुड़ी हुई थी तो किसी की पीठ पर चोट लगी थी, गिरने की गिनती करना तो वे भूल ही चुके थे। ऊपर से थकान हद से अधिक हो रही थी। उन्होंने थोड़ी थोड़ी मात्रा में पानी पीया और मार्ग में कई स्थान पर कुछ देर आराम करके आखिरकार किसी तरह वह चढ़ाई पार करके वे मुख्य ट्रैक पर आ पहुंचे। मुख्य ट्रैक पर पहुंचकर वे किनारे पर बैठ गए, जहाँ बर्फ की ठोस और भुरभुरी सतह पर नम भूसा फैला हुआ था।

उन्होंने पीछे देखा जिस मार्ग से वे आये थे, वह वाकई बेहद कठिन और दुष्कर मार्ग था, उसकी भयावहता और जोखिम उन्हें उंचाई पर पहुँच कर ही पता चली। मानव के दस्ताने में भूसा लगा तो उसने उसे झाड कर साफ़ किया।

"इतना भूसा क्या पड़ा है रास्ते में भाई ?" मानव दस्ताने और पैंट को साफ़ करते हुए बोला।

"वह भूसा नहीं है, घोड़े और खच्चरों की विष्ठा है।" अनिकेत हंसते हुए बोला, यह सुनते ही मानव ने बुरा सा मुंह बनाया, यही हाल विनय का भी हुआ। अब वे और नहीं बैठ सकते थे, अभी आधा ही रास्ता पार हुआ था, उन्हें अभी और चढ़ाई चढ़नी थी। और इस बार ठोस मार्ग से आगे बढ़ना था। किसी प्रकार वे उस ठोस बर्फ पर फूंक फूंक कर कदम रखते हुए गिरते पड़ते आगे बढ़ते रहे, बीच बीच में बनी रेलिंग्स उन्हें राहत प्रदान कर रही थी, उसे पकड़ कर वे उस फिसलन को सहजता से पार कर लेते थे, इसी एक चढ़ाई के दौरान रेलिंग पकड़े हुए अनिकेत का पैर ब्लैक आइस पर फिसला किन्तु उसकी पकड़ रेलिंग पर मजबूत थी, शरीर का पूरा भार उसकी कलाई पर आ जाने से वह मुड़ सी गई और पेट के बल उस कठोर सतह पर ना केवल गिरा बल्कि कई फीट तक नीचे फिसलता भी चला गया। दर्द से उसका चेहरा टेढ़ा हो गया और वह जहाँ गिरा वही अपनी कलाई थामे बैठ गया, पीड़ा की एक लहर उसके

चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। किन्तु यह समय पीड़ा के कारण रुकने का बिलकुल भी नहीं था, उनके पीछे वाली टोली भी उनसे कई मोड़ आगे जा चुकी थी और वे शार्ट कट लेकर, अपने आप को तुड़वा कर भी उनसे पीछे रह गए, उन्होंने एक नजर सम्पूर्ण पहाड़ी को देखा, मुश्किल से उंगलियों पर गिनने लायक लोग दिखाई दे रहे थे। और भी दूर दूर छितराये हुए थे।

"चलो, हमने आधा रास्ता पार कर लिया है, मेरे ख्याल से दो मोड़ और पार करने के बाद हम मंदिर पहुँच चुके होंगे, यहाँ से जो ऊपर सफ़ेद चोटी दिखाई दे रही है, वह निश्चित ही चन्द्रशिला है, इसका मतलब अब हम मंदिर के करीब है, थकना नहीं है, थोड़ा थोड़ा पानी पियो, गहरी सांस लो और चल पड़ो, अब की बार ध्यान रहे किसी भी हाल में शार्ट कट के चक्कर में नहीं पड़ना है, एक तो हमारे पास ट्रेकिंग शूज नहीं है, यदि होते भी तो वह भी घुटनों तक बर्फ में नाकाफी होते। इसलिए हम अब इस ट्रेक के रास्ते ही चलेंगे, किनारे वाले हिस्से पर। वहां बर्फ भुरभुरी है तो अपनी लाठियों से जांच पड़ताल करते हुए आगे बढ़ते है।" अनिकेत ने अपनी अनियंत्रित और फूलती साँसों को काबू करने का प्रयास करते हुए कहा, उसका दिल बड़ी जोर से और तेजी से धड़क रहा था, चारों ओर झक्क सफेदी छाई हुई थी, जिससे वातावरण सामान्य की अपेक्षा अधिक प्रकाशमान लग रहा था, वह रोशनी भी अब आँखों में चुभती सी प्रतीत हो रही थी। ठंडी हवा निरंतर चल रही थी।

तीनों ने अपनी शक्ति जुटाई और उठ कर मार्ग पर चल दिए। लगभग एक घंटे बर्फीले मार्ग से चलते चलते उन्हें आखिरकार तुंगनाथ मंदिर का शीर्ष दिखाई देने लगा था, उस स्थान पर एक छोटा निर्माण बना हुआ था, उसके सामने बैठने के लिए टूटा-फूटा सा चबूतरा बना हुआ था, वे चबूतरे पर कुछ देर के लिए बैठ कर सुस्ताने लगे, मंदिर अब बमुश्किल से बीस पच्चीस मिनट की दूरी पर था। यहाँ अनेक श्रद्धालु बैठे हुए थे और कुछ वापस आ रहे थे, सबकी हालत खस्ता थी, आम हालातों में शायद इतनी मुश्किल नहीं होती किन्तु इस समय सम्पूर्ण मार्ग और पहाड़ी बर्फ से ढंकी हुई थी और ठंडी हवायें भी निरंतर चल रही थी, कभी कभार उसमें बर्फ के कणों की धुल भी उड़ती सी प्रतीत हो रही थी। मौसम एक हिसाब से ट्रेकिंग के अनुकूल तो नहीं था, किन्तु सैलानियों की जिद मौसम पर भारी पड़ रही थी, उनका उत्साह कम नहीं हो रहा था, भले ही उनकी संख्या गिनती की थी।

"भाई आप चन्द्रशिला से आ रहे हैं ?" अनिकेत ने वापस आती एक टोली के सबसे आगे चलते युवक से पूछा, उसकी हालत बता रही थी कि वह पूर्णतया थक कर चूर हो चुका था।

"नहीं भाई, आज चन्द्रशिला कोई नहीं जा रहा, सुबह कुछ लोग गए थे लेकिन वो भी वापस आ गए, बता रहे थे बर्फ और फिसलन बहुत ज्यादा है, हम भी बस तुंगनाथ जाकर वापस आ रहे है, योजना तो हमारी भी चन्द्रशिला की थी किन्तु बर्फ और मौसम को देखते हुए यह बहुत मुश्किल है इस समय, सब सैलानी वापस जा चुके हैं, केवल एकाध दल वहां है, वो भी वापसी की तैयारी कर रहे है, आप लोग शायद आखिरी दल वाले हो, आपके आगे दो दल और थे। चलिए चलते है, हर हर महादेव।" उस व्यक्ति ने सविस्तर जानकारी दी, इसी बहाने रुक कर उसने साँसे दुरुस्त करने का प्रयास किया। एक टोली वाले दुबले पतले सरदार जी भी आगे मार्ग के किनारे बर्फ की सफ़ेद टीले पर पस्त होकर लेटे हुए थे, तीनों ने इस सरदार को नीचे अपने दल के साथ नाचते देखा हुआ था, इस सुंदर वातावरण में वह व्यक्ति सबसे ज्यादा खुश नजर आ रहा था और लगभग भांगड़ा करते हुए ही चल रहा था। किन्तु अब उसका भी जोश ठंडा पड़ चुका था और वह उस बर्फीले ढेर में खुद को धंसाये हुए निहाल सा पड़ा था,

उसके बाकी साथी भी उसके इर्द गिर्द पड़े हुए थे। तीनों उन्हें देखकर मुसकुराए और जोर से हर हर महादेव का जयघोष करके मंदिर की ओर बढ़ गए।

मंदिर दिखाई देने से उनमें उत्साह बढ़ गया था, अब इतनी उंचाई पर आकर उन्हें केवल नीली सफ़ेद पहाड़ियों और बर्फ के अलावा और कुछ भी नजर नहीं आ रहा था, उन्हें प्रतीत हो रहा था मानो वे दुनिया के आखिरी छोर की ओर बढ़ रहे थे। हवा अत्यधिक पतली हो चुकी थी और चार कदम चल कर भी सांस फूलने लगी, पन्द्रह मिनट का अंतर पार करने में उन्हें लगभग पचास मिनट लग गए, फिर भी हिम्मत ना हारते हुए वे चलते रहे, आखिरकार वे मंदिर की सीढ़ियों पर पहुँच ही गए , सीढ़ियाँ पर बर्फ की मोटी परतें जमी हुई थी, मंदिर के आसपास बने कच्चे पक्के मकानों-दुकानों पर बर्फ जमी हुई थी और वह सम्पूर्ण इमारतें निर्मनुष्य थी।

“मंदिर का प्रवेशद्वार दिखाई दे रहा है, गजब है भाई, अब तो सारी थकान छू हो गई यह देखकर, लेकिन इतनी उंचाई पर यह सब छोटी मोटी इमारतें क्या है ?” विनय ने कौतूहल वश पूछा।

“यह सब विश्रामालय और छोटी-मोटी दुकानें है जो कपाट बंद होने के बाद छह महीने बंद ही रहते है।” अनिकेत ने कहा और सीढ़ियों पर पूरी श्रद्धा से माथा टेका, मंदिर के द्वार पर लटक रही घंटी बजा कर उन्होंने हर हर महादेव का जयघोष किया, और अपने जूते वहीं उतार कर नंगे पाँव ही बर्फ में चलते हुए मंदिर प्रांगण में प्रवेश कर गए, पांवों को पहली बार बर्फ का स्पर्श हुआ था, उन्हें गुदगुदी सी हो रही थी, पैर बर्फ में धसाते हुए वे मंदिर के समक्ष जा खड़े हुए। वहां बामुश्किल से सात आठ सैलानी या श्रद्धालु थे जो अपने दल के सतह तस्वीरें खिंचवाने में व्यस्त थे।

मानव और अनिकेत ने मंदिर के समक्ष स्थित नंदी की प्रतिमा को स्पर्श किया जो लगभग एक फीट बर्फ के बीच धंसी हुई थी, मंदिर का सम्पूर्ण प्रांगण सफ़ेद बर्फ से ढंका हुआ था, यहाँ से मानो सम्पूर्ण हिमालय दिखाई दे रहा था, चारों ओर ऊँची पहाड़ियां थी किन्तु अब वे उनके शीर्ष पर खड़े थे, लगभग बारह हजार फीट उंचाई पर।

“मंदिर के कपाट तो बंद है।” इतनी देर में पहली बार विनय को अहसास हुआ।

“इस समय बंद रहते है कपाट, पंच केदार दीपावली के पश्चात बंद हो जाते है जो अप्रैल या मई में पुन: खुलते है।” अनिकेत ने बताया।

“तब तो आना ही व्यर्थ हो गया हमारा।” मानव का चेहरा बंद दरवाजे को देखकर लटक गया।

“क्यों भला ? आना क्यों व्यर्थ हो गया ? महादेव क्या किसी मंदिर में सिमटे रहते है? यह महादेव इस सम्पूर्ण स्थान पर विचरते है, वास करते है, उन्हें अहसास कर, प्रतिमा या शिवलिंग तो मात्र उनका प्रतीक है, उन्हें सशरीर अनुभव किया जा सकता है यहाँ, बस एक बार मन शांत रखो और अपने चारों ओर देखो तो सही।” कहते हुए अनिकेत मंदिर के सामने ही बर्फ पर अलथी पलथी मार कर बैठ गया, वह अपलक से उस मंदिर को निहार रहा था, दोनों उसकी बात से सहमत थे, वे भी पता नहीं किस शक्ति के वशीभूत आकर अपना आसन जमा चुके थे, तीनों निस्तब्ध थे और केवल मंदिर को निहार रहे थे, मंदिर काफी उंचा भी नहीं था, किन्तु उसकी बनावट प्राचीन और मजबूत थी, सम्पूर्ण मंदिर पत्थरों की भारी शिलाओं से निर्मित सा प्रतीत हो रहा था, मंदिर के एक ओर पांच छोटे छोटे मंदिर बने हुए थे।

इस जगह पर उन्हें अथाह शांति का अहसास हो रहा था, अनिकेत का बेचैन और अकेला मन यहाँ आकर मानो अनोखे उल्लास से परिपूर्ण हो गया था, विनय की सदैव रहने वाली बेचैनी यहाँ आकर मानो ठहर सी गई, वह अपने चंचल और व्याकुल मन को इस स्थान पर मानो एकदम स्थिर सा महसूस कर रहा था, इस समय उसकी समस्त कुंठा, गुस्सा, जलन, तड़प सब एकदम से अदृश्य हो गई। मानव भी पता नहीं क्यों अपनी उलझन भरी जिन्दगी को एकदम से भूल सा गया था, इस समय उसके मन में कोई अंतर्द्वंद्व नहीं था, इतनी शांति, सुकून और चैन उन्होंने आज से पहले कभी महसूस नहीं की थी, वे पल भर में अपनी सम्पूर्ण थकान भूल चुके थे, तीनों ने आँखें मूंद रखी थी, सम्पूर्ण शरीर भार रहित प्रतीत हो रहा था, ठंडी हवाओं का स्वर किसी संगीत की तरह उनके कानों से होता हुआ हृदय में प्रवेश करके सम्पूर्ण अंतर्मन को उद्वेलित कर रहा था, यह सब उनके लिए किसी स्वप्न के समान था, यदि स्वर्ग की कहीं कल्पना की जा सकती थी, मोक्ष की कोई व्याख्या हो सकती थी तो इस समय में उसी स्थान पर थे, उसी मोक्ष की अनुभूति कर रहे थे। आँखें बंद किये वे एक विचित्र से वातावरण में खो चुके थे, जहाँ उन्हें स्वयं का आभास नहीं था, उनके भीतर 'मैं' जैसा कोई भाव ही शेष नहीं था, सब कुछ अद्वितीय और अलौकिक प्रतीत हो रहा था। और अधिक ध्यान देने पर उन्हें चलती हवाओं के स्वर भी मानो मन्त्र के समान गूंजते प्रतीत होने का भास हो रहा था, काफी देर तक ध्यान मग्न रहने के पश्चात उन्होंने आँखें खोली, मंदिर परिसर में जो दल बचे थे वे वापसी की तैयारी कर रहे थे। किन्तु इनका मन वहां से जाने का हो ही नहीं रहा था, वे एक विचित्र से बंधन में जकड़ गए थे।

"वे पांच छोटे मंदिर किसके है ?" मानव उन मंदिरों के सामने खड़ा था।

"वे पांडवों को समर्पित है, पांडवों ने ही तो यह मंदिर बनवाये थे।" अनिकेत ने कहा।

"आपने कहानी नहीं बताई इन मंदिरों की ?" विनय उस दृश्य को जी भर कर अपनी आँखों में कैद कर लेना चाहता था, मंदिर के सामने दो पतले स्तम्भों पर टंगी घंटियों के मध्य से एक पूरी पर्वत श्रृंखला और सफ़ेद वादियाँ दिखाई दे रही थी, दूर तक बस नीला आकाश और नीली परछाइयों के जाल की भांति फैली हुई अनंत पर्वत श्रृंखलायें, हवा जोरों की बह रही थी जिस कारण बर्फीली धुल भी उड़ती स्पष्ट दिखाई दे रही थी, सूर्य अब अस्त की ओर अग्रसर था, उन्हें पता ही नहीं चला कब सुबह से शाम हो गई, वातावरण में हल्की सी लाली दिखाई देना आरंभ हो चुकी थी।

"महाभारत युद्ध के पश्चात हुए विनाश के कारण महादेव पांडवों से रुष्ट हो गए थे, और पांडवों को भातृहत्या अर्थात भाइयों की हत्या का पाप लगा, श्री कृष्ण ने पश्चाताप हेतु महादेव को मनाने का सुझाव दिया। पांडव उन्हें मनाने आये, महादेव उनके समक्ष नहीं पड़ना चाहते थे, वे क्रोधित थे तो वहां से भाग लिए, पांडवों ने पीछा करना आरंभ किया तो वे एक भैंसे का रूप धरकर भैंसों के झुण्ड में शामिल हो गए। पांडवों को पता चल गया कि महादेव झुण्ड में है, किन्तु इतने भैंसों के मध्य उन्हें पहचानना बहुत कठिन था, बाकी पांडवों ने एक युक्ति करके भैंसों के उस झुण्ड को दो संकरे पर्वतों के मध्य स्थित मार्ग की हांकना आरंभ किया, जिसके शीर्ष पर दोनों मार्गों पर पैर फैलाए भीम खड़े हो गए, अब सब भैंसे तो भीम के पैरों के नीचे से निकल कर आगे बढ़ गए, किन्तु महादेव वहीं रुके रहे, भीम ने उन्हें पहचान कर फुर्ती से जकड़ लिया, किन्तु महादेव भूमि में समा गए, फिर जहां जहां उनके शरीर के हिस्से भूमि से बाहर आये वहां वहां पांडवों ने मंदिर बनाये, वे पांच मंदिर ही पंचकेदार कहलाये जाते है। ये जो तुंगनाथ

है यहाँ महादेव की भुजा निकली थी तो यहाँ उनकी भुजा की पूजा होती है, उनका शीश नेपाल में निकला जहाँ आज पशुपतिनाथ है, जहाँ मुख निकला वह है रुद्रनाथ, यहाँ महादेव के मुख की आराधना की जाती है, मद्महेश्वर में नाभि प्रकट हुई, केदारनाथ में पीठ प्रकट हुई। इस प्रकार जिन पांच स्थानों पर महादेव के अंग निकले वे पूजनीय माने जाने लगे।” अनिकेत ने जितना जाना था उतना बता दिया। काफी देर तक वे उस स्थान पर बैठे रहे, घूमते रहें। मानव उस दृश्य को फिल्माने का मोह संभाल नहीं पाया।

“अब हम विश्व की सर्वाधिक उंचाई पर स्थित एक मात्र शिव मंदिर श्री तुंगनाथ पर है, किन्तु अफ़सोस कि मंदिर के कपाट बंद है, इसके बावजूद यहाँ के वातावरण में जो दिव्यता है, जो सकारात्मक ऊर्जा है वह अद्वितीय है, यहाँ तो कण कण में महादेव वास करते हैं, तो मंदिर के बंद होने या ना होने से कतई फर्क नहीं पड़ता, उनकी उपस्थिति की अनुभूति यहाँ हर जगह है। अनिकेत भाई ने अंत तक इस स्थान के बारे में रहस्य बनाये रखा और वाकई इस स्थान पर आकर यूँ लग रहा मानो हमारी ट्रिप सफल हो गई, आप वीडियो में देख सकते है, इस समय हम सबसे शीर्ष पर है ऐसा प्रतीत होता है, वह सामने केदारनाथ, सतोपंथ, चौखम्बा और ना जाने कौन कौन से पर्वत है और दूर दूर तक केवल पर्वतों और नीले आकाश के अलावा कुछ नहीं दिखाई दे रहा है, सम्पूर्ण पहाड़ी बर्फ से ढंकी हुई है, मैं बता नहीं सकता, मैं इस दृश्य का वर्णन करने के लिए खुद को असमर्थ पाता हूँ, बेहद ही भावुक कर देने वाला क्षण है यह, तो मैं यह वीडियो यही समाप्त करके इस सम्पूर्ण वातावरण में खो जाना चाहता हूँ।” कहकर मानव ने मोबाइल जेब में रख लिया।

अनिकेत ने बादलों और पर्वतों पर हल्की सी लाली देखी।

“भाई ! हम चन्द्रशिला का सूर्योदय तो नहीं देख पाए, लेकिन अगर थोड़ा सा प्रयास और करें तो हम सूर्यास्त जरूर देख सकते है और यकीन मानो सूर्यास्त भी बेहद सुंदर और अद्भुत रहेगा। क्या कहते हो ? बस हमें ऊपर की ओर डेढ़ किलोमीटर और चलना है, वहां इस सम्पूर्ण पहाड़ी की आखिरी चोटी है, वहां पहुँच कर हमें बहुत सी पर्वतश्रृंखलाएं दिखाई देंगी और ऐसा महसूस होगा जैसे हम आकाश में खड़े हो।” अनिकेत अपना लोभ संवार नहीं पा रहा था।

“अगर अँधेरा होने से पहले आ सकते हैं तो चलते हैं, लेकिन इतनी मुश्किल चढ़ाई के बाद डेढ़ किलोमीटर और चलना काफी चुनौतीपूर्ण होगा।” विनय ने अपनी शंका जताई।

“चन्द्रशिला वह स्थान है, जहाँ कहा जाता है स्वयं श्री राम ने तपस्या की थी, और इतने दिन और इतनी दूर का सफर करके हम केवल डेढ़ किलोमीटर से चूक जाए यह मुझे अस्वीकार है, यदि जोखिम हो तो आप दोनों यही रहिये, मैं कोशिश करता हूँ बस, मुझ से यह मोह छूट नहीं पायेगा। चन्द्रशिला वह स्थान है जो मेरे सपनों का हिस्सा है, मैं अपनी कल्पनाओं में तुंगनाथ और चन्द्रशिला को देखा करता हूँ, आज समय आ गया है अपनी कल्पना अपने स्वप्न को साकार करने का, तो मैं केवल डेढ़ किलोमीटर और इन बर्फीली हवाओं के कारण रुक नहीं सकता।” अनिकेत मंत्रमुग्ध सा बोल रहा था।

“अकेले कोई कहीं नहीं जायेगा, हम आपके साथ चलेंगे, वैसे भी रास्ता तो सीधा ही है, बस शार्टकट पकड़ने के कारण तकलीफ हुई, थोड़ा अँधेरा हो भी गया तो थोड़ी बहुत कठिनाई के साथ भी नीचे उतर सकते है।” विनय ने कहा, वह भी तुंगनाथ दर्शन के पश्चात चंद्रशिला का वर्णन सुनकर अत्यंत उत्साहित था। आखिरकार तीनों सहमत हो गए, अनिकेत ने काफी

कुछ पढ़ सुन रखा था, और विभिन्न यात्री ब्लॉग से आवश्यक जानकारियाँ जुटाई थी तो वह चन्द्रशिला वाले मार्ग की ओर बढ़ गया।

“यहाँ दो मार्ग है, जिसपर यात्री अक्सर भ्रमित हो जाते है, एक मार्ग पहाड़ी के नीचे की ओर उतरता है जो गोपेश्वर की ओर जाता है, अक्सर यात्री गलतफहमी में वह मार्ग पकड़ लेते है, चूंकि मैं पहले से जानता हूं इसलिए मैं उस मार्ग पर नहीं चलने वाला। तुंगनाथ ट्रेकिंग का मार्ग तो फिर भी सरल है, किन्तु चन्द्रशिला का मार्ग बेहद कठिन और संकरा है, प्रत्येक कदम फूंक फूंक कर रखना होगा, यहाँ तो फिसल कर बच भी जाते थे, वहां तो अनेक संकरे और पतले मोड़ ऐसे है कि फिसले तो सीधे खाई में गए। इसलिए जल्दबाजी नहीं, संभल कर चलो।” कहते हुए अनिकेत आगे बढ़ा। उसने जैसा बताया था मार्ग उससे भी कही अधिक दुष्कर और कठिन था, वे लगभग सीधी चढ़ाई चढ़ रहे थे, घनी बर्फ के कारण मार्ग लगभग दिखाई नहीं दे रहा था, बर्फ में ढंके किनारों पर चलना मतलब जान जोखिम में डालना, क्योंकि किनारों पर सतह थी या भुरभुरी बर्फ यह अंदाजा लगाना काफी मुश्किल था, यदि वहां बर्फ होगी तो पैर रखते ही हजारों फीट नीचे गिरना तय था।

“यहाँ से गिरे तो आत्मा को ऊपर जाने में ज्यादा तकलीफ भी नहीं होगी।” मानव उस खतरनाक संकरे और बर्फीले मार्ग को देखकर थर्रा गया था, किन्तु एक अनजानी प्रेरणा उन्हें आगे बढ़ने पर विवश करती जा रही थी, वे पहाड़ी के किनारे बने संकरे मार्ग पर धीरे धीरे आगे बढ़ रहे थे, चूंकि स्पोर्ट शूज थे तो फिसलन का अत्यधिक खतरा था, काफी देर तक ऊँचे नीचे रास्तों पर चलते रहने से उनपर थकान हावी होने लगी थी, सांस लेना भी दुष्कर होता प्रतीत हो रहा था, बर्फीली हवाएं अब धीरे धीरे बढ़ने लगी थी, आधे से अधिक मार्ग पार कर लेने के पश्चात उन्होंने पीछे देखा, बर्फीली हवाओं के कारण पीछे का मार्ग एकदम अदृश्य सा हो गया, तीनों पीछे देखकर एकदम कांप से उठे।

“आगे बढ़ते रहो, हवा का जोर बढ़ रहा है, हम ऐसे संकरे किनारों और खाई के समीप खड़े नहीं रह सकते, पीछे बढ़ना फिलहाल सुरक्षित नहीं है, आगे चलो लेकिन ध्यान से, घबराहट में गलत जगहों पर पैर मत रख देना।” अनिकेत ने वापसी के बंद होते मार्ग को देख कर भी अपना धैर्य नहीं खोया, उसे पता था इस समय यदि उसने कोई नकारात्मक बात की तो दोनों की हिम्मत टूट जायेगी। वह समझ चुका था कि खराब मौसम को देखकर भी चन्द्रशिला की ओर बढ़ने का निर्णय मूर्खता पूर्ण था, उसे बिगड़ती स्थिति का अंदाजा हो गया था। अब आगे बढ़ना ही एकमात्र विकल्प था। किसी प्रकार हवाओं और बर्फीले अंधड़ से मुकाबला करते करते वे अब शीर्ष पर पहुँच चुके थे, हवा जारी थी, यहाँ फिर भी वातावरण स्पष्ट था, तीनों बड़ी मुश्किल से एक-एक कदम रखते हुए आखिरकार चन्द्रशिला पर स्थित मंदिर के पीछे खड़े थे। अब वातावरण में अंधियारा फैलने लगा था, चारों ओर स्थित बर्फीले और ऊँचे पहाड़ अब लाल रंग में रंगे नजर आने लगे थे, सम्पूर्ण वातावरण में लाली छाई हुई थी, मानो आकाश से गुलाल की बारिश सी हो रही थी। सम्पूर्ण पर्वत श्रृंखलाओं पर मानो लावा सा बहता प्रतीत हो रहा था। ढलते सूर्य की किरणें सम्पूर्ण बर्फीले वातावरण को और सफ़ेद बर्फ को लाल और कत्थई रंग में नहला रही थी, यहाँ तक की सफ़ेद बर्फीली धुल उड़ाती अंधड़ तक अग्नि के दावानल के भांति लाल और पीले प्रकाश से जगमगाती सी प्रतीत हो रही थी, चारों ओर का दृश्य अजीब सा था, यह अकल्पनीय और सुंदर अवश्य था, किन्तु इस समय वे बादलों से

भी ऊपर एक ऐसी चोटी पर खड़े थे जहाँ ऐसे मौसम का एक ही मतलब होता है और वह है खतरा अत्यधिक खतरा।

उनके पास और कोई रास्ता नहीं था, सामने पहाड़ी का अंत था और पीछे तेज बर्फीली हवाएं चल रही थी, पीछे हटने का मतलब था आँख बंद करके पहाड़ी पर चलना।

“हमें इस मन्दिर के आसपास ही रहना चाहिए फिलहाल, चारों ओर का मौसम हद से ज्यादा खराब हो रहा है और अँधेरा भी जल्दी हो रहा है, कुछ ही मिनटों में यहाँ घुप्प अँधेरा हो जायेगा। ऐसी ही हवा चलती रही तो हमें उसके रुकने की प्रतीक्षा करनी ही होगी।” अनिकेत का हृदय अनजानी आशंका से कांप रहा था, वह वातावरण ही ऐसा था मानो साक्षात् महादेव तांडव कर रहे हो, उनके सोचने समझने से पहले ही सम्पूर्ण वातावरण से सूर्य की अँधेरी किरणें लोप हो गई, और चारों ओर अँधेरे का साम्राज्य फ़ैल गया। वे मंदिर की सीढ़ियों पर ही उसकी दीवार की आड़ में बैठ गए, बर्फीली हवायें अब वहां तक पहुँच चुकी थी।

“यह माँ गंगा का मंदिर है, इसे बाद में बनाया गया, मुख्य महत्ता बस इस शिखर की है।” अनिकेत इस वातावरण में उनके भय को सामान्य करने के उद्देश्य से बोला।

“अनिकेत भाई, यहाँ तो मौसम बेहद खतरनाक हो गया है, बर्फीली अंधड़ हो रही है, अब तो बर्फ भी पड़ने लगी है।” विनय ने बर्फ के फाहों को हवा में महसूस किया, लगभग तेरह हजार फीट के ऊँचे शिखर पर अँधेरा, हवा और बर्फ के तूफ़ान का मिला जुला स्वरुप बड़े से बड़े हिम्मती की हिम्मत तोड़ने का सामर्थ्य रखता था। मौसम आरंभ से ही बिगड़ने का संकेत दे रहा था जिसे तीनों ने नजरंदाज किया था।

“अब हमें मौसम सामान्य होने तक यहीं इसी जगह पर बैठना होगा, मुझे उम्मीद नहीं थी हालात इस कदर खतरनाक हो जायेंगे, यहाँ आने का निर्णय मूर्खता थी, हमें तुंगनाथ दर्शन से ही संतुष्ट होकर निकल जाना चाहिए था। मेरे साथ तुम लोगों को भी यहाँ लाकर फंसा दिया।” अनिकेत का चेहरा लटक गया।

हिमवृष्टि आरंभ हो गई थी, इसी के साथ वातावरण में अत्यधिक ठंड भी बढ़ गई, तीनों अब ठंड से ठिठुरने लगे थे, बर्फवृष्टि के कारण सम्पूर्ण वातावरण अंधुक हो गया था। मौसम के आसार देखते हुए स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि यह अभी और भयानक रुख अख्तियार करने वाला है। तीनों बुरी तरह फंस चुके थे।

□□□

वर्तमान समय

बर्फबारी रुक रुक कर हो रही थी, वे काफी देर से मंदिर की सीढ़ियों पर किसी प्रकार बैठे हुए थे। वातावरण में ठंडक बढ़ चुकी थी, तापमान अब माइनस में जा चुका था और इस माइनस तापमान में तेरह हजार फीट की पहाड़ी चोटी पर होना काफी खतरनाक बात थी।

"अनिकेत भाई, ठंड तो बेहद बढ़ने लगी है, कल जो ठंड आने के बाद हमने महसूस की थी वैसी ही ठंड तो अभी ही हो गई है, कुछ देर और यहाँ रहे तो हमारी कुल्फी जम जायेगी, बर्फबारी भी अब मद्धिम हो गई है और हवा भी थोड़ी सौम्य हो चुकी है, यहाँ हल्की सफेदी के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। हम अगर यहाँ बैठे रहे तो निश्चित रुप से कुछ ही देर में हमारी हालत चलने लायक नहीं रहेगी।" विनय ने कांपते हुए बोला, उन्होंने सुबह की ट्रेकिंग के हिसाब से सामान्य और पतले गर्म कपड़े पहने हुए थे, जो इस वातावरण को झेलने में नाकाफी साबित हो रहे थे, उनकी उंगलियाँ सुन्न होती महसूस हो रही थी, बार-बार उन्हें रगड़ कर सुन्न होने से बचाने का प्रयास किया जा रहा था।

"मौसम अभी और खराब होने वाला है, रात भी बढ़ती जा रही है, हम काफी समय से यहीं अटके हुए है तो हमें यहाँ से हर हाल में निकलना ही होगा। विनय भाई सही कह रहे हैं, अभी हवा और बर्फबारी कम है तो हमें प्रयास करना चाहिए।" वहां कुछ देर और रुकना मतलब मृत्यु का बुलावा ही होगा यह बात अनिकेत समझ गया था।

"लेकिन हमने आते हुए ही देखा था, यहाँ तक का डेढ़ किलोमीटर के रास्ते में आधा रास्ता तो एकदम संकरा और तीखे किनारों वाला है और वहां हवा भी तेज होगी और इस बर्फबारी से वहां काफी बर्फ भी पड़ी होगी तो वहां से निकलना मतलब जान बूझकर मौत के मुंह में जाना। हम वहां से प्रयास करेंगे तो शर्तिया मारे जायेंगे।" मानव घबरा रहा था, घबरा तो वे तीनों ही रहे थे, उन्हें उम्मीद तक नहीं थी कि वे हंसते खेलते अचानक से ऐसे माहौल में जाकर फंस जायेंगे जहां जिन्दगी और मौत मात्र कुछ इंच के फासले पर आकर रुक जाएंगी। वे आज से पहले कभी ऐसे हालातों में फंसे नहीं थे, दिन में खूबसूरत दिखाई देते यही पहाड़ अब रात होते ही उन्हें साक्षात् मृत्यु के देवता की तरह प्रतीत हो रहे थे, जो बर्फ बाकी समय में किसी परीकथाओं की प्रतीत होती थी वही बर्फ अब उनके भय को बढ़ाती जा रही थी। तीनों पर डर हावी हो गया था, सांस लेने में दिक्कत सी हो रही थी, हर सांस के साथ काफी मशक्कत करनी पड़ रही थी, दिल असामान्य रुप से धड़कने लगा था, सिर घूमना और मन विचलित होना आरंभ हो गया था। उन्हें खुद को गर्म रखने और इस भयंकर ठंड से बचने के लिए कुछ न कुछ बंदोबस्त करना जरूरी था।

"देखो हम इस मौसम में अब तक नीचे नहीं पहुंचे है, हरी भाई हमारे ना पहुँचने पर फ़ॉरेस्ट विभाग को अवश्य सूचित कर देंगे या कर भी चुके होंगे, तो वो हमें बचाने के लिए जरूर आयेंगे, तो मेरे ख्याल से हमें उनका यही इंतज़ार करना चाहिए।" अनिकेत ने कहा, हालांकि उसे आभास हो चुका था कि यह इतना भी सरल नहीं है।

"अनिकेत भाई, यह सब फिल्मों में ही अच्छा लगता है, लेकिन ऐसे मौसम और इतनी उंचाई पर बचाव कार्य इतना सरल नहीं होता, आप ही सोचो हमें इस साढ़े चार किलोमीटर की चढ़ाई में ही सुबह से शाम हो गई, ऐसे में अगर हरी भाई ने अफसरों को या बचाव दल को सूचित कर भी दिया होगा तो क्या वो इस मौसम में ऊपर आने का जोखिम उठाएंगे ? और मान लो यदि निकल भी गए तो भी उन्हें भी उतना ही समय लगेगा हम तक पहुँचने के

लिए जितना हमें लगा यहाँ तक आने में, तब तक तो हम इस ठंड में वैसे ही अकड़ चुके होंगे। हम इस तरह निष्क्रिय नहीं रह सकते कि कोई बचाने आएगा तभी हम बचेंगे। दूसरी बात, यदि वे किसी प्रकार से तुंगनाथ तक पहुँच भी गए तो भी इस बर्फबारी और खराब मौसम में चन्द्रशिला तक आना असंभव है। तो हमारा सबसे पहला प्रयास इस चन्द्रशिला को छोड़ने का ही होना चाहिए, यहाँ रहने का मतलब है हर हाल में मौत। और यह भी तो सोचो बर्फ तो नीचे भी गिर रही होगी, जब सुबह हमारे कैम्प तक बर्फ पड़ने के कारण मार्ग बंद था तो अब तो कैम्प तक बर्फ पहुँच चुकी होगी, हमें वहां से पैदल आना पड़ा था भूल गए ? ऐसे में हरी भाई का किसी से सम्पर्क भी हो पाया होगा यह कहना भी कठिन है, हम तीनों के मोबाइल नेटवर्क तक इस जगह पर काम नहीं कर रहे है। दो ही रास्ते है, या तो हम यहाँ बैठे बैठे सारी रात ठिठुरते रहे, या थोड़ा सा प्रयास करके तुंगनाथ तक पहुँच जाए, वहां अनेक छोटे बड़े मकान बने हुए थे, यदि हम उसी में से किसी में भी शरण ले लें तो हमें इस जानलेवा ठंड से कुछ समय तक राहत मिलेगी।" विनय ने एक ही सांस में कह दिया।

दोनों को उसकी बात तार्किक लगी और इसके अलावा कोई चारा भी नहीं था, पारा लगातार गिरता जा रहा था, कान, नाक हथेलियां जमती सी प्रतीत होने लगी थी, विनय को अपने पेट में ऐठन सी महसूस होने लगी थी, मानव को सिर में भीषण पीड़ा होने लगी थी। अब बस चलना ही एकमात्र रास्ता था।

"ठीक है, चलो। हम जहां से आये थे वहाँ से नहीं जा सकते, वैसे भी इतनी बर्फबारी और अँधेरे में कुछ पता भी नहीं चल रहा कि हम कहाँ से आये थे, तो हम केवल विपरीत दिशा के अंदाजे में चलेंगे, ध्यान रहे हर कदम सावधानी से और फूंक फूंक कर रखना है, अभी भी बर्फीली हवायें कम ही हुई है, रुकी नहीं है, तो हमें खाई, दर्रे इत्यादि दिखाई नहीं देंगे, अपनी लाठियों को आगे रखो और चलो।" अनिकेत ने कांपते हाथों से लाठी को वहां जमी बर्फ में धंसाया और अनुमानित दिशा की ओर चल पड़ा। उनकी किस्मत अच्छी थी कि हवा का बहाव थोड़ा कम हो गया था, किन्तु बर्फबारी जारी थी, वे भयंकर जोखिम उठा चुके थे, उन्हें अन्य किसी मार्ग के विषय में कोई ज्ञान नहीं था, वे केवल आपने समक्ष अँधेरे में हल्की सी सफ़ेद चमक से प्रकाशित होते केदारनाथ पर्वत श्रृंखलाओं की दिशा को आधार बना कर चल रहे थे, स्पोर्ट शूज होने के कारण तीनों अनेक बार गिरे और फिसले, किन्तु यह अच्छी बात रही कि हर बार वे किनारे से और ऊँची चोटियों से दूर ही फिसले, इस लगातार फिसलने और गिरते उठने के पश्चात उन्हें महसूस हुआ कि उनका सम्पूर्ण शरीर चोटिल हो चुका है, पथरीली सतह से टकराने के कारण वे अपने शरीर पर अनगिनत जख्मों के निशान बनवा चुके थे, बर्फीली ठंड में लगती छोटी चोट भी अत्यंत पीड़ादायक सिद्ध हो रही थी।

बर्फ के ढेर में सतह का सही अंदाजा ना होने के कारण वे कई बार उंचाई से लुढ़कते हुए गिरे और चट्टानों से भी टकराए, फिर भी किसी प्रकार उठते गिरते वे चलते रहे, उन्होंने जो मार्ग चुना था वह अपेक्षाकृत सीधी खड़ी ढलान थी, ढलान पर चढ़ना जितना आसान होता है, उतरने में जोखिम उतना ही बढ़ जाता है, तीनों हांफ रहे थे, बुरी तरह अनियंत्रित साँसों को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहे थे, बर्फीली हवाओं ने पुन: जोर पकड़ लिया था।

"बर्फबारी और हवा दोनों फिर बढ़ गई है, हमें आगे कुछ सूझ नहीं रहा है, हम काफी समय से घुटनों तक बर्फ में चल रहे है, पैर भी अब सुन्न से हो रहे है, किन्तु कुछ भी हो जाए रुकना नहीं है, अगर रुक गए तो इस तापमान में और बर्फ के ढेर में हम ज्यादा देर तक इस ठंड को

बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे, हम फिलहाल एक ऊँची चोटी पर है, जहाँ से उतरने के सारे रास्ते इस बर्फबारी, अँधेरा और हवा के कारण दिखाई नहीं दे रहे है, बस सफ़ेद चमकती बर्फ की अंधुक सफेदी ही एकमात्र सहारा है।" अनिकेत को एक-एक शब्द बोलने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ रही थी, उसके दांत असामान्य ढंग से बज रहे थे, ठंड कानों से होती हुई सम्पूर्ण शरीर को पस्त कर रही थी, तीनों की साँसों से अनवरत ठंडी भांप निकल रही थी। सामान्य से कम ऑक्सीजन, सबसे ऊँची चोटी, माइनस सात डिग्री का तापमान, चारों ओर हजारों फीट गहरी खाई, लगातार चलती तीव्र बर्फीली हवाएं, और रात का घना अँधेरा। शरीर पर अनगिनत घाव, ऐसे हालात में उनकी हिम्मत पस्त हो चुकी थी, वे समझ चुके थे कि वह अपनी लापरवाही में ऐसी जगह फंस चुके है जहाँ से वापसी संभव नहीं।

मानव ने बर्फीले रास्ते में लाठी धंसाने की चेष्टा की, तीनों ने एक-दूसरे का हाथ थामा हुआ था, यह जरूरी भी था वरना इस अंधड़ और अँधेरे में वे भटक सकते थे। मानव ने जिस स्थान पर कदम रखा वह उसकी उम्मीद से कही ज्यादा गहरा निकला, उसके ऊपर मात्र भुरभुरी बर्फ की परत जमी हुई थी किन्तु असल में वह सीधा दर्रा था, नतीजतन उसका पाँव सीधे उस बर्फ में धंसते हुए नीचे जा गिरा और वह संतुलन बनाने में असफल रहा, फलस्वरूप तीनों एक दूसरे का हाथ थामे हुए उस दर्रे और सीधी ढलान पर कई मीटर तक लुढ़कते चले गए, उनके लुढ़कने की गति तीव्र थी, वे लुढ़कते हुए किसी सीधी खाई में गिर सकते थे , किन्तु उनकी खुशकिस्मती रही कि वे तीखी ढलानों से नीचे गिरने के बजाय बर्फीले ढेर पर लुढ़क रहे थे, जिससे गिरने की गति कम थी, काफी दूर तक लुढ़कने के पश्चात वे एक स्थान पर घुटनों तक पड़ी बर्फ के मध्य जा धंसे। तीनों वहां चुपचाप पड़े रहे, उनमें उठने तक की शक्ति शेष नहीं थी, इतनी उंचाई से लुढ़कने के पश्चात अनिकेत की कलाई और पीठ, मानव का दाहिना पैर और कमर, विनय की पसलियां और कंधे पर चोट लगी, उसके अलावा सामान रुप से सम्पूर्ण शरीर मानो निचुड़ सा गया था, उनमें हाथ हिलाने तक की शक्ति शेष नहीं थी, वे बस औंधे बर्फ में धंसे हुए पड़े रहे, उनके कपड़े अब गीले हो चुके थे, तापमान में गिरावट निरंतर जारी थी, बर्फीली हवायें फिर बढ़ी, अनिकेत लुढ़कते हुए एक छोटी सी बर्फ से ढंकी चट्टान से जा टकराया था, उसे अहसास हुआ यदि यह चट्टान नहीं होती तो वह सीधे हजारों फीट की सीधी खाई में गिर कर सदैव के लिए खो जाता। शरीर की ही भांति उसका दिमाग भी सुन्न होने लगा था, अपने ऊपर पड़ी बर्फ को उसने किसी प्रकार हटाकर देखने का प्रयास किया। किन्तु व्यर्थ, हवा और अँधेरे के कारण कुछ भी स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था, उसने मानव और विनय की तलाश में नजरें दौड़ाई, उस अँधेरे में भी सफ़ेद बर्फ पर दो मानवी परछाइयां दिखाई दे रही थी। उसने उन्हें हिलते हुए महसूस किया तब उसकी जान में जान आई, उसे नहीं पता था कि उसके शरीर में कितनी चोटें लगी है, कितना नुकसान पहुंचा है, उसे रह रह कर हर हिस्से से तीव्र दर्द महसूस हो रहा था, मानो कई हड्डियां एक साथ टूट गई हो, मुंह से कुछ लिजलिजा और गर्म सा बहाव महसूस करके उसने अपने हाथ से पोंछा, अँधेरे में उस चीज का रंग तो नहीं दिखा किन्तु यह तय था कि वह खून ही था। अनिकेत खांसने लगा और मुंह पोंछ कर किसी प्रकार घुटने पर बैठा और लगभग घिसटते हुए मानव और विनय की ओर बढ़ा, मानव भी घायल था किन्तु वह अपने आप उठ कर एक चट्टान पर पीठ टिकाये बैठ गया था। विनय अब भी औंधा पड़ा हुआ था, किसी अनिष्ट की आशंका से कांपता हुआ अनिकेत उस तक पहुंचा तो विनय

खांसता हुआ लेटे लेटे ही अपने स्थान से पलटा, उसके नाक मुंह में बर्फ जा चुकी थी, वह खांस और छींक रहा था।

"ज़िंदा है भाई !" मानव के चेहरे पर उस स्थिति में भी उसे देखकर हंसी उभर आई, अनिकेत ने चैन की सांस ली, एक अनहोनी होते होते रह गई थी, उसने अपने चारों ओर गौर किया, ज्यादा कुछ दिखाई नहीं दिया किन्तु यह स्पष्ट था कि वे किसी सीधी खाई के एकदम किनारे आ गिरे थे, यदि मध्य में बर्फीली चट्टानें और जमी हुई बर्फ न होती तो उनका खाई में गिरना निश्चित था।

"भाई, अब हम आगे चलने की स्थिति में है ही नहीं, अब हम कुछ नहीं कर सकते।" मानव ठंड से ठिठुरते हुए बोला। विनय भी अब मानव के समीप आकर बर्फ पर बैठ गया, कोई स्थान ऐसा शेष नहीं बचा था जहां बर्फ ना हो, इसलिए ना चाहते हुए भी उस बर्फ में बैठना उनकी मजबूरी थी।

"बर्फ निरंतर गिर रही है और हवायें भी अब तक चल रही है, भाई हम इस तरह से कुछ ही देर में पूरी तरह बर्फ के ढेर में धंसे नजर आयेंगे।" विनय पर अब भय हावी हो चुका था।

"हमारे पीछे एक बड़ी सी चट्टान है, उस ओर बढ़ो, हम इस तरह से खुले में नहीं रह सकते, चट्टान की ओट में रहना ही फिलहाल ठीक होगा, तुंगनाथ मंदिर तो अब पता ही नहीं चल रहा किस दिशा में है, हम वहां तक पहुंचे या उससे भी आगे चले आये है कुछ पता नहीं चल रहा है अब तो।" अनिकेत को दिशाभ्रम हो गया था, यही हाल बाकियों का भी था, वे दिशाहीन, समयशून्य हो चुके थे, उन्हें पता भी नहीं चल रहा था वे कितने समय से भटक रहे है। अनिकेत की बात मानकर वे किसी प्रकार गिरते पड़ते उस बड़ी सी चट्टान की ओर बढ़े, चट्टान के नीचे फिलहाल उतनी बर्फ नहीं थी, वह लगभग पन्द्रह-बीस फीट ऊँची चट्टान थी जो टूट कर लगभग तीन मीटर तक अर्धगोलाकार भीतर तक धंसी हुई थी, जिस कारण उसके मध्य एक गुफा जैसी बनावट दिखाई दे रही थी, फिलहाल इस चट्टान के अलावा उन्हें कोई और चीज दूर दूर तक नजर नहीं आ रही थी जहाँ वे आश्रय ले सकते थे, तीनों ने किसी प्रकार अपने आपको उस खोखले हिस्से में बिठाया, तीन लोगों के हिसाब से उसमें काम भर की जगह अवश्य थी किन्तु इससे वह स्थान बेहद तंग हो गया, उनके शरीर का कोई ना कोई अंग अवश्य बाहर था, बर्फ अब रुक चुकी थी, हवा रुक रुक कर चल रही थी।

सम्पूर्ण वातावरण में हवा और बर्फ का शोर गूंज रहा था। तीनों समझ चुके थे कि जल्दी ही वे ठंड से जमकर मर चुके होंगे।

"हम यहाँ से नहीं निकल सकते, यहाँ बस अँधेरा, ठंड और पहाड़ ही दिखाई दे रहे है, निकलने का कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है। ठंड बढ़ रही है, सम्पूर्ण शरीर कांप रहा है।" मानव रुआँसा हो चुका था, वह उम्मीद पूर्णतया हार गया था, उसे अपनी मृत्यु स्पष्ट दिखाई देने लगी थी।

"अगर हम यहाँ से बचने में कामयाब हो गए तो ? हालांकि अब मैं भी हार मान चुका हूँ और जानता हूँ कि हम कुछ देर के मेहमान है, लेकिन जब मरना ही है तो रोते हुए क्यों मरे ? क्यों ना कुछ सोचे, कुछ ऐसा जो हमें करना था लेकिन हम कभी कर नहीं पाए ? हमने अपनी जिन्दगी में अनेक गलतियां की है और हम सब चाहते है कि किसी तरह उन्हें सुधारें और अपनी जिन्दगी अपने अनुसार जिए, कुछ तो ऐसा होगा जो तुम्हें करना चाहिए लेकिन तुम कर नहीं पा रहे, दुनिया, जहान, समाज वगैरह के कारण ना जाने हम कितनी इच्छाओं को मार चुके

है, कितनी ही खुशियों को जीना छोड़ चुके है, बेवजह की उलझनों के चलते ना जाने हमने कितना कीमती समय व्यर्थ गँवा दिया, क्या होता है अगर हम यहाँ से ज़िंदा वापस चले गए, क्या हम फिर से अपनी वही उकताहट भरी नीरस और बेमजा जिन्दगी जियेंगे ? फिर रोज मशीन की भांति दिन रात चंद पैसों के लिए काम करेंगे ? फिर अपनी खुशियों को नजरंदाज करके दूसरों की इच्छाओं की पूर्ति में अपना कीमती समय व्यर्थ करेंगे ? नहीं, अगर मैं यहाँ से वापस जाने में सफल रहा तो मैं अब यह गलतियां नहीं करूँगा, मैं वह करूँगा जो मेरा मन मुझे ना जाने कब से करवाना चाहता है, मैं जिन्दगी नए तरीके से जियूँगा, तुम दोनों क्या करोगे ?” अनिकेत की आँखें शून्य में ताक रही थी।

हालांकि वे टूट चुके थे और निश्चित मृत्यु की प्रतीक्षा करने के अलावा उनके पास और कोई पर्याय नहीं था, लेकिन रोते हुए पल पल सैकड़ों बार मृत्यु के भय से मरते हुए उसकी प्रतीक्षा करने से बेहतर था बातें करते हुए और हंसते हुए मरे। मानव की आँखों से आंसू उसके गालों तक बह रहे थे।

“मैं अगर यहाँ से जीवित वापस चला गया तो मैं अपनी गलतियां सुधारूँगा, मैंने अपने माता पिता की उम्मीदें तोड़ी है, यहाँ मेरा उलटा हुआ है, मैं अपनी शर्तों पर जिया हूं, मैंने किसी की परवाह नहीं की, जिन्होंने मुझसे प्यार किया हमेशा उन्हें निराश किया, जबकि मेरे पास कभी किसी चीज की कमी नहीं थी, अब महसूस हो रहा है मैंने उनके साथ कितना गलत किया है, फिर मुझे कृति का रूखापन इतना क्यों बुरा लगता है ? वह भी तो वही कर रही है मेरे साथ जो मैं अपने परिवार के साथ करता आया हूँ, वह भी अपने ही लिए तो जीती है, यदि वह स्वार्थी है तो मैं क्या हूँ ? अगर मुझे जिन्दगी दुबारा मौका देगी तो मैं अपने परिवार की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयास करूँगा, मैं अपनी गलतियों को सुधारूँगा और थोड़ा बहुत खुद के लिए भी जी लिया करूँगा, वैसे भी परिवार मेरा है, यदि मैं उनके लिए जीता हूँ तो मैं अपने लिए ही जी रहा हूँ, वे है तो मैं हूँ। यदि महादेव ने पुन: जीवनदान दिया तो मैं यह सब सुधारूँगा।” मानव फूट फूट कर रो पड़ा, वह अपने आप को संभाल नहीं पाया।

“मैं भी कुछ बिगड़ चुकी चीजों को संवारना चाहता हूँ, अगर मैं यहाँ से बच गया तो मैं अपनी गलतियों को मानना सीखूंगा। मैं प्रीति को फिर मना लूँगा, मैं उसके माँ बाप, भाई सबसे अपनी हरकतों के लिए माफ़ी मांग लूँगा। लेकिन मैं प्रीति को देखना चाहता हूँ बस।” विनय की आँखें भीग गई।

तीनों कुछ क्षण तक चुपचाप बैठे रहे, मौत सामने देखकर उनके मन मस्तिष्क में अपनों की स्मृतियाँ उमड़ने लगी थी, उन्हें अपनी अनगिनत गलतियों का आभास होने लगा था, उन्होंने अपनी जिन्दगी केवल गलतियों और नाराजगियों में व्यर्थ कर रखी थी, आज उन्हें समय का मूल्य पता चल रहा था जब उनके पास समय ही नहीं बचा था।

“वह उस टीले पर कुछ चल रहा है।”

अनिकेत और विनय दोनों ने मानव द्वारा इंगित दिशा की ओर देखा, सफ़ेद पहाड़ी पर वह काली सी परछाई स्पष्ट दिखाई दे रही थी, बर्फ में पैर जमाते हुए वह परछाई उन्हीं की ओर बढ़ रही थी। उस आकृति को गौर से देखने के साथ ही अनिकेत के रोंगटे खड़े हो गए।

“य..ये बाघ है..” अनिकेत की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। अनिकेत के मुंह से निकला ‘बाघ’ शब्द सुनकर दोनों के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी। उनके बोल न फूट रहा था, बाघ उनके

समीप आ रहा था, उसकी हल्की सी गुर्राहट भी उन्हें स्पष्ट सुनाई दे रही थी। बाघ के रूप में उन्हें साक्षात् यमराज दिखाई दे रहे थे।

वह बाघ उन्हीं की ओर बढ़ रहा था। यह निःसंदेह आज उनकी आखिरी रात थी। बाघ को अपने सामने देख उनके बचे खुचे होश भी उड़ गए। बाघ धीमी गति से उनकी ओर बढ़ रहा था।

“यार ठंड से मरना ज्यादा बेहतर होता, ये हमें नोच खायेगा, मैं इस तरह से नहीं मरना चाहता।” मानव के प्राण सूख गए, मानव इतना बोल गया वही बहुत था, बाकी दोनों के हलक से बोल तक ना फूट रहा था। कुछ ही क्षणों में बाघ उन तक पहुँच जाना था, अनिकेत और विनय को कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था, उनमें से किसी की भी हालत ऐसी नहीं थी कि वह अपनी जगह से भाग सके या किसी तरह का प्रतिकार कर सके, उनमें ऊर्जा ही शेष नहीं थी। बाघ भी मानो एकदम निश्चिंत सा था, उसे भी कोई जल्दबाजी नहीं थी, वह हल्की गुर्राहट के साथ बर्फ में कदम धंसाते हुए उनकी ओर बढ़ रहा था। तीनों शर्तिया तौर पर अब बचने वाले नहीं थे, किन्तु जान पर बनी देखकर स्वयमेव छटपटाहट बढ़ने लगी, अनिकेत ने अपनी जेब टटोली, उसके हाथ में अब उसका लाइटर था। उसने सिगरेट भले फेंक दी थी किन्तु लाइटर नहीं फेंकी थी, लाइटर हाथ में आते ही उसके चेहरे पर उम्मीद की एक किरण उत्पन्न हुई। उसने मानव की पीठ पर लटके हुए ऑफिस बैग को लगभग खींचकर उतारा।

“मानव ! तुम्हारे बैग में क्या क्या है ?” अनिकेत उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बगैर बैग खोल भी चुका था, बैग में दो भरी हुई पानी की बोतलें और दो बोतलें खाली थी। उसके अलावा तीनों के लिखे उपन्यासों की एक-एक प्रति भी उसमें पड़ी थी, बाकी सूखे मेवे के कुछ पैकेट्स पड़े हुए थे। अनिकेत ने उसमें से पानी की खाली बोतलें और पुस्तकें निकाल ली। तब तक बाघ उनसे मात्र कुछ मीटर पर आ पहुंचा था, अब वह लगभग छलांग लगाने के लिए तैयार दिखाई दे रहा था।

“हे भगवान बचा लो।” मानव लगभग चीख उठा।

“महादेव रक्षा करो।” विनय भी रो पड़ा। और उसी पल अनिकेत ने लाइटर सुलगाकर मानव की पुस्तक का एक पन्ना फाड़ कर जला दिया। इतने ठंडे मौसम के बावजूद खुशकिस्मती रही कि पुस्तकें भीतर वाली जेब में होने के कारण भीगी हुई नहीं थी। एक पन्ना जलते ही बाघ अपने स्थान पर ठिठक गया। उस पन्ने के बुझने के पहले ही अनिकेत ने दूसरा पन्ना भी सुलगा दिया। अनिकेत जानता था की सुलगाने के लिए उसके पास सीमित साधन ही है, जिन्हें वह एक साथ जलाने के बजाए थोड़ा थोड़ा जला कर काम चलाना चाहता था।

बाघ गुर्राया, इस बार अनिकेत ने और पृष्ठ फाड़े और एकसाथ दस पन्द्रह पृष्ठ जला दिए, उससे आग की लपटें और ज्यादा उठने लगी। वह उनके बुझने से पहले ही पुन: कुछ पन्ने फाड़ लेता। विनय और मानव बाघ को आग से ठिठकता देखकर अनिकेत का साथ देने लगे। बाघ आग देखकर असमंजस में था, हालांकि लपटें उतनी तीव्र नहीं थी किन्तु उस पशु बुद्धि के लिए आग ही पर्याप्त कारण था डरने के लिए, वह अनिश्चय में वही खड़ा रहा।

“भाई, वह भाग नहीं रहा, बस आक्रमण करने का साहस नहीं जुटा पा रहा है, जब तक हमारी आग जलती रहेगी वह हमारे पास नहीं आयेगा लेकिन आग बुझते ही वह हमें कच्चा चबा जायेगा।” मानव पन्ने जलाते हुए बोला, उसकी नजरें अब भी उसी बाघ पर टिकी हुई थी, वे अपनी लाठियों पर भी मजबूत पकड़ बनाये हुए थे।

"एक तो यार तुम दोनों बस सौ डेढ़ सौ पृष्ठों का उपन्यास लिखे हो, पन्ने भी जल्दी समाप्त हो जायेंगे, तुम्हें लम्बी कहानियां नहीं सूझती क्या ? कम से कम आज काम आ जाती।" अनिकेत उनकी पुस्तकों को देखकर कुढ़ रहा था।

"आपने लिखी है ना चार सौ पृष्ठों की, उसे जलाइये इत्मीनान से, अब झगड़ कर कोई लाभ नहीं है, अगली बार तो सीधे तीन भागों की श्रृंखला ही लिख दूंगा जैसा की आजकल चलन में है, तब जलाना शुरु करेंगे तो रात खत्म हो जाएगी लेकिन पन्ने नहीं खत्म होंगे।" विनय ने कहां।

"वह घबरा अवश्य रहा है, लेकिन जा नहीं रहा है। उसे भगाने के लिए कुछ करना होगा, उसे लगना चाहिए हमारे पास उसे डराने के लिए कोई शस्त्र है।" मानव ने अपनी लाठी उठाई और बैग से निकली प्लास्टिक की खाली बोतलों को लाठी के मुंह पर फंसा दिया, अब उन बोतलों पर उसने पांच दस कागज फंसा कर उसे एक काम चलाऊ मशाल का रूप दे दिया, वह जानता था यह मशाल कुछ मिनटों तक ही जलेगी, फिर उसने अपना काम जारी रखा। और आखिरकार उसमें आग लगा कर लाठी को लहराना आरंभ कर दिया, बाघ अब विचलित नजर आने लगा था। वह अपने स्थान पर बेचैनी से टहलने लगा। जलती लाठी उसी की दिशा में घुमाई जा रही थी। वह अपने ऊपर आक्रमण होता देख थोड़ा घबरा गया। विनय और अनिकेत पृष्ठ अब भी जला रहे थे। निरंतर जलती इस छोटी सी आग से भी इस भयंकर ठंड में उन्हें थोड़ी ही सही किन्तु उष्मा मिल रही थी। बाघ विचलित था, अब उसे बस एक और झटके की आवश्यकता थी, अनिकेत कुछ समझ नहीं पा रहा था की वह ऐसा क्या करें जिससे बाघ और डर जाए और भाग खड़ा हो।

जब कुछ नहीं सुझा तो उसने अपने दस्ताने ही उतार दिए और उन्हीं को जलाने लगा, दस्ताने गीले अवश्य थी किन्तु लगातार हाथ में पहने रहने के कारण वे जल्दी सूख भी गए थे, दस्ताना जब अच्छी तरह से जलने लगा तब अनिकेत ने उसे बाघ की ओर उछाल फेंका। बाघ जलती हुई चीज को अपनी ओर आते देख कर अपने स्थान से उछल कर पीछे जा गिरा और कर्णभेदी स्वर में दहाड़ा, उसकी दहाड़ सुनकर पल भर में तीनों की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई, किन्तु यह प्रहार काम कर रहा था, बाघ घबरा कर दहाड़ रहा था, जब तक वह सम्भलता अनिकेत ने दूसरा दस्ताना भी जला कर उसकी ओर उछाल दिया। अब बाघ लगातार जलती आग और अपने ऊपर जलती चीजों का हमला देख कर घबराने लगा था, कुछ देर असमंजस की स्थिति में खड़ा गुर्राता रहा किन्तु लगातार जलते पन्नों से आग का स्वरूप थोड़ा विशाल होता जा रहा था। आखिरकार वह पलटा और निराश होकर जहाँ से आया था उसी ओर दौड़ गया, कुछ ही देर में वह पहाड़ी के नीचे घनी झाड़ियों के मध्य जाकर अदृश्य हो गया। उसके जाते ही तीनों ने राहत की सांस ली।

"भाई थोड़ा थोड़ा ही सही, लेकिन आग जलाते रहो, पुस्तकें जलने के पश्चात लाठियां जला दो, फिर दस्ताने जला दो, वह भी बुझने लगे तो मानव की बैग ही जला दो। आग कम से कम थोड़ी देर और जलनी चाहिए, ध्यान रहे सब कुछ नहीं जलाना है हमें, थोड़ा जला कर हम फिर कुछ देर रुके रहेंगे। यदि बाघ फिर आया तो वापस आग जलाने के लिए सामग्री होनी चाहिए।" अनिकेत ने कहा।

कुछ देर थोड़ी आग जलाने के पश्चात जब उन्हें विश्वास हुआ कि बाघ अब वापस नहीं आएगा वे तभी रुके, हालांकि के अब वे हर छोटी बड़ी आहट पर चौंक रहे थे, ज़रा भी आवाज

होते ही अनिकेत लाइटर जला लेता। कुछ समय और बीत चुका था, अब बर्फीली हवा अब फिर से जोर पकड़ चुकी थी, उनके सामने ही एक फीट तक की बर्फ पड़ चुकी थी। उनका शरीर अब उनके नियन्त्रण में नहीं था, वे काफी देर से इस माहौल को बर्दाश्त कर रहे थे, किन्तु अब उनके शरीर ने हार मान ली थी। ठंड अनुमानित रुप से माइनस दस डिग्री पहुँच चुकी थी, उनका सम्पूर्ण शरीर और रक्त अब ठंडा पड़ने लगा था, अब वे बात तक करने की स्थिति में नहीं थे, शरीर शिथिल होता जा रहा था। उनकी पलकें बंद होने लगी थी, सांस लेने में अब कठिनाई हद से ज्यादा होने लगी थी, कुछ देर में में वह चट्टान भी बर्फ के तले ढंकने लगी थी, उनके सम्पूर्ण शरीर पर सफ़ेद बर्फ की धूमिल चादर सी दिखाई देने लगी थी। पलकें पूर्ण शक्ति के पश्चात भी अब और खुलने में असमर्थ थी। साँसे मद्धिम और धड़कने धीमी होती प्रतीत हो रही थी। ऐसे में उन्हें भ्रम से होने लगे, अपने आसपास कुछ ही दूरी पर उन्हें काले साये से नजर आने लगे थे, कुछ साये दौड़ रहे थे, कुछ आगे जा रहे थे कुछ पीछे, तो कुछ चट्टानों पर चढ़े हुए थे। ख़ास बात यह थी कि यह भ्रम तीनों को एकसाथ हो रहा था। उनकी बंद होती आँखें यह दृश्य देख रही थी किन्तु उनका मस्तिष्क इन चीजों को समझने में असमर्थ था, वैसे भी अँधेरा इतना था कि कुछ भी स्पष्ट देखा नहीं जा सकता था।

अचानक से चट्टान के द्वार के सामने कोई बलिष्ठ सी आकृति आकर खड़ी हो गई, उन्होंने अधखुली आँखों से उसे देखने का प्रयास किया, किन्तु अर्धबेहोशी और अँधेरे के कारण वे उस आकृति को स्पष्ट देख पाने में असमर्थ थे।

“चिंता ना करो, कुछ नहीं होगा तुम्हें। थोड़ा और प्रयास करो कुछ नहीं होगा।” उस आकृति के मुख से केवल इतना ही शब्द निकला, तीनों का अवचेतन मास्तिष्क इस आवाज को मानो अपने भीतर से आता हुआ महसूस कर रहा था। उन्हें लगा ही नहीं कि उनके सम्मुख खड़ी आकृति ने कुछ कहा हो।

वह आकृति कुछ देर तक वही खड़ी रही, चट्टानों और बर्फीले ढेर पर काले साये मंडराते हुए अब उस चट्टान की ओर बढ़ रहे थे, तीनों ने आकृति की ओर देखना चाहा किन्तु वह आकृति अब उस स्थान पर नहीं थी। वे अंधेरे साये अब उस चट्टान के सामने खड़े थे। अनिकेत, मानव और विनय उन्हें पहचान पाने में असमर्थ थे, वे अर्धबेहोशी में ही बड़बड़ा रहे थे, कांप और ठिठुर रहे थे, तीनों की आँखें अब एकदम से बंद हो चुकी थी। उनका मस्तिष्क अब अँधेरी परतों में कहीं खो गया था।

□□□

अनिकेत की आँखें खुली, उसने अपने आसपास देखा, वह कोई अस्पताल था, उसकी बगल के बेड्स पर मानव और विनय भी लेटे हुए थे। सामने ही हरी और नारायण दोनों खड़े थे, एक नर्स उनकी जांच पड़ताल कर रही थी।

“हम यहाँ कैसे ? हम तो चन्द्रशिला पर फंसे हुए थे।” अनिकेत को सहसा विश्वास ही नहीं हुआ, उसे यह सब किसी सपने की भांति प्रतीत हो रहा था।

“सपना नहीं है भाई, हम जीवित है, पहले मैं भी सपना ही समझ रहा था, बल्कि मुझे तो लगा कि हम मरकर स्वर्ग पहुँच चुके है। लेकिन जब हरी भाई और नारायण जी को अपने सामने खड़े देखा तब यकीन हुआ कि ये तो हमारे साथ थे ही नहीं, तो इनके अपने साथ ऊपर आने का सवाल ही नहीं उठता था।” मानव हंसते हुए बोला, विनय बस मुस्करा कर रह गया।

“आपके ना पहुँचने पर हमने बड़ी मुश्किल से यहाँ तैनात कुछ रेस्क्यू मेम्बर्स और फारेस्ट ऑफिसर्स से सम्पर्क किया था, खुशकिस्मती से उनका एक दल यही उकिमठ में था, तो जल्दी आ गए, बर्फ और अंधेरा होने के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था और काफी कठिनाई आ रही थी, काफी प्रयास और समय के बाद हमें चोटी पर एक स्थान पर रोशनी सी दिखाई दी, जो काफी समय तक जल बुझ रही थी, दल ने उसी के अनुसार मार्ग बनाया और वहां पहुंचकर आप सबको बचाया। आप सब की हालत बेहद खराब थी, दल को यदि कुछ देर और हो जाती तो आप लोगों को बचना असंभव हो जाता। बर्फ इतनी गिरी है कि तीन दिन से कई गाँव मुख्यधारा से कट गए है, आप लोग भी तीन रोज से यहाँ भरती हैं।” हरी ने जानकारी दी।

“अच्छा तो अँधेरे में जो काले साए दिखाई दिए थे वो बचाव दल वाले ही थे, भगवान का धन्यवाद जो वे समय रहते पहुँच गए। हमें उन्हें धन्यवाद देना है, उनमें मुझे कुछ सात या आठ के आसपास सदस्य दिखाई दिए थे और एक सबसे पहले हम तक पहुंचा था। उसने हमसे हिम्मत बनाये रखने के लिए भी कहा था, जिसके कुछ देर बाद ही बाकी सदस्य भी पहुँच गए और हम बेहोश हो गए।” अनिकेत को बेहोश होने के पहले की हल्की सी याद आई।

“जी नहीं, हम आठ नहीं सात ही थे। आपकी हालत खराब थी, ऐसे में इल्यूजन यानी भ्रम वगैरह होना सामान्य बात है। हम सभी जब आपके पास पहुंचे थे आप सब बेहोश हो चुके थे। हमारे किसी सदस्य को आप लोगों से बात करने का कोई अवसर ही नहीं मिल पाया और ना आप में से कोई बात करने की हालत में था।” तीनों ने स्वर की दिशा में देखा, वह कोई पौने छह फीट का हट्टा कट्टा व्यक्ति था।

“ये है निर्मल जी! इन्हीं का दल था वह जिन्होंने आप तीनों को उस रात बचाया था।” हरी ने परिचय कराया तो तीनों ने उसे कृतज्ञ नजरों से देखा और उठने का प्रयास किया।

“आप लोग कष्ट ना कीजिये, यह हमारा रोज का काम है, अब आप लोगों की हालत में अच्छा खासा सुधार है, कुछ छोटे मोटे फ्रैक्चर अवश्य है, लेकिन उतनी गंभीर बात नहीं है, कुछ और औपचारिकताओं के पश्चात आपको डिस्चार्ज करवा दिया जायेगा। लेकिन आगे से ध्यान रखियेगा ये पहाड़ है, वो अपनी मर्जी से ही चलेंगे, आप भले अपने आप में कितना ही दम खम रखते हो किन्तु इनके सामने वह कुछ भी नहीं है, इसलिए मौसम से मिलने वाली चेतावनियों और संकेतों को कभी नजरंदाज नहीं करना चाहिए। मैं निकलता हूँ फिलहाल, रास्ते अभी भी पूर्णतया खुले नहीं है, तो कल से पहले आप लोगों का यहाँ से निकलना संभव नहीं होगा, आराम कीजिए।” निर्मल ने मुसकुराते हुए कहा और फिर किसी और को बचाने निकल पड़ा।

“आपके सामान की फिक्र मत कीजिये, नारायण जी यहाँ ला दिए है।” हरी ने मुसकुराते हुए कहां तो उन्होंने नम्रता से हाथ जोड़ लिए।

“धन्यवाद हरी भाई! आप अगर समय पर बचाव दल को सूचित नहीं करते तो आज हम यहाँ नहीं होते। सब आपके कारण ही तो है, आपका कैसे धन्यवाद करूँ यह समझ में नहीं आ रहा।” मानव ने कहा, उसे अब तक अपने सही सलामत होने का विश्वास नहीं हो रहा था।

“ ऐसा मत कहिये, सब महादेव की कृपा है। आप उनके सानिध्य में थे, महाकाल हैं वे, उनकी मर्जी के बगैर काल आपको छू भी नहीं सकता। हर हर महादेव।” हरी ने कहा तो तीनों ने जितना हो सका उतनी शक्ति से हर हर महादेव का उद्घोष किया।

“हम जीवित है और हमने निर्णय लिया था यदि हमें दूसरा जीवन मिला तो हम अपनी गलतियों को सुधारेंगे और अपनी जिन्दगी को संवारेंगे। तो अब हमें अपने हिसाब से जीना सीखना है।” अनिकेत ने कहा।

□□□

अनिकेत, विनय और मानव अपने अपने बैग सम्भाले हुए स्टेशन पर खड़े थे, लगभग एक सप्ताह वे साथ रहे थे, इतने वर्षों की आभासी दुनिया की मित्रता के पश्चात वे पहली बार मिले थे, किन्तु इन सात दिनों में उनके घनिष्ठ संबंध बन चुके थे, तीनों ने इस सफर में, हर यात्रा में कुछ ना कुछ सीखा था, कुछ ना कुछ समझा था। अब समय आ गया था विदा होने का, विनय और मानव की ट्रेन में दो घंटे का अंतर था, सर्वप्रथम विनय की मुंबई ट्रेन निकलने वाली थी, जो प्लेटफ़ॉर्म पर रुकी हुई थी।

“चलिए विनय भाई, अब चलने का समय हो गया। चाहे जैसा भी रहा हो लेकिन यह कह सकता हूँ कि यह मेरी जिन्दगी का सबसे यादगार सफर रहा है और निःसंदेह यही बात आप भी कहना चाहेंगे।” अनिकेत मुस्करा रहा था, इस सम्पूर्ण सप्ताह की यादें उसकी आँखों के सामने किसी चलचित्र की भांति ही दिखाई दे रही थी। तीनों के शरीर पर काफी जगहों पर पट्टियां बंधी हुई थी, उन्हें ढंग से स्वस्थ होने में लगभग महीना भर लग जाना था।

“अच्छा भाई लोग, वैसे इन सब चीजों में मैं बहुत कम विश्वास करता हूँ, लेकिन क्या आपको नहीं लगता कि हमारी हर यात्रा में हमने कुछ ना कुछ दिव्य अनुभूति की है ?” मानव ने कहा।

“सम्पूर्ण यात्रा ही तो दिव्य और अद्भुत अनुभवों से भरी थी मानव।” अनिकेत ने कहा।

“वह तो थी ही, लेकिन मुझे ऐसा आभास हुआ कि हर यात्रा में कोई ना कोई ऐसी शक्ति हमारे साथ थी जिसने हमें हिम्मत हारने नहीं दी, जो हर पल हमारा मनोबल बढ़ाती रही। वैष्णों देवी की चढ़ाई याद है ? जब हम थक कर चूर हो गए थे और हमारा उत्साह सीढ़ियों पर बैठी एक अम्मा ने बढ़ाया, वापसी में भी जब हम चलने में लगभग असमर्थ से थे, तब भी हमने सीढ़ियों पर अम्मा जी की अनुभूति की थी, जिसे वहम समझ कर हमने नकार दिया, लेकिन आप दोनों जानते हो वह वहम नहीं था। दूसरा उदाहरण चन्द्रशिला वापसी के दौरान हुआ था, याद है ? जब बचाव दल हम तक नहीं पहुंचा था तब एक लंबा चौड़ा व्यक्ति हमारे सामने आकर खड़ा हो गया था। और उसने हमें हिम्मत ना हारने के लिए कहा था। जबकि बचाव दल ने साफ़ कह दिया था कि उनके किसी सदस्य ने हमसे बात नहीं की थी क्योंकि हम उन्हें बेसुध मिले थे।” मानव ने रुक कर उनकी प्रतिक्रिया जाननी चाही, दोनों के चेहरे पर उलझन भरे भाव अवश्य थे।

“चन्द्रशिला से वापसी के दौरान हम बुरी तरह घायल और मौत के एकदम करीब थे, बर्फीला वातावरण, उंचाई, ऑक्सीजन की कमी और अँधेरे के कारण हमें भ्रम हुए थे, इल्यूजन होते है ऐसे हालातों में।” अनिकेत ने तर्क दिया जबकि वह अपने तर्क से खुद आश्वस्त नहीं था।

“ इल्यूजन वाली बात मैं मान सकता हूँ, लेकिन यह नहीं मान सकता कि हम तीनों को एक साथ और एक ही जैसा इल्यूजन हो। और मेरे ख्याल से यह बात आप भी मानते हो अनिकेत भाई।” इस बार विनय ने कहा। अनिकेत निरुत्तर सा हो गया।

"यह किसी प्रकार का संकेत है भाई, यह संकेत है कि हमें जो जिन्दगी मिली है वह व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए, हम बच कर सही सलामत वापस जा रहे है तो हमें समझना चाहिए हम वापस जाकर क्या फिर वही सड़ी गली बोरिंग सी जिन्दगी जीने वाले है या फिर कुछ बदलाव होगा ? इन सब अनुभवों का कोई असर हमारी जिन्दगी पर होगा या होना चाहिए ? और भाई यह मत भूलो कि चंद्रशिला में हमने वादा किया था यदि हम जीवित बच गए तो अपनी गलतियों को सुधारेंगे। हो सकता है शायद इसीलिए हमें दूसरा अवसर मिला हो ?" मानव ने कहा, ट्रेन की व्हिसल ने उनका ध्यान भंग किया।

"चलो दोस्तों अब चलने का समय आ गया है, और धन्यवाद यारों आप लोगों के बगैर यह सब संभव नहीं था, यह ट्रिप वाकई मेरी जिन्दगी की सबसे यादगार ट्रिप रही है।" कहकर विनय दोनों की ओर बढ़ा और उन्हें गले लगाकर अलविदा कहा। ट्रेन अब प्लेटफ़ॉर्म छोड़ चुकी थी, कुछ ही देर में मानव भी अपनी ट्रेन में सवार होकर अपने गन्तव्य की ओर बढ़ चला। रह गया केवल अनिकेत, वह वहीं एक बेंच पर जा बैठा और काफी देर तक शून्य में ताकता रहा, कुछ सोचकर उसने जेब से मोबाइल निकाला और धड़कते हृदय से एक नम्बर डायल किया, सामने वाले ने एक रिंग में ही फोन उठा लिया गया।

"कोमल.. मैं हूँ अनिकेत ! क्या हम मिल सकते है ?"

□□□

वह अपेक्षाकृत कम व्यस्त कैफे था, इस कैफे का चुनाव कृति ने ही किया था। यहाँ का खाना उसे काफी ज्यादा पसंद था। उसने काफी देर से खामोश बैठे मानव की ओर बेचैनी से देखा, मानव इस प्रकार खामोश नहीं रहता था। कृति वैसे भी गुस्से में थी, उसका लैपटॉप का ऑर्डर भी कैंसल हो गया था।

"यू नो ! पता नहीं क्यों मेरा लैपटॉप का ऑर्डर भी कैंसल हो गया, मैं तुमसे पूछना चाहती थी लेकिन तुम्हारा फोन ही नहीं लग रहा था।" कृति बेसब्री और थोड़े गुस्से से बोली, वेटर उनका ऑर्डर लेकर आ चुका था जो कृति ने ही दिया था, मानव को ना कॉफ़ी में कोई दिलचस्पी थी और ना खाने में।

"और ये क्या है ? इतनी चोट कहाँ से लगी है ? कही मार पिटाई करके आये हो क्या ?" कृति ने पहली बार मानव के टूटे फूटे और बैंडेज लगे चेहरे की ओर देखा।

"कृति! मेरी बात ध्यान से सुनों मैं कुछ कहना चाहता हूँ।" मानव ने कुछ सोचते हुए कहा, उसके चेहरे पर बेचैनी के भाव स्पष्ट देखे जा सकते थे।

"प्लीज़ मानव अब फिर शुरू मत हो जाना यार ! इस टाइम को एन्जॉय करना सीखो यार, हमेशा निगेटिविटी वाली बातें मत.."

"जस्ट शट अप कृति..." मानव अपना आपा खोते हुए चीख पड़ा। कैफे में मौजूद सभी की निगाहें इस ओर घूम गई, लेकिन यह कैफे प्रेमी युगलों से सदैव भरे रहने के कारण यहाँ यह सब आम सी बातें थी, ब्रेक अप, पैच अप, रोना धोना, गुस्सा वगैरह इस कैफे में सामान्य था। लोग चौंकते अवश्य थे लेकिन अगले ही क्षण वे वापस अपने अपने काम में व्यस्त हो जाते थे। इस समय भी वही हुआ, सबने एक नजर उनकी ओर देखा और फिर व्यस्त हो गए, कृति मानव के इस प्रकार से चीखने पर एकदम से सकपका सी गई थी।

"निगेटिविटी मुझमें नहीं है कृति ! निगेटिव तुम हो, तुम्हें पता है तुम आज तक किसी रिलेशन में कमिटेड नहीं रह पाई उसकी वजह क्या है ? सब कुछ पाकर भी तुम्हारे पास कुछ

नहीं है उसके पीछे आखिर वजह क्या है ? वजह है तुम्हारी नकारात्मक सोच, तुम स्वार्थी हो, सेल्फिश हो। हां! तुम यह बड़े शान से स्वीकार करती हो कि तुम स्वार्थी हो और केवल अपने बारे में सोचती हो। लेकिन अगर ऐसा है तो तुम्हें बुरा क्यों लगता है जब तुम्हें कोई स्वार्थी बोले तो? मैं तुमसे प्यार करता हूँ, तुम्हें पता है, तुम किसी और से प्यार करती हो मुझे भी पता है, तुम्हारे और भी कई क्लोज फ्रेंड्स है यह भी मैं जानता हूँ, तुम ना जाने कितने रिलेशंस में रह चुकी हो यह भी हम दोनों जानते है, लेकिन यार तुम्हें हर बार जब भी किसी चीज की जरूरत पड़ती है तुम्हें केवल मैं ही क्यों याद आता हूँ ? इतने दोस्त तो है तुम्हारे ? उनसे मदद नहीं मिलती क्या ? जब भी किसी चीज की जरूरत हो तो मैं तुम्हारा क्लोज फ्रेंड हूँ, लेकिन जब भी अपनी भावनायें व्यक्त करना चाहूँ तब मैं तुम्हारे लिए केवल फ्रेंड बन कर रह जाता हूँ, जबकि तुम अच्छे से जानती हो कि मैं जो भी करता हूँ वह अच्छे फ्रेंड या दोस्त वाले वाहियात से रिश्ते की वजह से नहीं करता। मैं करता हूँ क्योंकि मुझे तुमसे प्यार है, मैं तुम्हें चाहता हूँ। लेकिन तुम यह सब समझकर भी हमेशा अनजान बनी रही। मैं दस दिनों से लापता था, तुम्हें पता भी है मेरे साथ क्या हुआ था ? जानने की कोशिश भी की कभी ? मैं यहाँ बैठा हूँ, चेहरा टूटा फूटा है, पट्टियां बंधी है, लाल नीले निशान पड़े हुए है, लेकिन तुम्हारा सबसे पहला सवाल क्या है ? 'मेरा लैपटॉप' क्यों कैंसल हो गया ?

"अरे मैंने किया है कैंसल, मैं तुम्हारा क्रेडिट कार्ड नहीं हूँ कृति, मेरी भवनायें तुम्हारी खरीदारी का साधन नहीं है। मैं यह सब और नहीं सह सकता बस, मैं जिन्दगी और मौत से लड़कर वापस आया हूँ, वह इसलिए नहीं कि इस कन्फ्यूजन वाले "@तियापे" वाले रिलेशन में वापस अपना कीमती समय और जिन्दगी बर्बाद करूँ, जिसके तुम लायक ही नहीं थी कभी। यह तुम्हारी खूबी नहीं है कि मैं तुम्हारे पीछे पागल हुआ जा रहा था, तुम्हारा आकर्षण नहीं है यह। यह मेरी खूबी है कि मैं गुलाब को छोड़कर कांटों में खूबसूरती तलाश कर रहा था, तुम इसके लायक ही नहीं थी कभी और ना होगी। मैंने आज तुम्हें यही बताने के लिए बुलाया है, तुम मुझे निगेटिविटी कहती हो, कहती हो मुझसे नकारात्मक वाइब्स आती है तुम्हें, अरे आज मैं तुम्हें अपनी जिन्दगी से बाहर करता हूँ, क्योंकि मेरी जिन्दगी की सबसे बड़ी निगेटिविटी तुम ही हो, तुम्हें दुनिया की नकारात्मकता दिख गई लेकिन अपनी नकारात्मकता नहीं दिखती जो दूसरों को बर्बाद कर रही है ? यह मेरी आखिरी मुलाक़ात थी, आज के बाद मैं तुमसे कोई रिश्ता नहीं रखना चाहता, मेरे पास फ्रेंड्स और क्लोज फ्रेंड्स की कमी नहीं है, मुझे तुम्हारी फ्रेंडशिप की कोई जरूरत नहीं है कृति।" कहकर मानव तमतमाते हुए उठ खड़ा हो गया, उसका सम्पूर्ण चेहरा गुस्से से लाल हुआ जा रहा था। कृति सकते में आ गई थी, उसकी आँखों से आंसू बहने लगे। वह कुछ कहना चाहती थी लेकिन शब्द ही नहीं मिल पा रहे थे। मानव को उठता देखकर वेटर वहां आ पहुंचा, मानव ने उसकी ओर देखा तो उसने बिल दिखा दिया।

"ओह बिल ! मैंने तो ऑर्डर नहीं किया था कुछ भी, वैसे मैडम इंडिपेंडेंट है, काबिल है, अपना बिल खुद पे कर सकती है।" कहकर मानव ने बिल कृति के सामने रख दिया और एक नजर कृति को देखकर कैफे तेज क़दमों से कैफे के बाहर निकल गया। कृति हक्की बक्की सी उसे जाते हुए देखते रही, उसकी आँखों में आंसू थे, वह आंसू गुस्से के थे, अपमान के थे, बेबसी या अफ़सोस के थे यह वह खुद नहीं समझ पा रही थी।

कैफे से बाहर निकल कर मानव ने अपनी आँखों में उमड़ते आंसुओं के सैलाब को बहने दिया, जब सारे आंसू समाप्त हो गए तब उसके चेहरे पर एक मुस्कुराहट सी उभर आई। उसने मोबाइल में अपने पिता का नम्बर डायल किया।

“पापा ! मैं शाम को थोड़ा देर से आऊंगा, कुछ जगहों पर इंटरव्यू के लिए जाना है, आप फिक्र मत कीजियेगा खाने के पहले आ जाऊंगा।” मानव का कंठ भर्रा रहा था। वह अपनी जिन्दगी में आगे बढ़ चुका था।

□□□

मुंबई

प्रीति अपने सामने विनय को देखकर बड़ी मुश्किल से स्वयं पर नियन्त्रण रखे हुए थी। जय और विजय उसे आज अपनी चौखट पर देखकर हैरान थे। विजय के हाथों में तलाक के वही कागजात थे जो उसे भेजे गए थे। वह बिना इजाजत लिए घर के भीतर प्रवेश कर गया और बिना किसी औपचारिकता के सबको नजरंदाज करते हुए प्रीति के सामने जा खड़ा हुआ। उसके चेहरे पर घावों के निशान देखकर कृति की आँखों में आंसू आ गए, उन्हें विनय के बर्फ में फंसे होने और बच निकलने की खबर मिल चुकी थी, बचाव दल द्वारा परिवारों को सम्पर्क कर दिया गया था।

"यह कैसे हो गया ? अपना ख्याल नहीं रख सकते.." प्रीति ने कुछ कहना चाहा लेकिन विनय के आंसुओं को देखकर कुछ कह नहीं पाई।

विनय हाथ जोड़कर निरीह सा खड़ा था, उसका दम्भ, घमंड, आत्मविश्वास सब कुछ वह कहीं और छोड़ छोड़कर आया था।

"मुझे मेरी गलतियों के लिए माफ़ कर दो, मैं आज यहाँ माफ़ी मांगने आया हूं। मैंने तुम्हें बहुत तकलीफ दी है प्रीति, मैं कभी तुम्हें समझ नहीं पाया, मैं अपनी कमियों से घिरा रहा और सब में कमियाँ खोजता रहा, मैं आप सब के प्यार को हमेशा हमदर्दी समझता रहा, अपने घमंड और झूठे अहं के कारण आज तक आपको स्वीकार नहीं कर पाया। मुझे अपनी गलतियों का अहसास हो गया है, मैं बेचैन हूँ, मुझे गुस्सा आता है, अपना आपा खो देता हूँ, हीन भावना और आत्मग्लानि मेरे भीतर तक कही गहराई तक धंस चुकी है। मैं जान चुका हूँ ये मेरा स्वभाव नहीं मेरी बीमारी है, लेकिन मुझे इलाज की जरूरत है, अकेलेपन की नहीं। देखो मैं साइकेट्रीस्ट से अपॉइंटमेंट भी लेकर आया हूँ, मैं सब ठीक कर दूंगा, मैं जाऊँगा, काउंसलिंग करवाऊंगा, योगा करूँगा, ध्यान करूँगा, आत्मनियंत्रण सीखूंगा सब करूंगा लेकिन तलाक के कागजों पर दस्तखत नहीं कर सकता, नहीं कर सकता। मुझे तुम्हारी जरूरत है, तुम सबकी जरूरत है, आप सब मेरा परिवार हो, मैं अकेला नहीं रह सकता, नहीं रह सकता। मुझे माफ़ कर दो, मुझे छोड़ कर मत जाओ, मत जाओ, मैंने मौत के करीब जाकर जिन्दगी की कीमत जानी है प्रीति और मेरी जिन्दगी तुम हो, मौत वह नहीं थी जो मैंने पहाड़ों पर महसूस की थी, मौत तो तुमसे अलग होकर जीने की कल्पना करना है, और मैं मरना नहीं चाहता, मैं जीना चाहता हूँ, तुम्हारे साथ।" विनय ने रोते हुए तलाक के कागज फाड़ कर फेंक दिए और प्रीति के समक्ष घुटनों पर बैठ गया, वह फूट फूट कर रो रहा था। प्रीति अब सब कुछ भूलकर उसके सामने बैठ गई और विनय को अपने सीने से लगा लिया। वह बेतहाशा रो रही थी।

"तुम्हें इलाज की जरूरत नहीं है, तुम ठीक हो, मैं कहीं नहीं जा रही तुम्हें छोड़ कर। मैं यहीं हूँ हमेशा तुम्हारे साथ, तुम्हारे पास। "

जय, विजय और उनके माता पिता की आँखें भी नम हो गई। विनय पुन: लौट आया था।

□□□

दिल्ली

कोमल ने धड़कते हृदय से अनिकेत के फ्लैट की बेल बजाई, एक ही घंटी के पश्चात अनिकेत ने दरवाजा खोल दिया, मानो वह दरवाजे पर ही बैठा हो।

कोमल की नजरें अनिकेत से मिली, अनिकेत ने उसे देखा। कोमल चिरपरिचित अंदाज में मुसकुराई। अनिकेत दरवाजे से हट गया और उसके लिए मार्ग छोड़ दिया। वह भीतर दाखिल हुई।

“ये क्या ? इतनी चोट कहाँ से लगी आपको अनिकेत ? हे भगवान।” कोमल ने अनिकेत की कलाइयों में बंधी पट्टी को देखकर कहा और कलाई थाम ली, अनिकेत को दर्द हुआ लेकिन उसके लिए यह दर्द भी किसी सुकून से कम नहीं था।

“लम्बी कहानी है कोमल ! बैठो मैं चाय बनाता हूँ।” अनिकेत ने कहा और बिना कोमल के उत्तर की प्रतीक्षा किये किचन की ओर चला गया। कोमल झिझकती हुई सी सोफे पर जा बैठी, उसने एक नजर घर को देखा, आज घर एकदम साफ़ सुथरा और संवरा संवरा सा लग रहा था। हर वस्तु यथावत सलीके से रखी हुई थी। उसे लाइब्रेरी की पुस्तकों पर जमी वर्षों की धूल गायब दिखी, वह उसे देखकर खुश हुई। तब तक अनिकेत चाय लेकर आ भी गया। उसने कोमल को लाइब्रेरी की ओर देखते पाया।

“कोमल! तुम दो दिन बाद आई हो, मैंने इस दो दिन में यकीन नहीं मानोगी चार किताबें पढ़ भी ली।” वह मुस्कराया और चाय उसके सामने रख दी।

“कमाल है ? इतना समय कहाँ से मिल गया आपको ?” कोमल हैरत से बोली, उसे अनिकेत को पुन: पुस्तकों की सोहबत में देखकर अच्छा लगा।

“बस निकाल लिया, अच्छा दोपहर हो रही है, तुमने खाना भी नहीं खाया होगा मुझे पता है, इसलिए मैंने अपने हाथों से बनाया है और प्लीज़ मना मत करना, मैंने बड़ी मुश्किल से इंटरनेट पर देखकर बनाया है।” अनिकेत मुस्कराया। कोमल उसका आग्रह देखकर मना करने का साहस नहीं जुटा पाई, आज उलटा हो रहा था, उस दिन अनिकेत असहज था तो आज कोमल उसे बदला बदला देखकर असहज थी। अनिकेत ने क्लीन शेव कर रखी थी, बाल ट्रिम थे और सलीके से काढ़े हुए थे, पेट भी पहले से कम हुआ सा लग रहा था, जो निःसंदेह पिछले दिनों की यात्रा और दुर्घटना के कारण था। नीली हाफ बाह की टी शर्ट और काली चुस्त जींस में अनिकेत वही पहले वाला अनिकेत लग रहा था। कोमल उस अनिकेत को देखकर प्रसन्न थी जिसे उसने बरसों पहले कही खो दिया था। अनिकेत खाना लेकर आया और परोसने लगा, कोमल उसकी सहायता करने बढ़ती लेकिन उसने मना कर दिया। खाना परोसा जा चुका था, अनिकेत ने मुस्करा कर शुरू करने का संकेत किया। कोमल ने अपना हाथ निवाले की ओर बढ़ाया।

“ठहरो !” अनिकेत ने धीमे से कहा। कोमल ने प्रश्नसूचक नजरों से देखा।

“कुछ कमी सी है, क्या कम है ?” कहते हुए अनिकेत उठा और कोमल के समीप आकर बैठ गया, उसने अपने हाथ से निवाला उठाया और कोमल की ओर बढ़ाया। कोमल की आँखें एकदम से भीग उठी।

“यह कमी है, पिछली बार यह कमी रह गई थी ना कोमल।” अनिकेत के स्वर में भर्राहट सी उत्पन्न हो गई। कोमल ने कुछ ना बोल पाई, अनिकेत ने उसे पहले की भांति अपने हाथों से निवाला खिलाया। कोमल जो हमेशा कठोर और पत्थर दिल होने का स्वांग करती थी उसकी आँखों में आज आंसू आ गए।

वह ना जाने कब से इस अपनेपन को खोज रही थी। उसके मन की बंजर जमीन पर अनिकेत के प्रेम रुपी तुषारों से सदियों से दबे अंकुर कोंपलों से निकल कर फूट पड़े। वह वर्षों

से इस अपनेपन को खोज रही थी, वह निराश थी, उदास और हताश सी जी रही थी, असमंजस में उसे केवल अनिकेत का ही ख्याल आता था किन्तु अपने बर्ताव से उत्पन्न शर्मिंदगी उसे अनिकेत का सामना करने से रोकती थी। वह कुछ ना बोली, उसके आंसू बहते रहे, अनिकेत खिलाता रहा। अनिकेत के आंसू भी पलकों की आगोश से बाहर आकर लुढ़क रहे थे। दोनों कुछ ना बोले, उन दोनों का रिश्ता ही ऐसा था, वे शब्दों के मोहताज नहीं थे, उनका हृदय बिन बोले भी सब समझता था। खाना हो चुका था, कोमल ने अपने आंसू पोंछ लिए, उसने अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण रखने का प्रयास किया और उठ खड़ी हो गई।

"मेरे ख्याल से मुझे चलना चाहिए।" वह बोली।

"कहां चलना चाहिए ? कहां जाओगी ?" अनिकेत का स्वर कांप रहा था।

"घर।"

"घर केवल चारदीवारी से नहीं बनता ना कोमल ? जब तक उसमें कोई अपना ना हो तब तक वो केवल बेजान दीवारों का एक समूह ही तो है। जिसे तुम घर कहती हो वहां तुम्हारे अकेलेपन और पिछली जिन्दगी के दुखदाई स्मृतियों के अलावा कुछ भी तो शेष नहीं है।" अनिकेत उसके समीप आया, कोमल उसकी नजरों में आज कुछ अलग देख रही थी।

"कोमल मैं मौत के सामने से आया हूँ, और मैं हर क्षण का मूल्य जान चुका हूँ, पता है जब मौत मेरे सामने थी तब मेरे मन में केवल एक ही ख्याल था, काश एक बार कोमल से मिल पाता, काश उसे कह पाता कि मैं अब भी तुम्हारी इतनी ही परवाह करता हूँ, तुम्हारे हर निर्णय के बावजूद मैं तुम्हें अपने दिल से कभी नहीं निकाल पाया। मीरा को गए अरसा बीत गया, तुम्हारा तलाक होकर भी लगभग उतना ही समय हो गया, हम दोनों ही अकेले है, बस घुटन में जी रहे है, पुरानी स्मृतियों के मकड़जाल में उलझे हुए है, मैं सारी जिन्दगी अफ़सोस में नहीं बिताना चाहता कोमल, मैं अपनी भावनाओं को नाम देना चाहता हूँ, मैं अपने इस अनजाने रिश्ते को नाम देना चाहता हूँ, मैं चाहता हूँ तुम इसे समझो, समय गंवाने के बाद मुझे यह सोचकर नहीं रोना कि जब अवसर था तब मैं फिजूल की उलझनों में फंस कर इस रिश्ते से कतराता रहा, मैं जो अपनापन चाहता हूँ, वह केवल तुम्हारे भीतर देखता हूँ, मैं इसे गंवाना नहीं चाहता, मैं खोना नहीं चाहता तुम्हें, मैं तुम्हें खोना नहीं चाहता कोमल बस तुम .."

अनिकेत के शब्द अधूरे रह गए, कोमल उसके सीने से जा लिपटी थी। उसे शब्दों की आवश्यकता ही नहीं थी, वह अपने अधूरेपन के रिश्ते को समझ चुकी थी। लाख प्रयास करने के बावजूद भी वह अपने आप पर नियन्त्रण नहीं रख पाई और पूर्ण शक्ति से अनिकेत सी लिपटी रही, इस भय से कि कही यह क्षण खो ना जाए या फिर वह अपनी भावनाओं को दबा ना ले, वह सुबक पड़ी। अरसे बाद उसे यह आलिंगन मिला था, अरसे बाद उसे वह अपनापन मिला था जिसके लिए वह सदैव तरसती रही। आज कोमल फूट फूट कर रो रही थी, आज वह कमजोर हो जाना चाहती थी, टूट कर बिखर जाना चाहती थी अनिकेत के आलिंगन में।

"क्या तुम मेरा.." अनिकेत ने कहना चाहा।

"हाँ हमेशा साथ दूंगी।" कोमल ने वाक्य पूर्ण किया, उन्हें आज भी शब्दों की आवश्यकता नहीं थी, वे अधूरे थे क्योंकि अलग अलग थे, एक होकर वे सम्पूर्ण हो गए थे। अनकहे रिश्ते को अब नाम मिल चुका था।

समाप्त

Book
House1

JOIN BOOKHOUSE1

चैनल जॉइन करने के लिए telegram
डाउनलोड करने के बाद सर्च में
@BOOKHOUSE1 लिखे और सर्च करे

https://t.me/bookhouse1